आचार्यश्री भ्रातृचन्द्रसूरिग्रन्थमाला पुस्तक ३२ थी ३९

ॐ

श्री जैनराससंग्रहः

प्रथमभागः ॥

संग्राहकः—

प्रातःस्मरणीय पू० आचार्यदेव—

जं० यु० प्र० भ० उ० भ०—

श्रीभ्रातृचन्द्रसूरीश्वरजी साहेबना शिष्य—

मुनिश्री सागरचन्द्रजी.

कीं. १—०—०

आचार्य श्रीभ्रातृचन्द्रसूरि ग्रन्थमाला पुस्तक-३२ थी ३९.

श्री[illegible]गपुरीयवृहत्तपागच्छाधिराजश्रीपार्श्वचन्द्रसूरि-
सद्गुरुभ्यो नमः ॥

श्रीजैनरास-संग्रहः प्रथमभागः ॥

संग्राहक तथा संशोधक :—

मुनिराज श्रीसागरचन्द्रजी महाराज.

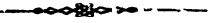

प्रकाशक :-

श्रीपार्श्वचंद्रसूरिगच्छीयश्रीजैनहठीसिंगसरस्वतिसभा तरफथी

शाह गोकलदास मंगलदास.

लुहारनी पोळ—अमदावाद.

आ पुस्तक श्री 'उत्कृष्ट' मूद्रणालयमां पा. पुरसोत्तम शंकरदासे
छाप्युं. रीचीरोड—अमदावाद.

वि. सं. १९८७. प्रथमावृत्तिः प्रत २५०. सन १९३०.

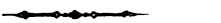

मूल्य रु. १-०-० पोस्टेज अलग.

॥ श्रीभ्रातृचन्द्रसूरिषट्पदी ॥

" ब्रजराज आज साँवरो बंसी वजा गयो " इत्यनेन रागेण गीयते.

श्रीभ्रातृचन्द्रसूरिराजमर्थदायकं ।
भजस्व हे सखे ! गुरुं विरागिनायकम् ॥ टेर ॥
संसारमेतमुज्झितुं समीहसे यदा ।
मुक्तिं च यातुमिच्छसि प्रमोदतस्तदा॥श्रीभ्रातृ०॥१
प्रवेशमीहसे यदा धियो निवेशने ।
तदा मनः प्रसारयेर्ममोपदेशने ॥ श्रीभ्रातृचंद्र॥२॥
करालकाल एष संनिधौ समागतः ।
किमीक्षसे विनश्वरं फलं हि रागतः॥श्रीभ्रातृचंद्र॥३
विहाय कर्म शास्त्रमर्म धर्मकर्मणे ।
ग्रहीतुमीहसे यदा तदा सुशर्मणे ॥श्रीभ्रातृचंद्र॥४॥
श्रीपार्श्वचन्द्रसूरिराजवंशदीपकं ।
सुमुक्तिराजधानिकाध्वनःसमीपकम्[1]॥श्रीभ्रातृ०॥५
तपःप्रकर्षनिर्जितोरुपञ्चसायकं ।
महानिदेशनासुधारसप्रपायकम् ॥श्रीभ्रातृचंद्र ॥६॥
नित्यानन्देन रचिता भाईलालेन गापिता ।
आचार्यभ्रातृचन्द्रस्य षट्पद्यास्तां मुखाम्बुजे ॥७॥

---

१ समीपयतीति समीपकस्तं-मुक्तिराजधान्याः सामीप्यदर्शकम्.

॥ श्रीभ्रातृचन्द्रसूरीश्वरस्तुतिः ॥

श्रीपार्श्वचंद्रसूरीन्द्र नागपुरीन्द्र तपगण नभमणी,
तस पट्टपरंपर गणधुरंधर हेमचंद्रसूरि गुणी ।
निग्रंथ गुरु तस पाटराजे आज गाजे मुनिवरा,
भवि भक्तिभावे नमो निशदिन भ्रातृचंद्र सूरीश्वरा. १

छे शांत दांत महंत किरियापात्र समता सागरु,
पंडितप्रवर विद्वान् बुद्धिनिधान विद्या आगरु ।
अघ ओघवारक महाप्रभावक धर्मधोरी धुरंधरा,
भवि भक्तिभावे नमो निशदिन भ्रातृचंद्र सूरीश्वरा. २

छे भव्य आकृति धर्ममूर्ति प्रभुतुल्य मनोवृत्ति,
तप तेज दीपे कदि न छीपे भाग्यनी चढती रती ।
वली शरद शशिसम सौम्यकांति शांतिवान शुभंकरा,
भवि भक्तिभावे नमो निशिदिन भ्रातृचंद्र सूरीश्वरा. ३

गुरु गच्छनायक ज्ञानदायक संघमां लायक मुदा,
गत रागरोष न दोष जरिए तोष सुखदुःखमां सदा ।
छत्रीस गुणगण युक्त सूरीश्वर चरण गुणथी अलंकर्या,
भवि भक्तिभावे नमो निशदिन भ्रातृचंद्र सूरीश्वरा. ४

जिण भाण अस्त थतां सूरीश्वर ज्ञानदीप प्रकाशता,
मिथ्यांधकार विकार टाळी भविकजन प्रतिबोधता ।
शुभच्छंद सांकळचंद कहे पावनकरी भारतधरा,
भवि भक्तिभावे नमो निशदिन भ्रातृचंद्र सूरीश्वरा. ५

समर्पणपत्रिका.

जगतश्रेष्ठिगुरु पूज्यपादश्रीहर्षचंद्रसूरीश्वरचरणानुचर-
पंडितप्रवरश्रीमुक्तिचंद्रगणिसुशिष्य-
श्रीमन्नागपुरीय-बृहत्तपगच्छाधिराज-युगप्रवराचार्य
जंगमतीर्थराजतुल्य-सहस्राष्टश्रीयुत-परमपूज्य
सद्गुरु-भट्टारक-श्रीभ्रातृचंद्रसूरीश्वर महाराज !

आप श्रीमान् सेवक जनमनवांछितपूरक कल्पवृक्ष-सदृश हता, सत्यप्रवचनोपदेष्टा होवाथी भविजीवोद्धारक -भविजनतारकप्रवहणरूप हता, प्राचीन जैनशैली मुजब विधिपरंपरा पदधारक शुद्धक्रियानुष्ठानवंत हता, शांत रसना समुद्र, सुरूपगुणाकर, वचनातिशयवंत, चारित्र-पात्रचूडामणि, कुमतांधकारनभोमणि हता, अने मुनिजन मनमानसहंस होइ उग्रविहार युक्त भारतभूमंडलमां विचरी स्वपरनुं सदा कल्याण कर्या करता हता. इत्यादि प्रातःस्मरणीय सद्गुणोथी लोभाइ आकर्षायला मनोभावसह, आप परमोपकारी गुरुराजना सद्गुणोनुं सदैव स्मरण रहेवा हितार्थ आ "श्रीजैनरास संग्रहः प्रथमभागः" नामक परम लाभदायि पुस्तक समर्पण करी अत्यानंद पामुं छुं ते आप सेवक श्रेयकारी स्वीकारी लइ आभारी करशोजी !

जगत् श्रेष्ठिगुरु श्रीहर्षचंद्रसूरीश्वरचरणानुचर–
पंडितप्रवर महर्षि श्रीमुक्तिचंद्रगणिसुशिष्य–

श्रीमन्नागपुरीयवृहत्तपागच्छाधिराजश्रीभ्रातृचन्द्रसूरिसद्गुरुभ्योनमः॥

युगप्रवर भट्टारकोत्तम भ० पूज्यपाद जैनाचार्यवर्य–

श्रीभातृचंद्रसूरीश्वरजी महाराज.

उपकार.

श्रीजगत्श्रेष्ठिगुरुपूज्यपादशास्त्रविशारदश्रीहर्षचंद्र-
सूरीश्वरचरणोपाशकविनेयपंडितप्रवरमहर्षि-
श्रीमुक्तिचंद्रगणिसुशिष्य-

परमपूज्य प्रातःस्मरणीय परमगुणान्वित स्वच्छ मति गति रति (भाग्य) यशवंत गच्छपति श्रीमान् भट्टारक श्रीभ्रातृचंद्रसूरीश्वरजीमहाराजना सुविनयी सुशिष्य साक्षर परमोपकारी चारित्र पात्र चूडामणी शांत-दांतादि मुनिगुणगणयुक्त पू० मुनिराज श्री साधुरचंद्रजी महाराज जेओ साहेब आ परम लाभकारी पुस्तकने प्रसिद्धिमां लाववा हितार्थ अलग अलग स्थळेथी पर-मोपयोगी रासाओनो संग्रह एकत्र करी लखावी सुधारी आपवामां अवर्णनीय काळजीपूर्वक ध्यान आपी पोताना पठन पाठन क्रियानुष्ठानादि करवाना महान् कीमती समयनो भोग आप्यो छे अने भव्यजीवोना आत्म-कल्याणनो मार्ग खुल्लो करवा खंत राखी छे, ते माटे शुद्धांतःकरण पुरःसर तेओश्रीनो उपकार मानी अत्यानंद पामुं छुं !

ली. प्रकाशक.

अनुक्रमणिका.

मुनिराज श्रीविमलचारित्रगणिकृत–

१–श्रीअंजनासुंदरी चरित्र–रास. पृष्ट १ थी ४२ शुधीमां

महर्षिश्रीब्रह्ममुनिकृत–

२–श्रीचारप्रत्येकबुद्ध चरित्र–रास. पृष्ट ४३ थी ७८ ऽऽ

वाचकवर श्रीकर्मचंद्रगणिकृत–

३–मोहचरित्रगर्भित–अढारनात्रा चोपाई. पृष्ट ७९ थी ९५ ऽऽ

महोपाध्याय श्रीकर्मचंद्रगणिकृत–

४–श्रीरोहिणीनो चोपाई बद्ध–रास. पृष्ट ९६ थो १४७ ऽऽ

पंडितप्रवरश्री महर्षि निहालचंद्र कविवरकृत–

५–जगत शेठाणी श्रीमाणिकदेवी रास. पृष्ट १४८ थी १६० पर्यन्त

कविवर ऋषिश्रीदलभद्रकृत–

६–महातपस्वि श्रीपूंजामुनिनो रास. पृष्ट १६१ थी १६३ पर्यन्त

वाचनाचार्यश्रीसमयसुंदरगणिकृत–

७–महातपस्वि श्रीपूंजामुनिनो रास. पृष्ट १६४ थी १६७ पर्यन्त

आचार्यवर्यश्रीसमरचंद्रसूरीश्वरजी महाराजकृत–

८–श्रीसाधुगुणरससमुच्चय–रास. पृष्ट १६८ थो २२३ पर्यन्त

प्रस्तावना.

श्रीजैनरास संग्रह; प्रथम भागमां आठ रास आवेला छे. ते संबंधी अवश्य जाणवा जोग्य लेसमात्र अत्रे जणाववा इच्छा छे विशेष तो ते ते ग्रन्थो वांचवाथी वाचक पोते स्व बुद्धि अनुसारे जाणसे.

१–श्रीअंजनासुंदरी चरित्र–रास. पृष्ट १ थी ४२ सुधीमां आवेल छे. तेना कर्ता–श्रीमन्नागपुरीयवृहत्तपागच्छीय महामहोपाध्याय श्रीरत्नचारित्रगणिजीना शिष्यरत्न साक्षर मुनिराज श्रीविमलचारित्रजी छे. आ चोपाई–रासनी रचना तेमणे सात जिनालयथी शोभतु नागोर नगर 'नगीना सहेर' मां विक्रम संवत् १६६३ ना मागसर मासना बीज दिन गुरुवारे करी छे. तेनी सर्व गाथा ४०४ छे. पूर्व भवमां श्री जिन प्रतिमाजीनी आशातना करवाथी केवा प्रकारना कर्म बंधाय छे अने तेथी केवी रीतना दुःखो जीवात्माने भोगववा पडे छे! तेनो चितार हाबेहुब कविवरे आलेखेलो छे. वली पवित्र अने दुर्गति नाशकरनार शीलव्रत पालन करवाथी सर्व दुःखोनो नाश तथा सर्व सुखोनी प्राप्ति थाय छे, तेनुं वर्णन ग्रन्थकारे अद्भुत करेल छे. कविता घणी सुंदर अने सरल छे, तेनी साथे उत्तम भाववाही पण छे. कविवरे गुजराती भाषामां काव्यबद्ध रास रूपे रचना करी पोतानुं पांडित्य

प्रगटरूपे जणावी आपेल छे. आ ग्रन्थकारे बीजा पण ग्रन्थ रत्नो रच्या हशे ? पण ते मने उपलब्ध थया नथी, किंतु तेमना रचेला स्तवन, सज्झाय, गुरुपद महोत्सवगुणभास विगेरे जोवामां आवे छे. तेमनी जन्मभूमी विगेरेनो ईतीहास जाणवामां आवेल नथी. आ रासनी रचना करनार मुनिराज चारित्रपात्र आत्मार्थी हता.

२–श्रीचारप्रत्येकबुद्धचरित्र–रास. पृष्ट ४३ थी ७८ सुधीमां छे. तेना कर्ता श्रीमन्नागपुरीय वृहत्तपागच्छीय युग-प्रवर क्रियाउद्धारकरी शुद्ध मुनिपणुं प्रवर्तावनार सिथिला-चारने दूर करनार श्रीजैनसिद्धान्तानुसारक्रिया मार्गनो निखालश हृदये उपदेश करनार बालब्रह्मचारी परमपूज्य श्रीपार्श्वचंद्र सूरीश्वरजी महाराजना शिष्य शास्त्रविशारद महर्षि श्रीब्रह्ममुनि छे, तेमणे विक्रम संवत १५९४ वर्षे आ रासनी रचना करी छे. श्री उत्तराध्ययन सूत्र तथा वृत्तिथी आ चोपाई रासने रच्यो छे// आ चारे प्रत्येकबुद्ध समान आयुष्यवाला साथे दीक्षा तथा साथे केवलज्ञान तथा साथे मोक्ष गएला छे. गुजराती भाषामां काव्यबंध आ चोपाईनी रचना करेलछे.कविता सरल सादी अने भाववाही छे. एमणे ग्रन्थो घणा कर्या छे. जेवा के-१–श्रीजंबूद्वीपप्रज्ञप्तिवृत्तिः, १–दशाश्रुतस्कंधसूत्रवृत्तिः, ३–श्रीपाक्षिकसूत्रवृत्तिः, ४–प्रतिमास्थापनप्रबंध, ५–श्रीसुमति नागिलनो रास, ६–सैद्धांतिकविचार, ७–चोपर्वीव्याख्या, ८ सुधर्मागच्छ परीक्षा, ९–उत्तराध्ययन सूत्रनी स्वाध्यायो १०–

अढार पापस्थानवर्जननी सज्झायो. ११–परमेश्वरप्राघूर्णक स्तवन, १२–श्रीनेमनाथजी विवाहलो, १३–श्रीपार्श्वनाथजी विवाहलो, १४–साधुवंदना, १५–श्रीनेमिनाथ प्रबंध, १६–मृगापुत्रचरित्र, १७–श्रीनेमिधवल, इत्यादिक ग्रन्थो तथा स्तवनो, स्तुतियो, नमस्कारो, पदो तथा सज्झायो विगेरे घणुं कर्युं छे. तेमनी जन्मभूमि मालवा देशमां आंजणोट नगरमां सोलंकी क्षत्रीयवीर पद्मदेवराय पीता तथा सीतादेवी माताने त्यां जन्म थयो हतो. अने जेमणे किशोरवयमांज पूर्वसंचित पुन्यप्रकृति संयोग वश पोताना भाइ साथे माता पितानी रजा मेलव्या शिवाय द्वारकाजीनी यात्रा करवा माटे प्रयाण कर्युं हतुं "शुभात् शुभं जायते" एवुं थयुं के मार्गे चालतां गिरनार तीर्थना प्रदेशमां पूर्व पुन्योदयना प्रभावे परमपूज्य जैनाचार्य श्रीपार्श्वचंद्र सूरीश्वरजी महाराजनी भेट थइ सूरिजीने वंदना करी पोते तेनी अगाडी बेठा, एटले सूरिवर्ये हलकर्मी योग्य जीव जाणीने शुद्ध धर्मोपदेशनो लाभ आप्यो एथी ते वचनामृत पान करतां मनमां वैराग्यभावने जन्म मल्यो, एटलुंज नहीं ते वैराग्ये सत्य वैराग्यनी दीक्षा लेवानी तेमने फरज पाडी के तेमणे पण द्वारका जवानुं द्वार बंध करी जन्मोद्धार करवानुं द्वार खोलवा मन दीधुं. धार्युं हतुं शुं अने थयुं शुं. "वाह! भवितव्यता? तारी प्रबलता?" एटले के धार्यो हतो द्वारका दर्शननो लाभ अने शुद्ध चारित्रनो लाभ थयो. गुरुश्रीए नाम राख्यु ब्रह्ममुनि त्यारपछी मुनि

धर्म योग्य क्रिया अनुष्ठानना सूत्रोनो अभ्यास कराव्यो अनुक्रमे विद्वान् थया, अने घणा ग्रन्थो तेमणे लख्या, पछीथी श्रद्धामां फरक पडयो तेथी सुधर्मागच्छनी स्थापना करी, सूरीश्वर गुरुराजे तेमने बहु समजाया पण स्व आग्रह तेमणे छोडयो नही. जीवने मोहराजा अनेक फंदोमां फसाववा सदा सावचेत रह्या करे छे, तेना सकंजामांथी बचवुं सहेलु नथी, अप्रमादी सुगुरु वचनानुयायी श्री जिन प्रवचनानुरागी आत्मार्थी विरल कोइ सदा सावधानतावालो स्वश्रेय साधी शके छे. आ चरित्रना कर्ता वैरागी निरंतर उद्योगी सूरवीरता पूर्वक जीवन जीवनारा हता. पोताना गुरुराज पासे सर्व सिद्धांतोनो अभ्यास कर्यो हतो, तेथी प्रखर विद्वानोनी पंक्तिना विद्वान् हता. सिद्धांतोनी टीकाओ जेवा महान्कार्यमां पण तेमणे प्रयत्न करेल छे. श्रेष्ठ कविता शक्तिने धारण करनार हता, ऐतीहासिक ज्ञानमां विशारद हता. केटलाकोए एमने श्रीविजयदेवसूरिजीना शिष्य मान्यां छे अने विद्यागुरु तरिके श्रीपार्श्वचंद्रसूरीश्वरजी हता, एम जणावे छे. पण पोते तो पोताना गुरु तरीके श्रीपार्श्वचंद्रसूरीश्वरजी छे एमज ग्रन्थोमां लखे छे.

३–मोहचरित्र गर्भित–अढार नात्रा चोपाई. पृष्ट ७९थी९५ शुधीमां छे. तेना कर्ता–श्रीमन्नागपुरीयवृहत्तपागच्छाधिराज श्रीपार्श्वचंद्रसूरिपरंपरानुगत श्रीराजचंद्रसूरि शिष्य उपाध्याय श्रीहीरानंदचंद्रगणिना प्रशिष्य महामहोपाध्याय श्रीधर्मसिंहगणिना शिष्य वाचकवर श्रीकर्मचन्द्रगणी छे. आ चोपाई–रासनी

रचना तेमणे पटणानगर मध्ये स्वपर कल्याणना कारणे विक्रम संवत १७६२ ना वर्षे मागसर वदी पंचमी गुरुवार सिद्धियोगमां करेल छे, पोताना हाथनी लखेल प्रतिमां ते प्रमाणे अंतमां लखेल छे. आ चरित्रनी सर्व गाथा १७० छे. श्रीजिनेश्वर परमात्माओए कर्मनी गति बहु विशमी बतावेल छे तेनो स्फोट करता कुबेरदत्त अने कुबेरदत्तानो जीवनवृतांत वर्णवता कविवरे घणीज असरकारक शैलीथी गुजराती भाषामां पद्यबंध भाववाही कवितामां गुंथेल छे. तेनी मझाह तो वांचनारज जाणी शके. मोहनीय कर्मनुं स्वरूप विशेषता पूर्वक वर्णव्यो छे. आ रासना कर्ता संस्कृत, प्राकृत भाषामां सारा विद्वान् हता. तेमणे प्राकृत गाथा बद्ध सदोपदेशनामा ग्रन्थ तथा प्राकृत गाथाबद्ध कलिकालस्वरूपकथनशतक नामा ग्रन्थ रच्यो छे. ए बे ग्रन्थो तो मारी पासे मोजुद छे. ते शिवाय पण तेमणे सारा सारा ग्रन्थो रच्या हशे? आध्यात्मिक पदो–स्तवनो सज्झायो पण तेमना करेला जोवामां आवे छे. तेमज घणा ग्रन्थो तेमणे लख्या छे, तेथी सारा लेखक पण हता, तेमनो जीवन वैराग्य वासित आध्यात्मिक हतुं. तेओ मारवाड, पूर्व, बंगाल विगेरे देशोमां विशेष विचर्या छे. तेमनो जीवन ईतीहास विशेष जाणवामां आवेल नथी.

४–श्रीरोहिणीनो चोपाई बद्ध–रास. पृष्ट ९६थी१४७ शुधीमां आवेल छे. तेना कर्ता–श्रीनागपुरीयवृहत्तपागच्छ गगनांगणनभोमणी श्रीपार्श्वचंद्रसूरीश्वर परंपरामां श्रीजयचंद्र-

सूरीश्वर शिष्य वाचकवर श्रीपद्मचंद्रगणिना शिष्यरत्न वाचक श्रीकर्मचन्द्रगणी छे. बीजी प्रतमां लखाण छे के श्रीजयचंद्र-सूरीश्वरजी महाराजना शिष्य वाचकवर श्रीप्रमोदचंद्रगणिजीना शिष्य महोपाध्याय श्रीकर्मचंद्रगणी छे. आ बन्ने लेखमां सत्य शुं छे ? ते तपासतां श्रीगौडीपार्श्वजिन स्तवन, गाथा १८नुं छे तेमां पण मुनिराज श्रीपद्मचंद्रगणिशिष्य मुनिकर्मचंद्र ए प्रमाणे बतावेल छे.आ चोपाई--रासनी रचना तेमणे श्रीजालोर नगरमां सोवनगिरि श्रीपार्श्वनाथ जिनेश्वरना प्रसादे--कृपाथी विक्रम संवत् १७३०ना कार्तक शुदी पंचमी (ज्ञानपंचमी) रविवारना दिवसे श्रीजैनाचार्य पद्मचंद्रसूरीश्वरजीना पटधर ज्ञान तप तेजथी दीपता आचार्यवर्य श्रीमुनिचंद्रसूरीश्वरजीना विजय राज्यमां करेल छे. आ चोपाई--रासनी ढालो २९ छे अने सर्व गाथा ६६६ छे. आ सर्व बीना रासना अंतमां कर्ता पोते लावेला छे. आ रोहिणी चोपाई--रास ग्रन्थनी रचना " श्रीगौतम पृच्छागन्थ " मां अडतालिश पुन्य पापना फल पूच्छया छे तेमां २९मो पुन्य पाप फलनुं प्रश्न छे–श्री गौतमस्वामी गणधर श्रीवीर परमात्माने बे हाथ जोडी अंजली करी पूच्छयुं के हे भगवन् ! श्या कर्मे करीने जीवने खाधुं पीधुं पचे नहि ? जरे नही ? तेना उत्तरमां शासनपति श्रीवीरवर्धमानस्वामि परमात्माए फरमाव्युं के हे गौतम ! श्रमण मुनिमहात्मा अण-गारने एवो अहार आपे के जे आहारने कोई खावा पीवा इच्छे नही, वांछे नही, जेनो नाम पण कोइ ले नही–एवो

अनिष्ट, असार, उच्छिष्ट, छांडवा योग्य आहार आपे ते जीव आभव परभवमां भमतां कृतदुष्टकर्मना प्रतापे दुःखोने भोगवतां दुःखोनो अंत छेह तप धर्म विना पामे नही, रोहिणी नो जीव दुर्गंधानी माफक, ए स्वरूपने वर्णवता रासकारे आ ग्रन्थनी उत्पत्तिनेा मूल श्रीगौतमपृच्छा ग्रन्थ जणावेल छे. विषय कषायमां राचीमाची रहेल जीवात्मा केवा माठा कर्म बांधे छे तेनो चितार आकर्षक भाषामां चोपाई कर्ताए बहु श्रेष्ठ वर्णन करेल छे. आ चोपाईनी कविता सरल रागरागणी देशीमां गुजराती भाषामां क्वचित् मरुधर भाषामां काव्य बद्ध रूपे रची छे. ते ते भाव लाववामां अद्भुत पोतानी कविता शक्ति बतावी आपेल छे, आ कविनी कवितामां प्रसादभाववाही पणुं जलकी रहेल छे. आ कविवरे बीजा ग्रन्थो बनाव्या हशे ? पण तेनी प्राप्ति हजु शुधी थइ नथी. एमना करेला स्तवन पदादि जोवामां आवे छे. आ कविवर गुजरात, मारवाड, पूर्व, बंगाल, मेवाड, मालवा विगेरे देशोमां विचर्या छे. शुद्ध मुनिपणुं पालन करेल छे. तेमनी जन्मभूमि वगेरेनुं ईतीहास उपलब्ध थएल नथी, तेथी लखवामां लाचार छुं.

५–जगत शेठाणी श्रीमाणेकदेवी–रासः ' पृष्ट १४८थी पृष्ट १६० पर्यन्त छे. तेना कर्ता–नागपुरीयवृहत्तपागच्छना अग्रगण्य आचार्य महाराज श्रीपार्श्वचंद्रसूरीश्वरजीनो परंपरामां थएल परमपूज्य वाचकशेखर श्रीहर्षचंद्रजी महाराजना लघु गुरुबांधव पंडित प्रवर मुनिवर श्रीनिहालचंद्र कविवर छे. आ

रासनी रचना तेमणे वि. सं. १७९८ ना पोषवदि १३ सें मकसूदावाद मध्ये करेल छे. आ रासमां सर्वगाथानी संख्या १२८ नी छे. आ रासना रचनारे सतीशिरोमणी श्रीमाणेकदेवीने प्रत्यक्ष तप जप दानादिक विशिष्ठ गुण गणालंकृत जोईने पोतानी जीभने पवित्र करवानी खातर अने तेमनो पवित्र यश शांभली मनमां बहु आनंद थयो तेथी आ रासनी रचना करी छे. आमां छता गुणोनो वर्णन करवामां आवेल छे. पण भाट चारणनी माफक रजनो गज करवामां आवेल नथी. गुणिजनोना गुणने वर्णववा तेथी स्वआत्मामां अपूर्व जागृति थाए छे. आ रासनी कविता सुंदर सरल अने भाववाही छे. भाषामां काव्यबद्ध तेनी रचना करेली छे. जगतशेठनो ईतीहास बतावी ईतीहासेच्छुओने मोटो उपकार करेल छे. गेलडागोत्रीय जगतशेठना वंशजो नागपुरीय वृहत्तपागच्छीय श्रीपार्श्वचंद्रसूरिना चरणोपासक श्रावक तरिके ओलखाय छे. अने तेमनेज परमगुरु तरिके मानी श्रीजैन धर्मनी उपासना करे छे. तेओए श्रीजैन धर्मनी बहु जाहोजलाली करी छे. आ ग्रन्थकारे बीजा पण ग्रन्थो रच्या छे. तेमां पहेलो ग्रन्थः—ब्रह्मबावनी—ओंकारबावनीना नामे पण ओलखाय छे. तेनी रचना वि. सं. १८०१ ना कार्तिक शुदी २ ना दिवसे बंगदेशमां आवेल मकसदावादमां करेल छे. सवैया रूपे बावन नी संख्यामां छे. अने ते सुरदीपिकादिप्रकरणसंग्रहमां छपाइ गएल छे. जाणवानी इच्छावालाए त्यांथी जोइ लेवुं.

बीजो ग्रन्थ–'जीववीचार भाषा' नामनो छे. तेनी रचना वि. सं. १८०६ना चैत्र शुदी बीजने बुधवारे मकसूदावाद नगरमां करी छे. अने तेनी सर्व गाथा १८६ नी संख्यामां छे. त्रीजो ग्रन्थः–'श्रीनवतत्व भाषा' नामनो छे. तेनी रचना वि. सं. १८०७ ना माघसुदी ५ शुभवार ग्रहलग्नमां मकसूदावाद मध्ये करेल छे. चोथो ग्रन्थ 'बंगालादेशकी गजल' नामनोछे. जेनी गाथा ५५ छे. रच्यानी संवत् जणाववामां आवेल नथी.

आ ग्रन्थकारे बिजापण ग्रन्थ रत्नो रच्या हशे ? पण जोवामां आव्या नथी. तेमनी जन्म भूमि विगेरेनो ईतीहास जाणवामां आवेल नथी. तेमनो विहार विशेषे करी पूर्व, बंगालामां थएल जणाय छे.

(६)–महातपस्वी श्रीपूंजामुनिनो रास,--पृष्ट १६१थी१६३ शुधीमां आवेल छे. तेना कर्ता-श्रीनागपुरीयवृहत्तपागच्छ गगनांगणनभोमणिश्रीपार्श्वचंद्रसूरीश्वरसंतानीय मुनिप्रवर श्री हीरराज विनेय शिष्य ऋषि दलभद्र छे. तेनी सर्व गाथा २१ छे. कविता सरल, मधुर भाववाही पद्यबंध गुजराती भाषामां बनावी छे. आ ग्रन्थकारे बीजा पण ग्रन्थो बनाव्या हशे ? पण जोवामां आवेल नथी. ग्रन्थकर्तानो जीवन ईतीहास ते पण जाणवामां आवेल नथी.

(७)–महातपस्वी श्रीपूंजामुनिनो–राश पृष्ट १६४ थी १६७ पर्यन्तमां आवेल छे. तेना कर्ता–श्रीखरतरगच्छीय पंडितप्रवर मुनिगुणगणालंकृत वाचनाचार्य श्रीसमयसुंदरगणीछे.

आ रासनी रचना कविवरे वि. सं. १६९८ मां श्रावण सुदी पंचमीये करले छे. आ रासनी सर्वगाथा ३६ छे. मध्यस्थ वृत्तिवाला पूज्य कविवरे आ रास रचवामां पोताना हृदयनी विशालता, गुणग्राहिता, उपबृंहता विगेरे गुणोने प्रगट रूपे बतावी आपेल छे. आजनी माफक मताग्रही ए आत्मा न हता, परंतु गुणग्राही-गुणी प्रते नमस्कार करनारा एवा उच्चकोटीना आत्मा हता. आ रासना रचनार पूज्य वाचनाचार्ये संस्कृत, प्राकृत, गुजराती भाषामां घणा ग्रन्थो लख्या छे. तेमज स्तवन, स्तुति, सज्झाय, विनति, पदो, छंदो विगेरे पण घणा रच्या छे. आ रास तेमणे गुजराती भाषामां काव्यबंध रचेल छे. कविता सरल, मीठी, घणी सुंदर अने भाववाही छे. आ रासना रचयिता कविवरनो इतीहास 'श्रीयुत साक्षर मोहनलाल द. देशाइए "समय सुंदर" नामना निबंधमां, विस्तारथी आपेल छे. जाणवानी इच्छावालाओए त्यांथी वांची जोवुं. अत्रे एक बीना अवश्य उपयोगी होवाथी जणाववानी जरुर छेः—आरामशोभा चरित्र-चोपाईना कर्ता पूंजाऋषि अने महाप्रभावक तपस्वी पूंजाऋषि ए बन्ने मुनियो जुदा जुदा छे, कारण के जुदा जुदा कालमां थएला छे. तेमना गुरुओ पण जुदा जुदा छे. आरामशोभा चोपाईना कर्ता पूंजा ऋषि वाचकवर श्रीहंसचंद्रगणिना शिष्य छे. अने महाप्रभावक तपस्वी पूजाऋषि श्रीविमलचंदसूरीश्वरजीना शिष्य छे. प्रथमना पूजाऋषि आरामशोभाचरित्र—चोपाईना कर्ता छे. तेमणे

ते चोपाई वि. सं. १६५२ मां रची छे. अने ज्यारे महा प्रभावक तपस्वी पूंजाऋषि बीजानी दीक्षा विक्रम सं. १६७० मां थएल छे. आवी जुदी जुदी बीना खुलाशाथी जणाती छता पं. लालचंदभाइ भगवानदासे आरामशोभाचरित्रनी प्रस्तावनामां वन्ने पूंजाऋषिओने एक गणी अनेक कल्पनाओ करी छे. भ्रांतिकारक कल्पनाओ करवामां कारण श्रीमन्नाग-पुरीयवृहत्तपागच्छनी पट्टावलीमां उपाध्याय श्रीमेघराजगणिनी बीना एकना बदले बीजाना पाटमां लेखके लखेल होवाथी, एटला मात्रथी पट्टावलीपर तथा श्रीयुत साक्षर मोहनलाल द. देशाइए लखेल ' समयसुंदर ' निबंधना पर अविश्वास धारण करीने महाप्रभावक तपस्वी पूंजामुनिवरनो संबंध कल्पितमानी लेवो ए कोइ रीते ईतीहास वेत्ताओने बंध बेसतु थइ शके नही, अनाभोगथी कोइपण बीना लेखके आगल पाछल लखी होय एटला मात्रथी सचोट पुरावावाली बीजी बीनाओ कल्पित मानी लेवी अने तेना उपर अनेक तर्क वितर्को करवा ते सुज्ञ ईतीहासवेत्ताओने शोभास्पद नथी. टुंकामां एटलुं जणावी पं. लालचंदभाइ भगवानदासने हु भलामण करुं छुं के समय परत्वे आ बीनाने तमो शुधारी लेवा प्रयत्न करशो. वली आ लेख उपयोगी होवाथी अत्रे आपवामां आवेल छे. राजनगर–अमदावाद शामलानी पोळमां शासन पति श्रीमहावीर स्वामिजीनो देरासरजी छे तेमां 'महाप्रभा-वक तपस्वीजी श्रीपूंजामुनिवरनी पादुका छे. तेमां लेख

आ प्रमाणे छे'॥६०॥ संवत १७०८ वर्षे कार्त्तिक सुदि १ शनौ निर्वाण पाम्या ॥ श्रीपार्श्वचंद्रसूरिगच्छे श्रीविमलचंदसूरिशिष्यं ऋषिश्रीपूंजाना पादुका कारापितं। मलिक रायमल्ल, तत्सूत मलिक इंद्रजी, तत्सूत मलिक सूरचंद, तत्सूत शभाचंद श्राविका धनादे कारापितं ॥ ऋषि पूंजानो निर्वाण वरोडा मध्ये ॥ तपनी संख्या ११३२१ उपवास कीधा तप परिसह अभिग्रह कीधा। साहाजिचंदे कीधा ॥' ते पादुका हाल पण प्रतिदिन पूजाय छे. भव्यात्माओ प्रेमथी तेनी उपासना करे छे.

८–श्रीसाधुगुणरससमुच्चय–रास. पृष्ट १६८ थी २२३ पर्यन्तमां आवेल छे. तेना कर्ता–श्रीनागपुरीयवृहत्तपागच्छ नायक युगप्रधान बीरुदधारक श्रीपार्श्वचंद्रसूरीश्वरजी महाराजना मुख्य पट्टधर वैराग्यरंगतरंगितात्मा बालब्रह्मचारी श्रीसमरचंद्रसूरीश्वरजी छे. तेनी सर्वगाथा ४३४ छे. आ ग्रन्थमां पद्यबंध गुजराती भाषामां सरल भाववाही कविता रची छे, अनेक मुनियोना भेदो बताव्या छे, तेमज मुनियोना अनेक गुणोनो वर्णन करेल छे. बार उपांग सूत्रोमां प्रथम उपांगसूत्र श्रीउववाई सूत्र छे तेमांथी संक्षेप रूपे तेनो उद्धार करेल छे. पूज्यसूरीश्वरे बीजा पण ग्रन्थो बनाव्या छे. उपदेशसाररत्नकोश, ब्रह्मचर्यद्विपंचासिका. सत्तरभेदी पूजा. आराधना. पूजाचोविशी. विगेरे स्तवन, स्तुतियो नमस्कारो, सज्झायो, पदो घणा रचेला तेमना जोवामां आवे छे. एमनो संक्षिप्त जीवन ईतीहास आ प्रमाणे छे–एमनो जन्म अणहिलपुर–

पाटणमां श्रीमालीज्ञातिय दोशी भीमाशापीता, व्हालादे माता तेणीनी कूखथी सं. १५६० ना मागसर सुदि ११दिने थयो हतो, अने दीक्षा सं. १५७५ना मागर सुदि ५ दिने थइ हती. वि. सं. १५९९ मां उपाध्याय पद आपवामां आव्यो हतो, अने सूरिपद सं. १६०४मां आपवामां आव्यो हतो, सं. १६२६मां खंभातबंदर नगरमां स्वर्गवासी थया हता. आ पूज्य आचार्यवर्य आत्मार्थी हता. निर्ग्रन्थोमां चूडामणीनुं बीरुद धारण करनार हता. आ ग्रन्थ तेमणे वि. सं. १५९५ ना कार्तिकमासमां रच्यो हतो. एम ग्रन्थना अंतमां पोतेज जणावेल छे. उपरना आठ ग्रन्थमांथी १ लो–श्रीअंजनासुंदरी चरित्र–रास, २ जो–श्रीचार प्रत्येकबुद्ध चरित्र–रास, ३ जो मोहचरित्रगर्भित–अढारनात्रा चोपाई, ४ थो–जगतशेठाणी श्रीमाणेकदेवी-रास, आ चार ग्रन्थो विकानेर निवासी पुन्यात्मा सुदेवगुरुभक्तिकारक सुश्रावक बाबु बादरमलजी जसकरणजी रामपुरीयाए पोताना द्रव्य व्ययथी लखाव्या हतां. अने श्रीरोहिणीनो चोपाई बद्ध--रास, तथा श्रीसाधुगुणरस समुच्चय, आ बे ग्रन्थो पंडित पूर्णचंद्रसर्माए लख्या हता, अने तेमणे श्रीरोहिणी चरित्र चोपाई बद्ध रासनी प्रस्तावना लखी हती, तेमज "श्रीसाधुगुणरस समुच्चय" नुं निवेदन पण लख्युं हतुं, ते आ नीचे प्रमाणे जाणवुं—उपयोगी होवाथी आपेल छे.

"तपश्चर्या, तमाम प्रकारनां दुष्कर्मो आधि--व्याधि-उपाधि अने दुर्गतिनो नाश करवा सर्वोत्तम उपाय छे. तपश्चर्या,

क्षुद्रभयने नाश करवानो महान् बीजमंत्र छे. तपश्चर्या, कठिन कर्मोनी निर्जरा करावानुं सबळ साधन छे. तपश्चर्या, अजरामर पद आपनारो सच्चोट गुरुबोध छे. अने तपश्चर्या, देवदानव आदिने स्वाधीन करवामां प्रशंसनीय आकर्षण प्रयोग छे. टुंकामां कहिये तो प्राणिमात्र पोतानी धारेली धारणामां फतेहनो विजय वावटो फरकाववामां फक्त तप एज उत्तमोत्तम तात्कालिक सिद्धिदाता तंत्र छे !

रोहिणीसुंदरी रोहिणीतपना प्रभावथी आवी पडेलां असह्य दुःखोनो अंत आणी महान् सुख संपदानी भोक्ता थइ, एटलुंज नहीं पण जेने संसारना संतापोनुंज भान थएलुं न हतुं जेथी तेना पतिये तेणिने कह्यां करतां करी बतावानोज अख्तरो अखत्यार कर्यो हतो. तथापि तपनी सानिध्यताथी कशी पण अडचण न नडतां आनंद मंगल वर्त्तायो हतो.

रोहिणी तपना महात्म्यांतर्गत साधु मुनिराजनी हेलना करवाथी, दुगंछा धरवाथी, दुष्टकर्मो आचरवाथी, गर्व करवाथी अने जैनदीक्षा अंगीकार करवाथी कृत्यानुसार मळतां फळोनी फलश्रुति आदिनुं सारिपेठे स्पष्टिकरण कविवरें करेलुं छे ते खास ध्यानमां लेवा योग्य छे. तेमज कवितामां रसालंकार आदि सरस रीते वर्णवी भाविकश्रोताओनुं लक्ष खींचवा ग्रंथकारे अच्छी खंत धरावेल छे, अने तप महात्म्यने एके अवाजे श्रोतागण कबूल करे तेवीज खुबी दर्शावी ग्रंथनी पूर्णाहुति करी छे. जेथी आ लघु ग्रंथ खास जोवा लायक

होवाथी प्रसिद्धिमां आणेल छे. आशा छे के प्रेमीपाठको प्रेमपूर्वक ग्रंथने वांची विचारी सनत्न करी ग्रंथकार, शोधक, मुद्रितकार विगेरे सर्वनो श्रम सफळ करवा उद्युक्त रहेशेज !

हमेशां सोनानी कीमत कसोटी, वक्तानी कीमत श्रोतागण, पुस्तकनी परीक्षा दक्ष परीक्षक अने गुणनी कीमत कदरदान महाशयोज करी शके छे. माटेज आ उत्तम प्राचीन कविता के जेनी छटाभरी रचना वडे सुज्ञ समूहने आनंद मळे तेवी सुद्ध करावी प्रसिद्ध करवा यत्न अमलमां आण्यो छे ते कदरदान साहेबो ध्यानमां लइ तपमहात्म्यमां अने जिनराज प्ररूपित तारक वाणिमां तल्लीन बनी अपूर्व आनंद मेळवशेज !

ली० धर्मोन्नतिचाहक-पंडित पूर्णचंद्र शर्मा.

"आ साधुगुणरससमुच्चयनी अंदर अरिहंत-आचार्य-उपाध्याय-साधु आदिने शुं शुं व्रत तप जप आदि करवुं जोइये ? अने ते पण केवा विधान सह करवां जोइये ? इत्यादि इत्यादि पुष्कळ बाबतो जैनागमोना दोहन पूर्वक एकत्र करी परमोपकारी श्रीपार्श्वचंद्र सूरीश्वरजीना पटोधर श्रीसमरचंद्र सूरीश्वरजीए भविजीवोना हित माटे प्रकाश करेल छे.

आ पद्यबंध लघु ग्रंथमां महान ग्रंथोनुं रहस्य एटलुं बधुं समावी दीधुं छे के तेनुं विवेचन क्या शब्दोमां स्पष्टतापूर्वक करवुं ते बाणभट्टनी कादंबरी अवलोकतां पण योग्य शब्दो हाथ लागी शकता नथी. मतलब के एवुं आ ग्रंथमां गुह्य

बाबतोनुं विवेचन छे, अने ते गुरुगम वगर जिनागमनां शुद्ध वचनो भाग्येज पूर्णपणे समजवामां आवी शके तेम छे.

वांचवुं अति सहेल छे, पण बांत्री विचारी मनन करी ते वाक्योमां रहेलुं गुप्त तत्त्व हाथ करवुं ए अत्यंत दुष्कर छे. आ ग्रंथमांनी बाबतो अति उत्तम, महान् उपयोगी, परमोपकारी अने दरेक सुज्ञ साधु समुदायने खास जाणवा योग्य छे माटे गुरु समीप ए पाठनुं अवलोकन करी अत्यानंद प्राप्त करवो एज. निवेदक-पं. पूर्णचंद शर्मा."

श्री जगतशेठाणी माणेकदेवी रासनी प्रत तथा साधुगुणरससमुच्चयनीप्रत पू० आचार्यदेव श्री भ्रातृचंद्रसूरीश्वरजी महाराज आश्रित ज्ञान भंडारमांथी मली हती तेना उपरथी लखावी मुद्रित करावेल छे. अने ते शिवायना ग्रन्थोनी प्रतो मारी पासे हती ते उपरथी उतारो करावेल छे. बनता शुधी जुनी भाषा फेरववामां आवेल नथी अने शुधारवामां संपूर्ण कालजी राखवामां आवेल छे छतां पण दृष्टि दोषथी अथवा छापना दोषथी कोइ भूल रहेल होय तो ते सुज्ञ महानुभावोए शुधारी वांचवा अने सूचना करवा प्रयत्नवान थवुं के जेथी द्वितीय आवृत्तिमां शुधारो थइ शके. आ ग्रन्थमां विरमगाम निवासी धर्मप्रेमी शेठ खेमचंदभाइ मोतीचंद तरफथी रु. ५० नी सहाय थएल छे, तेमज रु. १० नी सहाय राजनगर सामलानी पोळ निवासी शा. लालभाई जोईताराम तरफथी अने रु. १० नी सहाय धांगधरा निवासी गांधी जीवणभाई नानजी तरफथी थएल छे. आ ग्रन्थ छपाववामां आर्थिक

सहाय संपूर्ण न मलवाथी तेनी कींमत कार्यकर्ताओ तरफथी खरच पूर्तिज राखवामां आवेल छे.

ली. पंडित प्रवर महर्षि श्रीमुक्तिचन्द्रगणिवरना सुशिष्य-प्रातःस्मरणीयविश्ववंद्य पू० आचार्यदेव श्रीभ्रातृचन्द्रसूरीश्वरजी महाराज साहेबना शिष्य मुनिसागरचन्द्र.

वि. सं. १९८७ ना वैशाख वद ११ बुधे
सामलानी पोळ अमदावाद.

जाहेर खबर.

१—“षट्द्रव्यनयस्वभावादिप्रकरण संग्रहः” नामाग्रन्थ. जेनी अंदर छ द्रव्य सात नय सप्तभंगी विगेरेनुं स्वरूप अत्यंत मनोहर टुंकामां सरलताथी बतावेल छे, अने जेनी अंदर धर्म संबंधीना व्याख्यानो खाश वांचवा लायक छे बीजा पण घणा प्रकरणो जेमां छे. ४० फारमनो सुपरॉयल कदमां सारा कागल पर शास्त्रि टाईपमां छपावेल छे. कींमत नामनी रु. १ छे. पोस्ट खर्चना आना छ अलग.

२—“सुरदीपिकादिप्रकरण संग्रहः” नामांग्रन्थ, जेमां जैन सिद्धांतोनुं रहस्यज बतावेल छे. ३५ फारमनो दलदार शास्त्रि टाईपमां पाका पुंठाथी बंधावेल कींमत नामनी मात्र रु. १ छे. पोस्ट चार्जना आना पांच अलग समजवा.

उपरना बन्ने ग्रन्थ खरीदनारने नीचेना ७ पुस्तको भेट आपवामां आवशेः—१ सुधर्मागच्छपरीक्षा. २ शत्रुंजयतीर्थादिस्तवन संग्रह. ३ श्रीजैननमस्कारादिसंग्रह. ४ पूजा संग्रह. ५ पोसहविधि. ६ बारभावना. ७ बारव्रतनी टीप.

ठे. शा. मणिलाल वाडीलाल शामळानी पोळ
अमदावाद.

शुद्धिपत्र.

पृष्ठ.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१४	१३	लोप्या	लोप्यो
१९	८	वियाग	वियोग
२२	४	का चोर	को चोर
८४	२१	आबे	आवे
११०	१५	भणा	भणी
११८	९	सिशेष	विशेष
१३४	१४	संलेणेना	संलेखना
१३४	२०	लोफपाल	लोकपाल
१३८	५	सुणा	सुणो
१३८	१४	नमा	नमो
१३८	१८	हाय	होय
१४२	७	भगतां	भमतां
१४३	१७	घणुह	धणुह
१५६	१०	धर्था	धर्या
१८७	१३	चारित	चरित
२००	९	अनाण	नाण

आचार्यश्रीभ्रातृचन्द्रसूरिग्रन्थमाला पुस्तक-३२.

महामहोपाध्यायश्रीरत्नचारित्रशिष्यश्रीमुनिराजश्रीविमलचारित्रगणीकृत-

श्रीअंजनासुंदरीचरित्र-रास.

संशोधकः-मुनिसागरचंद्रः

(श्रीशांतिनाथ प्रभुने नमस्काररूप मंगल करे छे.)

शांतिकरण जग जाणिये, विश्वसेन कुलचंद; भाद्रवपद वदि सातमें, चवीआ जगदानंदः-आनंद अचिंत्रा हुओ अति घणो जेठवदि तेरस दिने, जनम पाम्या इंद्र ओच्छव कीध सुरगिरि शुभमने। गर्भथी जेणे मारी टाली शांति थइ आणंदिया, स्वजन देखत तात रंगें शांति जिन नामज दिया ॥१॥ मंडलपति पदवी लही, पहिलुं भोगवि भोग; चक्रवर्तिपद पामिया, मिलीयो सहु संयोगः-संयोग मिलियो साधि षटखंड रतन सवि नवनिधि लह्या, मुगटबद्ध बत्रीस भूपति सहस सेवे गहगह्या। जेठमासिइं कसिण चौदसे इंद्र चोसठ आविया, कीध ओच्छव दीख लीधी वर्णवे गुण भाविया ॥२॥ पोसमुक्कि नवमी दिने, पाम्यो केवल नाण; जेठबहुल तेरस तिथें, प्रभु पाम्यो निर्वाणः-निर्वाण पाम्यो शांति जिणवर सिद्धिपद सुख संपदा, पामिया तसु चरण प्रणमो भगतिस्युं

भवियण मुदा। तेह स्वामी सेवता सही रोग नावे तनि कदा, मनह मनोरथ सर्वपूरण सिद्धि लहिये सर्वदा ॥३॥

दूहाः-

सुह गुरुचरण कमल सदा, वंदुं धरि आणंद। भविय कमल पडिबोहवा, उदयो तेजि दिणंद ॥४॥ चिहुं प्रकार धर्म्म वर्णव्यो, तिहुयण जन आधार। दान शील तप भावना, करि तरीये संसार॥५॥ धर्मे धण कण संपजे, धर्मे मोटिमराज। धर्मे जश महिमा घणो, धर्मे सीझे काज ॥६॥ धन सुबाहु धन्नो सुणो, शालिभद्र कयवन्न। श्रीश्रेयांस कुमरें दीयो, दान लहियो फल पुन्न. ॥७॥ सेठ सुदंसण नेमिजिण, थूलभद्र नागिल्ल। शील लील साधी खरी, फल पाम्यो आगिल्ल ॥८॥ ऋषभ वीर धन्नोयती, तपीयो तप उदार। भरत अनाथी हरिणले, भावी भावना सार ॥९॥ अंजना सुंदरी भली, पाल्यो शील उदार। शीलबलें सुख संपदा, पामी निज परिवार ॥१०॥ अंजना सुंदरी कवण, किम पाल्यो तिण शील। गाम ठाम केणे हवि, किम पामी सुख लील ॥११॥

ढाल-चंद्रायणनी अथवा चोपाइः-

एक लख जोयणनो विस्तार, जंबूद्वीप ते अति उदार। भरत क्षेत्र दक्षिण दिसि लहीये, भरत विचें वैताढ्यज कहीये ॥१२ वैताढ्यगिरि मेखला सुवखाणुं, तिहां मल्हादन पुरवर जाणुं। गढ मढ मंदिर पोलि पगार, सप्त भूमि उंचा आगार ॥१३॥ चोरासी चहुटां चो साल, वणिजो वणिज करे सुविशाल।

व्यवहारीयां कोटीधज लाख, लाखीणा मुखि मधुरी भाख ॥१४॥ परोपगारी दीनदयाल, दृढकच्छो शुभचित्त मयाल । असूर सवार भोजन अनिवार, जाचक पंथी जन आधार ॥१५॥ यती व्रती अभ्यागत सार, आव्या पामे आहार अपार । चाडी न करे गुण अन्नदात, नहु जाणे चोरीनी वात ॥१६॥ आपथुइ परनिंदा टाले, जिनधर्म आतम हित मति पाले । देवधर्म गुरु भगति साच, व्यवहारियानी वसे गुण जाच ॥१७॥ वाव कूआ सरोवर विश्राम, पुरपाखलियां बहु आराम । लविंग पूंग पुन्नाग प्रियंग, अरजुन खजूर साग नारंग ॥१८॥ शाल्मर बीजपूर कृतमाल, धव सहकार अशोक प्रियाल । नकूमाल मागधी श्रीताल, चंपक अगर तगर हंताल ॥१९॥ खदिर बदिर जंबू जंबीर, वड पींपल पींपरि वानीर । कणवीर रुद्राख द्राख मचकुंद, चारोली नागवल्ली कंद ॥२०॥ अखोड पटोल उंबर अंकोल्ल, वेतस सल्लकी वंश किंकोल्ल । कर्णिकार पलास मंदार, सिंदुवार देवदार कल्हार ॥२१॥ उपनस दाडिम रायणि वारणा, बीजोरी आवलीनें करणा । ओढव कोठ सिसमनें गुंदी, कडाहिया नालेरी नंदी ॥२२॥ मरि डोडा टींबरणि पारिजात, आंबली पाडल बकुल विख्यात । केतक सेवंत्री जूही जाइ, पदम तिलक मालति गुण थाइ ॥२३॥ फूल्या फल्या मंजरि मन मोहे, शीतल छाया बहु गुण सोहे । एहवा वृक्षनणो वनखंड, जिहां सुख पामे जीव अखंड ॥२४॥ सुकुलिणी सुंदरि सुविचार, नमणी खमणी घर घर नार । सहदेशी

परदेशी आवे, वंछित लाभ जेणे पुर पावे ॥२५॥

दूहाः-

तिण नगरि राजा अछे, प्रल्हादनामें भूप। सूर वीर महा साहसी, दीसे अद्भुत रूप ॥२६॥

ढाल-(लाल मोहन मेरे जीउ वसेः-)

न्याये लोक पाले सदा, दुज्जण जण खय कालोरे, दानें जलधरनी परें, वरसे अतिहिं दयालोरे ॥२७॥ धर्मे कीरति विस्तरे, धर्म करो सहु कोइरे, जंबूस्वामी तणी परें, रिद्धि वृद्धि सुख होइरे ॥२८॥ धर्मे० आंकणी० ॥ बंधव पर नारी तणो, विनय विवेक विचारोरे। वैरी टाल्या देशथी, पुण्यें जग जयकारोरे ॥२९॥ धर्मे० प्रतापे अति घणु तपें, जिम उगतो भाणोरे। मित्र वर्ग आणंदणो, जिम चंदन सुखठाणोरे ॥३०॥ धर्मे० पात्रापात्र विचारवा, बुद्धिए सुरगुरु सरिखोरे। न्याय मार्ग चलाववा, रामचंद्र सम परिखोरे ॥३१॥ धर्मे० सत्यें युधिष्ठिर समो, रिद्धिमें श्रीपति जाणोरे। लक्षण व्यंजन गुण भर्यो प्रल्हाद नरिंद वखाणोरे ॥३२॥ धर्मे० तसु राणी पद्मावती, रूपें रंभ शमाणीरे। अमृतवाणी उचरे, जेहवी हुइ इंद्राणीरे ॥३३॥ धर्मे० प्रियस्युं प्रेम धरे घणो, पहिरे बहु सिणगारोरे। चाले गजगति मलपती, नाणे मन अहंकारोरे ॥३४॥ धर्मे० केलवे चोसठकला, अंग उवंग सुप्रमाणोरे। नयण अमीरस वरसती, लावण्य गुण अहिठाणोरे ॥३५॥ धर्मे० नमणी खमणी बहु गुणी, बिहु पखे वंश विशुद्धरे। सरजी लाभे सूरीया, रणि

धणु हाथरि मुद्धरे ॥३६॥ धर्मे० सेजें सुतां एक दिने, दीठो सिंह सुपन्नरे । राणी जागी हरखीयां, जाग्यो पूरव पुण्यरे ॥३७॥ धर्मे०

दूहाः-

चिंतें पुण्यज प्रगटीयो, दीठो सुपनें सीह । होस्ये मुज सुख संपदा, आव्या उत्तम दीह ॥ ३८ ॥ गजगति सुंदरि चालती, आवी राजा पास । जगाडी संभलावीयो, शुभ सुपन्न उल्हास ॥ ३९ ॥ निसुणी राजा चमकीयो, भाषे सुपन विचार । राजरिद्धि संपत्ति भली, हुस्ये पुत्र उदार ॥ ४० ॥ सुपन पाठक पूछी लह्यो, तेहज अर्थ विशाल । डोहला रुयडा उपजे, पहुचाले (पूर्ण करे) ततकाल ॥ ४१ ॥

॥ ढाल-सोभागी सुंदर जनमीयोए-एदेशीः- ॥

शुभवेला सुत जनमीयो, वाजा वाजे तूर । ओछव सबलो मंडीयो, विस्तरे जस भरपूर ॥४२॥ गुणाकर कुंवर कुलतिलोए, अवतर्यो हरख अपार । गुणाकर० ए आंकणी०॥ भाट छंद छंदे भणे, गाए गंधर्वगान । धवल मंगल गावे गोरडि, दान दिये बहुमान ॥ ४३ ॥ गुणा० वधावा आवे घणा, सय सहसने लाख । वलता अधिका ते दीये, मुखे भणे मधुरी भाख ॥४४॥ गुणा० बंदिवान छोडावीया, वाजे पडह अमार । दसदिन दंड मूकावीया, धन खरचे धरबार ॥४५॥ गुणा० मापां तोल वधारियां, सणगार्यां सवि हाट । ठाम ठामे नाटक रचे, जोवे मली जण घाट ॥४६॥ गुणा० कुटुंब न्याति सवि

नहुंतरी. दिवस बारमे चंग । जिमाडी मंडप वडे, पहिरावे अति रंग ॥४७॥ गुणा० न्याति सहुको देखता, अवनंजय सुत नाम। थाप्युं रूपि हरावीया, कामदेव गुणधाम ॥४८॥ गुणा० चंपक-तरु जिम गिरिवरे, वाधे कुंवर तेम । लक्षण व्यंजन शोभतो धर्म ऊपरे बहु प्रेम ॥ ४९ ॥ गुणा० कलाचार्यपासें मुदा, पाठवीयो ग्रंथ अनेक । कलाबहुत्तर केलवे, जाणे विनय विवेक ॥५०॥ गुणा० कुसंगति न करे कदा, व्यसन सात नही लेश। विषय कषाय न व्यापीयो, कोयस्युं न करे क्लेश ॥५१॥ गुणा० भण्यो गुण्यो बौद्धो थयो, विद्यावंत अपार । नवां कवित जोडे घणां, समस्यानो भंडार ॥५२॥ गुणा०

(दूहाः-)

बालपणाथी आदरी, न भणाव्यो संतान । माता पिता ते जाणज्यो, निश्चें सत्रु समान ॥५३॥ हंसमाहि जिम बगलडो, नहु शोभे निरवाण। पंडित गोठें मूढनर, तिम नहु शोभे जाण ॥५४॥ पंचवरस सुत लालीये, ताडे दस नहु भोल। मित्र समो सुत जाणीये, वरस थयां जब सोल ॥५५॥ पहिले वय न भण्यो कला, बीजे धन न कमाय। त्रीजे धर्म न संचीयो, चोथे किस्युं कराय ॥५६॥ ज्यांनुं धन विद्या गणो, कुरूपतणों पण रूप। चोरे नवि जाये हर्या, विद्या अकल सरूप ॥५७॥ रूपहीण जो पिण हुवे, वस्त्र विभूषण रहित। तो पण सज्जन सभा मिल्यो, शोभे विद्या सहित ॥५८॥ सहदेशें नृप मानीये, नहु परदेश विशेष। पंडित सघले मानीये, सहदेशे परदेश ॥५९॥ तिण

पवनंजय बहुकला, सीख्यो गुण भंडार। सूरो बलीयो साहसी, उपगारी उदार ॥६०॥ सप्पुरिस कंगह उवमिये, भण! कज्जे कवणेण। जिम जिम वट्टत्तण लहे, तिम तिम नमे सिरेण ॥६१॥ नर नरिंदा ऋषि कुलां, वर कामिनी कमलांह। एतां आदि न जोइये, गुण जोइ जे तांह ॥६२॥

(ढाल-उत्तराध्ययनें बोल्या सोलमेजीः-ए देशी.)

वैताढ्यगिरिनी पहिली मेखलाजी, दक्षिण श्रेणियें जाणि। अंजनपुर श्रीनगर वखाणियेजी, जिनमंदिर मंडाणि ॥६३॥ पुण्यतणा फल परतख देखियेजी, जिहां छे सुखिया लोग। धण कण कंचण गढ मढ मालियांजी, पुण्यें सहू संयोग ॥६४॥ पुण्य० आंकणी०॥ पापनिकंदन कुलमंडण वडोजी, धीरम मेरु गिरिंद। राज धुरंधर राज करे तिहांजी, अंजनकेतु नरिंद ॥६५॥ पुण्य० साम दाम विधि भेदज दंडयुंजी, जाणे चार उपाय। भुजबले वेरी आण मनावीयाजी, सेवक प्रणमे पाय ॥६६॥ पुण्य० जेहनें राणी छे अंजनसुंदरीजी, शीलें शीता जाणि। लखमी गंगा जेहवी सरस्वतीजी, अनोपम गुणनी खाणि ॥६७॥ पुण्य० सुहणे देखे शुभ अंजनलताजी, राणी सेज मझार। पूरे मासे थ्ये पुत्री जिणीजी, रोगरहित अवधार ॥६८॥ पुण्य०

(दूहाः)

पुत्री जाई गुणभरी, कमल गरभ सुकुमाल। जोतां त्रिपति न पामिये, दीसे रूप विशाल ॥६९॥ दिवस बारमे आवीये, सजन जिमाड्या ताम। अंजनासुंदरी एहवो, दीधुं कुंवरी नाम

(ढाल-चोपाइः-)

कन्या नाम अंजनासुंदरी, लक्षण व्यंजन लावण्य भरी। कन्याना पुख बे निर्मलां, चंद्रकला जिम चडती कला ॥७१॥ नवजोवन ते थइ रमणीक, जाणे अमृतनदीनी नींक। कुमली कणयर कंबा जिसी, अंगे कोमल दीपे तिसी ॥७२॥ सीस शिखर उन्नत आकार, सोल कला ससीहर सुखसार। सरली चिवली कंठे उछाह, गंग यमुन सरसति प्रवाह ॥७३॥ नेत्र कमलदल सोहे चंग, नासा गरुड चांच जिम तुंग। अधर विद्रुमना रंगसमाण, जाणे हर्या मृग लोयण बाण ॥७४॥ कुंडल पहेर्या काने अखंड, वीसिगतनु सम वेणीदंड। भमहि दंडनो वक्राकार, जाणें इंद्र धनुष अवतार ॥७५॥ निलवट दीपे आधोंचंद, मांसल उन्नत खंध अमंद। दंत श्रेणी दाडमनी कली, पदम पत्र जिव्हा पातली ॥७६॥ हृदय विशाल उन्नत उदार, ठविया शुभ मोतीना हार। कनक कुंभ पयोधरनवा, जाणे लावण्य रस पूरवा ॥७७॥ बाहु जुगल लांबा सुकुमाल, कोमल कुसमतणी जिम माल। कनक चूडि विहुं कर सोहिये, देखत तरुणी मनमोहीये ॥७८॥ सोहे कर पल्लव अंगुली, कटिलंक सीहनी परे वली। नाभी मंडल जेहवो कूप, साथल कदली थंभ सरूप ॥७९॥ पुष्टां जानु जिस्यो डाबडो, जंघ जुगल वर्तुल गुण वडो। कूर्म्म पृष्ठ जिम उन्नत पाय, कन्या चंपक वर्णि काय ॥८०॥ पाताल कन्या विद्याधरी, के इंद्राणी एह अवतरी। एहवी कुमरी हुइ सुजात, चित्त विचारे माता

तात ॥८१॥ एह कन्या न घटे राखवी, परणावी जोइये वर कवी। कन्या वरनी सरखी जोड, जो हुवे तो पहुचे कोड ॥८२॥ अतिनेगलो निरधन अतिशूर, दीख्या लेवा वांछे क्रूर। मूरख व्यसनी वरने सुता, डाहे नवि देवी जोवता ॥८३॥ कन्या वर जोवे धन मात्र, पिता जोवे पंडित वरधात। बंधव ते जेहवाये थोक, सरस जिमण बीजा सवि लोक ॥८४॥ प्रभुता विद्या शील शरीर, लखमी कुल जोवन वयधीर। कन्या दीजे एह गुण जोइ, पछे निलाडडे लख्युं ते होइ ॥८५॥ अंजनकेतु तणी कुंवरी, कन्या वात सघले विस्तरी। कुंमरीनुं छे अद्भुत रूप, को कही न सके तास सरूप ॥८६॥ कुमरी वर जोवे सुकुमाल, दानी मानी गुण सुविशाल। आप समाणो नहु आकुलो, धर्म जाण नहु ओछांछलो ॥८७॥ ठाम ठामनरवर जू जूआ, उपाउ चित्ते चींतवता हुआ। कन्या केम पामीसुं एह, साची लखमी नहुं संदेह ॥८८॥ माय बाप गुरु माने गणे, देव धर्म उत्तम गुण थुणें। दीनदयाल वर्ते उपगारि, ते नर पामे उत्तम नारि ॥८९॥

दूहाः-

कुमरीना गुण विस्तर्या, रंज्या राजकुमार। कुमरी परणवातणा, उपक्रम करे अपार ॥९०॥

ढालः-वेलीनीः-

देशदेशना राय विचारे कन्यारूप अपार, उपाय करीनें जो परणीजे तो सफल अवतार। आलेखावी पोता केरुं रूप निरुपम

पट्ट, ते लेई निज सुभट पठावे जेहनां वचन सुघट ॥९१॥ राजा राणी रूप निरखे चित्रपट्ट आलेख्या, कुलबल विद्याशील रिद्धि गुण नयणे निरखी परख्यां। एक एकथी रूपज अधिकां पट जोतां मनरंग, पवनंजय भविष्यदत्त विहुंना पट अति चंग, ॥९२॥ मंत्रीसर देखाडिया ते गुण देखीनें धार्या, तेहिज बे चित्रपट्ट अनुपम बीजा पट सहु वार्या। पवनंजय भविष्यदत्त बे सरखा वर जाणी, पूछ्या रायें प्रधान कहो वर अधिको कवण विनाणी ॥९३॥ पवनंजयथी सही अधिकेरो, भविष्यदत्त विचारो, पुण कारण भूमीपति निसुणो मनमांहि अवधारो। अठारम वरसें दीख्या लेइ जास्ये मुगति मझार, एह वचन ज्ञानीए कहियों संभलराय तिवार ॥९४॥ भविस्यदत्त कुंवरस्युं वीवाह राजाए नवि कीधो, अलप आउ जाणीनें ततखण तेहनें उत्तर दीधो। इण अवसर मोटे मंडाणें राय विद्याधर मात्र, नंदीसरनी यात्रा काजें तिहां पहुता शुभ गात्र ॥९५॥ अंजनकेति प्रल्हादरायनो नंदन तिहां ते दीठो, पवनंजय कुंवर अति सुंदर रायतणे मन बेठो। जोग जाणता तें कुमरीनो तिहां मेल्यो विवाह, जोसी पूछी लगन तणो दिन लीधो अति उच्छाह ॥९६॥ आपणडे घर आव्या कुशलें यात्रा करि परसीध, वीवाहनी सामग्री उत्तम अति विस्तारें कीध। अंजनकेतु नरिंद आणंदें तिहां पुत्री वीवाह, करवा ओछव मंड्यो अतिघणो आणी अति ऊमाह ॥९७॥ पुरबाहर श्रीमानस सरवर जोइ उत्तम-ठाम, तिहां मंडप ऊतारा दीधा दीसे अति अभिराम। लगन लेख

लेई मोकलिया सेवक पोता केरा, प्रल्हादराय तेडाव्या हियडे आणी हरख घणेरा ॥९८॥ प्रल्हादरायें निज सेवक साथे कंकोतरीना लेख, मूंकी तेड्या सगा सजन सहु ते आव्या शुभ वेष। सेनास्युं रथ पाएक घोडा मोटा बहु मातंग, पुत्र भणी परण्या चाल्या राजा आणी रंग ॥९९॥ बाहिर अंजनपुरि मानससर आविनें उत्तरिया, अंजनकेति प्रल्हाद भणी बहु अति आदर तव करिया। अंजनकेतु मंडे अति झाझी जिमणवार आटोप, असन पान खादिमने सादिम नानापरे आरोप ॥१००॥ भोजन करि बेठाव्या सहुको अधिक छांटणा कीध, चंदन केसर बास गुलालें तिहां बहुलो जस लीध। कपूर पूर मुखवास सुरंगा दीधा बहु तंबोल, फूलमालज बांधि अनोपम देइ कर्या रंग रोल ॥१०१॥ इण परे मलता हलता बहुपरे महाओछव सुविशाल, वीवाहें साजण जण मिलिया मनमांहि हरख रसाल। बालमित्र पवनंजयकेरो ऋषभदत्त सुजात, अंतरंग प्रीति कुंवरस्युं आणे प्रेम विख्यात ॥१०२॥

दूहाः-

मित्रडा सो मित्र करि, जेहवा फोफल भंग। आप करावे कटकडा, पर हरखावे रंग ॥१०३॥ मित्रज इकक दोइ करि, बहुले चडे कुनाम। धोबी केरा कुंड जिम, सुंदिम सारूं गाम ॥१०४॥ साजण सूरा च्यार करि, परिहर कायर सृष्टि। वांके विसमे दीहडे, ते च्यारे चोसट्ठि ॥१०५॥ किं किजे तिण सज्जणें, भीड न भज्जे जेण। अजा कंठ पयोहरा, दूध न पाणी तेण॥

॥१०६॥ बहु मींता बहु बोलणां, घर घर भमे जिम श्वान। ते माणस नहु धारीये, जुहुइ हियडे सान ॥१०७॥ लालच देखाडी करी, ल्ये पर मनकी वात। कुलवंत तेहस्युं नहु मिले, तनु मन साते धात ॥१०८॥ हंसानें सरवर घणां, पुष्प घणां भमराह। साजणनें सप्पुरिस घणां, देस विदेस गयांह ॥१०९॥ जे मन तुझ मिलेइ, ते मन बिजाहि मिलेइ। कांहु कण खूटे, बीझ न खाजे बांधरा ॥११०॥ भूईऊपर भमतेहि, मिलीइ जु मरीये नही। नागडा नवखंड नेह, सगपण संधि न त्रोडीये ॥१११॥ जे जड जडी सज्जने, रेहि नेहि अपार। ते जड किमे न ऊखडे, जो लक्ष मिले लोहार ॥११२॥ हियडुं दाडिम कुलीय जिम, भरीयुं तुम्ह गुणेण। अवगुण एक न सांभरे, वीसारी जे जेण ॥११३॥ मृगमद चंदन सज्जनां, ए त्रिहुं एक स्वभाओ। जिहां जिहां करे निवासडो, तिहां तिहां परिमल ठाओ ॥ ११४ ॥

(ढाल-मानवनुं भव पामीयेए ए देशीमां:-)

तिण खिण कहे ऋषभदत्त, पद्मनंजय सुण तुं मित, एक चित्त वात हियानी संभलोए। परण्या पछे तुम्ह प्रेम, मुझस्युं नही हुए एम, पूर्वजेम हियडा भितरें अटकलोए ॥ नरराचे नारी नयणें, रमणी जगमोहे नयणें, तिहुयणें रामा मोहन वेलडीए। नर तें वस आणे नवी, भावभगती बहु साचवी, अभीनवी करति आगल गेलडीए. ॥११५॥ कहे कुंवर तुमथी कोई, बीजो मुझ मनि मम जोई, सहू कोई छे पुण तुम्हस्युं प्रीतडीए। दिन २ चडती जाणिज्यो, एह वात मन आणिज्यो, माणिज्यो संसय रेह

कनके जडीए ॥ कहे कुंवर आवो तिहां, जोइ कन्या छे जिहां, तिण इहां विलंब न कीजीए अध घडीए । जोईये कन्या कहेवी, कांने सुणी छे जेहवी, तेहवी दीसे निजदृष्टिए चडीए ॥११६॥ जेम कोई जाणे नही, मित्र बिहे छाना सही, सामही विमानें बेसी करीए । चाल्या रातें अंधारी, वस्त्रधर्या नीलांभारी, संगारी कन्या गुण हियडे धरीए ॥ सखी साहेली परिवरी, ते अंजना सुंदरी, गुणभरी दीठी अमरी जेहवीए । मित्र बिहे अति-हरखीयां, कन्याना गुण निरखीया, सरखीआ जेहवी निसुणी तेहवीए ॥ ११७ ॥

दूहाः-

प्रासाद गज शुंडा जिसी, वेणी दंड समान । अधम पुरुषस्युं प्रीतडी, हीणी थाए निदान ॥ ११८ ॥ नावा अनें सरवलां, वृक्ष नदी सम जाण । उत्तम नरस्युं प्रीतडी, वाधे इण अहिनाण ॥११९॥

ढाल-उपरनीः-

अंजनास्युं तव अवदात, कहे साचीवात, समधात पहिलो तुज काजें लहीए । राअें विचार्यो जे वर, अढारम वरसें सुंदर, मुनिवर गइ जासे मुगतें सहीए ॥ ते वरनो केहो काम, नवि लीजे तेहनो नाम, अभिराम पण एह अवगुण धारीओए । आउ अलप सुख संयोग, अधूरा नरना भोग, ए योग जाणी रायें वारीयोए ॥१२०॥ कन्या कहे निसुणो सखी, अमृत थोडुं ओलखी, सारखी लीजे जेहथी गुण घणोए । किहां रतन किहां

पाषाण, किहां मूर्खनें किहां जाण, सविनाण आगर जे बहु गुणतणोए ॥ एहवो वर पुण्यें मिले, शिवगामि अफलां फले, दिनवले जेहथी भवदुख नामीग्रेए। चंदनका कटकासार, न भला काठतणा भार, उद्धार तेहथी शिवसुख पामियेए ॥१२१॥

दूहाः-

चंदनकी कटकी भली, नहु काठका भारा। सप्पुरिसकी घडी भली, मूरखस्युं समारा ॥१२२॥ अगरतणे अहिनाणि, पीडतां परिमल धरे। ते साजण संसार, जोया पण जडीया नही ॥१२३॥ जलेंर कमल न नीपजे, वनेर अगर न होय। रूपें को राचे नही, गुणराचे सहु कोय ॥१२४॥

ढाल-उपरनीः-

एम संभली कुंवर कोप्यो, हणवा खडगज आराप्यो, गुण-लोप्या एह नारीनें मारिस्युंए। मुज उपरे नाणे नेह, बीजास्युं आणे तेह, तिणे एह नारी नाद उतारिस्युंए ॥ ऋषभदत्ते कुंवर धार्यो, स्त्रीहत्यापातक वार्यो, संभार्यो न्याय पंथ नवि खंडियेए। स्त्रीअणपरणी पारकी, हणतां थइए नारकी, खारकी अधमव्रणी मति छंडियेए ॥१२५॥ रंगभंग करि नव जइये, छाना किम प्रगटा थइये, निज हइये विचारणा कीजे खरीए। म कर अविचार्युं काज, विचारतां वाधे लाज, तिण आज राखि माम गुण आदरीए ॥ अछे बोलो गारणा, नहु कोइ चिरंजीवणा, सवितणा तरुछाया जिम दिन फिरेए। माणस निज पाणी राखि, गयुं नावे दीधे लाखि, फलसाखि नालेरीना जल

भरेए ॥ १२६ ॥

दूहाः-

अछे बोल ऊगारणा, चिरजीवणा न कोइ । जिम रूंखां तिम माणसां, छांह फिरंती जोइ ॥१२७॥ माणस पाणी आपणुं, राखि सकें तो राख । पेके पाणी ऊतरे, बहुडि न आवे लाख ॥ १२८ ॥

गाहाः-

सिरिन्नालेरसमाणउ, तिहूयणमज्झंमि तरुवरो नत्थि । नियनीर रखणट्ठा, तिन्नि विवाडी कया जेण ॥१२९॥

ढाल-उपरनोः-

पाछो खडग घतावीयो, पडीयारियें थिरठावीयो, आवीयो थानकी मित्रें प्रेरीयोए । प्रभाते उगीयो सूर, गाजीया मंगलतूर, भरपूर हरख तरुवर अंकुरीयोए ॥ सुहासिणि मिलि न्हवरावे, भूषणवरने पहिरावे, मनभावे मित्रभणी कुंवर कहे ए । छंड्यो कन्यानो राग, फोकट नहु ओछव लाग, वडभाग सहुको मर्मज नहु लहेए ॥१३०॥

दूहाः-

ए कन्या परण्युं नही, कुंमर इम कहे जाम । सुहासिणी जईने कहे, मातपितानें ताम ॥१३१॥

ढाल-थावच्चा कुंवरनीः-

(माय अम्हे लेस्युं संजमभार-एदेशी)

पदमावती माता एम बोले, सुण पवनंजय सार। कुंवर

तुछे जगमांहि सुरो, अम्ह आशा पूरि अपार ॥१३२॥ कुंवरजी मानो कहण अम्हारो, जिम सीझे काज तुम्हारो। कदाग्रहनी मतिवारो, उत्तम गुण हियडे धारो ॥१३३॥ कुंवरजी० (आंकणी) अंगीकार करी मम छंडो, कन्या परणो जाइ। सायर कहिये लीह न लोपे, सींह तृणां नवि खाइ ॥१३४॥ कुंवरजी० पिता सुणी आवे सुत पासें, कुंवरने समजावे। नहि परणुं ए वात कहतां, अधिको अपजस आवे ॥१३५॥ कुं० फोकट उतकट हठ न कीजे, अवश्य करो एह काज। अम्ह जीवतां अवर कुण राणो, कन्या परणे आज ॥१३६॥ कुं० अमृतनो रस कोण नवी चाखे, धन आवतो कोण ठेले। रतन हाथथकी कुण नाखे, तिम कन्या कुण मेल्हे ॥१३७॥ कुं० बहुराजा कन्याएं मोह्यां, परणो हरख लहंत। वडातणां वचन कुलवंत, नवि लोपे एकंत ॥१३८॥ कुं० एम भाषि कुंवर समजाव्यो, न्हवरावयो शुभनीर। वस्त्र विलेपन मंडन सोभे, जेहवो रावन वीर ॥१३९॥ कुं० वरघोडे ते जोरे चडाव्यो, पाखलि बहु असवार। सुहासिणी सिणगारी गावे, धवल मंगल उदार ॥१४०॥ कुं० मुगट भर्यो वर मस्तक सोहे, अंगे विभूषण होइ। मस्तक उपरे छत्र धराइ, चिहुं दिसि चामर जोइ ॥१४१॥ कुं० भट्ट चट्ट जय जय एम बोले, वर सुरपति सम चंग। बहुपरे वाजां वाजे आगाल, मुख तंबोल सुरंग ॥१४२॥ कुं० वरनें सामहिओ अति सबलो, आवे बुद्धि निधान। दान मान गुणगान अनोपम, कीजे बहु सनमान ॥१४३॥ कुं० वरराजा आव्या ते तोरण, सासू पुंखइं आवि।

कर मेलावो कीधो हरखे, माय रहे थीर ठावि ॥१४४॥ कुं० वरकन्या बे वइ सणगार्यो, आण्यां चोरी माहि। रूडे दिवसें रूडे मुहूर्ते, परिणाव्यां उछाहि ॥१४५॥ कुं० वरकन्या बे सोभागी, दीसे सरखी जोड। सहु वखाणे वरकन्यानां, पहुतां मननां कोड॥१४६॥ कुं० इंद्र इंद्राणीनी परे शोभा, पामे वर वहु दोइ। अंजनकेतियें मान्या अतिघण, सतकार्या सहु कोइ ॥१४७॥ कुं० वोलाव्या प्रल्हाद नरेसर, अंजनकेतिएं जाम। सगा सणी-जास्युं निज मंदिरे, कुशले आव्या ताम ॥१४८॥ कुं० सगा सहु सनमान्री वाल्या, रायप्रल्हादे तेह। विनय वहे सासरियां केरा, कन्या ते गुणगेह ॥१४९॥ कुं० शीलवती वहु सहुनें लागे, अति वल्लभ ससनेह। प्रियभणी ते न गमे दीठी, चंडाली जिम एह ॥१५०॥ कुं० ते क्षतराये पूरवभव केरां, आव्या उदये कठोर। पापतणा फल एहवा लहीये, कांइ न चाले जोर ॥१५१॥ कुं० कोपे चडियो पवनंजय कुंवर, न लीये नारी नाम। पण अंजना जे धर्म न मूके, मर्यादानां काम ॥१५२॥ कुं०

—दूहाः—

इण अवसर लंकाधणी, रावण राजा हेव। वरुण रायनें जीप्पवा, वांछे ते ततखेव ॥१५३॥ ततखिण सेवक मोकल्या, तेड्यो रायप्रल्हाद। शुद्ध सहायनें कारणें, आणी मन आल्हाद ॥१५४॥ रणढक्का देवाडि करि, सेवकस्युं ततकाल। सज कीधी सेना सबल, सनध बद्ध नरमाल ॥१५५॥ पवनंजय कुंवर

तदा, रण चडता निज ताव। वारी कहे स्वामी तुम्हे, बेठा रहो अवदात ॥१५६॥ मुझ छतां तुम्हनें सही, चडवो न घटे स्वाम। बीडुं दियो मुझनें इहां, रण चडस्युं तुम्ह ठाम ॥१५७॥ हठ करतां बीडुं दियुं, जइने प्रणमे प्राय। अंजनासुंदरि प्रभस्युं आगल उभी थाय ॥१५८॥ जाणे सीख मुझनें दीये, सामुं जोवे नाह। कहण कहावण कांइ कहे, तो हुं थाउं सनाह ॥१५९॥ स्त्रीसामुं जोवे नही, लेइ मात आसीस। मानस सर जइ उतर्यो, प्रथम प्रयाण जगीस ॥१६०॥ पुरबाहिर डेरे रह्यो, कुंवर सरनी पाल। वारी विरतो मित्रस्युं, गोठ करे सुखसाल ॥१६१॥ पाछल चिंते अंजना, पुण्य न कीधा भूरी। तो किम वंछित पामीये, फोकट जीव म जूरी ॥१६२॥ आसन्ना दूरठिय, जे चित्तें उवरिठ। चिहुं अंगुलनें आंतरें, नयणें कन्न न दिठ ॥१६३॥ मन मालीयां म जोइ, ऊंचे पण आंबिस नही। आप समाणा जोय, विहि विराडे जे लिख्यां ॥१६४॥ विहि रुठी ग्रह वंकडा, दुज्जण पूरे आस। आवि दूहेला खंधि चडि, जिम सो तिम पंचास ॥१६५॥ चित्तविणट्ठे रसगये, आदर करे अयाण। गुण तुट्टे सर संधीये, ते किम लग्गे बाण ॥१६६॥ दुज्जण केरे बोलडे, सज्जण नेह म त्रोड। कातणहारी सूत्र जिउं, जिम त्रूटे तिम जोड ॥१६७॥ सज्जन तेहु सज्जन, जे रूसे सोवार। अंब न हुवे लींबडो, जे जातियें सहकार ॥१६८॥ अंजनासुंदरी रोवती, आंसु झरे अपार। हूई आमण दूमणी, रहे दुखभर निरधार ॥१६९॥

ढाल-विषय न गंजीयेः-

तिणि सरि रातें सांभले, कुंवर शब्द अपार। पंखी कोलाहल करे, कवण काज बहुवाररे ॥१७०॥ अचरिज पामिये, एहनें स्युं दुख लागेरे। निद्रा नहु करे, आखि रातें जागेरे। अचरिज पामिये (आंकणी०) कुंवर पूछे मित्रनें, कहो कुण पंखी एह। कोलाहल कुंदन करे, दीसे कोमल देहरे ॥१७१॥ अ० मित्रभणे कुंवर सुणों, ए चक्रवाके विहंग। धणी धणीयाणी एकठां, दिवसें पामे रंगरे। १७२॥ अ० लहे वियोग रातें सदा, मन पामे बहु दुख। तिण आक्रंदन बहु करे, प्राणी वांछे सुखरे ॥१७३॥ अ० कुंवर कहे एक रातनो, विरह दुख इम होइ। परणी नारी परिहरी, बार वरस थयां जोइरे ॥१७४॥ अ० आपण रणे चालुं अछुं, जुद्धें जय संदेह। ते नारीनी गति किसी, होस्ये जाणो एहरे ॥१७५॥ अ० मिल्या पखे मुज चालतां, होइ मन संताप। मली हलीनें चालस्युं, जीम हुइ सुखनो व्यापरे ॥१७६॥ अ० मित्रें मान्युं आवीया, नारीना घरबार। झूरंती ते महासती, दीठी भवणमझार ॥१७७॥ अ० कमाड ऊघाडो इम कहे। न ऊघाडे घरबार। हुं सती प्रति चालीयो, मोविस इहां गमाररे ॥१७८॥ अ० अहिनाण कही ऊघडावीयो, घरभींतर भरतार। ऋतुनाही स्त्रीस्युं मिल्यो, गरभ रह्यो तिण वाररे ॥१७९॥ अ० प्रियनें जातां स्त्रीकहे, होस्ये गरभ किवार। सासू ससुर न मानस्ये, थस्ये दुख तिवाररे ॥१८०॥ अ० देई अहिनाण निज मुद्रिका, प्रिय चाल्यो परदेश। पतिमानी ते कामिनी,

पामे हरख विसेसरे ॥ १८१ ॥ अ० दुख गयुं सवि वीसरी, पाम्युं सुख अपार । आशा पहुती मन तणी, आशा जगदाधाररे ॥१८२॥ अचरिज०

-दूहाः-

आस म छंडिस रे ! हिया, जा जीवें तां सीम । वली वलेस्ये दीहडा, नाऊं जास्ये ईम ॥ १८३ ॥ दीहडा दैवहतणा, जिम जाये तिम पूर । हीयडा हीराणंद भणे, रहि रे रंक ! म झूर ॥१८४॥

(ढाल-प्रभु पदमप्रभ ! वीनवुं:-)

त्रीजे मासे अंजना तणो, गरभ प्रगट्यो एह । सासू ससुरे जाणीयो, पूछे वहूने तेह ॥१८५॥ समरे प्रियनें अंजना, जिम चंद चकोर । चक्रवाक दिनकर भणी, जिम जलधर मोर- समरे० आंणणी० ए गरभ किहांथी ऊपनो, अम्ह कुलें कलंक । आण्यो सासू पूछतां, वहू बोले निकलंक ॥१८६॥ समरे० तुम्हचो नंदन आवीयो, अधरात्रि मझारि । तिहांथी गरभ मुझनें हूवो, हुं अछुं आचारि ॥१८७॥ समरे० नहु माने सासू कहे, कुंवर दृष्टियें सोय । तुज साहसुं जोतो नही, मलवुं किम होय ॥१८८॥ समरे० तिण खिण देखाडे वहू, मुद्रिका अहिनाण । तोये सहू माने नही, जोवो कर्मविनाण ॥१८९॥ समरे० कूडो कलंक चडावीयो, घरथी काढे वहू । वहू भणे तुम्ह सुत भणी, पूछावो सहू ॥१९०॥ समरे० कूंड शाच परखो मुदा, एह माहरुं कहण । जइ जूठुं होये किमे, मुझनें नही रहण

॥१९१ समरे० सासू सुसरो कोपीया, घरथी करी वेग। वहूनें काढे एकली, आणे उदवेग ॥१९२॥ कर्मतणी गति अभिनवी, संभारे कंत। कहे अंजना प्रियडा विजा, नारी नहु बलवंत ॥१९३॥ कर्मतणी० आंकणी० विसन पड्ये कोइ नहु करे, तेहनो पक्षपात। एक सखी साथें थई, पूरवे पुण्य विख्यात ॥१९४॥ कर्मतणी० बे निरधारां चालियां, आव्या पीहरबार। माय बाप जाणी करी, नवि राख्याधार ॥१९५॥ कर्मतणी०

(दूहाः-)

सुखणयां सवि सासरे, पीहरि टलियां मान। कंत विहूणी कामिनी, जिहां जाये तिहां रान ॥१९६॥ जिहां दीह हूंता पाधरा, तिहां नमतुं सहु कोइ। रावण भणे मंदोदरी, लंका-पलंती जोइ ॥१९७॥ जिण दिनि वित्त न आपणे, तिण दिनि मित्र न कोइ। कमलां कर्दम बाहिरां, दिणयर वेरी होइ ॥१९८॥ कादव सूको वित्त गयो, सूकि गयां कमलांह। जाणो सूरस-नेहको, दिवे वकसावे तांह ॥१९९॥

(ढाल-उपरनीः-)

अनादर मायबापनो, पामी निरधार। लाजी दुखिणी जाणती, संसार असार ॥२००॥ कर्म० एक सखी साथें अछे, आंसू झरती जोय। एक तीर्थंकर ध्यावती, आघी चाली सोय ॥१॥ कर्म० गाम नगर पुरवर मझे, न रहे लाजंत। शीलवती वनमां रहे, धर्मगुणि राजंत ॥२॥ कर्म० नदी सरोवर जलपीइं, फल फूल आहार। पूरे मासे जनमीयो, नंदन आधार ॥ ३ ॥

कर्म० खाणथकी जेम ऊपजे, बहुरतन निधान। तिम अंजनाइं जाइयो, अंगजे इंद्रसमान ॥४॥ कर्म० सूरजनी परे दीपतो, नीरज मुख सूर। माता नयणें निरखती, लहे आनंद पूर ॥५॥ कर्म० वाघ सिंघ गज रींछना, भय नही का चोर। शीले संकट सवि टले, कोई न करे जोर ॥६॥ कर्म० वनि वनि थानक थानकिइं, रेहतां अरिहंत। समरे जल फल बहु मिले, ए पुण्य महंत ॥७॥ कर्मतणी०

(दूदाः-)

एक दिन जल जोवा भणी, सखी पहुंती वनमांह। काओ-असग्गे गिरिसिर रहियो, मुनि दीठो उछांह ॥८॥ कर्म०

(ढाल-फागः-)

भूखत्रिषा सवि वीसरी, पामी हरख अपार। आवि कहे अंजनाभणी, मे मुनि दीठो सार॥ पुत्रसखीस्युं गिरिचडी, अंजनासुंदरी साथ। वांद्या भगतें काउसग्ग, पारी मुनि निरबाध ॥९॥ भूमिकां पुंजि बेठा, भाखे मुनि उपदेश। महानुभाव संसार इं, एणे नही सुखलेश॥ बहुदुख सागर चंचल, ए संसार असार। जीवनें धर्मविना नही, कोइ शरण आधार ॥१०॥ करमें आरति मनतणी, चिंता कठिण अगाध। रोग सोग जरकर्मिइं, काया शिथिल साबाध॥ करमें मुंगा बोबडा, बहिरा कायर हीण। करमें टुंटा पांगुला, कुबड वामण खीण ॥११॥ करमें मरगतणी गति, मारक दुख सहंत। करमें तिरियंच वधबंध, तरिखा भूखलहंत॥ करमें मानव निरधन, धनवंत मंदिरवास। करमें प्राणी भोगवे,

देवना भोग विलास ॥१२॥

(दूहाः-)

पुण्ये प्रबल छे जेहनें, तेहनें सहु संयोग । पुण्ये लहीये संपदा, पुण्ये सुरनर भोग ॥१३॥

(चोपाइः-)

करमे करइ ते सहीये सहू, करमें दुख पामिजे बहू । करमें मनवंछित संयोग, शुभकर्मे विलसीजे भोग ॥१४॥ करमें पांडव ते रडवड्या, रतिसुंदरिनें अति दुख पड्या । नल दवदंतीयें दुख-सहयां, सीता रावणनें घरे रहयां ॥१५॥ करमें साण भमे नहु संक, करमें दीसे चंद्र कलंक । भीख मंगाव्यो मुंजनरेश, नाच्यो नारी कहण महेश ॥१६॥ वनभमिया लखमण ने राम, मणिरथनें जाग्यो बहु काम । करमें संतापियो हरिचंद, खय पाम्यो रावण नरचंद ॥१७॥ करमें कौरव खय पामीया, चक्रवर्ति खटखंड सामिया । वेद्या विण नवि छूटे कर्म, कुरमटले मन धरंता धर्म ॥१८॥ श्रावक साधु इस्या बे भेद, धर्म करवो टालीनें खेद । अंजनासुंदरी सुणि मर्म, आदरीयो श्रावकनो धर्म ॥१९॥ ते मुनिवर ज्ञानी अटकली, वलि अंजना पूछे मनरली । भाखो भगवन मे कुण कर्म, कीधां दुख पाम्या नहु शर्म ॥२०॥ दूषण विण किम चड्यो कलंक, केहा कर्म तणो ए वंक । प्रियतणो मुझ हूओ वियोग, मिलतो नहु दीसे संयोग ॥२१॥ मुनि कहे हिवे माहरु सुणो, पूरवभव कर्तव्य आपणो । जे जे जेहवां कर्तव्य करे, तेहनें तेहवां फल विस्तरे ॥२२॥

(दूहाः-)

मांडी पूरवभवतणो, मुनिभाखे वृत्तंत । अंजनासुंदरी सुणे, हियडे हरख धरंत ॥२३॥

(ढाल-सीलसुहावोरे साजण सेवीये-ए देशीमां)

वसंतपुरनामेरे नगर प्रगटभणुं, राजा जितशत्रुनामोरे । तिहां व्यवहारीरे गुणसागर वसे, दान मान गुणधामोरे ॥२४॥ मानव मनमांरे मच्छर नाणीये, परिहरि मनेअहंकारोरे । अवगुण छंडीरे समता आणीये, तो सफलो अवतारोरे ॥मानव०॥ आंकणी० तसु घर घरणीरे दोय वखाणीये, वृद्ध मिथ्यामती नारीरे । लहुडी नारीरे समकित धारिणी, शीलवती अवधारिरे मानव० ॥२५॥ जिनवर आणारे श्रावक व्रत धरे, देवगुरु भगति अपारोरे । सांझ विहाणेरे पडिक्कमणुं करे, दान पुण्य भंडारोरे ॥२६॥ मानव० श्रीजिन प्रतिमारे पूज्या विण सही, न जिमे दिन दिन एहरे । निर्मल भगतिएं जिनगुण गावती, विनय विवेक गुणगेहरे ॥२७॥ मानव०

(दूहाः-)

स्वामी सुणीए अतुलबल, पुण जाणीस्ये हेव । हियडा भींतर में ग्रह्यो, सके तुं नीसरि ? देव ! ॥२८॥ जिणवर केरे दंसणें, जेहिं न नामी कोटि, ते नर परभवे दुखिया, माथे वहिस्ये मोटि ॥२९॥

(ढाल-उपरनीः-)

पहीली नारीरे अतिमिथ्यामती, धर्मतणी नहु धातरे ।

चिंते प्रतिमारे सांतु इणी परें, जिम को न लहे वातरे ॥ ३० ॥ मानव० खोटी थावुंरे दिन दिननुं टले । नवि विणसे घरकाजरे । एम विमासीरे कोधें धडहडी, लेई प्रतिमा जिनराजरे ॥ ३१ ॥ मानव० जई भंडारीरे ऊकरडे सही, हरखी कीधुं कामरे । वेला आवीरे जिन पूजातणी, ते ताहरी सोक तामरे ॥ ३२ ॥ मानव० आवी जोवेरे जिनप्रतिमा नही, सहू पूछ्या लयलाइरे । भोजन न करेरे जिनपूज्या पखे, बार घडी एम थाइरे ॥३३॥ मानव० कर्म अंतरायरे तेहनुं जब टले, वले सोंकनु चित्तरे । श्रीजिनप्रतिमारे काढी तव दीये, लहुडी थई हरखीत्तरे ॥३४॥ मानव० पूजे प्रतिमारे भगति घणी धरी, बार घडी अंतरायरे । कीधो तेहनोरे कर्म तुझ पाडओ, उदय आव्यो इण ठायरे ॥३५॥ मानव० कर्म हसंतांरे बंधे जीवडो, नहु छूटे विलवंतरे । नारी हसूतीरे गर्भधरे सदा, प्रसवे जिम रोवंतरे ॥३६॥ मानव० पातग-संचेरे कर्तव्य पाडूए, जिण पाडें अंतरायरे । बारवरसनुरे विरह तुझ हूवो, वेद्या विण केम जायरे ॥३७॥ मानव० जे भोगवतांरे कर्मज उगर्यु, तुजने पीडे तेहरे । ते हिव थोडुंरे छे तुज थाकतुं, माणिस मन संदेहरे ॥३८॥ मानव० थोडे दिहाडेरे दिन वलसे सही, उदय आव्यो शुभकर्मरे । ज्ञानें लहीनेरे में तुझनें कह्युं, एम गणी तुं कर धर्मरे ॥३९॥ मानव०

(दूहाः-)

वली पूछे ते अंजना, मुनिवर कहो विचार । एह दासी

करमें किसें, पामे दुख अपार ॥४०॥ ज्ञानें जाणी मुनि कहे, तुझ मित्राणी एह। पूरवभव प्रेमें करी, रहती एकठ तेह ॥४१॥ तें सांती प्रतिमा जिके, ऊकरडामांहि जाम। सखीयें तुझनें कह्युं, ततखिण आवी ताम ॥४२॥ जिनप्रतिमा दीसे अछे, ऊघाडी अंतराल। तें गाढी ढांकी जिहां, आपणपें संभाल ॥४३॥ दासी इण कर्मे करी, दुखपामे भवमांहि। बंधावे ने छोडवे, जीभ जीवनें मांहि ॥४४॥ गंगदत्ता कडइ वचन, विगुती भवबंध। सातासुत दुखियां थयां, जिह्वा दोष संबंध ॥ ४५ ॥ नेउर पंडिय लखणां, रूपीराय नमालि। रजांसती दुख पामियां, कूडवचन तिण टालि ॥४६॥ अवसर जोई बोलिये, एकज अक्खर सार। अवसर विण बहु बोलणा, जण जण म भणे गमार ॥ ४७ ॥ बोले तास्युं बोलीये, वयणां एतो सार। ज्युं ओल्हाणो फूकीये, तो मुह भराये छार ॥४८॥ साजणीयां संसार, मोहडे मीठुं बोलीये। आपां एह ऊगार, कुडि दाझे कीरति रहे ॥४९॥ बोलाव्यो बोले नही, माणस्युं मंडे प्राण। ते प्राणस तिम छांडिये, जिम भाद्रवानो छाण ॥५०॥ वचनें रूसे मानवी, वचनें तूसे जाण। वचन विचारी बोलिये, सुख लहीये निरवाण ॥५१॥

(ढाल-उपरनीः)

मुनिने पूछेरे वली वली अंजना, हुं पामिस सुखसाररे। प्रीयडो मलस्येरे अथवा नही मिले, मिलस्ये मुज परिवाररे ॥५२॥ मानव० मुनि कहे अशुभारे ताहरां कर्म खप्यां, दुख

सवि जासे दूररे। मामो मलस्येरे इण वने तुंहने, सुख पामिस भरपूररे ॥८३॥ मानव० लेई जास्येरे तुंहनें निज घरे, मामा-घर भरतारे ! मिलसे तुंहनेरे एम सुणि अंजना, मन हरखी सविचाररे ॥८४॥ मानव०

(दूहाः-)

इण अवसर अंजनातणो, मामो सूरिजकेत। नंदीसर जात्रा करी, घर चाल्यो शुभचेत ॥८५॥ चारणमुनि महिमाथकी, थंभ्यो तिहां विमान। तीरथ नवि ओलंघवुं, देवुं बहु सनमान ॥८६॥ शिरिसर हेठो उतर्यो, वंदे मुनिवर पाय। आपण पुं धन मानतुं, पामे धर्म पसाय ॥८७॥ साहम्मीवंदण अववरें, शबदरूप आकार। भाणेजो तिहां ओलखी, उपनो हरख तिवार

(राग-मारुणी, कोई राखोरे मुज घरे नारि-एदेसी)

मामो पूछे इंहा तुमे, किम आव्यां कहो साचरे, अंजनाएं मांडि कह्युं, धुरथी कारण वाचरे ॥८९॥ घरे आवोरे अम्हारे आज, मननी चिंता टालोरे। विलंब निवारो एणीवातें, सगपणरिति संभालोरे ॥९०॥ घरेआवोरे०-आंकणी० अंजनकेत प्रेमें करी, भाणेजी तेडी साथरे। चाल्यो पंथ रमाडतो, भाणेजो लेई हाथरे ॥घरेआवोरे० ॥९१॥ विमान आकाशें चालतां, घूघरिना टंकाररे। रणके सोना पानडी, मोती झुंबका साररे ॥९२॥ घरेआवोरे० घूघरि शब्दे मोहिओ, बालक निसुणे नादरे। ध्यान रहिओ जोगी जिस्युं, धरतो मन आहलादरे ॥९३॥ घरेआवोरे० मामाना खोला थकी, ऊतरीयो ततखिण

बालरे। चपलपणे छेहडे गयो, ताणे मोतीमालरे ॥६४॥ घरेआवोरे० ताणंतो वली घूघरी, भूमि पड्यो ते बालरे। अंजनासुंदरी वलवलें, पामी दुख असरालरे ॥ ६५ ॥ घरे० जीवाडोरे पुत्र रतन, हृदयानंद जीवाडोरे। राखो भूमि पडंतो बालक, नयन कमल उघाडोरे ॥ जीवाडोरे० आंकणी० एवडो दुख देइ करी, देव न त्रिपतो हेवरे। नंदन मुख जोवातणुं, सुख न खम्युं ततखेवरे ॥६६॥ जीवाडोरे० दैवें हुं मारीखरी, माहरी हणी सुख आसरे। कइ में बांल विछोहियां, कई कोईने कर्यां निरासरे ॥६७॥ जीवाडोरे० में अंतराय घणां कर्यां, केहनें कीध संतापरे। कइ में आल कूडा दीयां, में कीधां बहुलां पापरे ॥६८॥ जीवाडोरे० खातां पितां पहेरतां, अदेखाई अति कीधीरे। वियोग दीयो में केयनें, जूठी साख में दीधीरे ॥६९॥ जीवाडोरे० थापण मोसा में कीया, छोडी गांठ पीयारीरे। के धन चोर्यां पारकां, निंदा करी अविचारीरे ॥७०॥ जीवाडोरे० सज्जनस्युं द्रोह चिंतव्यो, धर्मि धर्म विछोड्यारे। श्राप दीया में केहने, क्रोधें करडका मोड्यारे ॥७१॥ जीवाडोरे० बाल विछोहियां धरणा, भांजी तरुवर शाखारे। सरवरपाल फोडी घणी, के समराव्यां आखारे ॥७२॥ जीवाडोरे० बोल कोल उंदरतणां, बिल पूर्यां अधिकेरांरे। हत्या कीधी मोटकी, के में कीधा हेरांरे ॥७३॥ जीवाडोरे० के में माला पाडियां, के विलूरी वेलिरे। के काचां फूल त्रोडियां, कोइ सिर दीधी हेलिरे ॥७४॥ जीवाडोरे० गोरूछोरू सती वती, संताप्या सुकुमालरे।

शिलापाषाणें चूरियो, तिण पडतो मुज बालरे ॥७५॥ जीवाडोरे० एम वलवलती अंजना, देखी सुरजकेतोरे । विमान थकी ते उतर्यो, बाल समिप तुरंतोरे ॥७६॥ जीवाडोरे० पडतां बाल अंगें करि, थइ शिला चकचूररे । बालकनें वांगुं नही, रमतो दीठो सूररे ॥७७॥ जीवाडोरे० फूंक देई रज झाटकी, आलिंग्यो ससनेहरे । पंकथी मणि जिम कर लीयो, अंजना करे दीधो एहरे ॥७८॥ जीवाडोरे० निराबाध सुत पेखीयो, हरखी ततखिण मातरे । उलांसे निधि नीपरें, वार वार निज जातरे ॥७९॥ जीवाडोरे० मुजदिधोरे पुण्यें पुत्र, मामें आणी दीधोरे । एह कीधोरे उत्तम काम, मुज मन हरखित कीधोरे ॥ मुज दीधोरे० आंकणी० इणबालके चूरी शिला, तिण दिधो तसु नामरे । शिलाचूरण एहवो मुदा, वाधे गुणमणिधामरे ॥८०॥ मुजदि० भाणेजी घरलावीया, सूरिजकेतु भूपालरे । सजन सहू हरख्या घणा, वधामणां सुविशालरे ॥८१॥ मुजदी० दीन अनाथ यती भणी, देती दान रसालरे । दिन वोले ते अंजना, धर्म कर्म धुरि ढालरे ॥८२॥ मुजदिधो०

(दूहाः-)

शिलाचूर मामा घरे, वसतो हाथोहाथ । बीजतणो जिम चंद्रमा, वाधे साजण साथ ॥८३॥ शिलाचूर अंजनातणी, पसरी वात विशुद्ध । कस्तूरिना गंध जिम, उत्तम हुइ प्रसिद्ध ॥८४॥ पवनंजय इण अवसरें, जीपी वरुण राजान । ओछव शुं घरे आपणे, आव्यो पुरुष प्रधान ॥८५॥

(ढाल-कुमरसुवाहु वखाणियेजी-ए देशीमां)

प्रणम्या चरण पिता तणाजी, लीधी मात आसीस। मंगल दीये सुहासणीजी, करतो सजन जगीस ॥८६॥ कुंवरजी आव्यो उलट आणि, उत्तम गुण मन आणतोजी। महिमा मेरुसमाणि. कुंवरजी० आंकणी० ॥८७॥ सुंदर मंदिर आपणेजी, पहोतो मन उल्हास। नारी घर दीसे नहीजी, पूछे जण जण पास ॥८८॥ कुंवरजी० वाहलो जे हुइं आपणोजी, तिण विण नहु रहेवाय। भूख त्रिसा सहु वीसरेजी, अति उतावल थाय ॥८९॥ कुंवरजी०. न रुचे मंदिर मालीयाजी, धण कंचण भंडार। ते सवि त्रण सम लेखवेजी, मात पिता परिवार ॥९०॥ कुंवरजी० सारेवरस में नादरजी, कीधो अवगुण दोस। प्रेम एणीयें आणीयोजी, कदापि न कीधो रोस ॥९१॥ कुंवरजी० दिवस घणा मुझ नें थयाजी, दूहवाणी तिणि भावि। अथवा पीहरे प्रेमस्युंजी, तेडी गई निज धावि ॥९२॥ कुंवरजी० समाचार नारी तणोजी, जाण्यो सर्वप्रकार। पीतानें पूछी करीजी, हियडे धरे विचार ॥९३॥ कुं० विचारी, कीजे जुगतुं काज। गुण आदरि अवगुण तजेजी, तेहनी वाधे लाज॥ कुं० विचारी० आंकणी० माय बाप माहरां थयांजी, हियडे अति घणघोर। दूषण विण वहू आपणीजी, काढी करी बहू जोर ॥९४॥ विचारि० कुं० अविचार्युं कारज करेजी, पछतावो तसु थाय। नकुलघात जिम ब्रंभणीजी, अंब छेद जिम राय ॥९५॥ कुं० विचारी० काज परखी जे करेजी, तेहने दुख नहु होय। रुखिया रोहिणिनी परेंजी, पामे बहु

सुख सोय ॥९६॥ कुं०विचारी०सगा सणीजा किहां गयांजी,को नवि आव्या काम। जाती नारी वारी नहीजी, बेसि रह्या निज ठाम ॥९७॥ कुं० विचारी० आदर आथि भणी करेजी, सहूको इण संसार। वांके दिन थोडा मिलेजी, उपगारी संभार ॥९८॥ विचारी० वाघ सिंह होस्ये भखीजी, मुइ हुस्ये वनमांह। नारि रतन भाग विनाजी, किम लहीये उछाह ॥९९॥ विचारी० ओसींकल किम थाईयेजी, ताहरा गुण संभार। कुलवंती लक्षण भरीजी, साले रिदय मझार ॥३००॥ विचारी० तुझनें दुख देवा भणीजी, राति एकनो संग। हियडे हरख हुतो घणोजी, रंगे हुओ विरंग ॥१॥ विचारी० चींतवीए अनेरडोजी, थाय अनेरो काज। कर्मगति विसमी अछेजी, ते जाणे जिनराज ॥२॥ विचारी०

दूहाः-

मात पिता सहुको कहे, कुंवर तुं हठ छंड। नारि अनेरि परणवा, रंगें आदर मंड ॥३॥ कहे कुंवर सुणजो हवे, भोग तणी सी आस। अवर नारि नही एहवी, तेहस्युं स्यु घरवास ॥४॥ मात पिता सीखज दीये, कुंवर आणो नेह। मानो कहण अम्हारडुं, अम्हने म दियो छेह ॥५॥ वृद्ध वचन करवुं सदा, ह्यहे पुरुष विसेस। वृद्ध वचने छूटा सवे, बांध्या हंस असेस ॥६॥ वार्युं केहनुं नहु करे, लागे दुःख अत्यंत। हिवे हुं जीवुं नही, सहुने कहे एकंत ॥७॥ शोकातुर एम विलवतो, पवनंजय कुमार। चंदन अगर तणी चिता, रचावे तिणवार ॥८॥

चेह मांहि पेसे जिसें, ऋषभदत्त तिहां आव। त्रण दिवस लगे जीवतो, हवि राख्यो समजाव ॥९॥ शील प्रभावें जीवती, होस्ये दुःख निवार। नारी सोधी आणस्युं, मान्युं कुंवर तिवार ॥ १० ॥

ढालः-केदारानीः-

बोल बोली मित्र चालीयोरे, चड्यो विमान आकाश। वन गिरि कंदर जोवतोरे, गाम नगर आवासरे ॥११॥ सुरो मित्रे करो सविचार, उत्तम काज करे सदारे। आणे हेज अपाररे, सूरा मित्र० ए आंकणी० मही मंडल वेगे भमेरे, पूरव पच्छिम देश। दखिखण उत्तर जोवतोरे, ऊवसव सत प्रदेशरे ॥१२॥ सूरा० भमी भमी नें थाकीयोरे, त्रीजे दिवस आराम। सूरिजपुरने सरवरें, बेठो सरवर ठामरे ॥१३॥ सूरा० वात करे नारी इसीरे, अंजनासुंदरी नंद। शिलाचूर मामा घरेरे, वृद्धि लहे आणंदरे ॥१४॥ सूरा० ऋषभदत्त मन हरखीयोरे, निसुणी सूधीवात। सूरिजकेतु राजा सभारे, आव्यो सुगुण विख्यातरे ॥१५॥ सूरा० दीठी पुत्र रमाडतीरे, अंजना तेणे ठाइ। आंखें अमृत सांचरिओरे, ताप गयो ओहलाइरे ॥१६॥ सूरा० मनवंछित फल पामीयोरे, हियडे हरख न माय। अंजना आदर आदरीरे, ततखिण उभी थायरे ॥१७॥ सूरा०

दूहाः-

सती कहे मामा भणी, समाचार विशाल। एह मित्र भरतारनो, ऋषभदत्त सुकुमाल ॥ १८ ॥ जीव थकी अधिको

अछे, प्रियनें जिम एक जीव । किसे काजे आव्यो अछे, आदर करो सदीव ॥१९॥ सूरिजकेत आदर करे, तंबोलासन पान । खादिम सादिम अति घणां, मंडे बहु सनमान ॥२०॥

(चोपाइः-)

ऋषभदत्त कहे राजा सुणो, वेला न खमे कारण गणो । में दीठी अंजनासुंदरी, गयो किलेश थयो सुख फरी ॥२१॥ तुम्हे सामग्री मांडी घणी, भगति करेवा भोजन तणी । थाए विलंब मुज मन आकुलो, हुं तो छुं अति उतावलो ॥ २२ ॥ आवी हुती रावणनी आण, जुद्धें चडवानी सपराण । पवनंजय संग्रामें चड्यो, जई वरुण राजास्युं भिड्यो ॥२३॥ जुद्ध करतां जय पाम्यो जिसें, मान महुत बहु पाम्यो तिसें । जीपी कुंवर आव्यो घरे, मिल्या सगा सोदर मुदभरे ॥२४॥

गाहाः-

पुण्यवंत नर जिहां गछइ, तिहां तिहां सुंदर रुयडउं अछइ । पुण्य हीन नर जाउ जिहां भावइ, तिहां पुण गयओ निफल आवइ ॥ २५॥

(दूहाः)

सीह न जोवे चंद बल, नवि जोवे धन रिद्ध । एकल्लओ सहसां भिडे, जिहां सासह तिहां सिद्ध ॥२६॥ सींहणी तेहवा पुत जणे, जे छप्परि मंडाल । दूध विणासण का पुरिस, बहुआ जणे सीआल ॥२७॥

(चोपाइः-)

मायबापनें प्रणमी करी, नारी घरे आव्यो रंग धरी । नारी विण घर सूनुं देख, समाचार लहियो सुविशेष ॥२८॥ हियडे दुःख भराणुं जाम, बलवा खेह रचावी ताम । खेह मांहे पेसे जेटले, पापताप वारे तेटले ॥३०॥ केहनुं वार्युं न करे जाम, तिहां वेगे हुं आव्यो ताम । हठे करि मे माग्या त्रिण दीस, मुजने मित्रें दीध जगीस ॥३१॥ आज दिवस ते बीजो हुस्ये, जई न सकुं तो खेह पेसिस्यें । मित्र मिल्यो जोई ते आज, विलंब निवारो तिण महाराज ॥३२॥ तुम्हनें तेहनें हुज्यो कुशल, तुम्ह ओपगार अछे अति विमल । अंजनावनथी आणी तुम्हे, ते उपगार मानुं छुं अम्हे ॥३३॥ सूरिजकेत विचारी करी, बोलावी अंजनासुंदरी । वस्त्र विभूषण महिमा सहित, ऋषभदत्त लेई चाल्यो विहित ॥३४॥ विमानें बेठा आकाश, वेगें चाले मन उल्हास । नंदन सखी सहित अंजना, रूप सबल रंभा गंजना ॥३५॥ प्रल्हादन पुरवर उद्यान, आवी उतरिया सनमान । ऋषभदत्त आगले आवीयो, प्रल्हाद भूमिपति वधावीयो ॥३६॥ नंदन सखी सहित अंजना, वनि आण्या छे दुःख भंजना । सुणी अचंभ्या हरख्या बहू, तुम्हे अम्हे जीवाड्या सहूं ॥३७॥

दूहाः-

धन धन ऋषभदत्त तु, धन धन ताहरी बुद्ध । भल ऊजम ताहरो सफल, कीधा कारज सुद्ध ॥३८॥

(ढाल-कनक कमल पगलां भरे-ए देशीमांः-)

आणंद अति घणा उपनाए, हरिख्या सहू परिवार। ऋषभदत्त आवियोए, लाव्यो अंजना साथ. ऋषभ० आंकणी० शिलाचूर लक्षण भर्योए, नंदन सुगुण (सजाण) भंडार ॥३९॥ नहु वीसारे गुण कर्या ए, जे छे गुणना जाण। ऋषभ० काजगरा नर जे हुवे ए, काज करे मंडाण ॥४०॥ ऋषभ० नगर सकल सणगारीयुं ए, फूलपगर बहु माल। ऋषभ० तोरण धज आरोपियाए, अष्टमंगल सुविशाल ॥ ४१ ॥ ऋषभ० धवल मंगल सुहासणीए, गाइये गीत रसाल। ऋषभ० मोतिय चोक पूरावियाए, मिलिया बालगोपाल ॥४२॥ ऋषभ० घर घर हुंइ वधामणीए, राचे पात्र सुचंग। ऋषभ० भाट भणे बिरुदावलीए, दान मान बहुरंग. ऋषभ० ॥४३॥ नगरलोक साहमा मिलीए, पहुता वनखंडि वृंद। ऋषभ० ढोल दडामा गडगडेए, वाजा वाजे पडि छंड ॥४४॥ ऋषभ० मुहुर्त कीधु वहु तणोए, ससुर नगर प्रवेश। ऋषभ० सासु ससुरो उचरेए, धन धन वहु सुविसेस ॥४५॥ ऋषभ०

दूहाः-

सगा सणीजा एम कहे, कुल वहु तुं धन धन्न। कुल अजूआल्यो आपणो, राख्युं शील रतन्न ॥४६॥ पामी संपद शील बले, लोक भणे जस वाद। फल्या मनोरथ मन तणा, ए छे पुण्य प्रसाद ॥४७॥

(चोपाइः-)

पुण्यें पृथ्वी पिठ प्रसिद्ध, पुण्ये मनवंछितफल सिद्ध । पुण्यें हियडे निर्मल बुद्धि, पुण्ये रिद्धि तणी बहु वृद्धि ॥४८॥ पुण्यें लहिये बहु परिवार, लोक सवि सेवे अनिवार । पुण्यें हुइ काया नीरोग, पुण्यें मनमानीता भोग ॥४९॥ पुण्ये तणे बल नव नव रंग, पुण्यें पल्हाणीए तुरंग । पुण्ये घर लाभे राजघटा, पुण्ये ओछव चंदन छटा ॥५०॥ पुण्यें सेवक लाभे वडा, पुण्ये लाभे घीना घडा । पुण्यें पहेरण कोमल चीर, पुण्यें सहुस्युं वाधे हीर ॥५१॥ पुण्ये अंगि सुरंगां रूप, पुण्यें लहिये अकल सरूप । पुण्यें वसवा घर आवास, पुण्यें पहुचे मननी आस ॥५२॥ पुण्यें भोजन सरस आहार, पुण्यें लहिये बहु सणगार । पुण्ये लहिये जस बहु मान, पुण्यें लहिये केवल ज्ञान ॥ ५३ ॥ नारी ते अंजनासुंदरी, पुत्र जणि आवी गुणभरी । एकज कलपलता नें फली, तिम सोहे परिवारे मिलि ॥५४॥ संभारती पूरवभव कर्म, करे अंजना जिणवरनो धर्म । शिलाचूरनो हनुमंत नाम, साजण मिलि दिधो अभिराम ॥५५॥ प्रल्हादरायनें चिंता टली, राजजोगि सुत आव्यो वली । चिंत्ते राजा वेरागीयो, धर्म करवा हियडे जागीयो ॥५६॥ गुरु समीपे सुण्यो जिन धर्म, वांछे सदगति लहवा शर्म । पवनंजय सुत थाप्यो राज, पोते दीख्या लीध समाज ॥५७॥ प्रल्हाद मुनिवर संयम पाल, सद्गति पाम्यो सवि दुःख टाल । पवनंजयराय पाले राज, प्रजा पीहर सारे काज

॥५८॥ पृथ्वी मंडल साध्यो खरो, महिमा पसर्यो अति आकरो। सीमाडाराय प्रणमे पाय, देश देशना साध्या राय ॥५९॥ रामचंद्र नें सीता सेम, इंद्र अने इंद्राणी जेम। पवनंजयरायें प्रेमे करी, पटराणी अंजनासुंदरी ॥६०॥ अंजनाने अति माने राय, जाणे पामी पुण्य पसाय। वयण कहण न लोपे कदा, भोग जोग अनोपम सदा ॥६१॥ जोबन वय पाम्यो हनुमंत, प्रौढो अंग थयो बलवंत। उदार धीर अने गंभीर, पर उपगारी भावनवीर ॥६२॥

(दूहाः-)

जाणो जिनवर वीसमा, श्रीमुनिसुव्रत स्वामि। तास पाट परंपरा, पट्टोधर इण नामि ॥६३॥ धर्मघोष सूरीसरु, आव्या अति अभिराम। प्रल्हादन पुरवर तणे, वनखंडि बहु गुणधाम ॥६४॥ वनपालें वधावीया, पवनंजय राजान। वांछिता गुरु आवीया, भाष्यो वचन प्रधान ॥६५॥ राजा राणी हरखीयां, हरखदान तसु दीध। मंडाणे गुरु वांदिआ, जनम सफल तव कीध ॥ ६६ ॥

(ढाल-मन भमरारेः-)

धर्मदेसण श्रीगुरु दीये, प्रति बूझोरे। काने सुणो सहु सार, जीव प्रति बूझोरे। मढिया मादलनी परें, प्रति० एह संसार असार ॥६७॥ जीव० दस दृष्टांतें दुहिलो, प्रति० मानवनो अवतार। जीव० तिहां पुण लहतां दुहिलो, प्रति० गुरु संजोग उदार. जीव० ॥६८॥ सांभलवो सिद्धांतनो, प्रति०

लहतां दुःकर जाण । जीव० पांचे इंद्रिय पडवडां, प्रति० दुर्लभ छे मन आण ॥ जीव० ॥ ६९ ॥ चीव मिथ्याती छे घणा प्रति० थोडा समकित धार । जीव० समकित पाखे जीवनें, प्रति० दुहिळो भवनो पार ॥ जीव० ॥७०॥ देव सुगुरु धर्म साचला, प्रति० ए समकितनो मर्म ॥ जीव० तीर्थंकरनो भाखीयो, प्रति० दुहिलो लहीये धर्म ॥ जीव० ॥७१॥ विषय त्यजता दुहिला, प्रति० इंद्रिय तणा विकार ॥ जीव० छांड्या जोइये जीवनें, प्रति० चारकषाय प्रकार ॥ जीव० ॥७२॥ अंग नीरोग पामी करी, प्रति० छंडो पंच प्रमाद ॥ जीव० नदी तरंग जिम चंचलो, प्रति० जोबन वय उनमाद ॥ जीव० ॥७३॥ संध्यावान कुंजर कान. प्रति० अथिर आभानी छांह । जीव० पींपल पान जिम वीजुली, प्रति० अथिर कायरनी बांह ॥ जीव० ॥७४॥ तेम अथिर छे आउखुं, प्रति० त्रूटशुं नहुं संधाय । जीव० आरंभें जीव भव भवें, प्रति० खिण खिण पापे बंधाय ॥ जीव० ॥ ७५ ॥ सांझ समे जिम पंखीया, प्रति० एकठ मिले सुठाण । जीव० विहाणे जाइ जूजूआ, प्रति० जूजूई दिसि जाण ॥ जीव० ॥७६॥ मात पिता बंधव सुता, प्रति० तिम ए सहू परिवार । जीव० कर्म वशें एकठुं मिल्युं, प्रति० वीछडता नहुं वार ॥ जीव० ॥७७॥ अनंत काय छंडो वली, प्रति० बावीस तजो अभख्य । जीव० अणगल जल नवि झीलीये, प्रति० हींचोले हींचे म दख्य ! ॥ जीव० ॥ ७८ ॥ दीवे पडे पतंगीया, प्रति० अजयणा तिहां

टाल । जीव० धानेंधण सवि साचवी, प्रति० जीव दया संभाल ॥ जीव० ।।७९।। सोल पहोर वोल्या पछी, प्रति० दही न कल्पे आम । जीव० कांजी वडां जे नवि चल्यां, प्रति० कल्पे चोवीस जाम ॥ जीव० ॥८०॥ बासी कठोल तह छासस्युं, प्रति० कदापि न कल्पे जोइ । जीव० आगासे अंधारडे, प्रति० डाह्यो न जिमे कोइ ॥ जीव० ॥८१॥ जिमतां नीति करंतडा, प्रति० वचन म बोलो जाण । जीव० क्रिया सकल विधि साचवो, प्रति० पालो जिणवर आण ॥ जीव० ॥८२॥ विघटे मात तथा पिता, प्रति० विघटे बंधव जोड । जीव० सुत विघटे विघटे सुता, प्रति० विघटे बहिनि विखोड ॥ जीव० ॥८३॥ विघटे मित्र विघटे सगा, प्रति० कुटुंब अनें परिवार । जीव० दासी दास विघटे कदा, प्रति० दुपद चौपद सार ॥ जीव० ॥८४॥ विघटे मुगताफल धरा, प्रति० विघटे धन भंडार । जीव० कनक रतन रजत सही, प्रति० विघटे मणि सविचार ॥ जीव० ॥ ८५ ॥ अविचल मेरु तणी परें, प्रति० नहू विघटे धर्म एक । जीव० आश्रव संवर ओलखो, प्रति० जाणो विनय विवेक ॥ जीव० ॥८६॥ निश्चल एकज आदरो, प्रति० जिन धर्म सुख दातार । जीव० एकमना आराधतां, प्रति० लहीये भवनो पार ॥ जीव० ॥८७॥

दूहाः-

श्रावके साधु तणा सही, बिहु भेदें जिन धर्म । बार व्रत श्रावके धरे, मुनि महाव्रत ए मर्म ॥८८॥

(चोपाईः-)

सुणी धर्म अंजनासुंदरी, भरतार भणी पूछे मति खरी । स्वामि तुम्हे मुझनें दियो आण, जिम हुं दीख्या लेउं सुजाण ॥८९॥ भरतारें नारीनें सुणो, आग्रह किधो रहिवा तणो । वेरागें भावी सुंदरी, वारी न रहे दृढ मति करी ॥९०॥ पवनंजय चिंतें राजान, राणी दीख्या लीए निदान । तो हिव हुं रहीनें स्युं करुं, धर्म सखाईयुं ते आदरुं ॥९१॥ घर आवी सामग्री कीध, हनुमंतनें राजा पद दीध । राणी सहित संयमे आदरे, तप संयम बहुली खप करे ॥९२॥ निरतीचार पाली चारित्र, बेहे पहुता सरगि पवित्र । भवनां दुख सघलां टालस्ये, अनुक्रमे शिव गति सुख पामस्ये ॥९३॥

ढालः-साहेब सांभलोरे-ए देशी.

अंजनासुंदरीये खरोरे, पाल्यो शील आचार । भवियण जण तिम पालो भावस्युंरे, जिम लहो कीरति सार ॥९४॥ सील समाचरोरे, दुर्गति दुख न कोइ । शीले संकट सघलां उपसमेरे, सद्गतिनां सुख होइ ॥९५॥ शील० मल्लि जिणेसर जंबू मुनिवरुरे, भद्रबाहु वंकचूल । श्रेष्टि जिनदत्त वइर विरागियारे, शीलवंत अनुकूल ॥९६॥ शील० ब्राह्मी सीता शीलवती सतीरे, राजमती सुकुमाल । कमला सुलसा चंदन बालिकारे, पाल्यां शील रसाल ॥९७॥ शील० शीले पावक जल थल सागररे, सरप कुसुमनी माल । रिपु सुहृद सानिध कर देवतारे, वारण थाये सीयाल ॥९८॥ शील० नागोर नगीने

साते जिणहरुरे, आदि शांति जिण पास । वीर जिणेसर ते प्रणमी करीरे, चोपइ कीध उल्लास ॥ ९९ ॥ शील० श्रीवीर पट्टोधर अनुक्रमे प्रगटीआंरे, श्रीवादिदेवसूरींद । वादि न्यायचक्रचूडामणी समोरे, समता सायर धीर गीरींद ॥ ॥ ४०० ॥ शील० नागपुरीवडतपगच्छपति जग जाणिएरे, श्रीपासचंद्रसूरीस । तास पटोधर गरुअडि गाजतारे, समरचंद्र-सूरि जगीस ॥१॥ शील० राजचंद्रसूरि गणधर गाइयेरे, वाचक रतनचारित्र । तास पसाये चोपइ एह रचीरे, सेवक विमल-चारित्र ॥२॥ शील० संवत सोलह वरसें त्रिसठिथेंरे, मागशिर मास विकास । चोपइ जोडि दीजे गुरु दिनेरे, भणतां ज्ञान प्रकाश ॥३॥ शील० एह चोपइ सुणीनें पालीयेरे, शील प्रमुख जिनधर्म । इह भव पर भव सुखनी संपदारे, लहीयें शिव-गति शर्म ॥४॥ शील समाचरोरे ॥

इति श्रीगुर्जरभाषायां पद्यमयनिबद्धं शीलविषये श्रीअंजनासुंदरीचरित्रं श्रीमन्नागपुरीयवृहत्तपागच्छनायकश्रीवादिदेवसूरिपुरंदरपरंपरायां युगप्रवरक्रियोद्धारकारकसिद्धांतमहोदधिश्रीपार्श्वचंद्रसूरीश्वरपट्टप्रभाकरश्रीसमरचंद्रसूरिवरशिष्यश्रीराजचंद्रसूरिराजचरणानुचरवाचकवर-श्रीरत्नचारित्रगणिशिष्यपंडितप्रवरमुनिवरश्रीविमलचारित्रकृतं सकलागमरहस्यवेदिजैनाचार्यवर्यश्रीभ्रातृचंद्रसूरीश्वरशिष्यमुनिसागरचंद्रेण संशोधितं च संपूर्णम् ॥

॥ आ रासनी अंदर आवेला कठण शब्दोना अर्थः ॥

ले० मुनिसागरचंद्रः-

पृष्ठांक,	गाथांक,	मूल शब्द,	तेनो अर्थ-
४	३४	अहिठाणो	अधिष्ठान, भाजन.
८	७५	विसीगत	सर्प.
१४	१२५	खारकी	चंडाल.
१५	१२८	पेके	जोके.
ऽऽ	ऽऽ	बहुडि	फेर.
१७	१४८	सणी	स्नेही, संबंधीओ.
१८	१६३	उवरिठ	उपराठा.
ऽऽ	१६४	विराडे	लिलाडे.
१९	१८१	अहिनाण	अेंधाण, निशानी.
२५	३०	सांतु	संताडुं, गोपुं.
२६	४२	सांती	संताडी, गोपी.
२८	६७	विछोहियां	जुदा पाडी अंतराय कर्या.
ऽऽ	७४	हेलि	कलंक, आरोप.
३१	९८	आथि	पैशो, द्रव्य.
३९	८०	आम	काचुं.
ऽऽ	ऽऽ	जाम	पहोर.
ऽऽ	८२	नीति	झाडो, पेशाब.
ऽऽ	८३	विखोड	तिरस्कार पामेल.

श्रीमन्नागपुरीय बृहत्तपागच्छाधिराज श्रीपार्श्वचंद्रसूरीश्वरजीना शिष्य
शास्त्रविशारद महर्षि श्रीब्रह्माजी कृतः-

श्रीचारप्रत्येकबुद्धचरित्र-रास.

संशोधकः-श्रीभ्रातृचंद्रसूरि शिष्य मुनिसागरचंद्रः ॥

जिणचोवीसह पयकमल, मनधरि हर्ष नमेसु । सुगुरु वचन सुभमंत्र जिम, हियडामाहि धरेसु ॥१॥ मुनिवर जे जग जाणिये, प्रत्यय देखी बुद्ध । मन आणंदें वंदि करि, कहिस्युं तासु प्रबंध ॥२॥ जे असंख इणि परे थया, तो पुण ए मुनि चार । चवण दीख केवल मुगति, साथ लहे सुविचार ॥३॥

(गाथा)

करकंडु कलिंगेसु[१], पंचालेसु अ दुम्मुहो[२] । नमीराय विदेहेसु, गंधारेसु अ नग्गइ[३] ॥१॥ वसभेअ[१] इंदकेऊ[२], वलअ[३] अंबेअ पुप्फीए[४] बोही । करकंडु दुम्मुहस्सअ, नमिस्स गंधाररन्नोअ ॥२॥५॥चोपइ॥ जंबूदीप भरत नरठाण, चंपानगरी महाप्रमाण । धणकणकंचण मणि ते भरी, परतख दीसे जिम सुरपुरी ॥६॥ तिहां दधिवाहण नामें नरिंद, सोहे सुर जिस्यो गोव्यिंद । तसु घरे घरणी पद्मावती, सीलवंत जग मोटी सती

॥७॥ चेडारायतणी अंगजात, जेहनुं नाम जगत्र विख्यात । तासु दोहिलो थ्यो एकवार, जाणे पहिरुं नृप शीणगार ॥८॥ मस्तके छत्रधरी तें राय, गयवरखंधचडी वन जाय । कुसुम फले वनरति मनरमे, पण न मनोरथ पूगे किमे ॥९॥ तिण आरति तनु दुर्बल थाइ, पूछ्युं कारण तेहनो राइ । कह्यो भाव नृपराणी बेव, जयगज बेठा छत्र धरेव ॥१०॥ जाइ जाम इणि अवसरे मेह, वूठो थया सुसीतल देह । रुंखराय उलसी आहार, पुहवी चिहुंदिसि पूरी वार ॥११॥ चिहुंदिसि चातक प्रिय प्रिय लवे, डेडरडा बोले सरि नवे । घन आगम वलि जाणी शिखी, नाचे चित्त न थाइ दुखी ॥१२॥ सीतल सुरभि धरणिनो गंध, बेठा ल्ये गयवरनो खंध । वन सनमुख तो चाल्यो करी, जाणि के राउ राणी अपहरी ॥१३॥ पुहची न सके सेना लार, अटवी माहि ते जाइं तेवार । वडतरु देखी राजा भणे, प्रिय साख साहे बलुघणे ॥१४॥ नृप भाषित राणी मनग्रह्यो, वडतरुतले जेतले करि गयो । राइ साख गाढी दृढ धरी, उतरियो मन चिंता खरी ॥१५॥ कीजे सुं ते नहु संभरे, राय नयरि चंपा अणुसरे । राणी साख ग्रह तलह बही, तो जाइ गज अटवी वही ॥१६॥ माणुस कोइ न दीसे जिहां, महासरोवर देखी तिहां । करिवर पेठो उंडे वार, चिहुं दिसि रमे उलाले वार ॥१७॥ राणी मोडे स्युं उतरे, दिसि भूली चित्त महिबरे । भयबीहे चिहुं दिशि जोवती, भमे वनें कर्मगति चिंतती ॥१८॥ जाइसु किहां किसी गति हवें, खिण करि

रुदन आप धीरवे । चिंते वने वनचर संचरे, रखे प्राण मुझ कोइ हरे ॥१९॥ तिण कारण थाउं अप्रमत्त, पडीवज्जि चारि सरण एक चित्त । निंदे पाप खमी जीवराश, अणसण लेइ सागार विमास ॥२०॥ वली आहार उपधनें देह, इण अवसरे वोसरावे एह । हियडे जंपे पंच नवकार, आगम पूरव माहिज सार ॥२१॥ हरि करि विसहर नें संग्राम, तसु भयनासे लेतां नाम । डाइण साइण नें वेताल, मारि न पुहचे तसु कोइ काल ॥२२॥ हियें वसे जेहनें नवकार, तासु न कोइ करे विकार । एम चिंतवी आवेरी गइ, तापस देखी हरषित थइ ॥२३॥ जाइ समीप नमे जेतले, तापस तसु पूछे तेतले । कहो मात आव्या किहां हुती, कहे तिहां पउमावइ सती ॥२४॥ चेडानृप धू करि अपहरी, इंह आवी करिथी उतरी । तापस ते संभलि एम कहे, रखे वछि ! तुं हवें भय लहे ॥२५॥ वनफले करी करे पारणुं, तापस तो दिए आदर घणुं । वसति ठांम लेइ मेलहइ, तापस एहवुं वचन एक कहइ ॥२६॥ अम्हे इहांथी आघा नावीये, नयर दंतपुर दाखी दिये । दंतचक्र इह अछे नरेश, तुं करज्ये इण पुरें प्रवेश ॥२७॥ एम कही तापस पाछो जाइ, पउमावइ पुरि पुहती थाइ । महासतीनो देखी ठाम, जइ गूरणी पगे लागे ताम ॥२८॥ कही यथास्थित पूरव कथा, जे वीतीछे न हु अन्यथा । ते संभलि साहुणि एम भणे, वछ ! म दुखकर मन आपणे ॥२९॥

(ढालः-छाहुली, जेम कोइ नर पोसप-ए देशीमां)

संपद आपद कर्म वसें, काल प्रमाणें उल्लसें, मनरसें भोग्गविये तेहज सहीए। खिणमाहि सुख संयोग, दीसें खिण माहें सवियोग, ल्यो जोग समझावी एहवुं कहीए ॥३०॥ चिंते हिव संजम लाग, हियडे आणी वैराग, भवराग टाले संजम आदरीए। गरभ न भाष्यो भयकरी, मनमाहें माया करी, अवसरे प्रसव सुत प्रच्छन करीए ॥३१॥ कंबल रयणें ढंकिय, करि मुद्रा नामंकिय, संक्रिय मने मसाणे बालक धरेए। देखी रक्षक चंडाल, निजनारीने द्ये बाल, सुखसाल अवकन्निअ नामें करेए ॥३२॥ महासती तसु जाइ घरें, ते बालक सुं सुख करे, मन ठरे देखी सुत रमतो घणुंए। पूछे महासति गर्भवात, ते मूओ एम कहे वात, ते सुत लोक कहे मातंग-तणोए ॥३३॥ बालक बहु मिले एम भणे, हूं राजा छुं तुम्ह-तणे, बहु बणे जो द्यो कर मुझ सवि मिलीए। तो तसु कानें छें कुंडु, तेह जनो ल्ये करकंडु, करकंडु नाम कह्यो बहुजण मिलीए ॥ ३६ ॥

(ढालः-)

ते महासतिस्युं वरते रागें, महासति जे कोइ भिक्षा मागें। सरस लहि ते तिहनें आपे, मातंग नायक जे तसु थापे ॥३५॥ तेय कुमरसु मसाण सुरक्खे, तिहां दोय मुणिवर आव्या पिक्खे। वंसरत्न उभा जोवंत, मांहो माहें एम कहंत ॥३६॥ एक दंड एह माहें एह, लक्षणे पूरो नहु संदेह। अंगुलचार

जाम वाधस्ये, तेतलें पूरे लक्षण हुस्ये ॥३७॥ तो जे कोइ ए दंड ग्रहेइ, ते निश्चेंसुं नरपति होइ। हरिकेशी सुत वयण वधारे, एक वलि ब्राह्मण सुणे तिवारे ॥३८॥ अंगुल चार खणी द्विज कापे, तो मातंग न लेवा आपे। ब्राह्मण कहे दंड लेवा दें, ते नहु द्ये, एम पडया विवादें ॥३९॥ मातंग सुतनें तो द्विज पूछे, कहे किण कारण ए तुझ रुच्चे। वलतो भणे एहनें प्राण, राजरिद्धि सिरि मुझ घरे जाण ॥४०॥ बीजा द्विज कहे जइ तुं राय, हुवे तो एहने करे पसाय। एक गाम देजे ते माने, झगडो टाली कीधा काने ॥४१॥ तो पुण कहे द्विज एह विणासी, लीजे दंड एक परि विमासी। ते मातंग तात सुणि वाणी, नासि गया कंचणपुरि जाणी ॥४२॥ राय अपुत्र मरण तेह पाम्ये, सवे मिली चिंते परिणामें। हय सिणगार्यो बाहिर जाइ, देइ प्रदक्षण उभो ठाइ ॥४३॥

(वस्तुः-)

करिय आदर२ लोकजोवंत, राज चिन्ह देखी कुमर, जय जयारव तूरवाजे। दह दिसि गायें गीत घणा, जिसो मेह अंबर गाजे। निद्राभर उठी कुमर, लिये ते खिण विश्राम। हयवेसी जन परिवर्यो, पहुतो नृप घर ठाम ॥४४॥

(दूहाः-)

विप्र मिली आडा थया, नवि द्ये नयरि प्रवेस। ए मातंग अछे सही, मनधरि रोस विसेस ॥४५॥ दंडरयण कुमरें ग्रह्यो, जलवा लागो जाम। विप्र सहु बीहा घणुं, ले न सके कोइ नाम

॥४६॥ वाटधान वासी सयल, विप्र किया हरिकेशि । करकंडु दधिवाहण सुतें, मने अभिमान निवेश ॥४७॥ ताम विप्र ते आवियो, मागे गामज वुत्त । राय भणे ल्ये तेय तुं, जे माने तुझ चित्त ॥४८॥ मुझ घर चंपा नयरिछे, तिणे प्रदेश द्ये गाम । दधिवाहण प्रति लेख द्ये, एहनें देज्ये गाम ॥४९॥ नगर जेय तुझनें रुचे, ते माहरो तुं लेइ । एम दधिवाहण संभली, वलतो वचन भणेइ ॥५०॥ जे हुइ निज आदेसकर, कहतां तसु सोहेइ । पुण रे न लहे अधम ! तुं, आपणपुं ते कहेइ ॥५१॥ दूत लेख वलतो दिए, करकंडु आण्यो कोप । कटक मेलि चंपा गयो, कर्यो जुद्ध आरोप ॥५२॥

(चोपइः-)

इणि अवसरे संभलि महासती, रखे लोक विणसे बीहती । पूछी महत्तरि चंपा गइ, सहू वात करकंडुने कही ॥५३॥ सुत ! ए तात ताहरो होइ, जाणे वात जिसीछे सोइ । पुण अभिमानी न पाछु वले, दधिवाहननें तो जइ मिले ॥५४॥ परिजन ओलखे लागे पाय, वंदी विधिसुं पूछे राय । कहे गर्भनी परि किम किद्ध, तिण करकंडु दिखाली दिद्ध ॥५५॥ पोल उघाडी दल सनमुख सर्यो, सुत पण कटकमाहे निसर्यो । वेगे पितानें लागे पाय, मुझ अपराध खमिजो ताय ॥५६॥ दधिवाहन मन धरि संवेगे, आविमिले सुतनें अतिवेग । दधिवाहन द्ये सुतनें राज, दीक्षा लेइ साधे सिवराज ॥५७॥ बन्हे राज पाले करकंडु, महाराय थ्यो अतिहिं प्रचंड । तसु गोवल अतिवल्लभ घणा, तेह तणी तसु नहु

भरतखेत्र उज्जेणी ठाम, नयर सुदंसणपुर इण नाम ॥८१॥ मणिरथराय करे तिहां राज, तसु लघु बंधव छे युवराज । नामें जुगबाहु गुणवंत, मयणरेह वरनारी कंत ॥८२॥ सहजें मयणरेह सुकुमाल, सती शिरोमणि शशि सम गाल । बारह व्रतधर ते श्रविका, जिनशासननी सुप्रभाविका ॥८३॥ तासु पुत्र गुणनो भंडार, चंद्रजस नामें अतिहिं उदार । अन्न दिवसे मणिरेहा दिठ, मणिरथ हियडे एदन पइठ ॥८४॥ मयणरेह रूपें मोहियो, आकुलव्याकुल थ्यो नृप हियो । भाइ भत्रीजनी न धरे संक, लाज लोपवें थयो निसंक ॥८५॥ चिंतातुर चिंते संभोग, किणिपरे मिलस्ये ए संजोग । पहिलुं मंडुं एहसुं प्रीत, जाणिसुं पछे जिसो छे चीत ॥८६॥ राय संतोष करवा भणी, कुंकुम कुसुम दिये भेटणी । अलंकार वस्त्र तंबोल, वलिय सराग कहावे बोल ॥८७॥ मयणरेह ल्ये मनें न कूड, पण नरपति मिथ्यामति मूढ । अन्न दिवसे ते नरवइ भणे, था सुंदरि! अम्ह नारीपणे ॥८८॥ जो तुं मानिस माहरी वाच, तो तुझने मे दीधी वाच । करिसुं सयलराज सामिणी, महारिद्धि आपीसुं तुझ घणी ॥८९॥ मयणरेह तो वलतुं कहे, एम सुपुरुस रेख किम रहे । माहरो सामिपणो कुण हरे, तुझ भाइ मुझ उपर करें ॥९०॥ तव जेसो सुपुरुष माहरे रेह, ते वलि तजे आपणु देह । पण विरुओ न करे आचार, इह पर लोक जिणें धिक्कार ॥९१॥

(गाथाः-)

जीवाणं हिंसाए(१), अलिएणं(२) तह परदव्वहरणेण(३)। पर(४)

इत्थि कामेणं, जीवा नारयंमि वुच्चंति ॥९२॥ परणि कुलवति नारी तजे, परनारीनें जे नर भजे । तेय नींच वायस जिम जोइ, तजि तलाव घट चंचु डबोइ ॥९३॥ महाराय ए मति पाडुइ, कहेनें तुज्ज किसी परे हुइ । हिव तुं म झंखिस आलपंपाल, राजा करे वदन विकराल ॥९४॥ बोले नही हिये परजले, तेसुं मनें सुरत अटकले । जीवें जां जुगबाहु भांइ, तां ए बीजा पाशे न जाइ ॥९५॥ किणहीं परे तव धरि विश्वास, बंधव केरो करुं विणास । पछे भोगवुं पराणेकरी, अवर उपायने मे चित्तधरी

(दूहाः-सोरठाः-)

मयणरेह एकवार, सुपने सासिहर पेखि करि । जइ कहे भरतार, बुद्धि विमासी फल लहे ॥९७॥ त्रिभुवन माहे विख्यात, होस्ये सुत एम जाणज्यो । ए सुणि साची वात, मात हरख हियडे धरे ॥९८॥ पुत्रथयो गर्भवास, तासु प्रभावें दोहिलो । हूओ त्रीजे मास, मनोरथ रूडा करे ॥९९॥ पूजुं जिणवरदेव, कुसुम धूप चंदणे करी । कीजे मुणिवर सेव, सुणी श्रवणे धर्मनी कथा ॥१००॥ पुन्यहतणे प्रभाव, पूरो पूरे दोहलो । एम एकण प्रस्ताव, मास वसंत सुआवियो ॥१०१॥

(फाग-ढालः-)

चिहुं दिसि मंजरि परिमल महके साल रसाल, फूल फले वणराइ सोहे झाक झमाल । कोइल करे टहूकडा मंथर वाये वाउ, मयणरेह सार्थे करि जाय वने जुवराउ ॥२॥ जोवे वन वन फलल्ये राजा कुसुम सुवास, कदली गेह करावे जाण के

सुर आवास । अन्न पान सरसन्नभला भोजन करे विसाल, क्रीडा चिहु दिसि करे फिर २ रंग रसाल ॥३॥ इणि अवसरे रविकर आथम्यो पुहवि अंधारो होइ, निज निज ठामे अपर सहूकोइ पहुता लोइ । कुमर रहे केलीघरि निसी मयणरेहसाथ, अवसर जाणी मणिरथ आवे असिधर हाथ ॥४॥ फल्यो मनोरथ माहरो विणासु हिव जुगबाहू, मयणासुं भोगविस्युं सुख विचित्र उछाहू । सुरतकेलिकरि सूता बेवइ स्त्री भरतार, चिहुं पासें रखवाला फिरे करे खंखार ॥५॥ जुगबाहू मणिरथ पूछे कहो सुवेग, में जाण्यो कोइ राने वेरी करे उदेग । इण कारण इहां आव्यो मंडप करे प्रवेस, उठे संभ्रमसु जुगबाहू नहिय विसेस ॥६॥ मणिरथ कहे चालो जइये नयर मझार, आपणनें इहा रहिवो जुगत नही चित्त विचार । कुमर सजाइ करीने अथ परिवारे जाम, करि धरि खडग विणास्यो मर्म प्रदेसें ताम ॥७॥

दूहाः—

मयणरेह मने दुखधरी, रोवे करे पुकार । एम निसुणि एकठ मिल्यो, जुगबाहू परिवार ॥८॥

(ढाल—बलभद्र लेइ आव्यो नीर—ए देशीमां)

परिवार सहुको जंपे, तुं कांइरे कायर कंपे । कह वात जिसी तें कीधी, जगमाहि अकीरति लीधी ॥ तव राय कहें भय डरतो, मनमाहे माया करतो । मुझ हाथथकी असि पडियो, तिण एह कलंक सिरचडियो ॥९॥ राउ बोलतो परखियो, जाण्यो हियडे कूड । जाइ कहे चंद्रजसनें, मोह्यो सोहें मूढ ॥ मन

मूढपणुं अतिधरतो, करुणे सरे बहु रोवंतो। बहु वैद साथि लेइ आवे, चंद्रजस सुत तात बुलावे ॥१०॥ जोइनें वैद्य विचारे, तो औषध अफल विचारे। सर्व अंग थया निकलाप, लोचन दोय मीचे आप॥ सीतअंग सघलो थयो, जाणी मरण अवथ्थ। कोमल वचन करी कहे, मयणरेह परमथ्थ ॥११॥ परमथ्थ एहछे साचो, तुम्हे समतारे रसे राचो। केहिं उपरे म धरो रीस, पडिवजि चउ सरण जगीस ॥ पूरवकृत निंदो पाप, जेहनो हवणां थयो व्याप। सुभ असुभ जेहवा कीजे, फल परभव-तासु लहीजे॥१२॥

(गाथा)

जं जेण कयं कम्मं, अन्न भवे इह भवे वसंतेणं। तं तेण वेइयव्वं, निमित्तमित्तं परो होइ ॥१॥ तिण कारण तुं साथें ल्ये, संबल सयल सुजाण। अरिहंतदेव सुसाधुगुरु श्रीजिनवचन प्रमाण ॥१३॥ सुप्रमाण पंचनवकार, करि पाप ठाम परिहार। वोसिरावो परिगह संग, जिम हुवे शिवरमणीरंग ॥ एके सरण जिणंदह धम्म, जिण टले मरण जर जन्म। बे करजोडी सवि माने, करे काल अपूरवध्याने ॥१४॥ थयो देव सुरलोके जइ, करे चंद्रजस सोक। राते सरीर रखवालता, रहे सहुकोइ लोक॥१५॥ सर्वलोक सोकभर देखी, चितरागरंग उवेखी। धरि मयणरेह वैराग, चिंदे निजरूपविभाग॥ हिवं इहां जे कीमें रहिये, तो सील अंग फल लहिये। पस्देसि ते गमन विमासे, नहीं तो नृप पुत्र विणासे ॥१६॥ एम चिंतवि चल्ली निसें, महादुख्ख संतत्त।

कामणा ॥५८॥ सूरदत्तकाले एकण प्रस्ताव, सेत वच्छ जायो एक गाव। देखि कहे नृप एहनी माइ, रखे कोइ दूहवे नित जाइ ॥५९॥ दूध न दीये जिवारें छेह, अपर धेनु पयें पोसो एह। तिण करि गोप ते थ्यो मयमत्त, हूओ खीरपानि अतिरत्त ॥६०॥ दीठो राय केतले काल, आवी जरा तासु तिण काल। महाकाय हाड पंजरे, पाइरुआं ते पराभव करे ॥६१॥ चिहुं दिसि आवी चूंटे काग, झरे नयण जिम पाणी माग। उठी बेसी न सके किमे, जाइ खीजावे बालक रमे ॥६२॥ एक अवसरे तेह आवे भूप, देखी धुरंधरतणो सरूप। अहो किसीपरे ए सोभतो, जइये जोवन वये दीपतो ॥६३॥ हिव वायस पाडा परिभवे, कहो इसीपरे ए किम हवे। पण छे ए संसार असार, जे विणसतां न लागे वार ॥६४॥ इंद्र धनुष जेहवी वीजुली, अति चंचलपरे तसु अटकली। तिम ए धन बहु जन सम भाइ, एक कन्हे नहुं निश्चल थाइ ॥६५॥ साझे समे तरु आवी मिले, थये प्रभाते जूआ टले। जिम पंखी तिम ए परिवार, वीछडतां नवि लावे वार ॥६६॥ जिण तनि जोअण सय संचरे, तिण जर आव्ये चरण न भरे। खिण भंगुर ए जाण सरीर, एह उपरि किम राचे धीर ॥६७॥ एवमादि सघला संबंध, चींतवतो कुरकंडु प्रतिबुद्ध। पंचमुष्टि आपें करे लोच, विषयकषाय कियो संकोच ॥६८॥ सासण देव ते आपे लिंग, संजम पाले रुषि मनरंग। ते मुणिवरनो मनधरि नाम, हरषे ब्रह्मो करे प्रणाम ॥६९॥

(गाथाः-)

सेयं सुजायं सुविभत्तिसिगं, जो पासिअं वसहं गुट्ठमज्जे। रिद्धिं अरिद्धिं समुपेहिआणं, कलिंगराया विसमिक्ख धम्मं ॥७०॥ इति श्रीकरकंडुचरितं ॥१॥ अथ द्विमुखचरितं प्रारंभः

(जंबूस्वामिगीताछंदो-५ ढालः-)

धुरि वंदोरे सुगुरुचलण रलियामणुं, हिव बोलिसुरे चरित दुमुखमुणिवरतणो। कंपिलपुररे नयर भरते जग जाणिये, तिहां नरपतिरे यदुहरिवंश वखाणियेः-वखाणिये गुणमाल नामें तासु रमणी तेहसुं, सुख भोगवंतो एक दिवसें दूत प्रते पूछे इसुं। कहो अपर राजा राजजोतां किसो मुझ उणो सही, तो दूत जंपे मने न कंपे नाथ! चित्र सभा नही ॥७१॥ तव नरपतिरे सेवक नरप्रते एम भणे, लहु कीजेरे सभा मंडाणें अतिघणें। धरा खणतांरे पंचवन्नमणि दीपतो, सिरमंडनरे मुकुट निकल्यो दीपतोः-दीपतो सूरिज दीपनी परे रायनें जइ च्चर कहे, वधामणी तसु प्रबल आपी राउ हियडे गहगहे। वजावि तूर करेवि ओछव भूमिथी बाहिर लीये, थोडले काले सभा मंडपे निपने राय हरषिये ॥७२॥ सुभ दिवसेंरे मुकुटसिरें आरोपियो, तव दीपेरे मुगट प्रभावे दुमुख थयो। तब बेसेरे चित्र सभामाहे सोहतो, ते मुकुटेरे अचरिज जनमन मोहतोः-तसु अछे सात सुपुत्र गुणवंत रूप तेज लक्खणधरा, एक नहीं बेटी एह मोटी चित्त आरति कंधरा। अन्यदा मंजरि सुपन सूचित हूइ मदनमंजरी, नारी कला करि तनु सुसोभित रूपे जिम सुरसुंदरी ॥७३॥

इण अवसरेरे चंडप्रद्योत धरणि धणी, उज्जेणीरे नयर निवासी अतिगुणी। कहे आवीरे दूत दुमुख नृपयदु थयो, एम बोलेरे संभलि अणखें गहबह्यो:—गहबह्यो मुकुट विचार संभलि दूतमुखे एहवुं भणें, ए मुकुट रतनज अति अपूरव जोइये घर अम्ह तणे। मूकज्यो शीघ्र नहीं ते अथवा जुद्ध सजाइ करो, एम सुणी दोमुह कहे वलतो कह्यो अम्हारो जइ करो ॥७४॥

(गाथाः-)

देहि अनलगिरि हत्थी[१], अग्गी भीरु तहा रहवरोय[२]। जाया य शिवादेवी[३], लेहारिअ लोह जंघोअ[४] ॥१॥ ए च्यारेरे द्यो साटे मुकुटह तणे, एम संभलरिरे चंडप्रद्योत रोसें घणें। जदु उपरिरे चतुरंग बल सज्जी करी, धरि आगलेरे लक्षदुनि मदमत्त करी:- दोय सहस रथ हय अयुत पंचे कोडि सग पायक तणी, नहु पार लहिये अवर रिद्धिहिं चाल्यो उज्जेणी धणी। पंचाल देसह संधि पुहतो दुमुख बल सजि आवियो, संग्राम करतां दुमुख जीतो सबल वलि चित्त भावियो ॥७५॥ काठपंजररे चंडप्रद्योत नृप घालियो, दध्रिवाहणरे नयर आवि जस ध्वज लियो। एक दिवसेरे रायसुता रंभा जिसी, प्रद्योतेंरे दीठी तेहज मनवसी:- मनवसी मंडपे सभा भूपति सपरिवार बेठो, मुख छाय विलखि जुहार करतो राय दोमुहि दिठो। पूछियो सयल समाधि वलतो न द्ये उत्तर ते सही, हसि पड्यो राजा वली पूछे वात जिम थी तिम कही ॥७६॥ तुझ पुत्रीरे मुझसुं पाणि ग्रहण करे, तो निश्चेरं जीवित माहरो ऊगरे। एम निरतोरे जाणि प्रद्योत

छोडावियो, निजपुत्रीरे मदनमंजरी वरकियो । बहुदियो साथें कटक तेहसुं नयरि उज्जेणी गयो, आवियो जाणी इंद्र महुच्छव चित्ते दुमुह हरषियो । एक थंभ मोटो बहु महोच्छवे सुद्ध भूमि रोपावियो, बहु हार सुकुसुम माल घंटा ध्वज पताके अलंकीयो ॥७७॥ तिह पासेरे नाचे गावे बहु हसे, एक एकथीरे अधिकें आणंदे उल्लसें। जन नाटकरे नाचे दान दिये घणा, बहु कुंकुमरे अगर कपूरें छांटणां:–छांटणकुसुम तंबोल करतां सात दिन पूरा थया, सर्वलोक जे जिहांथकी आव्या तेय तेणी दिशि गया। ते थंभ ठूंठ समान पडियो देखि नरपति चिंतवे, बहु मूत्र मल तेह करत देखी राय संवेगी हवे ॥७८॥ तव जाणेरे थिररिद्धि अथिरपणो, खिण माहेरे दीठो ए असुहामणो । एम चिंततरे प्रत्येक बुद्ध थयो वली, पंचमुष्टियेंरे लोच कियो मननि रली:– वली२सासणदेवि वंदे वेस आणी तेह दिये, मद मोह मच्छर टालि मुणिवर भावसुं संयम लिये। ग्रामानुग्राम विहार करतां पापकंद निकंदए, करजोडी मनि आणंद आणी ब्रह्म तसु पय वंदए ॥ ७९ ॥

(गाथा:-)

जो इंदकेउं समलंकिअंतं, दट्ठुं पडंतं पविलुप्पमाणं, रिद्धिं अरिद्धिं समुपेहिआणं, पंचालराया विसमेरव धम्मं ॥८०।

इति द्विमुखचरितं संपूर्णं ॥२॥ अथ श्रीनमिरायचरितम्–

(चोपाइः-)

श्रीगुरुचरणकमल अणुसरी,बोलीसु नमि मुनिवरनो चरी।

क्षणा करी उच्छाह, मयणरेहा पय वंदे भाय ॥४०॥ पछे नमें मुनिने कर जोडि, जेणे टाली भव भमवा खोडि। बेठो सुर अविनय बहु देष, विद्याधर पूछे सविशेष ॥४१॥ अमर-नरिंद परूपे न्याय, अनुजे चालें तेह अन्याय। तो दूषण दीजे केहनें, कांइ नम्यो पहिलुं एहनें ॥४२॥ चारकषाय पणिंदिअ चोर, मनमद निग्गह कीधो घोर। रतनत्रय संयम धुर धार, ते मुनि प्रथम नमत आचार ॥४३॥

(गाथाः-)

अमरेहिं नरवरेहिं परूविया हुंति रायनीइयो। लुप्पंति जथ्थ तं चिय, को दोसो तथ्थ इयराणं ॥ १ ॥ कोहाइ दोस रहिअं, पंचिंदिअ मुंडणं पणठमयं। अरनाणे दंसणधरं, तव संजमे संजुअं धीरं ॥२॥ मुत्तूण समणमेअं, दंसण मित्तेण नासिअ तमोहं। पणउसि कीस पढमं, इमा इंतं अवि वुच्छामि ॥ ३ ॥ खेचरपति तुम्ह साचो कह्यो, ते भावारथ में पुण लह्यो। एह छे कारण ते संभलो, पछे विचार हिये अटकलो ॥ ४४ ॥ सुदंसणपुर मणिरथराय, भाइ जुगबाहु जुवराय। मधुमासें वनमाहें वस्यो, वैर पाछलो तसु उल्हस्यो ॥४५॥ भाइ वडे हण्यो हुं जिस्ये, प्राण कंठ गत हूआ तिस्ये। मयण-रेहा संभलाव्यो धर्म, जिणथी लहिये शिव गति शर्म ॥ ४६॥ वैर भावथी मन वालियो, सुद्ध भावे में समकित लियो। काल करी पंचम सुरलोइ, सामानिक सुर हूओ जोइ ॥४७॥ पूरो दस सागर मझ आउ, धर्म तणो इण कह्यो उपाउ।

धर्माचारिज ए माहरे, तिण पहिलो नमतां मन ठरे ॥ ४८ ॥

(गाथाः-)

जो जेण सुद्धम्मंमि, ठाविओ संजएण गिहिणा वा। सो-चेव तस्स जायइ, धम्मगुरु धम्मदाणाओ ॥ १ ॥ सम्मत्त दायगाणं, दुप्पडियारं भवेसु बहुएसु । सव्व गुण मीलियाहिं, उवयार सहस्स कोडीहिं ॥२॥ खचर निसुणि एहवो विचार, चिंते जिन धरम समरथ सार । तां लगि पाडे दुरूखे रीव, जां लगे न करे जिण धर्म जीव ॥४९॥

(गाथाः-)

संसारंमि अणंते, जीवा पावंति ताव दुरूखाइं । जाव न करेंति धम्मं, जिणवर भणियं पयत्तेणं ॥५०॥ भण साह-मिणि ! हिव जे तुझ गमे, ते सहु अज्ज संपजावुं हि मे। सती कहे मुझ शिव गति ठाम, रुचे ते तम्हे न सीझे काम ॥५१॥ तो पुण मिथला नयरि दिखाल, संजम ल्युं सुत वयण नि-हाल । सुर लेइ मिथलापुरि जाइ, मल्लिनाथ जिण जनमह ठाइ ॥ ५२ ॥ उत्तरि दृढ भगतें जिनरूप, प्रतिमा पूजें लाभ सरूप । महासति तणे उपाश्रये जाइ, धर्म सांभलें मननें भाइ ॥ ५३ ॥

(गाथाः-)

लध्धूण माणुसत्तं, धम्माधम्म फलं च नाउणं । सयल सुह साहणंमी, जत्तो धम्मंमि कायव्वो ॥५४॥ मयणरेह प्रति प्रभणे देव, पुत्रतणो करे दरिसण हेव । तो ते वलतो उत्तर कहे, पुत्र राग मुज मन नवि रहे ॥५५॥

(ढाल-माहरो बालुडोः-)

संभलि अमर विचार जीव सहु कोइ सगपण भावें अव-
तर्याए, तो स्यो मोह विकार एकण उपरे धन ते मुनि जे
भव तर्या ए। अम्हे हिव देस्युं दीख सुर साहुणि नमी पहुतो
मन हरषें हिवेए, मयणरेह लहि सीख पाले संयम नमि च-
रित्र कहियें हवे ए ॥५६॥ पदमरथ घरे बाल वाधे सुखे
अर्यो तसु प्रभावे नमिया वैरीए, सुत प्रभाव सुविसाल मात-
पिता जाणी हरषें नमि नामें करीए। कला बहुत्तरे जाण
आठम वरिसेहिं हूओ क्रमे जोवन लहेए, रूपवंति अति जाण
सहस अट्ठोत्तर नारी परण्यो गहगहे ए ॥५७॥ मधुकर कुसुमें
जेम तिण परे भोगवे भोग तेहसुं मन रलीए, सहु जीवनें
खेम संजम आदरे पदमरथ राजा वलीए। पाली चारित्र
भावे मुनि मुगतें गयो, नमि हूओ तेह राजियोए, पुन्यह
तणे प्रभावे दीन२ चडतो महिमा पडहो वाजियो ए ॥५८॥
पदमरथ तेणी रात सर्पे डस्यो मरी चोथे नरकें उपनोए,
जाणी उत्तम जाति राजा चंद्रजस नाम प्रमाणें नीपनोए।
कीधो उरधकाज सोग निवारीय मन आनंदे पूरियोए,
चंद्रजसपाले राज एम अनुक्रमे द्रव्यत अरिगण चूरियोए
॥ ५९ ॥ नमि नृप तणो गयंद एकण अवसरे बंधन त्रोडी
चालियो ए, आडे जइय नरिंद बहु बले उपक्रमें चंद्रजसें
ते झालियो ए। सुणिय वात नमिराय दूत तिहां कणे
पाठवि गज मंगावियोए, दूत तिहांथी जाइ जोडी

करकमल चंद्रजस भूप वधावियोए ॥६०॥ कहे जेतले वात गयवर केरीय तो चित चंद्रजस कोपियोए, भणे कोइ उपघात राज सयल कहो केहनें छे आरोपियोए। हुस्ये जेअ जगे सूर ते निज भुजबले साधि धुरा करे आपणीए, दूत निभरछ्यो दूर जइ नमिनें कहे वात माने करि अति घणीए॥

(ढाल-जीव अनें अजीव प्रकारए-ए देशीमां)

सुणि वयण चंद्रजस कोपेरे, बहु बलें कटक आरोपे। हय गय रथ पायक कोडीरे, चाल्यो नृप सेना जोडी ॥६२॥ वाजे वाजित्र ढोल नीसाणरे, तूर सरणाई सपराण। बहू सूर साथे परिवरियोरे, जइ देस संधि उतरियो ॥६३॥ नमि संभलि चंद्रजस आयोरे, निय कटक सहू सुसजायो। सनमुख जाइवा नीसरियोरे, तो अपशुकनें चित्तें डरियो ॥ ६४ ॥ तव मंत्रि कहे धरि रंगरे, स्वामी साह्मो जातां भंग। तव दुरग सजाइ मंड्योरे, धीरपणुं सत्त म छंड्यो ॥ ६५ ॥ सजो करो सकल यंत्ररे, आराधो सुर जपि मंत्र। ए वयण सुणी राय वलियोरे, सवि सूर मंत्रीसर मिलियो ॥६६॥ चिहुं दिसि पुर रुंधे आवीरे, नमिराय कोप मन भावी। महासती सुणी ए वातरे, हुवे रखे लोकनो घात ॥ ६७ ॥ रखे सुत कुगति जाइरे, एम चित्त विमासण थाइ। गुरुणी आदेसें भमतीरे, ते नयर सुदंसणे पहुती ॥६८॥ महासती देखि नमि वंदेरे। माइ कहें मन आणंदे। साहुणी धर्म समझावेरे, पण नृप मने समता नावे ॥६९॥ ए परिगह सवि दुख दाइरे, अनें एह

पूरव दिशि जातां तिणें, महाअडविसंपत्त ॥१७॥ संपत्त दीवाकर तेज, संभरती पूरव हेज । विहुं पहुरे सरवरें जाइ, जल पीने वनफल खाइ ॥ थाकी मारग चालंति, एक तरुने मूलें सूती । अणसणे आदरे सागारे, चिंते पाछलो प्रकार ॥१८॥ रात हुइ जां तेतले, घुरके वाघ अपार । सूअर चिहुंदिसि घुरहरें, सिंह करे गुंजार ॥१९॥ फेकारी फेफे बोले, जे संभलि कायर डोले । चीत्रानें रींछ संतावे, पुण सती समीप न आवे ॥ एम जपत पंचनवकार, जाय रयणी दुइ पहर । तो बहु वेदनि सुत जायो, सर्वलक्षणशोभित कायो ॥२०॥ नामांकित मुद्रासहित, कंबलसुं वीटेव । सुप्रभाते सरवरे गइ, सुत एकंते ठवेव ॥२१॥ अंबरनें सरीर पखाले, उभी रहि सरवरपाले । तो जलगजमुख विकरालें, सूंडें धरि गयणि उलालें ॥ इण अवसर एके विद्याधर, वाटें जाता नंदीश्वर । पडती देखी करुआले, खेचर विमानमांहे घालें ॥२२॥ रोयंती वेयड्ढगिरि, लेइ गयो खचरिंद । मयणरेह एम वीनवे, सुण तुं सामि ! अमंद ॥२३॥ सुभचंदन सरस सुत रानें, मे मूक्यो पापनिदानें । तेहनी गति कहे किम होस्ये, आहार विना ते मरस्ये ॥ तिण कारण सुपुरुस जाउ, सुत आणो करो पसाउ । तो भणे विद्याधरराय, मुझसुं करि भोगो पाय ॥२४॥ रयणवहपुरराजियो, देस गंधार प्रसिद्ध । खचर नामे मणिचूड तसु, सुत हुं विद्यासिद्ध ॥२५॥ कमलावती माहरी मात, हुं मणिप्रभ नामे विख्यात । विहुं श्रेणि धणियपण पाल्यो, मुझ ताते कुल उजूआल्यो ॥ वैरागें लीधी दीख, मुझ

दिद्धि राजपद सीख । ते मुनि इहां आव्यो हुंतो, नंदीसर दीपे पहूतो ॥२६॥ प्रतिमा श्रीजिणवरतणी, ते वंदेवा काज । तेह जातां देखी करी, तुं आणी इह आज ॥२७॥ हिव करिस मुझ भरतार, तो तुझ आपिसुं भंडार। तुझ भाषित वयण करेस्युं, सुत वेगे आणी देस्युं ॥ विद्याकरि मे वलि जाण्यो, तुझ सुत वनमांहिथी आण्यो। मिथलापति सुत करि पाल्यो । मे ज्ञानें करी निहाल्यो ॥२८॥

(ढालः-आदिजिणेसर० प देशोमां)

तो हिव बोले धरि विवेक धीरपणो आदरि, मुझसुं भोगवि कामभोग अनुभव जुवणसिरि । एम सुणि चिंते मयणरेह सवि कर्मजपाइ,किम छूटिसु हिव इहां नही कोइ बाप न भाइ। मदन-वसें जे जगे पुरुष, ते न विमासे काज। पण उपाय कांइ करुं, जिण करि छुटुं आज ॥२९॥ नंदीसरवर दीव मुझने लेइ जाय, तो मनवंछित तुम्ह अम्ह सवि सफलो थाय । करि विमान तसु खचरराय बेसाडी चाल्यो, नंदीसर दंसणें सहु दुख भवनो टाल्यो॥ दधि मुख अंजण भूधरें, रतिकर ठाम विचारि। बावनजिणहर तेह कर्या, आगमनें अनुसारि ॥३०॥

(गाथाः-)

अंजणगिरीसु चउसु, सोलस दहिमुहेसु सेलेसु । बत्तीसं रइकरेसु, नंदीसरदीवमज्झंमि ॥१॥ जोअणसय दीहाइं, पन्नासं विच्छडाइं विमलाइं । बावतरु सियाइं, बावन्नं हुंति जिण भवणा ॥२॥ वंदइ चेईय खयर नाह तिम पुण मणिरेह, पूजा

भगति करेवि भावें थइ निर्मल देह । वंदिअ मुणि मणिचूंड तासु पासे बे बेठा, चउनाणी चारण मुणिंदे ऊपयोगें दीठा ॥ मयणरेहने जाण कर, धर्म कहे रिषिराय। विद्याधर मन वालियो, खामे लागी पाय ॥३१॥ आज पछें तुं बहिन माहरी खेचर बोलइ, ताहरुं कहि सुं करुं काज सुविनीतह तोलइ। कहे सती तें सर्व कियो नंदीसर दाख्यो, पूछी पुत्रह वात साचि ते निरतो भाख्यो। जंबूदीव मुणि सुंदरीय पुव्वविदेह मझार, विजयपुख्खल मणितोरणा नयरि तथ्थ संभार ॥३२॥ (महावीदेह क्षेत्रे पुष्कलावती विजये अमीततेज चक्रवर्तिना पुत्र२ पुष्पशिखर[१] रत्नसीखर[२] हुआ, तिहां चारित्र पाली बारमे देवलोके, २२सागरोपमने आउखे देवता हुआ तिहांथकी धातकी खंडद्वीपे हरिषेण वासुदेवने घरे पुत्रहुआ सागरदेव १ सागरदत्त२ तिहां चारित्रपाली महाशुक्र देवलोके ११. सागरोपम आउ पाली मिथिला नगरी पद्मरथ राजा हुओ, बीजो सुदर्शन पुरे जुगबाहुने घरे नमिहुओ) अमियजसाभिह चक्कवट्टी पुष्पवती नारी, रयणसीहनें पुष्फसीह तसु सुत संभारी। चोरासी लखपुव्वराजपदवि ते पालि, एक अवसरे संजमधारवि आश्रवसवि टालि ॥ पुव्वलक्षसोलहलगें, चारित्र पाले भाइ । अच्चुयकप्पें चविय करि, इंद्र सामानिक थाइ ॥३३॥ सागरदोयनें वीस अमर सुख तेह भोगविया, धाइय खंडें भरत अर्धे ते तिहथी-चविया । चक्रीसर हरषेण घरें ते सुत अवतरिया, बहु दिन पाली राज अंते संजमसिरि वरिया ॥ वीजघाति त्रीजे दिवसें,

अमर सुक्ख पामेव । साते सागर आउ तसु, जाइं तिहांथी श्रेय ॥ ३४ ॥ केवलि महिमा नेमिनाह पूछ्यो अलवेसर, अम्हे इहथी किहां हुस्युं चवी भाषे तिथ्थेसर । भरते मिथला नयरे एक जयसेन नरिंदह, हुस्यें पुत्र सुभ तासु गुणवंत बीजो कहिये तेह ॥ मयणरेह जुगबाहु सुत, हुस्ये सुदंसण ठाम । परमारथे पिय पुत्त पण, हुस्ये कह्यो एम सामि ॥३५॥ एम सुणी पुहता–देवलोके मिथलानयरि, वणमाला उरे जनम लह्यो नृप जयसेनघरि । पद्मरथ्थ तसु नाम पत्त जोवण वय जाम, देइ राज जयसेन भूप दीक्षा ल्यें ताम । पद्मरथ्थ राजा थयो ए, पुप्फमाल तसु नारि। बीजो तेहथी चविय करि, तुज सुत हुओ संभारि ॥३६॥ एक अवसरे हय पद्मरथनें अटवी आणे, भमतो तेह ते तुज पुत्र देखी चित जाणे । पूरव भव नेहे करेव सुत लेइ चाल्यो, कटक सहित निय नयर जाइ पुप्फमालह आल्यो ॥ कर्यो महोच्छव अति घणो, वाज्या मंगल तूर । कुमर तिहां लीला करत, वाधे दिने गुण पूर ॥ ३७ ॥

(चोपाइः–)

भगवन भाषे एह विचार, देखे सुर विमाण अवतार । मुत्ताहल माला मणिथंभ, महारूपे सोहे सुररंभ ॥३८॥ वाजे तूर सद्द सुविशाल, रुणझुणंत बहु घूघरमाल । चिहुं दिसि करें अमर जयकार, सुरवरताम करें अवतार ॥३९॥ चंचल मणि कुंडल लहलहे, हार हृदय सोभा गहगहे । दिये मद-

राय तुझ भाइ । सहु पूछ्यो तिण विरतंतरे, अभिमाने न नृष उपसंत ॥ ७० ॥ तव जाइ नयर मझाररे, महासती निजें परिवारे । रायग्रणि पहुती जामरे, परिवारे ओलखी ताम ॥७१॥ चंद्रजस नृप लागें पाएंरे, मनमाहें हरष न माइ । पगे लागे मदगद वयणेंरे, अंतेउर गलते नयणे ॥७२॥

(चोपाइः-)

पूछे नृप चारित्र निदान, कहे महासती न करें मान । जाणी परिपूछे गर्भवात, कहो तासु परे मुझने मात ॥७३॥ कहे मात आव्यो झझवा, ते तुम्ह लघु बंधव जाणिवा । तव राजा मन हरषें भर्यो, भाइ सनमुख जोवा नीसर्यो ॥ ७४ ॥ देखि सहोदर नमि आवतो, तसु सनमुख चाल्यो मलपतो । करि प्रणाम बंधव पय लग्ग, एकठ थयो कुटुंबह वग्ग ॥७५॥ चंद्रजसें दियो नमिनें राज, नमि पालें बिहुं देसह राज । चंद्रजसनृप चारित्र आदरे, तपकरतो चिहुंदिसि संचरे ॥७६॥ नरपति देहि थयो एकवार, जास न कोइ पामे पार । दाघज्वर छम्मास प्रमाण, फुरे नउ सहु मंत्रविनाण ॥७७॥ चंदन घसे मिली सविनार, माहें शीतलद्रव्यसुवार । हेमचूड घसतां खलकंत, राय श्रवणे ते न सुहावंत ॥७८॥ एम गिणि एक चूड करधरे, चंदन घसे उपक्रमे खरे । पूछे नृप नहु खलकें चूड, कांइ ते नारि न बोले कूड ॥७९॥ वलय एक अम्ह हाथें रहे, बीजी उतारी एम कहे । ए सुणि दुखभर चिंते भूप, सहि संसारह एह सरूप ॥८०॥ जां बहू परिवारें परिवर्यो, तां थांसे घणा

दुख्खे भर्यो। होइ एक तो सवि सुखलहे, नारी वलयतणी परे कहे ॥८१॥ तो जइए दुखथी छूटिस्यु, आरंभ परिग्रह तो मूंकिस्युं। एम चिंती निसि सूतो जाम, निद्रा खरी उपन्नी ताम ॥८२॥ कातिक पूनिम अछे तिवार, सुपने एक देखे नृपसार। मेरुउपरे करिखंधे रुढ,नंदितूररवे पडिबुद्ध ॥८३॥ रात विहाणी व्राठोरोग,सुहिणानो मने द्ये उपयोग। कइये मेरु इस्यो में दिठ, एम चिंतवि संवेगे पइठ ॥८४॥ रूडे ध्याने जातिसंभरी, पूरवभवसंजमसिरिवरी। पुप्फोत्तरसुरकप्पें गयो, रिद्धिवंत वृंदारक थयो ॥८५। जिनमहिमा करवा आवियो, तव मंदर दीठो भावियो। थ्यो संबुद्ध संवेगें खरे, संयम लेवाने अणुसरें ॥८६॥ इसे थयो कोलाहलतणो, जाणवो जोग रायनमितणो। नारि कुटुंब सहू झुरंत, नमि एकंत भावन भावंत ॥। नमिनो मन परखेवा वली, विप्ररूपे इंद्र आवे रली। वचन कहीस्ये आगले जेय, नमिनेंसुरपति पूछे तेय॥८८॥ मिथला नयरि कोलाहल आज, कहो कांइ सुणिये रिषिराज। विलवे लोककरे आक्रंद, चोक चाचरे मिलि जनवृंद ॥८९॥ एय वचन मुणिवरे संभल्यो, कारण हेत करि संकल्यो। तदनंतर बोले रिषिराइ, इंद्रप्रतें धरि समता भाइ ॥९०॥ मिथला नयरि महीधररिद्ध, तेह एक वृक्ष सुगुण समृद्ध। चैत्यसहितकृत पूजो पाय, मणहर सुगुण सुसीतलछाय ॥९१॥ महावाय ते कांपें जिसें,पंखी तो नासे दहदिसें। अशरण अनें सही अत्राण,तिण आक्रंद करे सपराण॥९२ सजनकोलाहल पंखी साद, तरु समान जगे नमि जसवाद।

नियति थइ पूरी हिव जाइ, तिण कारण कोलाहल थाइ ॥९३॥ एय वचन सुरपति संभल्यो, कारण हेत करी संकल्यो। तदनंतर बोले सुरराइ, नमिरिषिराज प्रतें समभाइ ॥९४॥ अगनिजलेंने वाजे राउ, ए तुझ मंदिर दाझे राउ। भगवन अंतेउर ताहरो, कांइं विमासी सार न करो ॥९५॥ एय वचनमुणि० ॥९६॥ जीवुं सुखें सुखें निरवहुं, हवो अवर न कांइ लहुं। मिथला-नयरी दाझे जोइ, माहरो इहां न दाझे कोइ ॥९७॥ पुत्र कलत्र छांड्या व्यापार, मुनिनें प्रिय अप्रिय परिहार। सदाकालरिषिनें कल्याण, निपरिग्रह एकाकीजाण ॥९८॥ एयवचन सुरपति० ॥९९॥ पोल सहित मोटो प्राकार, बुरज जिहांकणे रहे झुझार। खाइ खणी ढंकली मंडाइ, पछे जाइं तुं खत्रीराइ ॥२००॥ एय वचनमुणि० ॥ २०१ ॥ सुद्ध सद्दहणा पुर वासियो, सम संवेग बारणो कियो। तप संवर कीधा आगले, खिमा रूप गढ चिहुं पाखलें ॥२॥ गुपति यंत्र नहु कोइ परभवे, धनुष-पराक्रम कीधो हवे। ईर्या पण छके तनथी रता, विहुंपासे बंधन सत्यता ॥३॥ अभिंतर तप चाढ्यो बाण, कर्म वेरी भेद्या सपराण। मुनिवर जीपें करि संग्राम, पाम्यो शिवगति अवि-चलठाम ॥४॥ एय वचन सुरपति० ॥५॥ वासतिक शास्त्रना जाण बुलावे, वर्द्धमान घर एक करावे। वलभी तसु चिहुं दिसें कराइ, पछे जाय तू खत्रीराइ ॥६॥ एय वचनमुणि०॥७॥ संसय जावानो ते करे, मारग माथे जे घर करे। जाइवां हीडे निश्चे जिहां, जाइं करी घर मंडे तिहां ॥८॥ ए गति मारग

तणो पयाण, एह नहु निश्चे अम्ह अहिठाण। मुगति नयर जिहां जावाभाव, तिहां कीधो छे निश्चलठाव ॥९॥ एय वचन सुर० ॥१०॥ चोरलो महर नरनें हणे, छोडे गंठिनें खात्र जे खणे। देसे नगरें कुसल कराइ, पछे जाइ तुं खत्रीराइ ॥११॥ वारंवारं करे जे दंड, पुण न लहे अपराधीचंड। न्यायी लोक जगत्र बंधाय, अन्याइ प्रति कांइं न थाय ॥१२॥ रागदोष बे मोटा चोर, तेहनो निग्रह करतां घोर। अवर न वैरि को संसार, जेहनें कीजे दंडविचार ॥१३॥ एयवचन० ॥१४॥ महा मांन जेहना घटमांहि, तुज्ज न नमे जे नृप उच्छाहि। आपणडे वस तेहनें ठाइ, पछे जाय तुं खत्रीराइ ॥१५॥ एयवचन० ॥१६॥ दसलख दुर्जय जीपे रणे, एकवस करें जीव आपणे। एह परमजय पंडित कहेइ, बाहिर झूझे स्युं फल लहेइ ॥१७॥ इण कारण जीवस्युं झूझिये, विषय कषाय पण चउ बुझिये। दुर्जय जीतो जिणेआतमा, ते जयवंत जती महातमा ॥१८॥ एयवचन० ॥१९॥ जगन करी ब्राह्मण जिमाड, दे दक्षिणा जगजीवाड। भोगवि भोग जगन करि भाइ, पछे जाय तूं खत्रीराइ ॥२०॥ एयवचन० ॥२१॥ मासमासद्धे दसलख गाय, तसु पण संजमे बहुफल थाय। जिण कारणे आश्रव भवहेतु, संयम बोल्यो शिव-गति सेतु ॥२२॥ एयवचनसु० ॥२३॥ दुःकर छंडे छे गृहवास चारित्रनो वंछे अभ्यास। ते तुझ जुगत न पोसहसाल, घर आश्रमरत आरतिटाल ॥२४॥ एयवचनसु० ॥२५॥ मासमास तपतपें अज्ञान, डाभ अग्रे जे जिमे धान। ते पुण जिनभाषित

संजमें, कलासोलमी तुले न किमे ॥२६॥ एयवचनसु० ॥२७॥ सोवन मणि मोती धण धन्न, कंस दूस वलि बहुल रतन्न। तेणे करी भंडार भराय, पछे जाय तूं खत्रीराय ॥२८॥ एयवचनसुणि० ॥२९॥ सोवन धननी राशि प्रमाण, करे असंख जे मेरु समांन। तो सुण लोभी तृपति न लहे, तृष्णा हिये अनंती वहे ॥३०॥ वसुधा सालि अने जव चणा, पसुधन करिये एकठ घणा। पुण ते एकनें त्रिपति न होइ, एम जाणी संयम ल्ये सोइ ॥३१॥ एयवचनसुर० ॥३२॥ अचरिज मुझ मन मोटो एह, अद्भुत भोग तजे छे जेह। अछता भोग मन इच्छेस, पछे तासु अभिलाष वहेस ॥३३॥ एयवचन० ॥३४॥ काम भोग विषसल्यें समा, आसीविष जसु ऊपमा। काम भोग अभिलाष जे करे, ते दुर्गतें गमन अणुसरे ॥३५॥ क्रोध अधमगति मानेहीण, माया सुगति विणासे दीण। लोभथकी भय उभय प्रकार, सुरपति ए संभल्यो विचार ॥३६॥

(दूहा:-)

विप्ररूप सुरपति तजे, करे इंद्रनो रूप, वंदे गुण कीरति करे, दाखी सुगुण सरूप ॥३७॥ छंड्या चार कषाय ते, पाल्यो दसविध धर्म। इहां पुण उत्तम तुं अछें, पामिस सिव गति सर्म ॥३८॥ एम थुणि करी प्रदक्षणा, सुरपति गयो नियठाण। संयम तमिरिषि आदरे, मने समता रस आण ॥३९॥ सुर आपे सवि उपगरण, मुनिवर करें विहार। तसु पय ब्रह्मो हर्ष धरि, वंदे वारंवार ॥४०॥

(गाथाः-)

बहुआण सद्दयं सोच्चा, एगस्सअ असद्दयं। वलयाण णमी-राया, निक्खंतो महिलाहिवो ॥१॥॥

॥ इति श्रीनमिरिषिराज चरितं ॥

॥ अथ श्रीनग्गतिप्रत्येकबुद्धचरितं प्रारंभः-

दूहाः-

चरित कहुंअ नग्गइ तणो, गुरुनो लही पसाव। देसगं-धारें जाणिये, पेंडवर्द्धन पुरठाव ॥४१॥ सिंहरथ नृपति तिहां वसे, तेहनें दुन्नि तुरंग,। उत्तर दिसिथी भेटणे, आण्या किणहिं सुचंग ॥४२॥ घोडा फेरववा भणी, एकें नृपआरूढ। बीजे नृपसुत तुरग ते, विपरीत शिख्यित गूढ ॥४३॥ राजा तुरंगें अपहर्यो, खंच्यो नरहे वाग। दोडि अटवी माहि गयो, ढील्यो धर्यो तुरंग ॥४४॥ तुरंग एक तरु बंधिने, वनफल करें आहार। पेखे नृप घर सत मालो, भमतो वनह मझार ॥४५॥ घरमाहि पेसे जेतले, पेखे जुव्वण नार। रूप गुणे सुर जुई सम, छेल तरूण मणहार ॥४६॥

(ढालः-)

तव उठी कुमरी रायनें द्ये सनमान, बेठो नृप माहो माहें राग समान। कहे तुं बाले कांइ एकली वनह मझार, तो धीर-पणुं धरि उतर द्ये सा नार। सामि वेदिका पासें आवी मुझसुं करो विवाह, कहिस्युं पछे वृतंत माहरो नृप सुणि धरे उच्छाह। घरमाहि ते जाइ जेतलें पेखे जिणहर ताम, जि-णवर प्रतिमा पूजि धूप द्ये भावे करें प्रणाम ॥४७॥ नृपपर-

ण्यो राते वास घरें सुअंत, सुप्रभातें जिनप्रतिमानें बेव नमंत। नृप बेठो कुमारी भाषे पुव्वचरित्त, सुण खितिपईठ पुरे राजा थ्यो जितशत्रु। तो तेरे चित्रसभां मंडावे राज वेहची हे सुभाग, चीतरानें राय नहि जोयो निबल सबलनो लाग। एक चित्रंगद नामें चीतरो करें चित्र अतिफार, तेहने कनकमंजरी बेटी जुव्वणवय अवतार ॥४८॥ दिनप्रति ते ल्यावे भात एकण प्रस्तावे, लेइ भात पितानें राजपंथे सा आवे। जणसंकुल मारग पुरुष एक असवार, घोडो दोडावें उरें परें बहुवार। कुमरी दुखे भातलेइ जाय तात आवती देखी, देह चिंता करवानें चाल्यो आव्यो भात उवेखी। कौतिग मौर पंख आलेखे नृप आवि तिहां जोय, सुंदर पीछेसुं कहि नरपति लेवा नींचो होय ॥४९॥ (पांडुवर्धन नगर सिंहरथ राजा, चित्रकर पुत्री कनकमंजरी, वैताढ्य पर्वते, तोरणपुर नगरे दृढशक्ति विद्याधरनी पुत्री कनकमाला कनकतेज भाइ, वासव विद्याधरे अपहरी, ११ योजन प्रमाण अटवी तिहा पर्वत सिखरे सप्तभूमिक आवासे राखी ते सिंहरथ राजा परणी वारंवार पर्वते आवे जाय तेह भणी नगाती राजानो नामहुवो) सहसातकारे नख धरणी लागी भाजे, नृप विलखोथइ चित्त जोवे मनमाहे लाजे। कुमरी हसि बोले डगे खाट त्रिहुं पायें, चोथो मूरख मिलियो हिव निश्चल थाये। पूछी राय हसी कहे कुमरी एक माहरो तात, तनु चिंताएं जाय तिवारें शीतल थायें भात। बीजो राजपंथे हय दोडे न गिणे बाल गिलाण, नारी नर

असमर्थ जे देखे तेहना पडे पराण ॥७०॥ बीजो मूरख हिव बीजो मूरख पुर राय, जिणे चित्र सभा आपी सवि हुंते समभाय, बीजा बहु परिवारे एकलो माहरो ताव, जर जीरण निर्धन दुर्बल जेहनो गात। जुगताजुगतो जिणे न विचार्यो त्रीजो मूरख एह, चोथो तुं जे लेवा वंछे मोरपीछ सम रेह। संभली तेहनी वचन चातुरी देखी लावन्न रूप, प्रेमराग रंजित मन वंछें परिणवा तसु भूप ॥७१॥ तातनें जिमाडी कुमारी निय घरे जाय. मंत्रीसर सनमुख चित्रंगद पूछ्यो राय, परणावो कनकमंजरी वलतो बोले. अम्हे चित्रक निर्द्धन/तुम्हे नरपति किम तोले, राजभार झाली न सकीजें नृप धने गेह भरावें, रूडें मुहूरते महा महोछवे नृपनें ते परणावे। तेहने दे आवास रायनें बहु राणी परिवार, बारे एक दिवस एक पासे भोगवे भोग उदार ॥७२॥ बारो तिणि दिवस कनकमंजरिने दीधो, पहिर्या तनु मंडण अलंकार सवि कीधो। इण अवसरे जितशत्रु नरपति आव्यो तिणे ठाम, पल्यंकें बेठो सुखदायक अभिराम। राणीए मयणआ सीखवी आवें राय जिवारें, नरपतिनें संभलावा पूछे जे मुझनें कथा तिवारे। भणे मेणिया नृप जापोढें कहो तां एक कहाणी, निद्रा दे रायनें आवशे कहिस्युं पछि कहे राणी ॥७३॥

(चोपाइः-)

कपट नींद भरि पोढे राय, मयणा भणें कथा कहो माय। सुण वसंतपुरि वरूण गिहथ्थ, देहरी तिण कारी

एक हथ्थ ॥५४॥ चारहाथनो ते माहें देव, थाप्यो तेहनी सारे सेव। मयणा भणे एम किम होय, जुगता जुगति विचारि-जोय ॥५५॥ कहिसुं प्रभातें राणी कहे, हिवं अवसर निद्रा तुं वहें। बीजे दिन नृप तिहां आवेइ, मयणा वली कथा पूछेइ ॥५६॥ चार हाथ तसु देवह तणे, पुण न लंब पणे राणी भणे। पूछे वली कहो कांइ वात, जांलगि उठे पृथवी तात ॥५७॥ अइविमाहि तरू मोटो एक, पान फूलफल साख अनेक। पण तसु छाया किसे न होइ, मयणा कहे कां भाषो सोइ ॥५८॥ कहिसुं प्रभातेइं राणि कहे० ॥५९॥ ते तरू हुंतो खाड मझार, तिह रवि किरणह नहु पेसार। तिण कारण तेह छाया नही, एह वात कोइ समझे नही ॥६०॥ तव मयणा मन अचरिज धरे, वारंवार प्रसंसा करे। पूछे कहो वली कांइ वात, जां लगी उठे पृथ्वीतात ॥ ६१ ॥ एक उंट जइ अटवी चरे, आघो पाछो चिहुं दिसि फिरें। तिकां एक बाउलरूख पेखेइ, तिहनें खावा काजे अपेखेइ ॥६२॥ चिहुंदिसि तेय पसारे खंध, पुण न लहें तेहनो संबंध। करे मूत्रमल तसु सिरि सोइ, मयणा भणे एम किम होइ ॥ ६३ ॥ कहिसुं प्रभाते० ॥६४॥ हुंतो बाऊल ते कूआमाहि, मुख नहु तिण तिहां पुहतो थाइ। एम करतां बोल्या छमास, राजा मोह्यो बुद्धि विलास ॥६५॥ तव तसु सोक एकठी मिले, तसु विणासपरे मन अटकले। कहे अहो राजा वस कर्यो, जिणसुं अंतेउर परिहर्यो ॥६६॥ राचे राउ कमीण जात, गुणदूषणनी न लहे भात। राज काज किणवार न करें,

एक इणी उपरे मन धरे ॥६७॥

(ढाळ-हिव बोले सहुहरि अंतेउर-ए देसीमां)

कनकमंजरी एणे अवसरे, चडी मध्यानें नीज घर उपरे, गर्भघरे पेसेइ। तिहां एकली ठुंके बार, उतारे नृपना सिणगार, गारव मने न धरेइ ॥६८॥ पिहरतणा वस्त्र ते पिहरी, मनरूडे परिणामें अतिधरि, करि सीखामण जीव। आपणडी परे हिये संभारे, रखे केहिसु वैर विचारे, धारे सीख सदीव ॥६९॥ रहिसे एणि परिणामे नियवसे, तो तुं किमे न थाइंस परवसे, रसे रातो सुखदेखि। एम संभलि अवसर लहि राणी, एक एक सनमुख उजाणी, वाणी कहे विशेखि ॥७०॥ एहनी परे सघली हिव लाधी, जिम नृपप्रीति एहसुं वाधी। साधी इणि वसे करणी, राउ प्रतें सवि राणी बोले, तुं तो अम्हथी विरतो भोले, डोलें नहीं सुकलीणी ॥ ७१ ॥

(दूहा:-)

कुसल अम्हे तुझ चींतवुं, जिणे तुं अम्ह भरतार। पण जे ते मांनी घणुं, ते तुझ मारणहार ॥७२॥ तुझ उपरे कामण करे, जपे मंत्र बहुवार। परिपूछे नरपति सयल, राणी कहे-तिवार ॥७३॥ नृप आवे चेजें रहे, जाण्यो तासु सरूप। हिये वखाणे तसु वचन, हरख्यो अतिघण भूप ॥ ७४ ॥ गुणफेडि अवगुण करे, विरतो माणुस जोइ। राज सयलनी स्वामिनी, करे तेहने सोइ ॥७५॥ विमलचंद मुणिवर कन्हे, बेवे श्रावक थाय। कनकमंजरी अवसरें, चवि करि देवी थाय ॥७६॥

(ढालः-छप्पय छंद जेवी.)

तेहथी चवि वेयड्ढगिरें तोरणपुर नयरे, कनकमाल पुत्री थइय, दृढसत्त खचर घरे। जोवणवइं वासवें खचरे तेहथी अपहरिय, इहां एकरे प्रासादें एकली हुं तिणे धरिय। वेदी रची विवाह, भणी इण अवसरे मुझभाइ। आवि झूझवा वास व सहित, कर्यो मरे बेठाइ ॥७७॥ तेह दुरुखे रहि कनकमाल इणि अवसरे विंतर, आवें तुं मुझ सुता एम आसासें सुरवर। तिसे तात माहरो भाइनी वाहरे आव्यो, सुरपति माहरो रूप सर्व अन्यथा कराव्यो। वासव[1] भाइ[2] वहिनी[3]ना, एमड त्रिणे दाखेइ तात संसार असार गिणि, तेहथी दीक्षा लेइ ॥७८॥ अपहरि सुर माया सरूप मुझरूप सुदाखे, पूछे मुनि कहे किसुं एह तव विंतर भाषे। पुत्री ए ताहरी पुत्रनो हूओ काल, तुझ प्रतिबोधह काज कियो, ए माया जाल। मुझ विवाह कारणतणीय, कही पुव्वभव वात। जांलगे तुं इह आवियो, मिली संजोगह धात ॥७९॥ नरपति निसुणे इसें तेय सुरवर तिहि आव्यो, राजा लाग्यो पाय अमर नरपति वधाव्यो। आपवीत कह्यो कनकमाले सुणि नरपति हरख्यो, जातिसमरण पुव्वभवह आचार सुनिरख्यो। तेह आहार अमृतलियेए, रहे सुखे एकमास। घरसामो नृप सा मोहयो, आणी चित्तें उल्हास ॥८०॥ कनकमंजरी गयण गमण विद्या तव आले, तिहथी नृप मोकलावे अमर जिम उच्छुक चालइ, महामहोछवे नयरि जाइ निय कहि वृत्तंत, सुणि करि अचरिज चित्त धरत बोले सामंत। पुन्यवंत जे जाइ जिहां, तिहांर सुखियो थाय। इसुं

जाणि करिये सदा, पुण्य चित्त धरि भाय ॥८१॥

(चोपाइः-)

एम पंचमि२ दिनराय, कनकमाल पासे नगि जाइ । लोक मिली घे नगाइ नाम, एक दिवस नृप वन गयो ताम ॥८२॥ विनयसहित राजा पूछियो, विंतर ते निजठामें गयो । कनकमालनें नृप तिहां रहे, एक दिवसे नरपति प्रते कहे ॥८३॥ नाथ एकलां इहां न रहाइ, तुं तो नयरि वली वलि जाइ, तव तिहां राय वसाव्यो गाम, बहुघर जिणहर करि अभिराम ॥८४॥ रइवाडी राजा नींकले, सोहे अधिको फूले फले । दीठो इसो राय सहकार, नरपति ल्यें मंजर एकवार ॥८५॥ पाछलथी चाल्यो खंधार, पान फूल फल ल्ये तिणिवार । ठुंठ सरीसो कीधो जिसे, नृप ते वलतो आवे तिसे ॥८६॥ पूछे तेय किहां सहकार, ते देखाडें मंत्रि तिवार । एहनें इसी अवस्था कांइ, कहे मंत्रि निर्धन एम थांइ ॥८७॥ राजा चित्त विमासें घणुं, अथिरपणुं निज रिद्धितणुं । तां सोहे जां हुवे धन रिद्धि, तां जगि मान सयल तां सिद्धि ॥८८॥ धनविहूण सोभा नवि लहें, जिसुं ठुंठ सहकारह रहे । जातीसमरणे बूझे राय, मुनिवर मारग आदरि भाय ॥८९॥ वेस दिये ततखिण देवता, इहां न कांइ पाडे खता । तासु प्रसंसाकरि मनभाइ, वलि ब्रह्मा तसु लागे पाइ ॥९०॥

(गाथा)

जो चूयरुक्खं तु मणाभिरामं, समंजरीपल्लवपुप्फचित्तं । रिद्धिं अरिद्धिं समुपेहिआणं, गंधाररायावि समेक्ख धम्मं

॥९१॥ चारे मुणिवर गुणभंडार, पाले समति गुपति आचार ।
विधिसुं करता साधु विहार, क्षितिप्रतिष्ठ पुरे आव्या चार
॥९२॥ तिहा एक देवल छे चोबार, कुरकंडु पेसें पुरवद्वार ।
दक्षिण बारें दुमुह मुणिंद, नमि पश्चिमदिसि सुभगुणचंद
॥९३॥ उत्तरदिसि नग्गइ नरेस, इर्यासमिते करे प्रवेस ।
मुनिने देतो सुर बहुमान, करे चिहुं दिसि रूप विज्ञान
॥९४॥ खरजवसे कुरकंड तृण वहे, दुमुखराजरिषि तसु प्रते
कहे । राजरिद्धि पुर अंतेउरी, जइ ते तइ सघली परिहरी
॥९५॥ तुं तृणनो स्युं संचय करे, ए चोयण हियडे संभरे ।
उत्तर कांइं न करे कंडु भणे, तो नमि बोले उलट घणे ॥९६॥
सेवक वर्ग सहु तें तज्यो, संजममारग सूधो भज्यो । तो ते
सघलो छांड्यो काज, मुनिने काजे किसुं तुझ आज ॥९७॥
एम सुणि भणे गंधारह भूप, जो तुम्ह वंछो राज सरूप ।
आतमहित काजें संचरो, तो कांइ परनी निंदा करो ॥९८॥
हिव कहें कुरकंडु मनरली, रिषिजी तुम्हे सुं बोलो वली ।
सुगति मान मुनि जे आदरे, ब्रह्मचर्यनी बहु खप करे ॥९९॥
तेहनो देखि असुभ आचार, मांहोमांहें करे विचार । तासु दोष
तुं कहे किण चीत, चोयण पडिचोयण मुनि रीत ॥ ३०० ॥
कुरकंडे शिख्या इम कही, सहू किणें साची सद्दही । क्षपकश्रेणि
मंड्यो सुभध्यान, चारे पामे केवलज्ञान ॥ १ ॥ पाले केवलनो
पर्याय, भोगवि चारें सरिख साय । पुहता सुगति नयरि समकाल,
कालिम कर्मतणी सविटाल ॥ २ ॥ ए मुणिवर चारे गुणवंत,

दंसण नाणि अतुल बलवंत । त्यारे वंदुं मनने भाय, जिम मनवंछित संपद थाय ॥३॥ रतनाकर ग्रह संखवरीस, समिति चंद (१५९४) संवतें जगीस । प्रत्यय बुद्धतणो ए चरी, भाष्यो मन आणंदें करी ॥४॥ सुधासिंधु जस जगत्र विख्यात, वेलतात विमलादे मात । श्रीपासचंद्रसूरि सुगुण प्रधान, तसु पय सेव करुं तजि मान ॥५॥ उतराध्ययनें संखेपें कह्यो, वृत्तिमाहिथी विस्तर लह्यो । तिहांथी बोल्यो ए उद्धार, भणतां लाभे सुद्ध विचार ॥६॥ जिनभाषितथी कह्यो विरुद्ध, पंडितजन ते करज्यो सुद्ध, आगम मिलतो करो प्रमाण, करजोडी वीनवुं सुजाण ! ॥७॥ मेरु महीमंडल थिर रहे, सूरिज ससि गयणें वहें । चिहुंदिसि रतनाकर जलभर्या, बिहुं पासें जगती परिवर्या ॥८॥ ज्यां जगे जिणसासण थिर थाइ, तां ए भणतां चित्त सुहाइ । पामीजें सवि सुख संपदा, पासनाह सुपसायें सदा ॥३०९॥

इति श्रीचतुःप्रत्येकबुद्धचरित्रं गुर्जरभाषायां पद्यबंध-निबद्धं समाप्तं कृतं चानवद्यविद्याविशारदन्यायपारावार-पारीणप्रवरजैनाचार्यचक्रचक्रवर्तिश्रीवादिदेवसूरिपुरंदरपरंपरा-यां श्रीमन्नागपुरीयवृहत्तपागच्छीययुगप्रधानपदधारकासेयम-हिमान्विधानसंवेगरंगतरंगिताऽर्हत्सिद्धान्तपारदृश्वजैनाचार्याग्र-णिश्रीपार्श्वचन्द्रसूरीश्वरचरणसरसिरुहमधुकरशास्त्रविशारद-प्रवरमहर्षिब्रह्मर्षिणा संशोधितं च श्रीजैनश्वेताम्बराचार्यवर्य-सकलागमरहस्यवेदिपूज्यपादप्रातःस्मरणीयश्रीश्रीश्रीभ्रातृचंद्र-सूरिवरशिष्यमुनिसागरचंद्रेण स्वपरकल्याणाय ॥ ओं अर्हं नमः ॥

आचार्यश्रीभ्रातृचन्द्रसूरिग्रन्थमाला पुस्तक-३४.

महामहोपाध्यायश्रीधर्मचंद्रगणिशिष्यवाचकवरश्रीकर्मचंद्रगणि कृताः-

मोहचरित्रगर्भित-अढारनात्राचोपाई.

संशोधकः-श्रीभ्रातृचंद्रसूरि शिष्य मुनिसागरचंद्रः॥

(दूहाः-)

श्रीगौतमगणधरनमी, पामी सुगुरू पसाऊ। अष्टादश सगपणतणी. कथा कहुं धरिसाऊ ॥१॥ भविक लोक सहु सांभलो, सरस चरित छे एह। करम संयोगें जे थयुं, कहुं यथारथ तेह ॥२॥

(ढालः-आदर जीव क्षमागुण आदर-ए देशीमां.)

गोयम्र गणहर पाय नमी, वलि समरी सरसति मायारे। नातां कुबेरदत्तातणां, कहुं प्रणमी श्रीगुरु पायारे ॥१॥ सुगुण भविक तुम्हें सांभलो, कर्मतणी गति एहोरे। अति विसमी जिणवर कही, तिहां नही कोइ संदेहोरे ॥२॥ सुगुण भविक तुम्हें सांभलो ॥आंकणी०॥ कुबेरदत्तानें जे थया, सगपण ते निजमुख गायारे। ते सदगुरु मुख सांभली, भविक लोक मन भायारे ॥ सुगुण० ॥३॥ जंबुद्वीपें जांणीए, भरतक्षेत्र अभिरामोरे। अमरपुरी सम सोभती, तिहां नयरी मिथुला

नामोरे ॥ सुगुण० ॥४॥ तिण नगरी गणिका वसे, कुबेरसेना इण नामेरे । रूपें देखी रतिसमी, तेह वरी निज कामेरे ॥ सुगुण० ॥५॥ सर्वसंग भोगवे, रंगें भोग विलासारे । रींझावे बहु लोकनें, करि अति नृत्य तमासारे ॥ सुगुण०॥६॥ गर्भधरे ते एकदा, देख्या एम विमासेंरे । जो धवरासुं एहनें तो यौवन घटि जास्येरे ॥ सुगुण०॥७॥ धवलेपणें प्रसवे मुदा पुत्र पुत्री एक वाररे । जनमथकी ते युगलने, पाल्या दिवस इग्यारेरे ॥सुगुण०॥८॥ नामांकित लखि मुंद्रडी, जुगल पेटी में घालेरे । यमुनो में मेल्ही गइ, ते नीर प्रवाहें चालेरे ॥सुगुण०॥९॥ बिहुं पहुरे सोरीपुरें, ते पेटी वहती आवेरे । कर्म योगे विवहारीया, देइ मिली विहचावेरे ॥ सुगुण० ॥१०॥ भरयौवन ते बे थयां, तास सिता परणावेरे । मांहो मांहि ते परणीया, सुखस्युं काल गमावेरे ॥सुगुण०॥११॥ एक दिवस रमतां थकां, बिहुं नाम मुंद्रडी वांचीरे । पूछया बे व्यवहारीया, वात लही तब साचीरे ॥ सुगुण० ॥१२॥ असमंजस मन ऊपनो, अचरिज कारण जाणीरे । कुबेरदत्ता साधवी थई, तेने वैरागे आणीरे ॥ सुगुण०॥१३॥ मन वच काया वसकरी, सुधुं चारित्र पालेरे । जिन वाणी पाणी करी, पूरव पाप पखालेरे ॥सुगुण०॥१४॥ गामागर नगरें सदा, सुविहित गुरुणी संगेरे । विचरे आतम साधती, धर्म करे मनरंगेरे ॥ सुगुण० ॥१५॥ तदनंतर ते तिहां थकी, कुबेरदत्त विवहारीरे । मिथुला नयरी आवीयो, साथें ले व्यापारीरे ॥ सुगुण०॥१६॥

दूहाः-

व्यापारी सहु साथना, मिलि एकठ मनरंग। राजानें मिलवा भणी, लीधी भेट सुचंग ॥१॥ भेट मेल्हि मिलिया सहू राए आदर दीध। हुकम लही राजातणो, वसवानें घर कीध ॥२॥ व्यापारी परदेशना, जांणें गणिका जाम। रीझववा परिवारस्युं, सजि करि आवे ताम ॥३॥

(ढालः-कहियें संयम लेसुं, ए देशीमां.)

कुबेर सेना परिवाररे, लेई आपणो, मिलवा आवे तेहनें ए। नृत्य करे अतिसार, सुरपति सारिखा, जोवा आवे जेहनें ए ॥१॥ चातुरता तसु देखिरे, आतुरता अति, कुबेरदत्तनें तिहां थई ए। अघटित पहली वातरे, छंडी जाणिनें, फिरमंडी करमें नई ए ॥२॥ साच ऊखाणो एहरे, सीह मिल्यो जिम, जंबुक भयथी नासतां ए। कुबेरदत्तने तेमरे, कारिज ए थयुं, लोकलाजथी त्रासतांए ॥३॥ कुबेरसेना निज मातरे, घरणी ते करी, जूओ काम विटंबनाए। भोगवतां सुख भोगरे, करमवसें एक, पुत्रि जणे ते अंगनाए ॥४॥ पाले हित धरि तासरे, सांभलो हिव, अधिकार हुवे जिसो ए। साधवी ए संबंध, सइं मुखे जे कह्यो, कवियण भाव कहे तिसोए ॥५॥

(दूहाः-)

तिण अवसर ते साधवी, करतां विधिएं विहार। धर्म ध्यांन धरतां थकां, अवधिज्ञान लहे सार ॥१॥ अवधिज्ञान बले साधवी, देखे तेह विचार। गुरुणीनी आणा लही, तिण

दिसि करे विहार ॥२॥ मिथिलानगरी जिहां अछे, विचरत आवे तांह । प्रासुक जाचि उपासरो, रहे गणिका छे जांह ॥३॥ गमणागमण करे सदा, गणिका घर नितमेव । खेलावे बालक भणी, जांणे पडी इह टेव ॥४॥ हुलरावण मिसि एकदा कहे साधवी ताम । सुण नान्हडीया तुझस्युं, सगपण छे मुझ आम ॥५॥

(ढालः-)

आपणे छे एक सगाई, बालूडा तूं छे भाई । एक गर्भे तुझ मुझ वास, तिण सगपण ए उल्लास ॥१॥ तात भ्रात भणी कहुं तुझ, पीतरी ओछे तूं मुझ । पति भ्रात भणी देवरायो, करमें सगपण अणुसरायो ॥२॥ भाई सुत तिण भतीजो, सगपण इम जांणि पतीजो । सुत सौक तणां तुझ गाऊं, बेटो कहीनें हुलराऊं ॥३॥ सगपण तुझस्युं अदभूत, सुत सौक तणांनो पूत । हिवें आपणडी जे मात, तेहस्युं सगपणनी वात ॥४॥ कहुं तेह सुणो चितलाई, करमें जे थइय सगाई । पहेली हूंती ए मात, बीजो सुणज्यो अवदात ॥५॥ मुझ भ्रात तणें घर आइ, ते मांटें ए भोजाइ । मुझ कंत तणी ए घरणी, तिण सौक कहीनें वरणी ॥६॥ मुझ कंत तणी ए माय, तिण ए मम सासू थाय । मुझ सुतस्युं भोगवेभोग, वहुआरु तिण संयोग ॥७॥ पितरीयानी ए माय, तिणस्युं दादी कहवाय । बालूडा जे तुम्ह तात, अम्हस्युं तेहनी सुण वात ॥ ८ ॥ एक मात भणी ए भ्रात, मातपति तिण ए तात । वलि सोकतणो सुत एह, तिण कारण

बेटो तेह ॥९॥ मुझनें परण्यो तिण कंत, सासुपति सुसर एकंत। दादो पण ए मुझ कहीये, सगपण करमें इम लहीये ॥१०॥ अचरिज इणपरें अतीव, लहे कर्मतणें वस जीव। बहुवार लहे इण संच, सगपण इहां नही खलखंच ॥११॥ अनवस्थित ए संसार, भास्ये जगदीस असार। इहां किंपि न दीसे नित्य, इण कारण कह्यो अनित्य ॥१२॥ गामागर नगरनिवास, गढमढ मंदिर आवास। वनवाडी बाग निवाण, घटपट इम बहुल मंडाण ॥१३॥ रपजे तिणषे बहुवार, गिणतां जसु अंत न पार। सुणि प्राणीरे इम जाणी, जिनधर्म करो मनआणी ॥१४॥ जिनधर्म विना ए जीव, सगपण लहे एम सदीव। स्वामी मरि सेवक थाय, सेवक फिर स्वामि कहाय ॥१५॥ पुत्री माता सुत बाप, घरणीहुइ कंतज आप। भ्राता मरि पुत्र सगाइ, फिर पुत्र हुवे ते भाइ ॥१६॥ इम सगपणतणां विवेक, कहीए केटला छे अनेक। दृष्टांत सुणो हिव एक, श्रोताजन! मन धरि टेक ॥१७॥ इक पुत्रीनें तसु माय, मिलि मारग चाली जाय। पुत्रीना पग छे मोटा, मायना पग अति छोटा ॥१८॥ तिण मारग बेटो बाप, पगदेखि करे इम थाप। जाणी जे विश्वावीसे, ए पग नारीना दीसे ॥१९॥ जलपे इम मांहोमांहि, बेहुं जण मन ऊछांहि। बेटो कहे चरण लहूनी, वरिसुं करि साख सहुनी ॥२०॥ कहे बाप वडापग सार, वरस्यूं हुं ए निरधार। ते तुरत पहूंता आइ, निज मननी बात सुणाइ ॥२१॥ मांहो मांहे चित्तलाई, तेणीपर क्रीध समाई। तेहना

थया जे संतान, सगपण कहो जे मतिमान ॥२२॥ इम चरित हुआ छे जेह, कहतां नवि लाभे छेह । जे पाकतणी विधि जाणें, देखी कण एक वखाणें ॥२३॥

(दूहाः)

अज्जासुखथी सांभली, सगपणना विरतंत । कुबेरदत्ते वैरागीयो, चारित्र ले एकंत ॥१॥ मोहरायगति वंकडी, जांणें जे हुइ जांण । श्रवणे श्रुत संगम विना, स्युं जाणे अजाण ॥२॥ करम तणी छे अकलगति, सांभलज्यो सहु कोइ । संवेगें चित्त आणज्यो, सरस चरित ए जोइ ॥३॥

(ढालः-मिथिलानयरि जाणीयें, जुगबाहु नररायरे-एदेशी)

कुबेरदत्त इम सांभली, हियडामांहि विमासेरे । अचरिज कारी करमतणी गति, कहेतां एम तमासेरे ॥१॥ भविकजन एक मन थई, निज चरित संभालोरे । श्रीजिनआगम हृदय धरीनें । चेतनरूप निहालोरे ॥ भवि० ॥ आंकणी० ॥ २ ॥ मोहतणो नाटक अपरंपर, नव नवरूप रमावेरे । रामति रमता जीव संसारी, कालअनंत गमावेरे ॥ भवि० ॥३॥ खेल तणो इक वृद्ध अखाडो, सुहमनिगोद वखाण्योरे । आदिरहित वलि अंतविवर्जित, केवलधर तिण जाण्योरे ॥भवि०॥४॥ काल-लबधिवस कोइक प्राणी, तेह अखाडो छोडेरे । काल अनंतो पंचथावरमें, बादररूपें दोडेरे ॥भवि०॥५॥ समयंतर तिहांथी नीसरीनें, विकल अखाडे आवेरे । बहुभव तिहां बितिचौरेंद्री मांहि, वलि२ मोह नचावेरे ॥ भवि० ॥६॥ पूरणथिति करि

तिहांथी नीसरि, करमतणें सुपसाएंरे । पांचे इंद्री पूरा पामें, गलित बंधन तुंब न्यायेरे ।। भवि० ।।७।। जलचर थलचर खेचरभेदें, उरपरि भुजपरि नामोरे । संमूर्छम गर्भज इण भेदें (वेसें), पूर्यां पंचे ठामोरे ।। भवि० ।।८।। पहिलो अघथानक आदरिनें, हिंसक जीव कहाणोरे । देखी नाच अपूरव तेहनो, राजा मोहरीझाणोरे ।।भवि०।।९।। अतिघण दानेदीयो आदरस्युं, अघरूपी किरियाणोरे । मोट लेई फिर पूठो चाल्यो, मारग लीध पुराणोरे ।। भवि० ।।१०।। पुनरपी श्रावण जाणतणी अति, कहीए कवण कहा (नीसां) णीरे । उलट पुलट गति लोटणनी पर, वार अनंत वखाणीरे ।। भवि० ।। ११ ।।

दूहाः-

इणपर मोहें प्रेरीयो, बहु विधि नाच करंत । कर्मतणी अनुकूलता, लहि नरभेष धरंत ।।१।। तिण अवसर चित्त चिंतवे, इणपर मोह नरेस । चारित्र धर्मेंणो कदा, रखे लहे उपदेश ।।२।। इम चिंतवि तिण जीवनें, निवडपणें वस कीध । द्यूतादिक साते सुभट, तांह भलावी दीध ।।३।।

(ढालः-)

साते निज निज अखाडेरे, समति नव नवीय रमाडे । साते विच ते एक प्राणीरे, अति खांचाताण मंडाणी ।। १ ।। एक एक ते वार अनेकरे, रमाडे मनधरि टेक। फल देखाडी ते थाकारे, पहुंचाया रायनें वाका ।।२।। जिमर ते नरभवे आवेरे, भड मेल्ही मोह फिरावे । हिंसादिक पाप अढारे,

एकथी एक अधिक झुझार ॥३॥ पंचवीस क्रिया अतिभारीरे, सकाय नही तेह निवारी । वलि पंच प्रमाद अकूणारे, वारंतां थाए दूणा ॥४॥ काठीयेडा तेर संतापेरे, शुभ करणी करतां व्यापे । मद अष्ट करे अतिजोरोरे, मनमांहे राखे तोरो ॥५॥ पांचे इंद्री अतिझूठारे, मनोहारि करत रहे रूठा । वलि पंचप्रकारे मिथ्यातरे, तेहनो छे अति अवदात ॥६॥ रहे सोलेकसाय सजोरेरे, नव नोकषाये बलफोरे । लेश्या तीने अपसत्थरे, जे नरकतणो छे सथ्थ ॥७॥ गारवेतीनों छे मोटारे, आदरतां फलदे खोटा । तिहुं सल्यतणो हिए वासरे, मति करज्यो कोइ वेसास ॥८॥ अंतराय भेदगिणि पंचोरे, बलफुरण न दे एक रंच । वलि तृष्णा नारि संताबेरे कहीएं संतोष न आवे ॥९॥ आस्या योगणि बिख्यातरे, छोडे नही ते खिणमात । चिंता डाकणि विकरालरे, निरखे अन्नाणी बाल ॥ १० ॥ आरतने रुद्र ध्यानरे, ध्याया द्ये दुरगतिदान । अवरति दासी जे वारुरे, सेवी द्ये बहुल संसार ॥११॥ इम सेनतणा बहु वृंदरे, जग्ग नायक मोहेनरिंद । जेहनें जेहवुं फुरमांवेरे, तेहवीपरे तेह रमावे ॥१२॥

दूहाः–

इणविधि मोहतणा सुभट, कहतां नावे पार । सर्व बिश्वव्यापक थई, पूरि रह्या संसार ॥१॥ मोहसरिस वलि सात नृप, अतुल प्राक्रम तास, समरथ कुण कहेवा भणी, विणु केवल बल जास ॥२॥

(ढाल-संभलि प्राणिया एह विचार-पदेशी)

१ ज्ञानावरण प्रथम नृपजाणो, पटसम तेहनो रूप वखाणो ॥१॥ संभलो भविजन कर्म विचार, ओलखि लेज्यो आतमसार ॥संभ०॥२॥ पांचसुभट एहना छे जेह, निजनिज फल देखाडे तेह ॥ संभ०॥३॥ पांचेनी थिति सागर त्रीस, कोडाकोडि कहे जगदीस ॥ संभ०॥४॥ दूजो छे प्रतिहारसमाणो, नाम दरसनावरणकहाणो ॥ संभ० ॥५॥ चेतनदरसतणो अंतराय, करे कहे इम श्रीजिनराय ॥ संभ० ॥६॥ नवसुभटे परवरीयोराय, त्रीस कोडाकोडि थितिकहवाय॥संभ०॥७॥प्रकृति असाता साता दोय, वेदनीकर्म इणीपर होय ॥ संभ० ॥ ८ ॥ मधु खरडित जेहवी खडगधार, तेह सरिस वेदनी सविचार ॥ संभ० ॥९॥ त्रीस कोडाकोडि सागर मान, स्थिति एहनी जाणे मतिमान ॥ संभ०॥१०॥ आयुकरम चिहुं भेदे जाणो, गति नामें करि तेह वखांणो ॥ संभ० ॥११॥ नारक सुर सागर तेत्रीस, गुरु स्थिति जाणो विश्वावीस । संभ०॥१२॥ तिरि नर तीन पल्योपम सार, आयु गुरु स्थिति ए निरधार ॥ संभ० ॥ १३ ॥ हडिसरिसो ए जाणो जोध, मुक्ति गमननो करे निरोध ॥ संभ०॥१४॥ नाम करम चित्रकार समाणो, तीन अधिकसत सुभटवखाणो ॥ संभ० ॥१५॥ एहतणां संखेपे नाम, जांणि सलूझो चेतनराम ॥ संभ०॥१६॥ नारक तिरि नर देव विचार, इगबितिचउ पंचेंद्रीसार ॥ संभ० ॥१७॥ पनरबंधन वलि पंच सरीर, संघातन संघयण सधीर ॥संभ०॥१८॥ षडसंठाण वरण

वलि पंच, दुविधगंध रसपण परपंच ॥ संभ० ॥१९॥ अठफरस आणुपुव्वीचार, दुविध विहायोगति सुविचार ॥ संभ०॥२०॥ उपघातादिक प्रकृति सुजाण, ओलखि लेज्यो वलि निर्माण ॥ संभ० ॥२१॥ त्रसदस दसथावर पराघात, नाम कर्मनी इणपर वात ॥ संभ० ॥ २२ ॥ उद्योतने आताप ऊसास, अगुरुलघु तीर्थंकर सुविलास ॥संभ०॥२३॥ प्रकृति नाम समरूप लेवावे, रूपसरिस सही नाच नचावे ॥संभ०॥२४॥ वीस कोडाकोडिसागर कहीए, स्थिति उतकृष्टी एहनी लहीए ॥ संभ० ॥२५ ॥ नीच ऊंच दोय प्रकृति वखाणी, गोत्रिक-रमनी ए जिनवाणी ॥संभ०॥२६॥ रूपेकुलाल सरीसोधारे, नीच ऊंच गोत्रें अवतारे ॥संभ०॥२७॥ सागर वीसकोडाकोडि सीम, स्थिति उतकृष्टि जाणोनीम ॥संभ०॥२८॥ दानादिकपांचे अंतराय, करतां तेहज नाम कहाय ॥संभ०॥२९॥ भंडारी सम कहीए तेह, नाम सरिस फल आपे एह ॥संभ०॥३०॥

(दूहाः-)

ए साते राजा कह्या, मोह सरिस बलवान। निजर चरित देखावता, चित्त अतिधरे गुमान ॥१॥ मनछंदे आपापणे, नवर स्वांग धराय। नाच नचावे जीवनें, ते विणु केवल न कहाय ॥२॥ अष्टकर्म जिणवर कह्या, तिणमें मोहे विशेष। टीकायत करि थप्पीयो, बल अपारसंपेख ॥३॥ अष्टमांहि चोथो अछे, पण टीकायत जाण। कवियण जूओ वर्णवे, निजर बुद्धि प्रमाण ॥४॥ बीज भूत सातातणो, मूआ जिवावे

जेह । पोषक प्रकृति प्रजातणो अद्भुत राजो एह ॥८॥

(ढालः-श्रीशत्रुंजय तीरथसार, गिरिवर० ए देशीमां.)

ए मोहराजा अधिक प्रतापी, अंतरगति सघले रह्यो व्यापी, पापी अधिक संतावे। छांह तणीपर केडें आवे, चोरासीलख जोनि भमावे, ख्याल अनंत खिलावे ॥१॥ कब राजा कब रंक निसंक, कब सरलो कब वंकत्रिवंक, कबही वियोग संयोग। निरधन कदा कदा धनवंत, कब भोगी कब योगी संत, रोगी कदा निरोग ॥२॥ दुखीयो कदी कदी सुखकार, सेवकस्वामीनो व्यवहार, दे इम वारंवार। दीन कदा कदा मानी मछराल, सुंदर कदी कदी विकराल, निरदय सदय विचार ॥३॥ कायर कदा कदा अतिसूर, चोर कदा कब साह सनूर, कब ठालो कब पूर। ससनेही निसनेही क्रूर, बालो तरुणो चढते नूर, बूढो वलि जर जूर ॥४॥ कृपण कदा कबही दातार, संकोचितचित्त कदा उदार, खिण हलुओ खिणभार। खिणभंगुर एहनी गति कहीये, एह तजी जिनसरणें रहीये, लहीये जिम सुखसार ॥५॥ साचो खिण खिणमांहि अलीक, भययुत खिण खिणमें निरभीक, मोह चरित तहकीक। जाणि भविक एहस्युं मतिराचो, जो चाहो आतमसुख साचो, काचो नही ए ठीक ॥६॥ जांण कदा फिर कदा अयाण, ए सवि मोहतणां विन्नाण, जांणो चतुरसुजाण। जाणी एहनो संग निवारो, चित्तवृत्ति पसरंतो वारो, धारो श्रीजिनआण ॥७॥ नारी पुरुष नपुंसक वेद, भोग मिसि करि दे अति खेद, भेद सुणो वलि एम।

श्रुतसंगम समकितनो घाती, देसविरति सर्व विघाती, घाती अरियण जेम ॥८॥ जायभिडे एकादसठाणें, जासु अपकथित होय तसु ताणें, आपणडे वस आणे। थापे आंण पढम गुण ठांणे, केवलनांणो एम वखाणें, खेले आपणपाणे ॥९॥ मदिरापान जिम मतवावाला, मोहतणा तिम अतिघण चाला, कहत न लहीए पार। आपापरनी विगत न जांणें, कुकवि जेम विपरीत वखाणें, नांणें सोचलगार ॥१०॥ चंचलमण करि आगेवाण, जीते जगत धरे बहुमाण, न करे केहनी काण। त्रिभुवन माहि मनावे आण, जीततणां आगें नीसाण, राजा इण अहिंनाण ॥११॥ सागर सित्तर कोडाकोडि, उत्कृष्टी थिति इहां नही खोडि, होडें फल देखाडे। सिद्धविनां सहु जीव रमाडे, चोरासी लख जोनि भमाडे, लोकाकाश अखाडे ॥१२॥ हिव एहना जे जीपणहार, ते कहीए जे छे जगसार, त्रिभुवनना आधार! पहिला जीपक श्रीजिनदेव, जेहनी सारे सुरनर सेव, सेव्यां दे सुखसार ॥१३॥ बीजा जीपक श्रीगणधार, त्रीजा जे चारण अणगार, प्रत्येकबुद्ध झूझार। थविरकल्प जिनकल्पाधार, जे छह काय अभयदातार, धर्मक्रिया करतार ॥१४॥ जेह करे तप वारंवार, सव कल्पी जे करे विहार, करि परिग्रह परिहार। ओलखे शुद्ध निश्चय व्यवहार, मन वच काया करे इकतार, मंडे श्रुत व्यापार ॥१५॥ पूरा व्रत संयम प्रतिपाले, जे सहुनें समदृष्टिनिहाले, निज व्रति दूषण टाले। ए सवि पोहतणो मदेगाले, नित माल्हे सिवसुख सुविसाले, निज आतम

अजुआले ॥१६॥ जे वलि देस विरति व्रतधारी, समकितवंत जिके सागारी, जिन मारग अनुसारी। मोहरायस्युं पासासारी, खेलंता ले सार उगारी, जीतण डाव विचारी ॥१७॥ ते पण समबल वृद्धिनें योगे, शुद्धातम अनुभव उपयोगें, साधसुगुरु संयोगें। मोहरायनो मान ऊतारे, सिद्ध तणा गुण हियडे धारे, चित्तसिवरमणी भोगें ॥१८॥ हिव एहनी जे जीपणहारी, होस्ये हुई छे जे जगनारी, ते कहीये संभारी। प्रथम कही साहुणी गुणखाणी, संयमनें गुणि साहु समाणी, विचरे मोह निवारी ॥१९॥ जे श्राविका बारव्रतधारे, जीवादिक नवतत्व विचारे, ते पुण मोह निवारे। पुनरपि जे जिन सेवा सारे, गुरु पडिलाभी जेय आहारे, चौद नियमसंभारे ॥ २० ॥ पडिक्कमणां पोसा पच्चक्खाण, नित्य सुणें गुरुतणा वखाण, माने जिनवर आण। जे वरते चोथे गुणठाण, पंचमना साधे अणुठाण, ऊतारे मोह माण ॥२१॥ शीलवती वली सती कहीजे, जेहनी महिमा जगमां लहीजे, थुणतां सुख लहीजे। बे करजोडी तास नमीजे, नितप्रति अनुमोदन तसु कीजे, नरभव लाहो लीजे ॥२२॥ दाणव देव मिथ्याती जेह, शील परीखण आवे तेह, पावे नही तसु छेह। तपजप करि सोसे निज देह, शील ऊपर धरि अतिघण नेह, स्त्रीमांहि राखे रेह ॥२३॥ कर्मवसें सुखदुःख अनेक, ऊपजे तोपण न तजे टेक, शीलतणा सुविवेक। चाली न चले सुरनरकेरी, वात कहीजे कवण अनेरी, हेरी लहीए एक ॥२४॥ एहवी शीलवती दृढ नारी, मोह सुभटनो

मान उतारी, आपतरे परतारे। सुरनर तेहनी सेवा सारे, आसायण उपजती वारे, जगमहिमा विस्तारे ॥२५॥

(दूहाः-)

धर्मवंत हूआ जिके, नरनारीना वृंद। वंछित सुख ते भोगवे, मोहतणो तजि फंद ॥ १ ॥ पुनरपि जे जगदेवता, निरमल समकितवंत। ते पुण जीपे मोहने, सुणो तांह विरतंत ॥२॥

(ढालः-चालती अने त्रुटक-ए देशीमां.)

जगमाहिरें समकितदृष्टी देवता, ते सुणीएंरे श्रीजिनवरपाय सेवता। तीत्थंकररे जिण२ भूमि समोसरे, तिण भूम्यंरे समवसरण रचना करे। करे दूरे अशुचि पुग्गल सरसकुसुम पगरभरे, सोभायमान जिणंद उपर तीन छत्र सदा धरे। वीजंत चामर बीहुं पासें सुरभी वृष्टि करे घणी, करजोडि उभा रहे आगे. करे सेवा जिनतणी ॥ १ ॥ ओगणीसजरे सुरकृत अतिसय श्रुत कह्या, निजकरणीरे जाणी साचा सदह्या। ते अतिशयरे अवसर जाणि समाचरे, मन भगतें रे समकित गुण निर्मलकरेः-जे करे निर्मल नाणदंसण सुद्धभावनभावए, नवनवे छंदे मन आनंदें सदा जिनगुण गावए। बत्तीस बद्ध जिणंद आगे करे नाटक छवि करि, ते अल्पभवमांहि सिद्धि पामें हेले भव सायरतरी ॥ २ ॥ जिणवरनारे पंचकल्याणक हुवे यदा. इंद्र चोसठरे एकठमिलि आवे तदा। समदिठीरे कोडि असंखमिले तिहां, जिणवरनारे कल्याणिक हुवे जिहां जिहांः-तिहां तिहां सुरनी कोडि आवे गीत

गावे जिनतणा, देवांगना अति नृत्य करति लाभ ल्ये तिहां अतिघणा। जिनतणां पहिलां पारणां तिहां वृष्टि सोन्न-ईयातणी, सुर करे साढी कोडिबारह, जय जयारव मुख भणी ॥३॥ अट्ठाईरे चार जिके छे सासती, ते आवेरे श्रीसंघ मन उल्हासती। तिण अवसररे नंदीसर सुर बहु मिले, करि ओछ-वरे कहे जिन श्रुतधर्में भलेः—भले श्रुतधर्में तिके सुर जिके सु-भकरणी करे, जिनराजभक्तिथकी सुखें संसारदुत्तर ते तरे। जे हरे आसायण सुभगतें देव गुरु जिनधर्मनी, जिनचैत्य संघ सती तणी ए भणी वात सुमर्मनी ॥४॥ वली पूजारे सत्तरभेदी जिननी कही, करे विधिस्युंरे पुव्व देव मुखथी लही। जिनप्र-तिमारे तिहां सासती छे जिके, हित सुखनोरे कारण जांणि पूजे तिकेः—तिके सुर श्रुतधर्मनें बल मोहमान उतारए, तिरजंच पुण जे देसविरती सुद्ध सम्मकित धारए। भवितव्यता बल लही अनुक्रमें मोहपसर निवारए, वलि तरे एम अनेक जे होय, गुणतणा भंडारए ॥५॥

(दूहाः-)

सम दम उपशम विनयगुण, दयादानसुविवेक। सुश्रुषा गुणवंतनी, इम गुण कह्या अनेक ॥१॥ जे जे गुण ते गुण करे, इह परभव सुविशेष। भवियणगुण धरज्यो सदा, उत्तमफलसंपेख ॥२॥ इत्यादिक उपदेश बहु, आतम पर हितकाज। दीधां विचरत भविकनें, कुबेरदत्त मुनिराज ॥ ३ ॥ पाली चारित्रनिर्मलो, हिए धरी सुभध्यान। सदगति पामें साधुजी, निर्मल करि

निजज्ञान ॥४॥ कुबेरसेना पण तरी, धरी सुचारित्र अंग। धर्मभावना भावतां, सुगति लही उछरंग ॥५॥ कुबेरदत्तासाधवी, सूधूं चरित्रपालि, उत्तमगति सुख भोगवे, निज आतम अजुआलि ॥४॥ चरित्र पिछाणी मोहना, जे जन थया विरत्त। ते अविहड सुख भोगवे, सिवरमणीस्युं रत्त ॥७॥

(ढालः–समकितनुं मूल जाणिएंजीरे, सत्यवच० ए देशीमां.)

श्रीजिणवर जिम उपदिस्यारे, मोहतणा परपंच। भवियण साचा सद्दहोरे, नही इणमें खलखंचरे ॥१॥ प्राणी धर्म करो मनरंग, हियडे धरि अति उछरंग। सूधा साधुप्रसंगरे, प्राणी, धर्म करो मनरंग ॥ (आंकणी०) धर्मथकी सुखपामीएं रे, धर्मैं वंछित सिद्ध। धर्मैं जगजस विस्तरेरे, धर्मैं अधिकी रुद्धिरे प्राणी. ध० ॥२॥ चक्रीपद धर्मैं लहेरे, धर्मैं देव विमान। इंद्रादिकपद पामीएंरे, धर्मैं अति सनमानरे ॥प्राणी ध०॥३॥ धर्मथकी वली पामीएंरे, तीर्थंकर पदसार। श्रुतकेवल केवल लहेरे, धर्मैं पद गणधाररे ॥प्राणी ध०॥४॥ धर्मकरो भविभावस्युंरे, धर्मैं शिवसुखसार। श्रीजिणवरकही धर्मनीरे, महिमा अगम अपाररे ॥ प्राणी ध०॥५॥ नागोरीवडतपगच्छारे, तास परंपर जाण। श्रीपार्श्वचंद्रसूरि गछपतीरे, शुद्धक्रिया गुणखाणरे ॥प्राणी ध०॥६॥ प्रगट कर्यो जिणे आचरीरे, मुनिनो धर्म प्रधान। श्रीसमरचंद्रसूरि तेहनेंरे, पाटे अतिहिं सुज्ञानरे ॥प्राणी ध०॥७॥ तास पटोधर जाणज्योरे, श्रीराजचंद्र सूरिंद्र। तास शिष्य उवज्झायजीरे, श्रीहीरानंदचंद्ररे ॥प्राण ध०॥८॥

तसु विनयी शिष्य अतिभलारे, ठाकुरसिंहजी नाम। धर्मसिंह शिष्य तेहनारे, पंडित तास प्रणामरे ॥प्राणी ध०॥९॥ तसु विनयी मुनि कर्मसिंहरे, पट्टणां नयर मोझार। चरित्र रच्यो ए मोहेनोरे, सगुणमिस अवधाररे ॥प्राणी ध०॥१०॥ द्वीप ससी संवत सहीरे, वरसयुगल रसजाणि। (१७६२) पर आपण हित कारणेंरे, ए कही कथा वखांणिरे ॥प्राणी धर्म०॥११॥

इति मोहचरित्रगर्भितअढारनात्रा चोपाई समाप्ता॥ संवत १७६२ वर्षे मार्गशीर्षमासे वदिपक्षे पंचमीदिने गुरुवासरे सिद्धियोगे मुनिकर्मसिंहेनालेखि स्वपरहिताय शुभं भवतु कल्याणमस्तु पठनपाठनयोः ॥ श्री ॥

इति विक्रमसंवत् १७६२ वर्षे मोहचरित्रगर्भित-अष्टादशनात्रा चोपाई समाप्ता कृता च श्रीमन्नागपुरीयबृहत्तपागच्छाधिराजयुगप्रधानक्रियोद्धारकारकसिद्धान्ततत्वमहोदधि-जैनाचार्यप्रवरश्रीपार्श्वचंद्रसूरिपुरंदरपट्टधुरंधर-श्रीसमरचंद्र--सूरिवरशिष्यप्रवरश्रीराजचंद्रसूरिराजशिष्योपाध्याय श्रीहीराणंदचंद्रगणिचरणानुचरठाकुरसिंहमुनिप्रवरविनेय श्रीमहामहोपाध्यायश्रीधर्मसिंहगणिशिष्याणुवाचकवरश्रीकर्मसिंहगणिना-संशोधिता च श्रीजैनश्वेताम्बराचार्यवर्यपूज्यपादपरमोपकारि-प्रातःस्मरणीयसुगृहितनामधेयविश्ववंद्यश्रीश्रीश्रीभ्रातृचंद्रसूरीश्वरचरणकिंकरमुनिसागरचंद्रेण स्वपरकल्याणाय॥ श्रियेऽस्तु॥

आचार्यश्रीभ्रातृचन्द्रसूरिग्रन्थमाला पुस्तक-३५.

मुनिवरश्रीप्रमोदचंद्रवाचकवरशिष्यमहोपाध्यायश्रीकुमुदसिंहगणिकृत-

श्रीरोहिणी तपमहात्म्यगर्भित-

श्रीरोहिणीनो चोपाईबद्ध-रास.

संशोधकः-श्रीभ्रातृचंद्रसूरिशिष्यमुनिसागरचंद्रः॥

(दूहाः-)

श्रीजिन पय युग्र प्रणमिये, वासुपूज्य अभिधान । सोवनगिरि श्रीपासजिन, महिमा मेरु समान ॥१॥ वर्द्धमानस्वामी सधर, शासन नायक सार । तस गणधर गौतम नमुं, लब्धितणा भंडार ॥२॥ श्रीसद्गुरु सानिध लही, पामी सघळा थोक । तास चरण परसादथी, कथा कहिश भविलोक ! ॥३॥ दान शील तप भावना, चिहुं करि शिवपुर जाय । वलि बिशेषें तप करे, ते दुःकर कहेवाय ॥४॥ चउद सहस अणगारमां, तपे धन्नो अणगार । वीरजिणंद वखाणीयो, ढंढण नेम कुमार ॥५॥ देतां सोहिलो जे हुवे, शीलेसुंदृढ मन साख । तप काया कसवटि लहे, त्रिकरण भाव सुं भाख ॥६॥ तप करि काया निर्मली, तपथी रूप प्रधान । जगमा तपना फल सवे, तप लहिये शिवठाण ॥७॥ तप करी किण सुख पामिया, सुणजो ते सावधान । रोहिणी

रोहिणी तप थकी, वलि अशोक राजान ॥८॥ गौतमपृच्छा ग्रंथथी पामी ए अधिकार । पुन्य पाप फल पूछिया, जिन पासे गणधार ॥९॥ अट्ठ उपर चालिश वली, वीरजिणेसर पास । तिणमें एगुणतीसमी, कहिये मन उल्हास ॥१०॥

(ढाल-पहेली-चोपाईनी.)

"उच्छिट्ठमसुंदरयं० भत्तं तह पाणियं च जो देई । साहूण जाणमाणो, भत्तंपि नजिज्जए तस्स ॥१॥" जंबुद्वीप भरत वासामि, आरजदेश मगध इण नामि । राजगृही सुरनगर समान, अनोपम गुण शैल उद्यान ॥११॥ समोवसरण रचना करि देव, वीरजिणेसर सारे सेव । चहुविह संघ परषदा मिली, वाणि सुधारस पीवा रली ॥१२॥ गुणगिरुवा गौतम गणधार, पूरवधर चउनाणी सार । जाणथका पण परउपकार, अबोह जिव बोहदातार ॥१३॥ अट्ठोतर सो भेद विचार, उत्कृष्टा अडायल उदार । नारय गति वलि शिव जई रहे, तेहज जीव किण करमे लहे ॥१४॥ इणिपरे सघला पूछे जेह, अरथ सहित जिन भाखे तेह । कहिये जेहनो इहां विचार, परणे ते गावे संसार ॥१५॥ अंजलि करी पूछे मन भाव, स्वामि पासे लही प्रस्ताव । जे जग प्राणी कोइक जेह, खाधो पीधो नजरे तेह ॥१६॥ किण करमें ते भाखो हेव, स्वामि कहे सांभल संखेव । असार वस्तु जाणी धरबार, अति कडुओ खारो अविचार ॥१७॥ खावा किणरे नावे भोग, वाल वृद्धने यौवन जोग । अति उच्छिष्ट जे छंडे सही, जेहनो नाम न ल्ये को गृही

॥१८॥ एहवो जाणी जे नरनार, दिये साधुने तेह असार। इह भव परभव दुख वशि तेह, पामे भवभमतां नहीं छेह ॥१९॥ जिम श्रीवासुपूज्य जगनाह, तस अंगज मघवा नरनाह। रोहिणी तसु पुत्रीनो जीव, बहु भव पुंठे कीधी रीव ॥२०॥ कुष्टरोग दुर्गंधे करी, दुर्गंधा परे पामे खरी। बहुभव पूंठे दीधो जेण, जाणी मुनि कडु तुंबड तेण ॥२१॥ वलि द्रौपदिपरे पामे दुःख, बहु भव भमतां थाय न सुख। दुर्गंध कुमरतणी परे जाण, दुख सहतां बहुभवे निर्वाण ॥२२॥ एहवो जाणी जे नरनार, अरस विरस अयोग आहार। करता भुगता जगमां जाण, पण तपथी लहिये शिव ठाण ॥२३॥ करजोडी पूछे गणधार रोहिणी राणीतणो विचार। दुर्गंधा किण विध तप करी, जगना नाथ! कहो हित धरी ॥२४॥ पूछ्या अंतर जिणवर भणे, आगल गौतम उभा सुणे। अरध मागधि वाणि रसाल, करमसिंह सुणतां सुविशाल ॥ २५ ॥

(ढाल-बीजी-सीखन सीखन चेलणा, ए देशि.)

जंबुद्वीप सोहामणो, द्वीपां बिच जाण। मेरु बिराजे बीचमें, शिरमुकुट समाण ॥२६॥ चंपा चारी चिहुदिशें, दक्षिण भरत मझार। अंगदेश धणकण भरी, रहे लीला नार ॥चंपा० ॥२७॥ गढमढ मंदिर मालिया, पोशाल लहे शाल। चावां चहुटां चीहु दिशे, शोभे सुविसाल ॥ चंपा०॥२८॥ धनवंत धरमी जन घणा, परकाज सकज्ज। विविध व्यापारी वाणिया, गुणवंत सलज्ज ॥ चंपा० ॥२९॥ क्षीरोदक सम लूघडां, रेशमी पटकूल। गाधी

पसारी फल हटी, माली ऊभा ले फूल ॥चंपा०॥३०॥ मोती हीरा परखता, बहु बुद्धिनिधान । वरण अढार वसे तिहां, सहुको सावधान ॥ चं० ॥३१॥ धरमे करम बे साचवे, मन वांछित भोग। दुख दोहग दीसे नही, नगरीना लोग ॥ चंपा०॥३२॥ नगरनिकट चिहुदिशि भला, वापी कूप तडाग । वनखंड वृक्ष घणा तिहां, वाडी ने बाग ॥ चंपा०॥ ३३ ॥ वासुपूज्यजिन बारमा, अंगज नरराज । राजा राज करे तिहां, मघवा ग्रहाराज ॥ चंपा०॥३४॥ तेज प्रतापें आकरो, सहु माने आण। सीमाडा भूपाल जे, सेवे राणोराण ॥ चंपा०॥३५॥ देवलने ध्वज दंड छे, स्त्री कबरी बंध। मार सारपासे कहे, छिद्र मोती संध ॥ चंपा० ॥३६॥ न्यायी रामतणी परे, हरिचंद्र जिमवार । विक्रमनी परि साहसी, कर्ण जिम दातार ॥ चंपा०॥३७॥ इणिपरि राज करे भलो, पुहवीपर-सिद्ध। करमसिंह करमे करी, मन वांछित रिद्ध॥ चंपा०॥३८॥

(दूहाः-)

श्रीमघवा महाराजने, लखमी राणी जाणि । प्रतिभक्ति रूप वल्लभा, गुणगण केरी खाणि ॥३९॥ गजगति चाले सुंदरी, सिंह समी कटिलंक । चंद्रवदनि मृगलोचनी, अंग नहीं को वंक ॥४०॥ शील सुदृढ सीता समी, रूपे रंभ सरीष । कोकि-लकंठ मनोहरु, वाणी अमृत ईष ॥४१॥ महिला गुण चोसठ कला, कुशल घणुं परवीण । अवसर सघला साचवे, दान पुन्य दाक्षीण ॥४२॥ पटराणी पदमिनी सहित, सुख विलसे महाराय। देव दुगंदुकनी परे, लीला मे दिन जाय ॥४३॥ रतिवंती

राणीतणे, आठ पुत्र अभिराम। जनम्या नाळे सामटे, दीपे रूपे काम ॥४४॥ एक एकथी सुंदरु, कळा बहुत्तर जाण। रायराणी मन उल्लसे, देखि गुणमणि खाण ॥४५॥

(ढाल-त्रीजी-क्षेत्रपाळना गीतनी)

हिवराणी हिवराणी मनमांही चिंतवे, पुत्रीविण पुत्रीविण प्रमदा न शोभहे। गुणवंता (२) बेटा जनमिया, एक पुत्री (२) नो मुजलोभ हे ॥हिव०॥४६॥ जिणघरमां (२) पुत्री नवी होवे, ते घर किम (२) होवे पाकहे। कन्या दान (२) कहिये परगडो, कवडिने (२) जे वळि लाख हे॥ हिव०॥४७॥ बाळापण (२) लाडकोड पूरती, पितुमाता (२) भाइ गावे गीतहे। दुलडीआं (२) रमती रंगशुं, सहि पामे (२) धरती प्रीतहे॥ हिव०॥४८॥ सिणगारी (२) गौरी सोहामणि, पूगेमन (२) केरी खंत हे। मन मान्युं (२) थाजो माहरे, गोरो गुण (२) वंतो कंतहे। ॥ हिव० ॥४९॥ इण अवसर (२) मावित्र चिंतवे, जोइजइ (२) जमाइ चंग हे। पूरणाइ (२) पूरा प्रेमशुं, इमकीजे (२) बहुरंग जंग हे॥ हिव०॥५०॥ मुकलावो (२) दीजे दिल खुसी, आघरणी (२) कीजे शुभाव हे। मोशाळे (२) मनरंजे घणुं, पीहरनो (२) कह्यो प्रस्ताव हे॥ हिव० ॥५१॥ बांधवने (२) बांधे राखडी, साइबीजे (२) करे सुजगीसहे। जीमाडी (२) वीरा आपणा, वळि आपे (२) बहु आशीषहे॥ हिव०॥५२॥ एक बेटी (२) विण एहवा सही, मनोरथ (२) रहे मनमांहि हे। विलखाणी (२) आमण दूमणी, अंगमांहि (२) नहि उमाह

हे ॥ हि०॥५३॥ राजापिण (२) जाणी वातडी, रहेराणी (२) रहे आधान हे। मूनोरथ (२) फळशे मनतणा, इमजाणी (२) कहे राजान हे। हिव०॥५४॥ तिण दिनथी (२) उत्सव अति घणा, वळि कीजे (२) रंगमंडाणहे। रायराणी (२) मन आणंदिया, कर्मसिंह कहे (२) पुन्य प्रमाण हे। हिव० ॥५५॥

-दूहाः-

शुभ मुहूरत शुभ वासरे, उच्च प्रहर अभिराम। लखमी-राणी लीलमें, पुत्री प्रसवे ताम ॥५६॥ राजा दीध वधामणी, चेडी दोडी जाय। सांभळी मनमां हरखीओ, आनंद अंग न माय ॥५७॥ दीधी बहुत वधामणी, दासिपणो करि दूर। जन्म अवसर साचवे, वाजे मंगळतूर ॥५८॥ बंदीजन जय उच्चरे, याचक जय जय कार। हुवे दशोठण जयां लगी, खरचे गरथ अपार ॥ ५९ ॥ पहिले बीजे तीसरे, दिन वळि छट्ठी-रात। दशमे सूतक टाळीने, बारसमे विख्यात ॥ ६० ॥ जीमाडी साजन सवे, वस्त्राभरण प्रधान; फळ फोफळ देईकरी, बोले इम राजान ॥६१॥ ए पुत्री अम व्हा-लडी, कुमुद रोहिणी जाम; तिणे कारण देस्यां सही, रोहिणी कुमरी नाम ॥६२॥ नाम तणी करी थापना, संतोषी सहु साज। राजाराणी रंजिया, हवे सहु सरियां काज ॥६३॥

(ढाल ४ थो-शियाळो हे भलां आवियो, ए देशी.)

कलपवेली जिम वाधती, ऊजल पख हे बीजथी जिमचंद; मायताय मनमोहती, जिम देखी हे मधुकर अरविंद ॥ रोहिणी

हे रूपे रूअडी, आंबा डाळे हो सोहे मूडी जेम ॥ रो०॥६४॥ बरष हुइ जब सातनी, तिण अवसरहे वाधे शोभ शरीर । भणी गुणी चोसठकळा, गुण लक्षणहे पूरण साहस धीर ॥ रो०॥६५॥ मुख मटको देखी करी, चंद क्षीणो हे थाये इणि-भेद । कटि तटि देखी केसरी, वुने वसियो हे धरतो मन खेद ॥ रो०॥६६॥ मृग बीहे निज नयणथी, मति लेसी हे काइ तेण । वनवासे भमतो रहे, नवि आवे हे अविसासत-एण ॥ रो०॥६७॥ हंस चुरण आवी रह्यो, जाणी सारदहे वेणी मिसि व्याल । अधर प्रवाळा लाजवी, बांहडली हे कमळांरी नाळ ॥ रो०॥६८॥ दांतडला दाडमकळी, मुंगफळियां हे अंगु-ळियां सार । कठिन पयोधर दीपतां, कुंभस्थल हे मयंगल आकार ॥ रो०॥६९॥ नयणकमळनी पांखडी, अणियाली हे अंजी गजगेल । दीपशिखा सम नासिका, जंघायुगहे दीपे जिम केळ ॥ रो०॥७०॥ रूपें रंभा शीळे सती, शारदपिणहे हियडे विश्राम । लीलावे वासो वसे, नित अचरिज हे किम एकण ठाम ॥ रो०॥७१॥ अंगण ऊभी लीलमें, कलकंठीहे बोलंती वेण। यौवनवय जोरे चडी, जगडावे हे नव अंग सुम-यण ॥ रो०॥७२॥ चंपकवर्ण सुहावती, ललकंती हे वलि वेत्र समान । कामविराम छीपाडती, चालंती हे जोती साव-धान ॥ रो०॥७३॥ रोहिणी कुमरी रंगशुं, मन मेळुं हे सहि-यासुं वात । करे करमसिंह इम कहे, जोवनवयनी हे जगमें विख्यात ॥ रो०॥७४॥

(दूहाः-सोरठाः-)

एहवे अवसर राय, राणीसुं वातां करे। चिंत धरी मन भाय, कुमरी थई वर योग्यता ॥७५॥ राणी जंपे स्वामि! सरिखो वर को जोइये। रूपगुणें अभिराम, सारीखे राचे-सहु ॥७६॥ मंत्री बुद्धि निधान, पूछीजे प्राणेशजी!। साम काम सावधान, मरम सहू वातां लहे ॥७७॥ मंत्रि प्रति महाराय, पूछे मन उत्सुक थई। वरजोवो वरराय, कुमरी वर प्राप्ति थई ॥७८॥ चिंत किसीइ लईश, पुण्यवंतीरी थे करो। करमे की जगदीश, जे वर तुम्ह मन मानियो ॥ ७९ ॥ पिण नवि दीजे बाप, इण जुगमे सहुको कहे। वरसी जोई आप, तेडावो बहु राजवी ॥ ८० ॥ हरख्यो मन महाराय, एह वात युगति कही। राणी पासे जाय, एकमनां सहु सिद्धि हुइं ॥ ८१ ॥ तेडावे राजान। देशदेशचा भूपती। आवे इंद्र समान। शूर-वीर सकजा सही ॥८२॥ एक म्हेलीओ दूत, वीतशोक राजा-भणी। पुर नागोर पहूत, करजोडी सहू भाखियो ॥८३॥ मघवा राजा रंग, रोहिणी स्वयंवर कारणें। संघळा भूप सुचंग, तेड्या तिहकण आवशे ॥८४॥ तिण कारण महाराय, चंपापुरि पधारिये। सांभळि हर्ष न माय, अशोक कुमर साथे करी ॥८५॥ हयगयरथ परिवार, नागोरथी राजाचढे। कुंमर देखी नरनार, वरराजा एहज सही ॥८६॥ शकुनहूआं श्रीकार, देखी राजा रंजियां। हीअडे हर्ष अपार, सफळ मनोरथ माहरा ॥८७॥ सुखप्रयाण सताब, नगरी पासे आवि-

या । डेरा करे सुफाव, देखी मनरंजे घणुं ॥८८॥ चंपापुरीने पास, नगर नवेरा वासिया । उंचा लगी आकाश, डेरा तंबू ताणिया ॥८९॥ नोबत घुरे निसाण, के ऊतरिया बागमें । मोटा करे मुंडांण, भादरवाना मेहज्युं ॥ ९० ॥ केई सरवर कंठ, के चउडा चउगानमें । केई महा अठंठ, मनगमती मोजां दिये ॥९१॥ श्रीमघवा महाराय, आगति सागति बहु परें । डेरे डेरे जाय, मंत्री मनुहारां करे ॥९२॥ इणि परे हर्ष अपार, सहू राजा संतोषिया । स्वयंवर मंडप सार, कहे करमसिंह सांभळो ॥ ९३ ॥ सर्व गाथा ॥९३॥

(ढाल ५ मी–चुंनडीनी देशीमां.)

चंपापुरी राजा चुंपशुं, स्वयंवर मंडप करे साररे लाल । सारीखी धरती राखी, जाणे थाळ तणे आकाररे लाल ॥९४॥ स्वयंवर अति सोहे भलो, दीठां आवे दायरे लाल । इंद्र सभा मानु अवतरी, देखी संसय भ्रम थायरे लाल ॥ स्व० ॥९५॥ निरमळनीर छंटावीने, वळि फूल पगर पथरंतरे लाल । अगर उखेवे अतिभलो, ते सुरभि रही महकंतरे लाल ॥ स्व० ॥ ९६ ॥ तसु परि तंबू ताणिया, जाणे नभशुं मंडे वादरे लाल । पाखलि फरति कनात छे, ते दीपे वादोवादरे लाल ॥ स्व० ॥ ९७ ॥ जाजिम अवल विछावीजे, तस ऊपर गिलम अनूंपरे लाल । पग देतांपि तळे सही, जाणे एतो कूपरे लाल ॥ स्व० ॥ ९८ ॥ चिहुंदिश दीपे चंद्रूआ, मुखमल वलि जरबाफरे लाल । जरकस नीलकना घणा,

कतिपादिक साफरे लाल ॥ स्व० ॥९९॥ पटांबर पटोलियां, करणाटी मछली छींटरे लाल। स्वयंवर मंडप छाईयो, देखतां जनमन ईठरे लाल ॥ स्व०॥१००॥ पोळ बणावी चिहुं दिशे, ऊपरें झाक झमाळरेलाल। आरीसां करी शोभती, महकंती फूलमालरे लाल ॥ स्व० ॥१०१॥ मोत्यांरी जाळी झिगमिगे, बिच परवाळि सिरदाररे लाल। पंचरंग फूंदा फावता, जाणे आफूं खेत उदाररे लाल ॥ स्व० ॥२॥ पोया झाबे सोनातणे, लहकंता वाय सचेतरे लाल। थांभे दीपे पूतळी, हिवडां बोलसी हेतरे लाल ॥ स्व० ॥३॥ स्वर्ण सिंहासन मांडिया, मणि माणिक्र जडचा सुजाणरे लाल। स्वयंवरमांहि बिहुं गमा, सरखा सरीखे मंडाणरे लाल ॥ स्व० ॥४॥ तिहां आवे भूपति हरखता, स्नान मज्जन करी शरीररे लाल। वस्त्र अनोपम शोभता, पचरंगी पाग सधीररे लाल ॥ स्व० ॥ ५ ॥ छत्र सहित चामरढळे, काने कुंडळ तिलक विसाळरे लाल। वीर वलयने बेरखा, गळे नव लख मोतिमाळरे लाल ॥ स्व०॥६॥ सोळ शृंगार सजी करी, दीसंतां इंद्र समानरे लाल। आवी बैठा मंडपें, मन हरख घणे राजानरे लाल ॥ स्व० ॥ ७ ॥ प्रीतशोक राजा तिहां, साथे कुमर शिरमोडरे लाल। बेठा आवी मंडपें, बीजो नावे को जोड रे लाल ॥ स्व० ॥ ८ ॥ अंग देश चंपा पुरी, शिणगारे बहु भातरे लाल। मघवा राजा मन खुसी, मानु इंद्रपुरी हुई मातरे लाल ॥ स्व० ॥९॥ इंद्र मूरति महा राजवी, दीसे स्वर्गा लोयरे लाल। करमसिंह

करमे करी, परणसे बाळा सोयरे लाल ॥ स्व० ॥१०॥

(दूहाः-)

हवे कुंवरी प्रति विनवे, सखी साहेली आय। पीठी प्रमुख सहु करे, रंगे मंगळ गाय ॥११॥ मज्जन स्नान करी तिहां, तनु चंदन लेपंत। मंगळडा करी कामनी, मनमांहि हरखंत ॥१२॥ हवे शणगार सजे भला, कवि ओपम आखंति। सवि चतुराई केळवी, स्वयंवर मंडप जंति ॥१३॥

(ढाल ६ ठी-देशी यतीनी.)

सजी सोळ शृंगार उदार, अमोलक जेह अपार। नारी कुंजर दक्षिण चीर, सोभीता पहिरे शरीर ॥१४॥ आंखडियां काजल नीको, भल भाल विराजित टीको। शेषनाग समी शिरवेणी, राखडी मणि ओपम देणी ॥१५॥ झबके बे कांने कुंडळ, जाणे शसि सूरज मंडल। नाके सोनारी वाळी, मोटा मोति वीच परवाळी ॥१६॥ मुख सोहे जिम अरविंद, अथवा पूनिमनो चंद। हियडे मोतीना हार, नववंक सरा अढार ॥१७॥ मणि माणिक मोती जडियो, कंचू आप विधाता घडियो। बहेरखा ने बाजुबंध, घूघर घमके कटि संध ॥१८॥ मुख रातो रंग तंबोले, सखियांरे झूलर डोले। चकडोळ चढी सुकुमाल, हाथे लेई वरमाल ॥१९॥ कवि ओपम केही आखे, इंद्राणी पाछि राखे। जो रूप करीजे जोड, तो नावे इणरी होड ॥२०॥ इम स्वयंवर मंडप आवे, सहियां शुं हसती भावे। धरती पग

मूंके ठमके, पायें नेउर घूघर घमके ॥ २१ ॥ गज गतिशुं केलि करंती, साजण दुरजन परखंती । निरखंती वांके लोयण, जिम निरखे भूख्या भोयण ॥२२॥ हवे चिंते मन राजान, जाणे वीज खवी असमान । विद्याधरी किन्नरी राही, के इंद्र लोकथी आई ॥ २३ ॥ सवि नरपति देखी हरखे, रति रूप सही इम परखे । एहवी नही नारी काई, राव राणांरे मन भाई ॥२४॥ वरशे हिव जेहने एह, धन धनम गिणेशा तेह । कर्मसिंहकहे करमसखाई, परणसे तेहने आई ॥ २५ ॥

दूहाः-

राजा मन मांहि चिंतवे, इहां कुण इणरी जोड । वर वरसे जे एहने, ते शिर वधियो मोड ॥२६॥ सहुको चाहे एहने, इणरो जिणशुं मन्न । इम चिंते सहु राजवी, ते जगमांहे धन्न ॥ २७ ॥ श्रीकंठ उमिया कारणे, कमळा काज गोविंद । रतिने कारणे कामगिणी, रोहिणी पति श्रीचंद ॥ २८ ॥ तिम इण रोहिणी कारणे, कुण छे चंद समान । निकमी राणीनी परे, बेठा कहे राजान ॥ २९ ॥ केई कहे ऊतावळा, इण वेळा कांइ आज । आरीसे शुं काम छे, कर कंकणरे काज ॥ ३० ॥ केई कहे निरखां निपुण, आपणशुं नहीं मंड । नारी पराइ निरखतां, डोळां ही को दंड ॥३१॥ इण परे मन मोजां करे, जाणे समुद्र लहरि । परणीजण पुन्ये हुसी, जिणशुं साहिब महरि ॥ ३२ ॥ चतुर चेडी आगे कहे, कनक छडी जस हाथ । रूप रिद्धि

वंशावळी, देश नगरना नाथ ॥३३॥

(ढाल ७ मी–कोइलो पर्वत धूंधलोरेलो ए देशी.)

आगळ चाले वेत्रिणी रेलो, पूंठे कुमरी अनूपरे बाईजी। घूंघट ओट आरी समेरे लो, जोति मन करी भूपरे ॥ बा० ॥ ॥३४॥ वर वालम मन मानियोरे लो, जे आवे तुज दायरे ॥ बा० ॥ महि मंडलना महिपतिरे लो, वात कहुं समझायरे ॥ बा० ॥ वर० ॥ ३५ ॥ ए कुरु देशतणो धणीरे लो, गजपुर कौतुकवंतरे ॥ बा० ॥ वैरी वंश निकंदनोरे लो, रूप कला गुणवंतरे ॥ बा० ॥ वर० ॥ ३६ ॥ कोशळ देश कृपानिलोरे लो, मोटो महिपति जाणरे ॥ बा० ॥ हय गय रथ पायक घणारे लो, बोले अमृत वाणरे ॥ बा० ॥ व० ॥३७॥ मेदपाट माने सहुरे लो, आवे भेट अमोलरे ॥ बा० ॥ रूपें रतिपत्रि सारिखोरे लो, अवर नहीं इण तोलरे ॥ बा० ॥ व० ॥ ३८ ॥ कंबोज देस कला घणीरेलो, अश्वरतनरी खांणरे बाईजी । ए राजा तिण देशनोरेलो, तेजें दीपे भाणरे बाईजी ॥ वर०॥ ३९ ॥ वच्छ देशनो वालहोरे लो, जाणे सकल जहानरे ॥ बा०॥ साल सुगंधी निपजेरे लो, देवां दुर्लभ मानरे ॥ बा० ॥ व० ॥४०॥ काश्मीरका शुं कहुंरे लो, जीभ एक गुण कोडरे ॥ बा० ॥ केसर रयण कंबळ हवेरे लो, ते राजारी कुण जोडरे ॥ बा० ॥ व० ॥ ४१ ॥ काशी देश वाराणसीरे लो, पुरनो पृथिवीपाळरे ॥ बा० ॥ तिहां गंगा स्नाने करीरे लो, पातिक जाय पयालरे ॥ बा० ॥ व०॥

॥४२॥ मलयाचल चंदन जिहांरे लो, तपति छ मासी जायरे ॥ बा० ॥ ववल नृपति तिण देशनोरेलो, रमणि रही लपटायरे ॥ बा०॥ वर० ॥ ४३ ॥ लाट कर्णाटतणो धणीरे लो, गौड चौड नेपालरे ॥ बा० ॥ लाड कुंकण कच्छ देशनारेलो, बेठा ए भूपालरे, बाईजी ॥ व० ॥ ४४ ॥ इंद्र शोभा जिणे अवगणीरे लो, नागोरनो ए नाथरे ॥ बा० ॥ रूप कला गुण आगलोरे लो, अशोक कुमर वलि साथरे ॥ बा०॥ व०॥४५ रोहिणी रूप निहाळीयोरे लो, होइ रही लय लीनरे ॥ बा० कर्त्ता दिसे छे सहीरे लो, अशोक कुमर आधीनरे ॥ बा० ॥ ॥ ब० ॥४६॥ जिम गयवर रेवा नदीरे लो, चूनीने वलि हेमरे ॥ बा० ॥ जिम चकोरने चन्द्रमारे लो, कुमरने कुमरी तेमरे ॥ बा० ॥ व० ॥४७॥ चमक लोह जिम आविने लो, कंठ ठवे वरमाळरे ॥ बा० ॥ हरषे हियडो कुंवरनोरे लो, देखी अति सुकुमाळरे ॥ बा०॥ व०॥४८॥ ढाल हूई ए सातमीरे लो, कुमरी हरष अपाररे ॥ बा०॥ कर्मसिंह करमें करीरे लो, सुख संपति श्रीकाररे ॥ बा० ॥ व० ॥४९॥

–दूहाः–

विंद अनोपम देखीने, पुगी सब जन खांति; मघवा महाराजा हवे, भोजन नवली भांति ॥५०॥ अवर सहु राजा प्रते, वस्त्रदान सनमान। संतोषी संप्रेडिया, सघळाई राजान ॥५१॥ हवे राजा वीवाहतणो, मोटो करे मंडाण। खरचे धन उत्सुक थई, अवसर जाणे जाण ॥५२॥

(ढाल ८ मी–देशी लाखा फुलांणीना गीतनी)

हवे तिहांथी वरराय, चोरीमां आवे चूंपशुं । कुमरी वेश बनाय, पाखल आवी बेसे हर्षशुं ॥५३॥ आरिम कारिम जेह, सघळा करीने मंगळ गाईयें । चतुर सोहागण नार, लाडो लाडी हर्षे वधाईये ॥५४॥ वाजे मंगळ तूर, जांनी मांनी मनमांहे हरखिया । जोशी मेलावे हाथ, राजा राणी तिहकण आविया ॥५५॥ हाथ म्हेलावण हुंश, दीधा हो हयवर जडित पलाणशुं । मदझरता मातंग, दीसे ऐरावण सोवन रासशुं ॥५६॥ बिहुंना छेहडा बंधि, इण मिसें प्रीति बंधी जग जीतियो । कन्या फिरी वर केडें, चोथो मंगळ कहे सहू वरतियो ॥५७॥ खरच्या गरथ अपार, दीधी हो राजाने लखमी अति घणी । याचक हरष अपार, प्रीते मुंह माग्यो द्ये ते भणी ॥५८॥ बिहुं राजा रंग रास, मांहो मांहे हो प्रीत वधी घणी । मांगे शीख सनेह, चालण सझाई करीने घर भणा ॥५९॥ दायजो दीधो सार, संप्रेडण साथे राय राणी चले । सुखरी शीख सनेह, देता कुमरीने सहू साजन मिले ॥६०॥ करतार के भरतार, सासूने सुसरो घणुं संतोषजे । पीहर पनोती नार, जण जण मुखथी एहवुं कहावजे ॥६१॥ हिळी मिळीने मन भाय, रोती साजन सहु रोवाडिया । तुरत तुरीसुं राय, चढीने हो मारग हालण मांडिया ॥६२॥ आया नगर नजीक, जाइने वधाऊ परणी आईया । रोहिणी राज कुमार, सांभळी हरख घणे वधाईया

॥६३॥ उत्सव मांडे सार, करि जे कौतुक कोडि वधामणा। याचक जय जयकार, जण जण मुख मुख नूर चढे घणा ॥६४॥ शिणगारे बाजार, गलिये गलिये फूल विंखेरिया। ताता तेजी तुरंग, मदगरता मयंगल शिणगारिया ॥६५॥ आरी सांरी पोळ, नाचे नाटिक बद्ध बत्रिशजे। ग्डि धूंधूं घुरेरे नीसाण, भेरी नफेरी ताल कंसालजे ॥६६॥ पंचरंग नेजा हाथ, चाले आगळ पायक दोडता। इणिपरे राणिक चोक, गहमह आवे हो सोहला गावता ॥६७॥ कुमरी सहित कुमार, हाथीनी अंबाडी हो बेठा सज करी। मेघाडंबर छत्र, चामर ढलकतां हो शोभा बहु परि ॥६८॥ दीसे देव कुमार, इंद्र इंद्राणी हो ए आगळ किशुं। नर नारी निरखंत, रूपें न कोई जगजाण्यो इशुं ॥६९॥ आवे हरख अपार, राज आवासे आपण महेलमें। मात पिता नमी पाय, हरखे कुमरी जइ सामने नमें ॥७०॥ राणी दे आशीष, सदा सोहागणी सुजस लहो सही। लखमी लील विलास, करम प्रसादे सघले करमसिंहि ॥७१॥

दूहाः-

अशोक कुंवर युवराजवी, काम भोग विलसंत। छह ऋतु बारे मासना, माणे मननी खंत ॥७२॥ अपत्सरथी मानी अधिक, रोहिणी रंग रसेण। प्राणपियारी पदमिणी, तपे तपिया फल तेण ॥७३॥ तिण अवसर आवे तिहां, सूधा साधु निग्रंथ। चरण करण तारण तरण, मुक्ति साधता

संथ ॥ ७४ ॥ सांभळी राजा हरष वश, वंदे भाव विशुद्ध । वाणी अमीरस वरसता, मीठी साकर दूध ॥७५॥ देशण सुणि वैरागियो, ए संसार असार । तन धन यौवन सजन सुख, तृण जिम तजे संसार । ॥७६॥ शुभ मुहूरत वेळा सखर, कुंवर ठवी निज राज । हीतशोक विकसित वदन, सारे आतम काज ॥७७॥ तप जप संयम पाळिने, छेदे करम विराम । मरण समाधि करी लहे, सद गति शुभ परिणाम ॥७८॥

(ढाल ९ मी-देशी विंछीआनी)

पाळे राज्य प्रतापशुं, अशोक अनोपम रायरे लाल । मन मोहिनी राणी रोहिणी, राजा रह्यो लय लायरे लाल ॥७९॥ प्राण पियारी रोहिणी, सदा सोहागिणी नाररे लाल । तन धन यौवन चातुरी , सफळ जे वश भरतारे लाल ॥ प्रा०॥८०॥ रात दिवस रंगें रमे । नव नव करत विनोदरे लाल । एक जीव तनु जूजूवा, जाणे उमिया इश्वरमोदरे लाल ॥प्रा०॥८१॥ चंदन वन देखी करी, जिम नाग रहे लपटायरे लाल । गयंवर रेवा रति करे, जिम हंस मानसर पायरे लाल ॥ प्रा० ॥ ८२ ॥ कबही कहे हीआलियां कबहीक पासासाररे लाल । काम कुतूहल केळवे, हरखें वारोवाररे लाल ॥ प्रा० ॥ ८३ ॥ नरनारी राग हुवे सदा, ससनेही सघळी जातरे लाल । जोतां एण पटंतरे । अवर सहु तिल मातरे लाल ॥ प्रा० ॥८४ ॥ इणिपरें सुख विलसे सदा, रोहिणी राणी भूपरे लाल । सोलपुत्र जाया सती, एक एकथी अनूपरे लाल

॥ प्रा०॥८५॥ बेटी बारे हूई भली, रूपें सुंदर जातरे लाल। लोकपाळ पुत्र आठमो, लघुवये पाळे मातरे लाल ॥ प्रा० ॥ ॥ ८६ ॥ आठे पुत्र गुण आगला। बारे कन्या चंगरे लाल। रोहिणी उरसर हंसला, ए ए सुन्य प्रसंगरे लाल ॥प्रा०॥८७॥ इण प्रस्तावे एकदा, राजा राणी पासरे लाल। सात भूमि मंदिर सही, सुख बेठा करे विलासरे लाल ॥ प्रा० ॥ ८८ ॥ खोळे लेई पुत्रने। राणी रंगे रमायरे लाल। कहे करमसिंह हवे कहुं, सांभळजो मन लायरे लाल ॥ प्रा०॥८९॥

(दूहा:-)

राजाराणी बे जणा, देखे नगरी ख्याल। वलि विशेष राणीतिहां, निरखे नजर निहाळ ॥९०॥

(ढाल १० मी-हरिमां मन लागो-ए देशी.)

कोईक नारी तिण समे, धरती शोक अपाररे, पुत्र विरहे करी। रोवे रींखे आरडे, धीर न धरे लगाररे, पुत्र विरहे करी ॥९१॥ हियडो आहणे हाथशुं, विच विच करे विलापरे। पु० खिण ऊठे धरती पडे, मूर्छे जिम विष सापरे ॥ पु० ॥ ९२ ॥ पुत्र तणा गुण संभरे, मस्तक कूटे तेमरे। पु० हीमाले दाधी जिसी, सुंदर वेली जेमरे ॥ पु० ॥ ९३ ॥ पुत्र पखे केम जीविये, आलंबन आधाररे। पु० एकण जाया बाहिरो, शूनो सकळ संसाररे ॥ पु० ॥९४॥ न हुआंरो दुःख एक छे, हूवां होय अपाररे। पु० पण जाई परणी मरे। दुःख जाणे करतारे ॥ पु० ॥ ९५ ॥ पाप चितारे आपणा,

थापण-मोषो कीधरे । पु० चाडी खाधी चुंपशुं, कूडा आळज दीधरे ॥ पु० ॥ ९६ ॥ विष मार्या कामण किया, शोक्यां दीध शरापरे । पु० चोरी विद्या बहु करी, लै व्रत भाग्यां आपरे ॥ पु० ॥ ९७ ॥ सरवर पाळ परीकरी, मोडी तरुवर डाळरे । पु० काचा फळ तोड्या घणा, के जळ घाली जाळरे ॥ पु० ॥ ९८ ॥ पंजर पंखी घालिया, इंडां परहा नाखरे । पु० यंत्रकरम कीधा घणा, दीधी कूडी शाखरे ॥ पु० ॥ ९९ ॥ दान देतां वाल्या सही, दे पछतावो कीधरे । पु० के अणगळजळ वावर्यां, साधु संतापण दीधरे ॥ पु० ॥२००॥ इण परें पाप चीतारती, इह भव परभव जेहरे । पु० आप कमाया भोगवुं, किणरो दोष न तेहरे ॥ पु०॥२०१॥ दुःखभर रोती विलविले । दोहिलो जगमांहि पेटरे । पु० विहडे जे लागी सही, अंगूठाथी थेटरे ॥ पु० ॥ २ ॥ जाणे जे वीती अछे, जाया जामणी वातरे । पु० कहे करमसिंह पूछज्यो, पुत्र विरहणी मातरे ॥ पु० ॥ ३ ॥

(दूहाः-)

चिंते राणी रोहिणी, ए नाटिक कुण जात । बीजा दीठा बहु परें, एह नवेरी भात ! ॥ ४ ॥ रोहिणी पूछे रंगशुं, मनमें धरी इल्लोल । कहो स्वामी ए केहवो, नाटिक तणो कल्लोल ? ॥५॥ राय कहे व्हाली प्रिये !, तवि कीजे अहंकार । धन यौवन सुत सुख करी, मनवांछित भरतार ॥ ६ ॥ एह गुमान न कीजिये, हांसारी नहि ठाम । रीस करी राजा

कहे । नारी बोले ताम ॥७॥ स्वामि! न जाणुं ए सही, कांइ थरो मन कोप । एह वात कहेवी सही, नवी राखवी गोप ॥८॥ राय कहे रोवे अछे, पुत्र विरहणी मात । रोवो ए शीखी किहां, ? ते मुज कहो विख्यात ॥ ९ ॥ देखाडुं राजा कहे, बाळक छे अरनाथ । खोळाशुं लइ नांखियो, राय करी निजहाथ ॥१०॥ लोक करे हाहा तिहां, रोहिणी नाणइ दुःख । नगर देवता झाल ले, आणे ते सनमुख ॥११॥ सिंहासन बेसाडियो, निराबाध ते देव । राय प्रमुख हरख्या सवे, पुन्य-तणा फळ हेव ॥१२॥ नरपति मनमां चिंतवे, राणी पुन्य अपार । नवि जाणे दुखवातडी, इणि तपतपिया सार ॥१३॥ इण अवसर आव्या तिहां, साधु जेह मन भाय । आदर करिने सांभळो, दरिशण दुरित पुलाय ॥१४॥

(ढाल ११ मी–देशी पंथीडानी)

श्रीवासपूज्य जिणेसर बारमारे, तेहतणा बे शिष्यसु जाणरे । रूपकुंभने सुवर्णकुंभ नामें भलारे, दीपे वरनाणे करी भाणरे ॥१५॥ साधुशिरोमणि आवि समोसर्यारे, नागोरमा वनखंडमांहिरे । तप जप काया कसवटणी करेरे, पारण आंबिल छठ उछांहिरे ॥ साधु० ॥ १६ ॥ गाम नगरपुर विधिशुं विचरतांरे, पाळे चार महाव्रतचंगरे । भवियण सूधो मारग उपदीसेरे, टाळे मिथ्यामतिनो संगरे ॥ सा० ॥१७॥ सत्या-विंश गुणे करी शोभतारे, पंचे आश्रवटाळे दूररे । छ काय पाळे पूरा प्रेमशुंरे, साधे किरिया परिसह सूररे ॥सा०॥१८॥

सुमतियें सुमता गुपति धरे सदारे, साधे सूधो यतिनो धर्मरे। पाप अढारे आठमद टाळतारे, जाणे एहना विरूआ कर्मरे ॥सा०॥१९॥ चार कषाय अने विकथा नहींरे, दुःकर नवविध ब्रह्म धरंतरे। चरण करण गुणे करी शोभतारे, धरे शीलंग अठदश मनखंतरे ॥सा०॥२०॥ भावन भावे बारे साधुजीरे, आरंभ परिग्रहनो परिहाररे। सावद्यभाणांते बोले नहींरे, डोले नहीं सुरवचने लगाररे ॥ सा० ॥ २१ ॥ दोष बेतालीश टाले भातनारे, वलि ल्ये अरसविरस आहाररे। इंद्री पंचे वश कीधी जेणेरे, गोपवि कच्छपनी परे साररे ॥ सा० ॥ २२ ॥ पंचाचाररतनत्रय साधतारे, मनमथगंजण महिमावंतरे। शांतदांत कृपाना सागरूरे, मंदरनी परे धीर धरंतरे ॥ सा० ॥ २३ ॥ नाम लियंतां नवनिधि संपजेरे, दरसण आपद जाये दूररे। गुणगावंतारे गुणज होवे सहीरे, वाधे कीरती जगभरपूररे ॥ सा० ॥ २४ ॥ कुमतिकदाग्रह राखे तिल नहीरे, समता शमदम संयम साररे। धरता ध्यान सदा धवळुं सहीरे, करता भवियणनो उपगाररे ॥ सा० ॥ २५ ॥ एहवा साधुगुणे करी दीपतारे, भावे वंदो वारंवाररे। करम पसाये मिळशे करमसिंहरे। तेहना नामथकी निस्ताररे ॥ सा० ॥ २६ ॥

(दूहाः-)

वनपाळक आवी कहे, राजाने तिणवार। इण नगरें आव्या अछे, वनमांहे अणगार ॥ २७ ॥ सांभळी राजा हरखीओ, धन्य दीह मुज आज। वनपाळक संतोषीने, मनरंगें

महाराज ॥२८॥ सेवक तेडीने कहे, हय गय रथ परिवार। करो सजाइ बहुपरे, वंदन हरख अपार ॥ २९ ॥ तहत्ति करी चरपुरुष ते, शीघ्र कीओ ते काम । राय प्रते कर जोडीने, कहे कीओ सहू स्वाम ! ॥ ३० ॥ राजराणी भावधरी, पुत्री पुत्रज साथ। मिली परिवारे परवर्यां, आवी नमे नरनाथ ॥३१॥ त्रण प्रदक्षिणा दे करी, वांदे त्रिकरण शुद्ध । देशना वाणी वरसता, मीठी साकर दूध ॥३२॥

(ढाल १२ मी-मेघमने कांइ डमडोलेरे एदेशी.)
(इडर आंबा आंबलीरे, इडर दाडिम द्राख ए रागमां.)

दशदृष्टांते दोहिलोजी, लहेतां नरभवसार । श्रुत सांभळण सद्दहणाजी, तप संयम धरण उदार-साधुजी बोले अमृतवाणी। भवियणने हित जाणी ॥ सा० ॥ ३३ ॥ बार अंगजिणवर कह्याजी, मोक्षतणा दातार । भव भव भमतां दोहिलाजी, पामी जे निरधार ॥ सा० ॥ ३४ ॥ जीवदया जिनधर्मनोजी, मूळ पदारथ जाण । तिणविण कष्टक्रिया करेजी, ते फळ अलप वखाण ॥ सा० ॥ ३५॥ दान शील तप भावनाजी, शिवपुरीमार्ग ए चार । तद भवभवने अंतरेजी, शिवसुख पामे सार ॥सा०॥ ३६ ॥ काया माया कारमीजी, संध्या राग समाण । स्वारथनुं सहुको सगुजी, बोले जिनवरवाण॥ सा० ॥३७॥ मात पिता जाया सहीजी, पुत्र बांधव (सहोदर) संभाल । मित्र सयण आवी मिल्याजी, पंखी जिम तरुडाल ॥सा०॥३८॥ विषय सुखे सरसव समाजी, दुःखतो मेरु सरीख । दुरगति पामे

जेहथीजी, जाणी पाळो शीख ॥ सा० ॥ ३९ ॥ सात व्यसन अति पाडुआजी, तेर धरमना चोर । निशि-भोजन अभक्षनाजी, अनंतकाय दुःख घोर ॥ सा० ॥ ४० ॥ इम जाणी बूझो सहीजी, एह अथिर संसार । परभव जातां जीवनेजी, संबल लेजो सार ॥ सा० ॥ ४१ ॥ श्रावकना व्रत आदरीजी, कीजे तास जतन्न । दोष रहित निग्रंथनेजी, पडिलाभे ते धन्न ॥ सा० ॥ ४२ ॥ महाव्रत धरी मुगतें गयाजी, आवागमन निवार । तृण जिम सकळ तजी करीजी, पाम्या भवनो पार ॥ सा० ॥ ४३ ॥ इंद्रिय पंचतणे वशेजी, पंचप्रमादविशेष । निद्रा विकथा जीवनेजी, आपे दुःख अलेष ॥ सा० ॥ ४४ ॥ आयु अथिर सहू जीवनेजी, त्रूटे नवि संधाय । न्हाना मोटा सहुप्रतेजी, धर्म सदा सुखे दाय ॥ सा० ॥ ४५ ॥ रायराणी देशणे सुणीजी, पामे हरष विशाळ । कर्मसिंह कहे ते सहीजी, हर्षे मंगळमाळ ॥ सा० ॥ ४६ ॥

(दूहाः-)

अशोकराय उत्सुक थइ, प्रश्न करे करजोड । भाखो भगवन ! भाव करि, मुज मन वांछित कोड ॥ ४७ ॥ रोहिणी राणी तप किशें ?, कीधें भाखो तेह । सुपनांतर पण इण जनम, दुःख न जाणे जेह ॥४८॥ स्नेह घणो वलि माहरो, एक जीव तनु दोय । राणी ऊपर ते किशुं ? सांभळतां सुख होय ॥४९॥ सातपुत्र सुगुणा सही, लोकपाल अष्टम जेह । गोखथकी ले नाखियो, देव संघाह्यो तेह ॥ ५० ॥ चारे पुत्री

अति चतुर, सुंदर सघळा थोक । किण करमे करी पामिया, संप्रतिये इह लोक ॥५१॥

(ढाल १३ मी-देशी मनहरनी अथवा बलीहारी तुम नामनी.)

पूछयानंतर प्रेमशुं, रूपकुंभ कहे एम नरवर । रोहिणी राणी परभवें, सुण तप कीधो तेम नरवर॥५२॥ सांभळ भवराणी तणा, कर्मतणा फळ जेह न० । भोगवणा भव भव सही, आप कमाया तेह ॥ न० ॥ सां० ॥ ५३ ॥ एहज चंपापुरी भली, धणकण कंचण रिद्ध न० । धनमित्र शेठ वसे तीहां, सघळी वाते समृद्ध ॥ न० ॥ सां० ॥ ५४ ॥ धनमित्रा तस गेहनी, चाले कुळ आचार न० । पति भगति गुणें आगली, मनमोहे भरतार॥ न० ॥ सां० ॥ ५५ ॥ अनुक्रमे सुख विलसें सदा, मनमानीता भोग न० । धनमित्रा उरें धी हुई, जायां दूवो शोग ॥ न० ॥ सां० ॥ ५६ ॥ रूप कुरूप दोभागिणी, डीलें दुर्गंधवास न० । दुर्गंछे करीने सही, को नवि आवे पास ॥ न० ॥ सां० ॥ ५७ ॥ अहि गो मड तिण सारखी, अनिष्टगंध अपार न० । देखी सहुको इम कहे, दुःख देखे संसार ॥ न० ॥ सा० ॥ ५८ ॥ सौवन वय पहोती जिशे, मनमें चिंते बाप न० । पुत्री परणाव्या विना, लागे बहुलो पाप ॥ न० ॥ सा० ॥ ५९ ॥ इम जाणी बहु विनवे, को नवि माने वात न० । सहुको अनिष्ट गणे सही, देखी डीलनी धात ॥ न० ॥ सा० ॥ ६० ॥ कोडी दान दे रंकने, कोहि न परणे कोय न० । एम उपाय करे घणा, वांछित सिद्धि न

होय ॥ न० ॥ सा० ॥ ६१ ॥ इण अवसर तिण नगरमें, आरे चोर सरोष न० । बहु धन देई शेठजी, आणे घर वर सोस ॥ न० ॥ सा० ॥ ६२ ॥ श्रेषण घण संतोषिने, भोजन वस्त्र सनान न० । विंदतणी परे करे सही, परणायो बहु मान ॥ न० ॥ सा० ॥ ६३ ॥ दुर्गंधा गंधें करी, चिंते मनमें चोर । न० जस पलास जीव नी, रहेतां दुःख अघोर ॥न०॥सा०॥६४॥ इम जाणी मूकी गयो, रातें अवसर पाम न० । कर्मतणी गति वांकडी, शेठ विचारे ताम ॥ न० ॥ स० ॥ ६५ ॥ सहुको दुर्गंधा कहे, नाम तिसो परिणाम न० । भोगवणा कहे करमसिंह, आप कमाया काम ॥ न० ॥ सा० ॥ ६६ ॥

(दूहाः-)

शेठ कहे सुंण पुत्रिका, कठिन करम तुज जाण । समजी मन संतोष कर, धरम चिंत चित्त आण ॥६७॥ सुख संसारी इण भवें, दीसे छे अंतराय । दान शील तप भाव धरी, काया निर्मळ थाय ॥६८॥ दुर्गंधा गंधे करी, दाने न झाले कोय । मनमें चिंते बापडी, लणीजे वायो सोय ॥६९॥ तिण अवसर आव्या तिहां, ज्ञानी सूधा साध । तप जप संयम खप करे, निराबाध निरुपाध ॥७०॥ दुर्गंधां वंदी करी, पूछे दुःख धरी भाय । किण करमे करी साधुजी, एह अवस्था थाय ॥७१॥ सांभळ! ज्ञानी गुरु कहे, पूरवला कृत कर्म । राव रंक छूटे नहीं, भोगवणा ए मर्म ॥७२॥ सर्वगाथा ॥ २७३ ॥

(ढाल १४ मा–देशी जीहोजीनी–राग मल्हार.)

जिहो जंबूद्वीप सोहामणो, जिहो भरतक्षेत्रमझार। जिहो गिरनार पर्वत पाखती, जिहो नगर अनोपम सार। भविक जन, परतख पेखो पाप। जिहो इह भव परभव दुःख सहे, जिहो सिधमतीनी परे आप ॥ भ० ॥ ७३ ॥ जिहो पृथिवीपाळ राजा तिहां, जिहो दाता भुकता शूर। जिहो तेज प्रतापे आकरो, जिहो दुस्मन नाठा दूर ॥ भ० ॥ प० ॥ ७४ ॥ जिहो सुखे राज पाले तिहां, जिहो जिनधरमी जशवंत। जिहो अरिहंत साधु दया भली, जिहो त्रण तत्त्वे जाणंत ॥ भ० ॥ ७५ ॥ जिहो सिद्धमति राणी तेहने, जिहो जीवनप्राण समान। जिहो सुखे रहेतां एकणसमे, जिहो चिंते मन राजान ॥ भ० ॥ ७६ ॥ जिहो आज अपूरवछे सही, जिहो परिमल वनही वसंत। जिहो वनक्रीडा जो कीजिये, जिहो तो तनु मन विकसंत ॥ भ० ॥ ७७ ॥ जिहो राजाराणी हरखशुं, जिहो हय गय रथ परिवार। जिहो साथे सामग्री सहू, जिहो क्रीडा विविधप्रकार ॥ भ० ॥ ७८ ॥ जिहो तिण समे गुणसागर यती, जिहो जाय नगरमझार। जिहो राजा देखी रंगशुं, जिहो भावना भावे सार ॥ भ० ॥ ७९ ॥ जिहो धन्य दीह मुज आजनो, जिहो जो पडिलाभुं एह। जिहो इहांथी इम किम जाइजे, जिहो राणी मुकुं गेह ॥ भ० ॥ ८० ॥ जिहो प्राण पीयारी पदमिणी, जिहो सांभळी वयण विशेष। जिहो महलें पधारो मन खुसी, जिहो लाभ अनंतो देष ॥ भ० ॥ ८१ ॥

जिहो साधुभणी पडिलाभिजो, जिहो निरदूषण आहार। जिहो साधु सामग्री दोहिली, जिहो नरभवनो ए सार ॥ भ० ॥ ८२ ॥ जिहो मंत्रविण राणी घर गई, जिहो धरती मन विषवाद । जिहो रंग भंग इणि मुज कियो, जिहो इम जाणी उनमाद ॥ भ० ॥ ८३ ॥ जिहो प्रछन्न पणे इम जाणीने, जिहो कडूओ तुंबो आणि । जिहो पाचन करिने म्हेलियो, जिहो जो आवे इण ठाणि ॥ भ० ॥ ८४ ॥ जिहो तो आपुं ए साधुने, जिहो चिंतवी रहे निःशंक। जिहो जा गति सा मति ऊपजे, जिहो राज न लाभे रंक ॥ भ० ॥ ८५ ॥ जिहो मासखमणने पारणे, जिहो आयो मुनिवर जाम । जिहो द्वेष वशे जाणी तिहां, जिहो तुंबो दीधो दान ॥ भ० ॥ ८६ ॥ जिहो कडुवो तूंबो जाणीने, जिहो पातिक वधतो देख । जिहो साधु आहार करे तिहां, जिहो समता मनमा लेख ॥ भ० ॥ ८७ ॥ जिहो काळवशे परभव लहे, जिहो शुभध्याने श्रीसाध । जिहो समदम करि संलेखणा, जिहो सुरनी पदवी लाध ॥ भ० ॥ ८८ ॥ जिहो इम जाणी वळी जे सही, जिहो अरस विरस अन्नपान । जिहो कहे करमसिंह ते दुःख लहे, जिहो त्रिय सिद्धमतिय समान ॥ भ० ॥ ८९ ॥

(दूहाः-)

हवे राजा घर आवीने, पूछे साधु वृत्तांत । आयाथा जंगम जती, विहरण इहां महंत ॥९०॥ करजोडी राणी कहे, पुन्यवणे परताप । आया आपण अंगणे, मनमां धरतां जाप

॥९१॥ हरष धरी में हाथ करी, दीयो दान जगसार । तिण अवसर भूपति भणी, पुरुष एक निरधार ॥९२॥ आवी गदगद स्वर करी, कहेवा लाग्यो वात । कडु तुंबा आहारथी, साधुतणो हुओ घात ॥९३॥ राजा मन चिंता थई, कुण अपराधी एह । दुष्ट दुरातम जाणीने, तुंबो दीधो तेह ॥९४॥ पाप छिपायो नवि रहे, बलि करी देखो कोय । इह भव परभव दुख लहे, सिद्धमतिनी परे सोय ॥९५॥ खरी खबर राजा लही, राणी केरां काम । धमधमियो धूमाळ जिम, राते नयणे ताम ॥९६॥ आंखि कढावे महिपति, करता भुगता जाण । तुरत न मारे जाणीने, इह परिभवदुःख खाण ॥९७॥ सात दिवसमे तेहने कुष्ठादिक शोल जोर । आरतरौद्रें मरी करी, पामे दुःख अघोर

(ढाल १५-प्रभु पदमप्रभ ! वीनवुं-एदेशी.)

हवे तिहांथी नरभव तजी, सिद्धमतिनो जीव । छट्ठी नरके ऊपनो, तिहां छे दुःख अतीव ॥९९॥ करम किया ते भोगवे, मन म कर अंदोह । नरभव हार्यो जिण सही, परवंच्या द्रोह ॥ कर० ॥३००॥ आश्रवपंच समाचरे, पंचेंद्रीय घात । आरंभ परिग्रह बहु करी, लहे नरक विख्यात ॥कर०॥१॥ बाळ त्रिया ऋषि गायनी, जिनवरनी वाण । चार पाप मोटा कह्या, ऋषि अनंत वखाण ॥ कर० ॥ ३०२ ॥ अवर पाप बहू छे घणा, ऋषिघात विशेष । सिद्धिमति नागसिरी कीयो, तेहना फळ देख ॥ कर० ॥ ३ ॥ नारय छट्ठी जिन कहे, बहु वेदन सार । कुंभी करवत शूलियां, वैतरणी वार ॥ कर०

॥ ४ ॥ तप्त पूतळी तरु सामळी, असिवणने कुहाड । करतरणी करि छेद्रिये, ग्रही मांडोमांड ॥ कर० ॥ ५ ॥ सीत ताप्र नरलोकथी, अनंतगुणेह । पन्नर भेद वेदन कही, तिहां सहे अछेह ॥ कर० ॥ ६ ॥ उत्कृष्टो आऊ तिहां, सागर बावीश । भोगवीने तिहांथी चवे, सिद्धमतिनो जीव ॥ कर० ॥ ७ ॥ तिरिय योनि पामी करी, वलि वलि तिहां जाय । साते नरके इम भमे, कृत करम पसाय ॥ कर० ॥ ८ ॥ थावर विकल-पणो लहे, इम काळ असंख । दुर्गति दुःख देखे सहू, सुख नहिय निमिष ॥ कर० ॥ ९ ॥ सापणि उंटडी कूकडी, शूयरणी शियाळी । गिरोली जळोका ऊंदरी, रासभि गणिय चंडालि ॥कर०॥१०॥गाइ हूइ श्रावक घरे, नवकार प्रभाव । सुणीने मन संतोषियो, काळने प्रस्ताव ॥ कर० ॥ ११ ॥ आवी शेठ घरे हूई, पुत्री इंण संच । दुर्गंधा नामे सही, करमतणे प्रपंच ॥ कर० ॥ १२ । साधुतणी वाणीसुणी, फळ कर्म विपाक । दुर्गंधा जाणे सही, अकडोडी आक ॥ कर० ॥ १३ ॥ इणपरें आपो निंदती, दुर्गंधा नार । कर्मतणां फळ सहु कहे, कर्मसिंह संसार ॥क०॥१४

दूहाः-

करमनिकाचित थाकते, थोडे तिण प्रस्ताव । दुरगंधा नारी भणी, मन आवे शुद्ध भाव ॥१५॥ ईहापो करतां थकां, जाति-समरण ज्ञान । पूरवभव देखे सहू, ज्ञानी वचन समान ॥१६॥ दुरगंधा करजोडीने, पूछे मुनिवर एम । ए दुःखथी किम

छूटिये, भाखो भगवन तेम ॥१७॥ गुरु कहे दुर्गंधमेटणो, परभव थाये सुख । रोहिणी व्रत कर भावधर, जिम जाए सहु दुःख ॥१८॥ दाखो पूज्य प्रसाद करी, रोहिणीव्रत जिम होय । आरतिभंजन सुखकरण, विधि करी साधुं सोय ॥१९॥

(ढाल १६ मी-देशी हंसलानी.)

विधि सांभळ सुहगुरु कहे, सात वरष सातमासनारे । श्रीवासुपूज्य पूजा करी, मनमां धरीअ उल्हासनारे ॥२०॥ रोहिणी तप विधि सांभळो, त्रूटे करम असंखनारे । ध्यान भलो धरतां थकां, बीजी कोय न कंखनारे ॥ रोहि० ॥ २१ । दिन शुद्ध रोहिणी जोइने, चोथ-भगत उपवासनारे । चउविहार करतां थकां, इम सुख होवे आसनारे ॥ रो० ॥ २२ ॥ इण तपथी तुजने सही, ए दुःख इण भव जायनारे । परभव मन गमता सदा, सघळा सुख भल थायनारे ॥ रो० ॥ २३ ॥ जनम आवते भरतमें, प्राणपीयारी नारनारे । अशोक नाम राजाननें, थाइश रोहिणी नामनारे ॥ रो० ॥ २४॥ सुख विलसी संसारना, वासुपूज्य जिणरायनारे । सइ हथ चारित आदरी, तूं तिहांथी शिव जायनारे ॥ रो० ॥ २५ ॥ तप पूरे हूये सही, वासुपूज्यजिणराजनारे । बिंब भरावे रयणमें, रोहिणी रिख दिन राजनारे ॥ रो० ॥ २६ ॥ अशोक तले थापि करी, पहेरावी आभरणनारे । हाटक रतन जडित भला, जेह अमोलक जाणनारे ॥ रो० ॥ २७॥ अंग विलेपन कीजिये, कुंकुम मृगमद मेलनारे । थवथूई जिन आगळ करे, सूधी भावे भावनारे ॥रो०॥२८॥

साहमीवत्सल साधुने, निरदूषण आहारनारे। दया दान दे दीनने, सात क्षेत्रे जाणनारे ॥ रो० ॥ २९ ॥ एम ए तप करतां सही, दुःख नाशी सवि दूरनारे। सुगंधराजतणी परे, इण हीज भवसुख पूरनारे ॥ रो० ॥ ३० ॥ दुर्गंधा पूछे कहो, सुगंधराय अधिकारनारे। किण दुःख किम सुख पामियो, सुणवा हरख अपारनारे ॥ रो० ॥ ३१ ॥ ए तप इण विधि भाखियो, सोळमी ढाल रसालनारे। हंसला देशी करमसिंह, कहेतां मंगळ मालनारे ॥ रो० ॥ ३२ ॥

(दूहाः-)

साधु कहे सुण वातडी, सुगंधराय धरि भाव। तेय कहुं तुज आगलें, हूई जिण प्रस्ताव ॥३३॥

(ढाल १७ मी-चरणालो चामुंडा रणचडे-एदेशी.)

इणहीज जंबूद्वीपमें, दक्षिण भरत मझाररे। सिंहपुर नगर सोहामणो, इंद्रपुरी जिम साररे ॥ ३४ ॥ सांभळ कर्म फळे जिशो, सुखदुःख करमदातारोरें। अहनिशि जेहवा जे करे, तेह फळे विस्तारोरे ॥सां०॥३५॥ सिंहसेन राजा तिहां, कनकप्रभा पटराणीरे। रूपकला शोभे सती, बोले अमृत वाणीरे ॥ सां० ॥ ३६ ॥ रतिवंती राणी तणे, उदरे वस्यो सुत जामरे। राजाराणी हरखिया, जनम्ये दुःखनो ठामरे ॥सां०॥३७॥ महादुर्गंधपणे करी, नावे पासें कोयरे। राजाराणी चिंतवें, ए दुःख इणने होयरे॥सां०॥३८॥ अनुक्रमें तिण पुर आविया, गुणअनंत भगवंतरे। सुसीमा सुत

साहीबो, नाम्रे पातिक जंतरे ॥ सां० ॥ ३९ ॥ श्रीपद्मप्रभ स्वामीजे, पूछे वेकर जोडीरे । दुर्गंध कुंवर भणी कहे, कर्मतणी ए खोडीरे ॥ सां० ॥ ४० ॥ इण दुखथी किम नीसरूं, किण करमे करि एहोरे । केवळज्ञान दिवाकरू, शंसय मंजो तेहोरे ॥ सां ॥ ४१ ॥ परमेश्वर पूछ्या कहे, सांभळ राजकुमारोरे । आप कमाया भोगवे, पाप करे अविचारोरे ॥ सां ॥ ४२ ॥ बार जोयण नागोरथी, पर्वतनील सुठाणरे । तिण ऊपरि अतिसुंदरू, एक शिला तिहां जाणरे ॥ सां० ॥ ४३ ॥ मासखमण पारण करे, ते शिला ऊपर आवेरे । ध्यान धरे बेठा तिहां, ते रिषिने परभावेरे ॥ सां० ॥ ४४ ॥ आहेडी नीष्फळ सदा, जाए दुःख बहु देखीरे । इम करतां बहु दिन हूवा, रिषि देखी हुवो द्वेषीरे ॥ सां० ॥ ४५ ॥ मासखमण पारण दिने, नगरमांहे पवधारेरे । पामी अवसर पापीये, शिल तले आग संचारेरे ॥ सां० ॥ ४३ ॥ बेठा मुनि तिहां आवीने, ध्यांन साधवा काजरे । तप्तशिला परिसह सहे, मील्या करम क्षय साजरे ॥ सां० ॥ ४७ ॥ केवळ पामी सिद्धि गया, सासय सुख अपारोरे । करमसिंह कर जोडीने, ते मुनिने करे जुहारोरे ॥ सां० ॥ ४८ ॥

(दूहाः-)

ते आहेडी तिण भवे, रिषि हत्या करि जाण । कुष्टरोग दुःख बहु सहे, नरभव कीधी हाण ॥ ४९ ॥ अहनिशि दुःख भरतो रहे, अट्ट दुहट्ट वसेण । कृत कर्मकीधा भोगवे, निजनिज

कर्म वसेण ॥ ५० ॥ मरण लहे बहु दुःख सही, पामे दुरगति वास । परभव जातां जीवने, पुन्य पाप हुए पास ॥ ५१ ॥

(ढाल १८ मी-मुनीसर जय जय गुणभंडार-पदेशी.)

हवे पापी तिहांथी मरीजी, पारधियानो जीव । नरक सातमी ऊपनोजी, दुःखधरि करतो रीव । जिनेसर. बोले एहवी वाणी । दुर्गंध कुमर सुणे सहूजी, धरतो अमीय समाणी ॥ जिने० ॥ ५२ ॥ दुःखनो पार न पामियेजी, दुःसह जेय सुरंग । सिद्धमतिनी परे भोगवेजी, तिहांथी चविय दुःखंग ॥ जि० ॥ ५३ ॥ तिर्यंचादिक गति सहुजी, पामी वार अनेक । दरिद्र हूवो गोवालियोजी, भवनो करतो छेक ॥ जि० ॥ ५४ ॥ नागोरना श्रावक कनेजी, सीखे श्री नवकार । अन्यदिवस दावानळेजी, बळतां मंत्र उचार ॥ जि० ॥ ५५ ॥ महामंत्र महिमा करीजी, इणपुरें राजकुमार । कर्मनिकाचित थाकतेजी, एह अवस्था सार ॥ जि० ॥ ५६ ॥ सांभळवां दुरगंधनेजी, जातिसमरण होय । भव दीठा पोतें सहूजी, श्रीजिनवांणी जोय ॥ जि० ॥ ५७ ॥ बीहनो भय देखी करीजी, कहे प्रभु साहस धीर । ए भवदुःखना अंतनेजी, दाखो सुरगिरिधीर ॥ जि० ॥ ५८ ॥ भगवंत कहे भव भंजणोजी, रोहिणी व्रत आराधि । सात वरस सात मासनोजी, भावे करी ते साधि ॥ जि० ॥ ५९ ॥ श्रीजिनवाणी सांभळीजी, हियडे हर्ष अपार । विधिकरी तप आसाधियोजी, हूओ सुगंध कुमार ॥ जि० ॥ ६० ॥ ए व्रत महिमा मोटकीजी,

जिनवाणिथी जाणि । कर्मसिंह भावे करीजी, हियडामांहि आणि ॥ जि० ॥ ६१ ॥

(दूहाः-)

तिम तूंही कर एह व्रत, दुःख जाशी सहू डील । विधि-पूर्वक आराधतां, इहभव परभवलील ॥६२॥ साधुतणी वाणी सुणी, धरती हर्ष अपार । दुर्गंधा रोहिणी वरत, भावे साधे सार ॥ ६३ ॥ सुगंधपणो पामी करी, अंतकाळ मन शुद्ध काल करी पामे भली, देव भवे बहु रिद्ध ॥६४॥ तिहांथी चवी चंपापुरी, मघवा नाम नरिंद । लखमी राणी तेहनी, कुखि वसी आणंद ॥६५॥ रूप पात्र भर यौवने, रोहिणी नामे सार । परणी राय अशोक ते, पुन्यतणे परकार ॥६६॥ दुःख वात जाणे नहीं, रोहिणीव्रत परभाव । तपतपियाना फळ सहू, जाणे सकळ संसार ॥ ६७ ॥ वळि पूछयुं राजेश तें, राणी ऊपर नेह । रूपकुंभ कहे सांभळो, कहिये वातज एह ॥६८

(ढाल १९ मी-देशी अलबेलानी.)

सांभळी बोले साधुजीरे लाल, प्रीति तणो परकार, सुण राजारे । रोहिणी राणी ऊपरेरे लाल, कहिये तेह विचार ॥सु० ॥६९॥ पूरव भवनी प्रीतडीरे लाल, होइ गइ जिणवात सु० । तेह पर सांभळी इहां कणेरे लाल, जिम होवे सुख सात ॥ सु० ॥ ॥ पू० ॥ ७० ॥ सिंहसेन राजा तिहां कणेरे लाल, देखि अथिर संसार सु० । राज्य सुगंध समर्पियोरे लाल, आप लियो व्रत भार सु० पू० ॥७१॥ सुगंधराय श्रावकतणारे लाल,

पाळे व्रत असिधार सु० । वैमानिक सुर सुख लहेरे लाल, तिहांथी चवि अवतार सु० पू० ॥७२॥ जंबूद्वीप विदेहमेरे लाल, पुष्कळ, विजय नाम सु० । पुंडरीकिणि नगरी भलीरे लाल, लच्छि रहे तिण ठाम सु० पू० ॥ ७३ ॥ विमल-कीर्ति वड राजवीरे लाल, विलसे पुण्य पंडूर सु० । अर्क-कीरत सुत जनमथीरे लाल, दिन दिन वधते नूर सु० पू० ॥ ७४ ॥ राजदेवी निज सुतभणीरे लाल, विमळ विमळ परिणाम सु० । तप जप संयम साधिनेरे लाल, जाए सद्गति ठाम सु० पू० ॥ ७५ ॥ सुगंधजीवराजा तिहांरे लाल, अर्ककीरत मनोहार सु० । चक्रवर्त्ति पद भोगवेरे लाल, षट खंड पृथिवी सार । सु० ॥ पू० ॥ ७६ ॥ रयण निधान अंतेउरीरे लाल, छांडे सकल सराग सु० । जितशत्रु साधु संयोगथीरे लाल, साधे संयम माग ॥ सु० ॥ पू० ॥ ७७ ॥ दुष्कर तप किरिया करीरे लाल, लाख चोराशी पुव्व सु० । आयुपाली परगडोरे लाल, देवतणो लहे भव्व ॥ सु० ॥ पू० ॥ ७८ ॥ बारम स्वर्गतणो धणीरे लाल, इंद्र अच्युत अभिधान सु० । अयर बावीशनो आउखोरे लाल, पाळे पूरे मान ॥ सु० ॥ ७९ ॥ चवि अनुक्रमे इहा ऊपनोरे लाल, अशोक नाम राजान सु० । रोहिणी राणी वालहोरे लाल, नेह सुणो सावधान ॥ सु० ॥ पू० ॥ ८० ॥ तप विहुं एकमनां कियोरे लाल, व्रत पुण एकम सार सु० । तिण कारण इहांकण सदारे लाल, परतख प्रीति अपार ॥ सु० पू० ॥८१॥

सांभळी साधु तणे मुखेरे लाल, परघळ वाधी प्रीत सु० ।
कहे करमसिंह इम सदारे लाल, नेह हुवे इण रीत ॥ सु०
॥ पू० ॥ ८२ ॥

-दूहाः-

राय कहे रिषिराजने, शंसय भंजनहार । ज्ञानी गुरु
मिलियां पछी, कीजे किशो विचार ॥ ८३ ॥ वार वार
कहेतां थकां, मनमां आवे लाज । मुज मन पूछण अळजयो,
भूख्यां भोजन साज ॥ ८४ ॥ शोभागी विकसित वदन,
सुंदर पुत्र सुजाण । किशी कमाइ करि हुवा ? वांचो एह
वखाण ॥ ८५ ॥

(ढाल २० मी-ललनानी । श्रीसुपार्श्वजिन वंदिये, पदेशी.)

सांभळी बोले साधुजी, कुमरां केरी वात ललनां ।
इह भव परभव करमथी, पामे शात अशात ललनां ॥ ८६ ॥
अछत अपुन्ये करी हुवे, जिणरा जेवा कर्म ललनां । सुख
दुःख भुगता जीवनुं, भव भव धर्म अधर्म ललनां ॥अ०
॥८७॥ मथुरा नयरीमहि वसे, अग्निशर्म एक विप्र ललना ।
जनम थकी घरमां हुवो, लखमी जीवण खीप्र ललनां ॥ अ०
॥ ८८ ॥ नारी सुंदर तेहने, वेहुंना करम करूर ललनां ।
धांन धीणो अवरां घरां, बीजुं सकल सनूर ललनां ॥ अ०
॥ ८९ ॥ धन गुण रूप वसे सदा, चतुराई पण चंग ललनां ।
आदर आसन बेसणो, धन विण ईयांरो भंग ललनां ॥ अ० ॥
९० ॥ गरथ सदा समरथ कहे, पुरुषाभरण प्रधान ललनां ।

देश विदेश अन्य आपणा, गरथ राज सनमान ललनां ॥ अ० ॥ ९१ ॥ ऊंच नीच न्हाना मोटा, कुळ अकुलीन सभाउ ललनां । निरधन पुरुषज बोलियो, जाणे वाग्यो घाउ ललनां ॥ अ० ॥ ९२ ॥ मनमांहे ऊणो रहे, निसनेही निस्तेज ललना । धन विण आश किशी फळे, संसारी बहुजेज ललनां ॥ अ० ॥ ९३ ॥ पाप तणा परतापथी, शोचे अहनिशि दीण ललनां । जाणे ब्राह्मण ब्राह्मणी, के वळी धनरा हीण ललनां ॥ अ० ॥ ९४ ॥ बेटा जाया ब्राह्मणी, सात सनूरो प्रेम ललनां । पुन्य विना दीसे जिशा, दव दाधो वन जेम ललनां ॥ अ० ॥ ९५ ॥ रोवे रींप्रे आरडे, खावा पीवा काज ललनां । रांक राव वातां करे, मिळियां सहु शिरताज ललनां ॥ अ० ॥ ॥ ९६ ॥ योवन वय पहुता जिशे, वेल तिशा फळ जाण ललनां । दालिद्र भांत बीबे पडी, सरखा सरखी वाण ललनां ॥ अ० ॥ ९७ ॥ सात मिळी शोचां करे, लखमी खाटण जांह ललनां । भीख जिणांरे भूखशी, धरता मनह उछाह ललनां ॥ अ० ॥ ९८ ॥ चाले साते एकठा, मारग मोटा मांड ललनां । प्रकट नाम पुर पाडली, लोक वसे धन जाड ललनां ॥ अ० ॥ ९९ ॥ ततखिण आवी ते तिहां, धरता मन उल्हास ललनां । करमसिंह करमें करी, विलसे लील विलास ललनां ॥ अ० ॥ ४०० ॥

(दूहाः-)

नगर समीपे आविया, बाग अनोपम देखि । जाए मांहे

ते सहु, सुंदर सहजे पेखि ॥ १ ॥

(ढाल २१ मी-तिवरी पासे वडलो गाम प-देशी)

तिण वाडी मांहे वृक्ष अनोप, सुरतरुनी परे पामे ओप । अशोक आंबा जांबू तिहां सोहे, जाइ मचकुंद मालति मन मोहे ॥ २ ॥ मोगर केतकी चंपा डाळ, परिमळ महके वन सुविशाळ । वड पीपर ने द्राख बिजोरा, दाडिम निंबू जाण घणेरा ॥ ३ ॥ जंबीरी शेलडी सदाफळ, नागरवेल सोपारी श्रीफळ । नारंगी खजूरी रायण, ताल तमाल केळ नींब बकायण ॥ ४ ॥ छह ऋतु तिण वन कीधो वासो, सुरवर देखी धरे तमासो । महेल अनूपम बाग विचाळ, मन मोहे देखी चित्रशाळ ॥ ५ ॥ तिण वन राजकुमर विलसंता, देखे ब्राह्मण बाळ रमंता । शिवशर्म विप्र अछे वड भाई, वात विचार करे तिहां जाई ॥ ६ ॥ राजकुमर देखी रंग रमता, सइं हथ आप बणाया करता । काने कुंडळ हियडे हार, मोड अनूपम सवि शिणगार ॥ ७ ॥ वस्त्र शोभिता दक्षणी चीर, कथिपादिक पहिर शरीर । कटि मेखळ मुद्रा आंगळीयां, हीरा जडित बहेरखा रळियां ॥ ८ ॥ आगे ऊभा सेवक कोड, अहरनिशि सेव करे कर जोड । मनवंछित सुख पूरे सघळा, खम्मा खम्मा करे भरतां पगला ॥ ९ ॥ एहवा देखी विप्र विचारे, कांइ सरीखा न किया करतारें । वड बांधव कहे आप कमाइ, कहता किणने न दिये आइ ॥ १० ॥ मन वंछित सुख विलसे एह, आंपे सुपन न जाणां तेह । छहऋतु

बारे मास सरीखा, फिरता घर घर मांगां भिख्या ॥ ११ ॥ तो पण पेट भरावे न चले, फाटा तुटा कपडा न मिले । देव न दीजे कांइ दोष, आपकमाइ फळ शो ? शोस ॥ १२ ॥ पुन्य विहुणा दलिद्री सदाई, मांहो मांहे विचारे भाई । पुन्य विखे नहीं शोभा कांई, कर्मसिंह कहे कर्म सखाई ॥ १३ ॥

-दूहाः-

इण अनुक्रमें एकण समे, मुनिवर महिमावंत । ब्राह्मण वांदे भाव धरी, सात्तेई गुणवंत ॥ १४ ॥ श्री जिनवर भाषित धर्म, श्रमणोपाशक साध । प्रांणी भव भमतां थकां, ए घणो दुहेलो लाध ॥ १५ ॥ ए दोय धर्म विधे करी, जांणी अथीर संसार । सुर सुख शिव सुख पामिये, दुस्तर भवनो पार ॥ १६ ॥ देशन सुणी संयम लिये, पाळे शुद्धाचार । सुमते सुमता गुपति धर, दुःकर व्रत असि धार ॥ १७ ॥ अंत समय संलेणेना, मरण समाधे साध । शुक्र सातमे देव सुख, इंद्र समाणां लाध ॥ १८ ॥ सत्तर अयर आयु तिहां, पूरी नरभव होय । सातेइ सौभाग्य निधि; गुणपालादिक सोय ॥ १९ ॥ ए तुज अंगज दीपता, इण पुन्ये अभिराम । अहम सुतनो सांभळो, पूरव भव शुभ काम ॥ २० ॥

(ढाल २२ मी-हमिरियानी देशी.

लोफूपाळ सुत आठमो, सुण तसु पुण्यप्रकाश नरेसर । गोखथी लइने नाखियो, देवग्रहे उल्हास नरेसर ॥२१॥ पुन्यतणां फळ एहवा, सांभळि कीजे सोय न० । इहभव

परभव सुखभणी, अनुक्रमें शिव सुख होय न०॥पुन्य०॥२२॥ जंबूद्वीप सोहामणो, लाख योजन परीमाण न० । विस्खंभ अने आयाम छे, केवळीवाणी वखाण न०॥पु०॥२३॥ सात क्षेत्र तस बिच भला, करम अकरमी भूम न० । वीन चार जाणो सदा, दीपे जिहां सुरद्रूम न०॥पु०॥२४॥ मेरुथकी दक्षिण गया, भरहवास अभिराम न० । करमभूमिका ते कही, गंगा सिंधुनो ठाम न०॥पु०॥२५॥ सत पण छावीश जोयणं, छकळा मान सभाव । न० विच वेयढगिरि सेहरो, कांतिरूपारो साव न०॥पु०॥२६॥ पचीश पचाश उंच पहळमा, कीधो भरत विभाग न० । तसु पर विद्याधर रहे, नगर निरखवा लाग न०॥ पु० ॥२७॥ साठ पचाश सोहामणा, ऊत्तर दक्षिण श्रेण न० । विद्याधर तिहांकण वसे, क्षुलक इण नामेण न०॥ पु० ॥ २८ ॥ चारणश्रमण दीदारथी, पामे समकितसार न० । नंदीश्वरवरे दीपता, शाश्वत चैत्य उदार न०॥पु०॥२९॥ सासय पडिमा जिनतणी, ऋषभ चंद्रानन जेह न० । वारिषेण वर्द्धमाननी, नाम शाश्वता तेह न०॥पु०॥३०॥ क्षुलकपूज्य दिनमति करे, सत्तर भेद सुविशाळ न० । मनशुद्ध भावना भावतो, जे फळ तेह संभाळ न०॥पु०॥३१॥ सो उपवास पमज्जीया, सहस्स विलेवण जाण न० । लाख फूल पूजा थकी, नृत्य अनंत वखाण न०॥पु०॥३२॥ श्रीजिनवर पूजातणा, फळ जिनवरनी भाख न० । इण पूज्ये जिण पूजिया, रायपसेणी साख न०॥पु०॥३३॥ अंग उपांग

मुख वळी, श्रीजिनवचने जोय न० । जे फळे छे पूजातणो, क्षुल्लक विद्याधर होय ॥ न०॥ पु०॥३४॥ धर्म जिणेश्वर भाखियो, देव गुरु धर्म स्वरूप न० । कहे कर्मसिंह जे करे, तेहनो जनम अनूप ॥न०॥पु०॥३५॥

दूहाः-

विद्याधर जिणवर धरम, पाळे पूरे भंग । आयुपूरि परभव लहे, सुर सौधर्म सुरंग ॥३६॥ स्वर्गतणा सुख भोगवी, सागर आयु दोय । चवि इहां आवी ऊपनो, लोकपाळ ए जोय ॥३७॥ नंदन आठे गुण निपुण, देवकुमर अणुहार । हवे पुत्रीना भवगुणो, किण पुन्य इह अवतार ॥३८॥

(ढाल २३ मी-देशी मोरीआनी-रे माडो अनुमति०)

जंबुने भरत वैताढ्य छे जी, तिण वच नयर सुचंग । अलग अलकापुरी दीसतीजी, नित नित नवनवा रंग ॥जंबु० ३९॥ दोय विद्याधर तेहनेजी, दोय दोय दीकरी सार । रूपगुणे करी शोभतीजी, हसे रमे सुविचार ॥जंबु०॥४०॥ चार सहेलीआं सुख घणोजी, यौवन वय थइ जाम । इण अवसर मिली एकठीजी, वन रमवा गई ताम ॥जं०॥४१॥ फरहर फुंदडीए नाचतीजी, गावती गीत रसाळ । हाथ तालोट हलावतीजी, घम घम रिमझिम बाळ ॥ जं० ॥ ४२ ॥ सार शिणगार सोना तणाजी, भींभळ नयण मृदु वयण । काम कुतूहळ खेलतीजी, सर्व सुख चाहती लयण ॥ जं ॥ ४३ ॥ तिण वन साधु दीठी तिसेजी, ज्ञानधर गुणह भंडार । अल्प आयु

तस पेखनेजी, तारण तरण संसार ॥ जं० ॥ ४४ ॥ साधु कहे तुमे सांभळोजी, धर्म लहो कांई मर्म । विनय धरी कहे ते सहुजी, कांइ न होय शुभ कर्म ॥ जं० ॥ ४५ ॥ वायु परे चंचळ आयु छेजी, डाभ अणी जळ जेम । अंजळीना जळनी परेजी, सांभळीने कहे एम ॥ जं० ॥ ४६ ॥ कहो करुणाकरी अम तणोजी, आयु केतलो छे एक । मुनि कहे निकट सहुनो अछेजी, मन धरो तेण विवेक ॥ जं० ॥ ४७ ॥ एक दिन आयुखो तुम तणोजी, सांभळी सवि कहे वेग । आग लागे खणे कूपनेजी, कहो किम आवेजी नेग ॥ जं० ॥ ४८ ॥ जळधर वरसते घण घणेजी, किणविध बांधीजे पाल । एकण दिन तणे आऊखेजी, किम पुन्य होय विशाळ ॥ जं० ॥ ॥ ४९ ॥ इम मन आणण दूमणीजी, दीसती वदन विछाय । कर्मसिंहमुनि करुणाकरीजी, धरमकहे चित्तलाय जं० ॥५०॥

(दूहाः-)

एकण दिन अनेक सुख, पाम्या प्राणी जीव । पुंडरीक मुनिवर प्रमुख, गजसुकमाळ रिखीव ॥ ५१ ॥ मरुदेवी माता विमळ, गति पामे तिण वार । तिरिय योनि डेडर तजी, सुर-गति पामे सार ॥५२॥ रथकारादिक दानथी, संगम ग्वाल विशेष । अनेक तर्या एकण दिने, एह वानगी देख ॥ ५३ ॥ दान शीळ तप भावथी, दया क्षमा व्रत धार । सदगति शिव गति पामिया, एक दिवस करी सार ॥ ५४ ॥ करजोडी चारे

चतुर, बोले मन धर प्रेम। दाखो दीनदया करी, जिणे भम थाए खेम ॥ ५५॥

(ढाल २४ मी-भलेरे पधार्या तुमे साधुजीरे-प देशी.)

आज अछे दिन पंचमीरे, अजुआली परधानरे। इण तपथी तरशो तुमेरे, ते विधि सुणो सावधानरे ॥५६॥ पंचमी गति पंचमी तप थकीरे, अनुक्रमे पामे साररे। इह भव पर भव सुख संपदारे, तिण कहियें संभाररे ॥ पंच० ॥ ५७॥ वैशाख जेठ आसाढनीरे, मगसिर फागुण माहरे। ए शुद्ध मास जोई करीरे, कीजे मन उच्छाहरे ॥ पंच ५८ ॥ शुभ दिन पंचमी चांदणीरे, जोइ रिख वार शुद्धरे। सुह गुरुनी सानिध लहीरे, उपवास करे विशुद्धरे ॥ पंच० ॥ ५९॥ नाण पंचमी तप ए कह्योरे, पुस्तक भक्ति विशेषरे। स्वस्तिक कर गुण संस्तवेरे, इण दिन जनम सुलेखरे ॥ पंच० ॥ ६० ॥ पंच वरस पंच मासनीरे, उत्कृष्टि जावजीवरे। नाण नमो गुणवो सहीरे, मासोपवास सदीवरे ॥ पं० ॥ ६१ ॥ मन वच काया त्रिधा करीरे, भाव भले परिणामरे। इणि परे तप पूरो करेरे, महियळ वाधे मामरे ॥ पं० ॥ ६२ ॥ सुख संपद धन धाननोरे, मति बुद्धि हाय प्रकाशरे,। स्वजन त्रिया सुख सुत तणोरे, भव भव दाम अपाररे ॥ पं० ॥ ६३ ॥ तप पूरो होवे तदारे, साधर्मिक संतोषरे। वस्त्र दान सनमानीएरे, वळि असनादिक पोषरे ॥ पं० ॥ ६४ ॥ पंच पंच पचवीशजारे, नाणोपगरण जाणरे। दीजे ज्ञान भणी सहीरे, गिणतां सफळ

विहाणरे ॥ पं० ॥ ६५ ॥ इम पंचमी तप तुम भणीरे, होशे लाभ अनंतरे । करी उपवास घरे गईरे, वांदी साधु महंतरे ॥ पं० ॥ ६६ ॥ माय तायने विनवेरे, सहु विगतावी वातरे । जिन पूजा विधिशुं करेरे, सफळ जनम विख्यातरे ॥ पं० ॥ ६७ ॥ दिन सफळो गिणती कहेरे, साधु संयोगे आजरे । जावजीव करस्यां सहीरे, ए तप सवि शिरताजरे ॥ पं० ॥ ६८ ॥ करतां एम विचारणारे, धरतां धर्म अभ्यासरे । कर्म-सिंह भावे फळेरे, मनरी वंछित आशरे ॥ पं० ॥ ६९ ॥

दूहाः-

अकस्मात आकाशथी, बेठी कुमरी ज्यांह । धर्म ध्यान चारे धरत, बीज पडे जइ त्यांह ॥७०॥ ओलहावे आकुळ थई, दीवो वाय विसेष । तिम कुवरी चंचलपण, होय गई अनिमेष ॥ ७१ ॥ पंचमी तप परभावथी, लहे अनोपम ठाम । प्रथम कल्प पुन्ये करी, देव सुधर्मा नाम ॥ ७२ ॥ देवतणा सुख भोगवी, चवि करी पुन्य प्रमाण । विशुद्ध राय कुळ अवतरे, चारे चतुर सुजाण ॥७३॥ सांभळीने सघळा जणा, पूरव भवनी वात । राय सणी सुत पुत्रिका, मन चिंते विख्यात ॥७४॥

(ढाळ २५ मी-देशी नीवइयानी. आदरजीव क्षमागुण आदर.)

जातिसमरण राजादिक सहु, पामे कहेतां वारोजी । पूरव भव सवि साधु मुखे सुणी, देखे संमति सारोजी ॥७५॥ श्रावकना व्रत सूधा सरदहे, तप जप गुणह भंडारोजी । पाळे

सुहगुरु संगते जीवडो, ते पामे भव पारोजी ॥ श्रा० ॥७६॥ प्रति बोधी इम पाय नमी सहु, तारण तरण जिहाजोजी। साधु महाव्रत दुःकर अम्हांवते, न पळे इण समे आजोजी ॥ श्रा० ॥७७॥ श्रमणोपाशकना व्रत दाखवो, करी करुणा अम सारोजी। साधु कहे पडिबंध न कीजिये, धर्म सदा सुख कारोजी ॥ श्रा० ॥७८॥ पंच अणुव्रत प्राणातिपातादि, गुण व्रत गुणना कारोजी। तीन शिक्षा व्रत चार मिलि करी, ए बारह मन धारोजी ॥ श्रा० ॥ ७९ ॥ अतिचार हवे कहिये एहना, पंच पंच मिलिने साठोजी। नाण दंशण ने चरणा-चारनां, ए इक इकना आठोजी ॥ श्रा० ॥ ८० ॥ समकित मुळ सहु वरतां तणो, अतिचार तस पंचोजी। संलेहण तव विरयायारना, वीश तणो छे संचोजी ॥ श्रा०॥ ८१ ॥ पंनर कर्मादानतणा वळी, टाळे ते निशिदिशोजी। अतिचार ए श्रावक वरतना, एम इक सो चोवीशोजी ॥ श्रा० ॥ ८२ ॥ ए अतिचार जाणेवा गुरु मुखे, आचरवा नही योगोजी। भव भव भमतां प्राणी जीवने, जिन धर्म दुर्लभ लोगोजी ॥ श्रा० ॥ ८३ ॥ इणी परे सूधा व्रत गुरु साखशुं, धारे निरति धारोजी। देव गुरु धर्म स्वरूप हिये धरे, नव तत्व ए सारोजी ॥ श्रा० ॥ ८४ ॥ आठम चौदश कल्याणक दिने, पुनम त्रण चोमासोजी। पर्वे पोषह श्रावक विधि कही, वळि करे शक्ति उल्हासोजी ॥ श्रा० ॥८५॥ रूपकुंभ गुरुने पासे सही, व्रत धारे निरधारोजी। अर्थ सहित वली साचाइसहि, पूछीप्रश्न

विचारोजी ॥श्रा० ८६॥ धर्माचारज पाय नमी करी, भावन भावे सारोजी। धर्म सदा हीत कारी जीवने, इण असार संसारोजी ॥ श्रा० ॥ ८७ ॥ इम जे सुहगुरु संगति पामीने, धरे धरमना काजोजी। कर्मसिंह गुण गावे तेहना, नाम जपे नित आजोजी ॥ श्रा० ॥ ८८ ॥

दूहाः-

घर आवे महाराजवी, विलसे पुन्य पंडूर। धरम करम बे साचवे, दिन दिन वधते नूर ॥८९॥ राजा राणी पुत्र वळी, श्रावक ना व्रत चंग। लागो मन तिण पर सही, पाशा ऊपर रंग ॥ ९० ॥ इम करतां बहु दिन हूवा, श्रमणोपाशक धर्म। पाळंतां प्रगटपणे, जाणी उदय शुभ कर्म ॥९१॥ तिण अवसर आवे तिहां, ते सांभळो जगीश। तरण तारण भव भंय हरण, जगजीवन जगदीश ॥ ९२ ॥

(ढाल २६ मी-देशी-मेंदी रंग लाग्यो, नी०)

तिण अवसर तीरथधणी हो, वासुपूज्य जगनाह। चरणे चित लागो। भवियण जन आवी नमे हो, धरता अधिक उच्छाह ॥चर०॥९३॥ चंद चकोर तणी परे हो, मान सरोवर हंस ॥च०॥ कोक चिंते वासर वसे हो, भ्रमर केतकी वंस ॥ च०॥९४॥ जिम रायवर रेवा नदी हो, कुळवंती भरतार ॥च०॥ चातक जळधर मानतो हो, तिम भवियण सुखकार ॥च०॥९५॥ मूरति मोहन वेलडी हो, दिठां दोलति होय ॥च०॥ ज्ञान वधे गुण गावतां हो, सुयश चवे सहु लोय ॥च०॥९६॥ तुम दंसण

विण जीवनें हो, भमतां नायो पार ॥च०॥ काळ असंख अनंत जाहो, थावर-काय मझार ॥ च० ॥ ९७॥ असंख सर्पिं उव सर्पिणी हो, धरणि दुगागणी वाय ॥चं०॥ वनसपति वसतां थकां हो, काळ अनंतो जाय ॥च०॥९८॥ विकलेंद्री विरियोन-मे हो, कर्म वशें पायाळ ॥ च० ॥ सुर गति पामी शुभ उदय हो, तुम विण सहु विसराळ ॥ च० ॥ ९९ ॥ इम भव भगतां आवियो हो, मानवने भवसार ॥च०॥ बहु जन ऊभा ओळगे हो, आवागमन निवार ॥च०॥५००॥ चिंतामणि सुरत-रु समो हो, कामधेनु कर लाध ॥च०॥ इम मन चादे मानवी हो, सफळ जनम श्री साध ॥ च० ॥१॥ गुण गावे जिनवर-तणा हो, नाम ठाम विस्तार ॥च०॥ चंपा जनम्या जगपतिहो, नृप वसुपूजय मल्हार ॥च०॥२॥ जयानंद जग दीपतो हो, पहेले संघयण संठाण ॥च०॥ लाख बहुत्तर आउखो हो, सित्तर धनु तनु माण ॥च०॥३॥ रक्तोपल सम वान छे हो, महीष लंछन निराबाध ॥च०॥ छासठ गणधर गह गहे हो, सहस बहोत्तर साध ॥ च०॥४॥ इणपरे चहुविह संघमें हो, वाणि सुधारस रेल ॥च०॥ जिहां विचरे धन सामही हो, बधती भवियण वेल ॥च०॥५॥ संप्रति देखे जे जगें हो, ते धन मानव सार ॥च०॥ आज अछे इण जायगा हो, नाम ठवण आधार ॥च०॥६॥ जिन प्रतिमा जिणवर समी हो, माने समकित धार ॥च०॥ करमसिंह मुनिवर मही हो, भवियण कहे विचार ॥च०॥७॥

(दूहाः-)

गाम नगर महि मंडळे, करता उग्र विहार । सुखमांहे सुख माणता, जगजीवन हितकार ॥ ८ ॥ गाम एक वासो वसे, नगर पंच दिन सार । पुष्कर मेघ तणी परे, नागपुरें सुखकार ॥ ९ ॥ वन खंड आवी समोसरे, साधु सहित परिवार । समोसरण परषद मिळे, कहिये तेह विचार ॥१०॥

(ढाल २७ मी-पियु चाल्या परदेश सवे गुण ले चले. प देशी.)

समोवसरण सुर आवी रचे तिण अवसरे, जोयण लगी सुर वायु धरणि कयवर हरे । लघु जळ धारे मेघमाळी वरसे मुदा, अगनि कुमार उखेवे धूप तिहां सदा ॥११॥ वाणव्यंतर सुर आवि पीठ मणिमय करे. भवणपति सुर आवि पीठपरे गढ धरे । साव रुपानो सार कोशिशां सोवना, जोईश पंच प्रकार सोवन गढ एकमना ॥१२॥ रयण कांगरा करे वैमाणिक आविया, मणि कविसीसा सारे रयण गढ भाविया । इण परे त्रिण प्राकार सुरासुर मिली करे, चार चार तिंह पोल चिहुं दिशि मन हरे ॥१३॥ गढ गढ तणो विचाळ तेरसय धनुषनो, पण सय धणुह प्रमाण उंचपण भीतनो । अंगुल बारे वीश धनुष तेत्रीशनो, विस्तर भींत वखाणि लहे जे इक मनो ॥ १४ ॥ पोल एकेके तोरण त्रिण वखाणिये, विच मणि पीठ चिहुंदिशि आसण जाणिये । त्रिहुं आसन पडिरूव अशोक तळे भला, छत्र तिहां त्रिणत्रिण चामर युग निरमळा ॥१५॥ धर्म चक्र दिशि चार तेज अहनिशि करे, ध्वज इक जोयण सहस ऊंचपण

तिह धरे। पूरव आसण वासुपूज्य जिणवर करे, पदमासण धरि ध्यान भवियजण मणहरे ॥ १६ ॥ आवे परखद बार प्रभावे स्वामिने, जोयण बारे सीम पलकमें जाणीने। साधु साधवी रंभ वैमानिकनी सही, पूरव आवी कूण अगनि रहे गह गही ॥१७॥ जोइस भवण व्यंतरनी देवी अति घणी, दक्षिण पोळ प्रवेश तेरत रहे सुणी। जोइस भवण वाणवंतर सुरराजीया, पश्चिम आवी कूण वायव निज कांजिया ॥१८॥ वेमाणिय नर-राय नारि वलि नरतणी, आवे उत्तर पोळे ईशांण रहे घणी। इण परि परखद बार सहू आवे मिळी, अरध मागधी वाणि सुणेवा मनरळी ॥१९॥ जलचर थलचर खयचर पंच प्रकारना, देशविरति पालंत तिरिय जे एक मना। इण परे सयळ जिणंद तणी वाणी सुणे, इह भव परभवे लील (जोयणवाणि-वखाणि) करमसिंह मुनि भणे ॥२०॥

(दूहाः-)

दडवड दोडी जाइने, वन पाळक तिणवार। आवी दीध वधामणी, नरपति हरख अपार ॥२१॥ सांभलीने राजा तणो, मन विकसे सुविशाळ। साही बारे लाख धन, द्ये तेहने तत-काळ ॥ २२ ॥ अशोकराय आणंद धरे, रोहिणी राणी रंग। जिन आगम सवि हरखिया, धरता मन उच्छरंग ॥२३॥ कोणिकनी परे संचरे, अधिक सजाई मेळ। हय गय रह वर पायके, जिम रयणायर वेल ॥२४॥ नगर घणी शोभासझी, प्रणमे जाइ उच्छाह। पंचे अभिगम साचवी, बेसे परखद

मांह ॥ २५ ॥ सर्वगाथा ५२५ ॥

(ढाल २८ मी–तूंगीया गिरि शिखरे सोहे ए देशी.)

परखदा प्रते कहे जिणवर, अरध मागधि भासरे । मधुर ध्वनि जिम मेघनी परे, धरे सयल उल्हासरे ॥२६॥ जिन तणी वाणी सुणे प्राणी, सफळ तेह संसाररे । वचनना गुण पंचे-त्रीशे, एकोंण अतिशय धाररे ॥ जि० ॥२७॥ चार अतिशय जनम साथे, केवल लहे इग्याररे । सुरकृत वली उगुणी-सजाणो, एह सयल संभाररे जि० ॥२८॥ पंच आश्रव त्याग करणा, धरणा पंचाचाररे । अवर भव संबळा करणा, अंत मरणा साररे ॥जि०॥२९॥ सदा मेरो रहे मनमें, तनमे धरे उल्हासरे । विषय वाह्यो रंग रातो, मातो दुर्गति वासरे ॥ जि०॥३०॥ स्वारथ विण कोइ नही अपणा, करणा केहा गूज्जरे । जाणने अजाण थाये, पतंग जेम अबूज्जरे ॥जि०॥ ३१॥ आवे कमाई अंत साथे, पुण्य पाप सखाइरे । करे श्रुतने धरम चारित, ते सदा सुखदाइरे ॥जि०॥३२॥ सर्विजीव अपणी लहे भाषा, समजता मनमांहरे । टालि शंसय धरे संवर, वचन श्री जगनाहरे ॥जि०॥३३॥ राय राणी देशणा सुणि, अथिर जाणे सर्वरे । संसार सागर दुःख आगर, टालिये मन गर्वरे ॥जि०॥३४॥ करी अंजळी एम बोले, साधु मारग साररे । तुम समीपे ग्रही संयम, लहु भवनिधि पाररे ॥जिन-तणीवा० ॥३५॥ घरे जाई करी सझाई, राज काज समापरे । कहे जिन पडिबंध म करो, वंदि वळीयो थापरे ॥ जि०॥३६॥

ज्ञात सुत वैराग साथे, लोकपाळदेई राजरे। राय राणी पुत्र पुत्री, साधे आतम काजरे ॥जि०॥३७॥ दीक्षा महोत्सव करे अति घण, तेह सकळ प्रसिद्धरे। थावच्चादिक मेघ रिषिवर, जमालिनी परे लिद्धरे ॥जि०॥३८॥ चार महाव्रत चंग पाले, विशुद्ध तप जप कायरे। सुमति सुमता गुपति गुपता, धरे मनने भायरे ॥जि०॥३९॥ पाळी संयम लहे केवळ, टाले भवनो व्यापरे। एकसो अडवन्न पयंडी, करम अडनी कापरे ॥जि०॥४०॥ सकल सुख सासता पाम्या, अशोक रिषि राजा-नरे। संयमने परभाव सघळा, तर्या आप समानरे ॥जि०॥४१ मन शुद्ध संयम जेह पाळे, टाले सयळ कषायरे। कर्मोसह मुनि साधु केरा, भावे वंदे पायरे ॥जि०॥४२॥

दूहाः-

मन शुद्ध इम जे तप तपे, धरतां निर्मळ ध्यान। पंचमि रोहिणी प्रगट तप, फळ पामे निरवाण ॥४३॥ जिम अशोक रिषि रायजी, रोहिणी राणी तेम। कन्या कुंवर तपथी तर्या, पाम्या वांछित खेम ॥४४॥ गौतम पृच्छा ग्रन्थमुणि, वळि मुज प्रथम अभ्यास। अधिको ओछो जे कह्यो, मिच्छा दुक्कडं तास ॥४५

(ढाल २९ मी-राग धन्याश्री.)

साधु शिरोमणिना गुण गाया, ध्यान धरी मन भायाजी। अचळ अनोपम नाम कहाया, नित नित प्रणमुं पायाजी ॥४६॥ एहवा साधु तणा गुण गाया, पुन्य योग ते पायाजी। दिन दिन घरमां अधिकी माया, होवे सुयश सवायाजी ॥ए०॥

४७॥ दुःख दालिद्र सवि दूरे जाए, नामे शिव सुख थायजी। अशोक राय रिषि मन भाया, रोहिणीना गुण गायाजी ॥ए०॥ ४८ ॥ संवत्सर सतरे सेतीसें, काती मास जगीसेजी। शुदि दशमी सूरजने दिवसे, कीधी चउपई हरषेजी ॥ए०॥४९॥ (श्री) पार्श्वचंद्र गच्छ प्रगट प्रतापी, जगमां कीरति व्यापीजी। पंचम काळ सुमारग थापी, भवियणने हित आपीजी ॥ए०॥ ५०॥ अनुक्रमें पाट पटोधर जाणो, श्रीजयचंद्रसूरि वखाणोजी पाट पद्मचंद्रसूरि सुहाणो, युगप्रधान जग टाणोजी ॥ए०॥ ५१॥ आचारिज मुनिचंद्र सूरींदा, प्रतपे तेजें दिणंदाजी। सेव करे सुरनर आणंदा, नित नित भाव धरिंदाजी ॥ए०॥ ५२॥ श्रीजयचंद्रसूरि शिष्य विराजे, चढता सुयश दिवाजेजी। श्रीप्रमोदचंद्रवाचकवर गाजे, साधु शिरोमणि ताजेजी॥ ए०॥ ५३ ॥ तास शिष्य करमसिंह इम भाखे, पुरजालोर प्रकाशेजी। पास जिनेसरने वेसासे, कीधी जोड उल्हासेजी ॥ए०॥५४॥ ए अधिकार जग भणे भणावे, ते घर मंगळ आवेजी। संघ चतुर्विध सदा सोहावे, कर्मसिंह गुण गावेजी ॥ ए० ॥ ५५ ॥

इतिश्रीरोहिणीतपमहात्म्यगर्भितश्रीरोहिणीनोचोपाईबद्धरासंपूर्णः॥ संवत १७३२ रा फाल्गुण शुदि १ भृगुदिने लिपीचक्रे मुनिकर्मसिंहकेन ॥ सर्व ढाल २९ सर्व गाथा ५५५ शुभं भवतु॰ श्रीरस्तु॰ कल्याणमस्तु॰ लेखकपाठकयोः ॥ संशोधितश्च जैनाचार्यश्रीभ्रातृचंद्रसूरिशिष्यमुनिसागरचंद्रेण ॥

वाचकवरश्रीहर्षचंद्रानुजमुनिवरश्रीनिहालचंद्रकृतः-

॥ जगतशेठाणी श्रीमाणेकदेवी-रासः॥

संशोधक-जैनाचार्यश्रीभ्रातृचंद्रसूरिशिष्यमुनिसागरचंद्रः

श्रीदानशीलतपभावनाधिकारे-बंगालदेशोत्पन्ना जगत-शेठाणी सतीशिरोमणी श्रीमाणेकदेवीरासः प्रारंभः-

(ढाल-मोह्युं मुज मन तुम गुणे, श्रीशांतिनाथ० एदेशी.)

श्रीगुरु गौतम पयनमी, सारदमात मनावुंरे। जेहथकी बुद्धि ऊपजे, गुणपुण्यवंतना गावुंरे ॥ १ ॥ पुन्यवंत नर साभळो, निरमल सतीय चरित्रोरे। पापपंकज जिंह तें मिटे, होवे श्रवण पवित्रोरे/पुन्य० आंकणी० ॥२॥ श्रीमुख श्रीजिन भाखीया, धर्मना चार प्रकारोरे। जे प्राणी नित आदरे, ते पावे भवपारोरे/पुन्य० ॥३॥ सतजुग सोलसती हुइ, साधवी साधु अनेकोरे। कलिजुगमें मोटी सती, माणीकदे सुविवेकोरे पुन्य० ॥४॥ जो तपजप करणी करी, व्रत कीधा पचखाणोरे। तेहनी कुण गिणती करे, गिणत न आवे ज्ञानोरे/पुन्य० ॥५॥ तासतणा गुणगाववा, मनमें हुवो उच्छाहोरे। कहतां जीभ

पवित्र हुवे, लीजे भवनो लाहोरे/पुन्य० ॥६॥ कुण कुल जनम लहयो सती, कोण नगर कोण देसोरे । कुण कुलमें माता व्याहीया, सो सव कहुं विसेसोरे/पुन्य० ॥७॥ भरतखेत्र शोभे भळो, जंबुद्वीप मझारोरे । मध्यमेरु नवखंडमुं, लाख जोजन विस्तारोरे/पुन्य० ॥८॥ मध्यदेशमें दीपतो, वछ देश अति चंगारे । नगरी कौसांबी भली, नदी वहे जहां गंगारे पुन्य० ॥९॥ चंदनबाला जहां भइ, सतीयां में सिरदारोरे । नाम जयंती श्राविका, मृगावती सुखकारोरे/पुन्य०॥१०॥ साधु अनाथि जीहां हुवा, श्रावक साध पवित्रोरे । पदमप्रभु जिहां जनमीया, कहां लगे कहुं चरित्रोरे/पुन्य०॥११॥ तस नगरी पासे भलो, साहिजादपुरसारोरे । निकट वहे गंगा नदी, वासै वरन अढारोरे/पुन्य० ॥१२॥ सुरपुरवरकी ओपमा, नगर निरुपम देखारे । न्यातचौरासी जिहां वसे, ओसवाळ सुविसेषारे पुन्य० ॥१३॥ पूरणमल्ल पुन्यातमा, श्रावक परम सुज्ञानीरे, गोत्र वीराणी परगडा, धर्मवंत अतिदानीरे पुन्य० ॥१४॥ तस घरणी वरणी सति,गुलो वहु इति नामेरे । जैन भगति दोय आदरे दिनदिन चढत प्रणामेरे पुन्य० ॥१५॥ तास कूखमे ऊपनी, स्वर्गलोकथी आइरे । मातपिताना घर विषे, ऋद्धि वृद्धि अधिकाइरे पुन्य० ॥१६॥ संवत सतरसैं तीसमे, श्रावन मास उदारोरे । कृष्ण पक्ष एकादसी, जनमभयो सुखकारोरे पुन्य० ॥१७॥ नाम किसोर कुमर धर्यो, अनो कही बतलावेरे । ज्युं ज्यों वाधे बालिका, मातपिता सुख पावेरे पुन्य० ॥१८॥

सवगुन सव लछनभर्या, विनय विवेक उदारोरे। जो गुण तिय उत्तमतणां, ते प्रगट्या तिणवारोरे पुन्य० ॥१९॥ मातपिता मन सोचीयो, कीजे एहनो विवाहोरे। जो इण सरिखो वर मिले, तो लीजे लच्छमी लाहोरे पुन्य० ॥२०॥ देसप्रदेस विचारतां, वात ठीक ठहराईरे। पटणे मे कोठी करी, भेज सहोदर भाईरे पुन्य० ॥२१॥

दूहाः-

नगर सुवस पटणै वसे, ओसवंस सिरदार। गोत गहेलडा जगप्रगट, दोलतवंत दातार ॥२२॥ हीरानंद नरिंदसम, मानै सहुकोइ आण। सातपुत्र तेहने प्रगट, अदभुत गुणमणिखाण ॥२३॥ माणीकचंद्र नरिंदसम, चौद विद्या भंडार। लंछन अंग बत्तीस तसु, कांमतणो अवतार ॥२४॥ वर देखत हरषित भए, किनो तिलक तेवार। करी सजाई व्याहनी, रची बरात विस्तार ॥२५॥ हय गय रथ पायक प्रबल, जनसज्जन परिवार। ले बरात व्याहन चले, पहुते नगर मझार ॥२६॥ आगत भगत युगतै करी, पूरणमल्ल प्रवीन। सुभदिन सुभग्रह सुभलगन, व्याह रलीसों कीन ॥२७॥ दान दहेज दीए बहुत, जनसज्जन संतोष। विदाकीए वरकन्यका, भांतिभात संतोष ॥२८॥

(ढाल-चोपाइ.)

अनुक्रमे पुर पटणे आवीया, जाय अगाहु वधाइ दीया। हरख्या मातपिता परिवार, कीन महोच्छव बहु विस्तार ॥२९॥

गृह प्रवेस बरकन्या कीया, दांनघणा जाचिककुं दीया । देखी वदुन कुलवंती वहुं,हरख्या जन परिजन मिल सहु ॥३०॥ दुलहनी पावधरे धरजिसे, ऋद्धि सिद्धि घरआई तिसे। मणिमांणिक मोती भंडार, सोनारूपानो नही पार ॥३१॥ हाथी घोडानें पालखी, वहल सुखासणनें नालखी । दासीदास सहेली लोक, दिन दिन वाधे थोकाथोक ॥३२॥ पुन्यवंतने पग परवेस, कीरति वाधी देसोदेस । वाधे पुत्र पौत्र परिवार, वाधी लछमी बहुतभंडार ॥३३॥ नरदेही घरआई वहु, प्रत्यक्ष लछमी भाखे सहु । माणिकदेवी दीनो नांम, अदभुत रूपवंत अभिरांम ॥३४॥ पूरवपुन्यतणे परमाण, सुख भोगवे सुरेंदसमांण । नाटक गीत संगीतरसाल, नाचै नाटक अति सुकुमाल ॥३५॥ स्वर्गसमाणा सुखभोगवे, धर्म कर्म दोऊं जोगवे । पतिपतिनी दोऊं अधिकसनेह,ज्युं चातिक सारदऋतुमेह ॥३६॥ देस बंगाळे उत्तम देस, आए माणिकचंद नरेस । नांम नगर मकसुदावाद, करि कोठी कीनो आवाद ॥३७॥ राजा परजा अरु उमराव, फोजदार सुबाऽरु नबाव । सहुकोई माने हुकम प्रमाण, दिल्ली-पति दे अतिसनमांन ॥३८॥ बादशाह श्रीफरुकसाह, सेठ पदस्थ कीयो उच्छाह । माणिकचंद शेठभए नांम, फिरी दुहाई ठांमोठाम ॥३९॥ देसबंगाला केरे धनी, दिनदिनसंतति संपति घनी । जाके पुत्र सुरेंदसमान, प्रगटं फतेचंद सुज्ञान ॥४०॥ दिल्लि जाय दिलिपती भेट, नांम किताब भयो जगसेठ । जगतसेठ जगपति अवतार, कुलमंडण थंभन परिवार ॥४१॥

ताकी पटंतर कहो कुण करे, दुखीयाना दुखदालिद्र हरे। पुत्र शुगम तिण के घर भए, सूर्यचंद्रविधिना निरमए। सेठसुज्ञानि आणंदचंद, दयाचंद प्रगटे ज्युं इंद्र ॥४२॥ पुत्रपौत्र भए राजकुमार, दोउं कामदेव अवतार। जुगजुग जीवो महतावराय, सेठ सरूपचंद दीर्घाय ॥४३॥ धन धन माणिकदेवी पुन्न, बेटा पोता पुत्ररतन्न। सत साखा वाधो परिवार, एक एकसुं अधिक उदार ॥४४॥ भाई भतीजे लायक सहु, बेटी पोती अरु कुल वहू। इंद्रसभा सम जसु परिवार, दिन दिन वाधो हरख अपार ॥ ४५ ॥ प्रातःसमे पूजे जिनदेव, नितप्रति सारे सद्गुरुसेव। सुणैं जिनेसर वचन वखाण, नित नित साधे व्रत पच्चखाण ॥४६॥ सातखेत्रमें वित्तवावरे, दुखीयाजनना दालिद्र हरे। जो जो करणी श्रावकतणी, माताजीने कीन्ही अतिघणी ॥४७॥ लडकपणासों जो टेकग्रही, आदिअंतशों सो निरवही। दोलतवंत अरु चित्त उदार, दान देत मन हरख अपार ॥४८॥ संवत सतरे इकतरसार, माघमास दसमी गुरुवार। माणिकचंद्र स्वर्गगति लही, जिनकी कीरति जगमें रही ॥ ४९ ॥ तिण दिनसों मात कुलवती,जपतपदानकीया महासती। तिणकी गिणती कहो कुण करे, धन्य धन्य सब जग उच्चरे ॥५०॥

(दूहाः-)

मातमनोरथ यों कीयो, वंदशुं वीसजिणंद। संघ सम्मेतसिखरतणो, कीजै मन आणंद ॥५१॥ मनसूबा मातातणा, जांण्या श्रीजगसेठ। करी सजाई संघनी, भेजे लोक पचेट

॥५२॥ घाटवाट सब सज्ज कर्यो, संघ आवे जिस राह। हुकम सुणत सब भूपति, लागे करन उच्छाह ॥५३॥ देसविदेसे पाठई, पत्री परम हुलास। चौविह संघ बुलाईया, खरची भेजी खास ॥५४॥ असवारी वाहन दीए, जिहां जिहां मांगे तेम। डेरां तंबू पाल भले, दीन्हा सवकों जेम ॥५५॥ संघ सहू एकठा थया, मुलक मुलकना आय। तुरत बोलाया जोतिषि, मुहूरत दीया बताय ॥५६॥ शुभदिन सुभग्रह, सुभलगन, सुभमुहूरत सुभयोग। जात करणकौं नीसर्या, जहां तहां सौ लोक ॥५७॥ आणंदचंद्र नरेंद्र तव, संघपति तिलक वणाय। करि असवारी इंद्रसम, संग दयाचंद भाय ॥५८॥

(ढाल-खडकानी.)

चल्यो संघ उच्छंगधर जात्र जिनवरतणी, अतिघणी ऋद्धि विस्तार कीन्हा। सरस जरवाफ कीमखाब मखमलतणा। तंबु डेरां तहां जायदीन्हा चल्यो०॥५९॥ लालबनात करणाटकी छींटका, नवनवीभांतिना पालताण्या। देखि सुरलोक इंद्रलोक गृह सारिखा, मानहुं आप सुरनाथ आण्या चल्यो० ॥६०॥ विकट पहाडसम प्रबलमद पूरीया, इंद्रगजसारिखा साजि आंण्या। मेघडंबर अंबाडि होदां कर्यो, हाथीयां जात किण पैं वखाण्यां चल्यो० ॥६१॥ अवल ऐराक कंबोज खुरसांणरा, आरबी अश्व जे जातिवंता। रतनसुवर्ण रूपातणे साजसुं, संगलीना तुरी तेजवंता चल्यो० ॥६२॥ वहिलरथ पालखी नालकी अतिघणी, तेहतणी कोंण गिणती वखाणे। ऋद्धि विस्तार इहभांत

सोभासरस, देखि नांहि कहूं रावरांणे चल्यो० ॥६३॥ ढलकती ढाल सन्नाह सबसाजिया, तीर तरवार नेजा विराजे। सरस सामंत अणी फोज फावे घणी, सुभटभट सूरमा संग साजे चल्यो० ॥६४॥ रंग प्रचरंग निसाण गज पीठपर, नवनवे नाद नौवत्त वाजे। सखर जासोल हारोल आगेंचले, देखिदल प्रबल भूपाल भाजे चल्यो० ॥६५॥ साधुअरु साधवी स्वेतपटा दिगपटा, आयरिया और उवझाय के ते। भेख खटदर्शनी भाट भोजक गुनी, कोंण गिणती करें संग जे ते चल्यो० ॥६६॥ अवल ओसवाल श्रीमाल पोरवाड अति, न्यात चोरासीया संगलीन्हां। वडावडासाह नरनाह संग चालीया, तेहतणा मांन सनमांन कीन्हां चल्यो० ॥६७॥ प्रथम चोमास श्रीवीरजिन जिहां कर्यो, नगर त्रधमान नयणे निहार्यो। पृष्टिचंपा पुरी देखी आणंदभरी, जीर्ण जिनराज मंदिर जुहार्यो चल्यो० ॥६८॥ नगर पचेट रघुनाथजी भेटीया, सतीय सीता रहे जिहां वासें। देखि पाहाड वनझाड लंगुरद्रल, संघना लोक सब रह्या तमासे चल्यो० ॥६९॥ तिहांथकी नगर विंदापुरी आवीया, पूज जिनराज भयो अतिउच्छाहो। तिहांथकी आविया सिखरगिरि तलहटी, देखिगिरिराज लीयो जनम लाहो चल्यो० ॥७०॥ हरखउल्लाससों सिखरऊपर चढ्या, जाय जिनराजनो दर्शकीधो। स्नात्र पूजा प्रतिष्ठा करि भावसों, मातजी जनमनो लाभ लीधो चल्यो०॥७१॥ रत्नसौवर्णनी विविध आंगीरची, सातदशभेद पूजा रचाई। वीस हूं टूंक जिहां वीसजिन सिद्ध

भए, वंदि जिनचरण महिमा वधाई चल्यो० ॥७२॥ तीन दिनरात गिरिसिखर ऊपर रह्या, भाव भगते करी तीर्थ भेट्यो। सुकृत बहुलो थयो जनम सफलो भयो,दुःकृत दोहग तणो मान मेट्यो चल्यो० ॥७३॥ जात्र करी आवीया सिखरगिरि तलहटी, संघनी भक्तिते कीन्ही सवाई। पोषिया संघसहु विविध पक्वान्न करि, मुहर मुहरतणी लहणलाई चल्यो० ॥७४॥ खास जरवाफपटकूल पहराइया, संघपद्रवीतणी माल लीधी। लोक धन्य धन्य कहे जय जय उच्चरे, एह करतूत अतिसबल कीधी चल्यो० ॥७५॥ संघ उच्छंगसुं निज घरे आविया, नगरमें बहुत उत्साह कीन्हों। धन्य धन्य पुन्य माणिकदेवी सती, तुमे संपतितणों लाभ लीन्हो चल्यो० ॥७६॥

(दूहाः-)

माता माणिकद्रे तणो, जस फेल्यो संसार। संघ चलायो सिखरकों, खरच्यो द्रव्य अपार ॥७७॥ जवतें जात्र पधारिया, माताजी धर प्रेम। तवहीतें मन दृढ करी, अभिग्रह लीन्हा एम ॥७८॥ जिनमंदिर रूपातणा, गृहमें सरस बनाय। प्रतिमा सोनां रजतनी, थापी श्रीजिनराय ॥७९॥ पहर एक पूजाकरे जपे मंत्र नवकार। दान देहि जब हाथस्युं, तबहीं करे आहार ॥८०॥ छट्ठ छट्ठ अरु पारणों,जो कहूं तिथ वढजाय। तव तेला निहचें करे, एह टेक न मिटाय ॥८१॥ दोय पहोर शास्त्रसुणे, संध्या करे त्रिकाल। पोसह अष्टमी चौदसी, पडिकमणा बिहुं काल ॥८२॥ सचित वस्तु छूवें नही,दीन हीनप्रति दान।

कुण सरभर तेहनी करे, सकें न राजा राण ॥८३॥ देसबंगाले नहु हता, देहरा अरु पोसाल पुन्यप्रसाद मातातणे, घर घर थया विसाल ॥८४॥ जैनी होते नग्रमें, आगे घर दोयचार। सो प्रसादमातातणे, श्रावक भये हजार ॥८५॥ जो नर आएं देसके, अन धन वस्त्र विहीन। तिणकुं माताजी तुरत, सहस्रप्रती करदीन ॥८६॥ रजत कनकनी मुद्रिका, पहिरी नही जिणनार। सो प्रसाद मातातणें, लदी कनकके भार ॥ ८७ ॥ कर्ण भोज विक्रम भए, सत जगमे दातार। कलि-जुगमे माणिकदे जिसी, देखी नही संसार ॥८८॥ चरण धर्या जव मातजी, जवसों इह पुर आइ। तवसों यह पुरकी दसा, दिवस दिवस अधिकाइ ॥८९॥

(ढालः—कोइल्यो परवत धूंधलोरे लाल-एदेशी.)

जो तप माणिकदे कीयोरे लाल, सो सब करूं वखाणरे सुज्ञानी। पंडित सुणी मन सरदहेरे लाल, मूरख होये हैराणरे सुज्ञानी ॥९०॥ सुण तप माणेकदेतणारे लाल, सुणतां पातिक जायरे सुज्ञानी। इण जुगमें कुण करसकेरेलाल, सुणतां अचरिज थायरे सु० सुण० आंकणी ॥९१॥ प्रथम वीसथानिक कर्यारे लाल, बेला चारसे वीसरे सुज्ञानी। उजमणो तेहनो कर्योरे लाल, खरच्या द्रव्य सुजगीसरे सु० सुण० ॥९२॥ तिन्नाणं सेत्रुंजातणारे लाल, छट्ठकिया भलभायरे सुज्ञानी। छट्ठ छमासि धन्नातणीरे लाल, कीन्हा मन वच कायरे सु० सुण० ॥९३॥ गुण परमेष्टी पंचनारे लाल, कहीये एकसो आदरे सुज्ञानी।

सु० जाप जप्या तेला करीरे लाल, जाल्या कर्म कुकाठरे सु० सुण० ॥ ९४ ॥ चौवीसी तिहूं कालनीरे लाल, बहोत्तेर छट्ठ थायरे सुज्ञानी । करिव्रत ऊजमणों कीयोरे लाल, श्रीमाणिकदे मायरे सु० सुण० ॥९५॥ वीसोवीस विहरमाननारे लाल, सिवकुमार पचीसरे सुज्ञानी । इग्यारे गणधर तणारेलाल, छट्ठ कीधा सुजगीसरे सु० सुण० ॥९६॥ कर्म प्रकृतिना पिण कीयारेलाल, छट्ठ एकसो अठतालरे सु० । कर्मरहित सिद्ध तेहनारे लाल, जपकीना तिहुं कालरे सु० सुण० ॥९७॥ कल्याणक चोवीसनारे लाल, व्रत वीसा सो थायरे सु० । ते तप तेलाथी कर्यारे लाल, जाप जप्या धरिभायरे सु० सुण० ॥९८॥ इणविध छट्ठ छट्ठ पारणारे लाल, कीन्हा वरस छवीसरे सु० । मोह न आण्यो देहनोरे लाल, सगतिदे जगदीसरे सु० सुण० ॥९९॥ जो होवे कहुं पारणोरे लाल, जीमे अल्प आहाररे सु० । गिणती राखे अन्ननीरे लाल, तिनहूं मांहि विचाररे सु० सुण० ॥१००॥ दुःकर व्रत करतां थकारेलाल, तन रह्यो अस्थि समानरे सु० । तबही न छंड्या मातजीरे लाल, अपनां व्रत पचरखाणरे सु० सुण० ॥ १ ॥ लाखो दान दीया सतीरे लाल, लाख कीया उपगाररे सु० । लाखो जीव प्रतिपालीयारे लाल, लाखो मे जस साररे सु० सुण० ॥२॥ मोह नही ममता नहीरे लाल, राग नही कहुं रोसरे सु० । क्षमा दया समता भरीरे लाल, हरष नही अपसोसरे सु० सुण० ॥३॥ दान सील तप भावनारे लाल, धर्मना चार

अकाररे सु० । माताजीनी देहमेरे लाल, पूरा देख्या चाररे सु० सुण० ॥४॥ इंद्राणी सम सुखीयारे लाल, सो राजा सम राजरे सु० । तेहतणी ममता तजीरे लाल, जपीया श्रीजिनराजरे सु० सुण० ॥५॥ नामवडो नांतोवडोरे लाल, वडो सुजस परिवाररे सु० । भागवडो मातातणोरे लाल, सुत जगसेठ उदाररे सु० सुज० ॥६॥

(दूहाः-)

हुकम कबहूं मेटें नही, माततणो जगसेठ । तीनवार दिनप्रति करें, चरण कमलकी भेट ॥७॥ सत मांगें तव सहस्रदीये सहस्र कहे दे लक्ष । मातानें माने सदा, परमेसर परतक्ष ॥८॥ दानपुन्यतो मातजी, करता हता हमेस । वरस रह्यो जब काळकें, लाग्या करन विसेस ॥९॥ वस्त्र पात्र अन्नदान दिय, जो जेह मांग्या जास । वरस एकलग वरसीया, सोनैया सुप्रकास ॥१०॥ मुहर मुहर लाह्ण करी, जगत वडो जस लीन । ऐसी करणी आज लगे, दूजे किणही न कीन ॥११॥ पुत्र पौत्र परिवारसों, हितसों करि आसीस । राज ऋद्धि परिवार युत, जीवो लाख वरीस ॥ १२ ॥ श्रीमुख अणसण उच्चर्यो, सुद्धभाव सुभ ध्यान । दान पुन्य करतां थकां, सुणतां सुगुरु वखाण ॥१३॥ सबसों कीन्हा खामणा, करी प्रभुजीनों ध्यांन । माणिकदे माता सती, पहुंती अमर विमान ॥ १४ ॥ संवत सतर अठाणवे, पोष कृष्ण रविवार । पडवा पुष्प नक्षत्रमें, पहुता स्वर्ग मझार ॥१५॥

(ढालः-अलबेलानी)

धन धन माणिकदे सतीरे लाल, धन धन तुम अवतारेरे महासती । जन्म सुधार्यो आपणारे लाल, करि तप दान उदारेरे ॥ महा० ॥ धन० ॥ १६ ॥ ओस वंस धन जाणीएरे लाल, गोत गहेलड़ा साररे महा० । धन माणिकचंद शेठजीरे लाल, तास घरणी सुखकाररे महा० । धन० ॥ १७॥ धन धन पूरणमल्ल पितारे लाल, धन माता सुखकाररे महा० । तेहनी कूखें ऊपनीरे लाल, पुत्री पुन्य भंडाररे ॥ महा० ॥धन० ॥ १८ ॥ चोथे कालें ऊपनीरे लाल, श्राविका जयंती साररे महा० । चंदनबाला मृगावतीरे लाल, सती सुभद्रा साररे महा० । धन० ॥ १९ ॥ तास पटंतर जाणज्योरे लाल, इण पंचम कलिकालरे महा० । जैन धरम थिर थापवारे लाल, लीनो ए अवताररे महा० । धन० ॥ २० ॥ शास्त्र मांहि सुणता हतारे लाल, साधु सतीनी वातरे महा० । परतक्ष देखी आंखसुंरे लाल, माणिकदेवी मातरे महा० । धन० ॥ २१॥ सतीतणा जस सांभलीरे लाल, मन हरखे मन भावरे महा० । सुख ऊपजे संसारनेरे लाल, कुसती धरे कुभावरे महा० । धन० ॥ २२ ॥ वीरपरंपर पटोधरुरे लाल, सूरिश्रीवादिदेवरे महा० । नागपुरी वडतपगच्छारे लाल, सुरनर सारे सेवरे महा० । धन० ॥ २३ ॥ श्रीपासचंद्र सूरि संतानीयारे लाल, वाचक श्रीहर्षचंद्ररे महा० । तास अनुज जस ऊचरेरे लाल, नाम मुनि निहालचंद्ररे

महा० ॥ धन० ॥ २४ ॥ संवत सतर अठाणवेरे लाल, पोष कृष्णपख साररे महा० । तिथ तेरस जस जंपीयोरे लाल, मकसूदावाद मझाररे महा० । धन० ॥ २५ ॥ पढे गुणे जे सांभलेरे लाल, सुणि मन धरहि आनंदरे महा० । तसु घर धरम प्रसादथीरे लाल, दिन दिन होइ आनंदरे । महा० ॥ धन० ॥ २५ ॥

॥ इति महासती जगत्शेठाणी श्रीमाणेकदेवी रासः ॥ विरचितश्च श्रीमन्नागपुरीयवृहत्तपागच्छीय-पंडितप्रवरमहामहोपाध्यायश्रीहर्षचंद्रगणिलघुबांधवकविवरगुणगणालंकृतविद्वद्वर्यमुनिश्रीनिहालचंद्रेण/ संशोधितश्च श्रीजैनश्वेतांबराचार्यवर्यविश्ववंद्यानवद्यविद्यापारावारपारीणयुगप्रवर-सकलागमरहस्यवेदिबालब्रह्मचारिमहर्षिश्राभ्रातृचंद्रसूरीश्वरशिष्यमुनिसागरचंद्रेण स्वपरकल्याणाय ॥ ओं शांतिः ॥

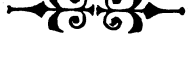

ऋषिवरश्रीहीरराजसुप्रसादप्राप्तशिष्यश्रीयुतऋषिदुलभदृकृत-

महातपस्वी श्रीपूंजामुनिनो रास.

संशोधकः-पूज्यपादश्रीभ्रातृचंद्रसूरिशिष्यमुनिसागरचंद्रः

(ढाल १ ली-सेत्रुंजइ वसइरे पारेवडा-ए देशी.)

सरसति सामिणी विनवुं, प्रणमी सद्गुरु पाय लालरे। क्षमासमण गुण आगलो, ए गिरुओ ऋषिराय लालरे ॥१॥ पूंजराज्र गुण गाइए। ए आंकणी० गोरा पटिलको लाडिलो, धनबाइ उयरि मल्हार लालरे। हलपति वंस सोहामणो, रांतिज नगर अवतार लालरे ॥ पूं० ॥२॥ संवत सोलज सीत्तरे, आसाढ वदि नोमि दिन्न लालरे। श्रीविमलचंदसूरि सुपसाउले, दीक्षा ग्रहण कीयो धन्न लालरे ॥ पूं० ॥ ३ ॥ श्रीराजनगर सोहामणे, महूच्छव दीक्षा ऊदार लालरे। अभयदान दिओ भलो, षट्जीवां हितकार लालरे ॥ पूं० ॥ ४ ॥ साधु क्रिया पाले खरी, पंच महाव्रतधार लालरे। मास खमण दस आगला, पच्चख्या एकण वार लालरे ॥ पूं० ५ ॥ मास खमण दोई भला, मुनिवरमांहि ईश लालरे। वीस वीस कीया सामटा, पाष खमण चुंआलीश लालरे ॥

पूं० ॥ ६ ॥ सोळ वार सोले कीया, चउद किया चउद वार लालरे । भविक जीव तुमे सांभलो, तेर तेर तेर वार लालरे ॥ पूं० ॥ ७ ॥ द्वादस द्वादस तप कीया, सत चुआळ विचार लालरे । चउवीस वार दस दस कीया, पारणे नीरस आहार लालरे ॥ पूं० ॥ ८ ॥ सित्तर दिन लगे सांभळो, छठने पारणे छास लालरे । बासठ दिन बीजा वली, पारणे तक अभ्यास लालरे ॥ पूं० ॥ ९ ॥

(ढाल बीजी—भमरावी ए देशीमां.)

श्रीसेत्रुंज गिरि जातरा सोहागीरे, अंगे हुओ आणंद लाल सोहागीरे । एकादस उपवासमे सोहागीरे, भेटया ऋषभ-जिणंद लाल सोहागीरे ॥ १० ॥ बार वरस ऋषिराजने सोहागीरे, पांच विगइ पच्चखाण लाल सोहागीरे । पांच वरस लगे रजनी ए सोहागीरे, वस्त्र न ओढयो जाण लाल सोहागीरे ॥ ११ ॥ पांच वरस लगे मुनीवरे सोहागीरे, आगला पट पास लाल सोहागीरे । नहू सुता नींद्रा नही सोहागीरे, पूरण धर्म प्रकास लाल सोहागीरे ॥ १२ ॥ अवग्रह कीधो धृतनो सोहागीरे, जिन पूजा नारि च्यार लाल सोहागीरे । विहरावे तो विहरसुं सोहागीरे, नहींतर अगड निरधार लाल सोहागीरे ॥ १३ ॥ वरस तिन्नी अविग्रह रह्यो सोहागीरे, धन्य चरोडे पास लाल सोहागीरे । राजनगरथी संघ चल्यो सोहागीरे, पहुंचे मननी आश लाल सोहागीरे ॥ १४ ॥ गमतादे गुण आगली सोहागीरे, फूलां बुद्धि निधान लाल सोहागीरे । राजलदे

जीवी भली सोहागीरे, जिन पूजा घृत दान लाल सोहागीरे ।।१८।। अविग्रह पूर्यो घृत तणुं सोहागीरे, पुण्यतणुं प्रतिपाल लाल सोहागीरे । दलभट्ट इणि परे ऊचरे सोहागीरे, ए अमराती ढाल छाल सोहागीरे ।। १६ ।।

(ढाल त्रीजो–राग मल्हार अथवा धन्नाश्री.)

धन्न धन्न तप पंजराजनोरे, अट्ठाइ दोसें एकासी । अट्ठम पनरसें साठी आगलारे, साचो एह मुनीश ।। धन्न० ।। १७।। श्रीजयचन्द्रसूरिनी सानिधेरे, तपे धनो अणगार । आंबिल छट्ठने पारणेरे, नवे मास निरधार ।। धन्न० ।। १८ ।। षट्मास लगे अविग्रहेरे, देवे अचित्त दान । नहिंतर पांच सात पखवासरे, चढता सतर निदान ।।धन्न०।।१९।। संवत नवाणुंआ फागण सुदिरे, मोटो मान जगीश । नव हजार बाणुं आगलारे, वधे नरनारी आसीश ।। धन्न० ।। २० ।। ऋषि हिरराज सुपसावलेरे, ऋषि श्रीपुंजराज गुण साररे । दलभट्ट सुख संपत्ति लहेरे, भणजो सहू नरनाररे ।।धन्न०।।२१।।

इति श्रीमहातपस्विपूंजामुनिराससंपूर्णः कृतश्च श्रीमन्नागपुरीयवृहत्तपागच्छीययुगप्रधानपदबिरुदधारकश्रीपार्श्वचंद्रसूरिपुरंदरसंतानीयऋषिप्रवर–श्रीहीरराजचरणसरसिरुहमुनिवर–श्रीदलभट्टेन संशोधितश्च श्रीजैनाचार्यवर्यप्रातःस्मरणीयपरमपूज्यसकलागमरहस्यवेदिशांतरसपयोनिधिपरमोपकारिश्रीभ्रातृचंद्रसूरीश्वरशिष्यमुनिसागरचंद्रेण स्वपरकल्याणाय ॥

वाचनाचार्यश्रीसमयसुंदरगणिकृत-

महातपस्वी श्रीपूंजामुनिनो रास.

संशोधकः-परमपूज्यश्रीभ्रातृचंद्रसूरिशिष्यमुनिसागरचंद्रः

(दूहाः-)

श्रीमहावीरना पय नमी, ध्यान धरुं निसदीस । तीरथ वरते जेहनो, वरस सहस एकवीस ॥ १ ॥ साधु साधु सहुको कहे, पण साधु छे विरलो कोइ । दुःसम कालें दोहिलुं, प्रबल पुन्ये मिले सोइ ॥ २ ॥ पण तप जपनी खप करे, पाले पंचाचार । सूत्रें बोल्या साध ते, वंदनीक विवहार ॥ ३ ॥ भला दान शीलने भावमां, पुण तप सरीखो नही कोइ । दुःख दिजे निज देहनें, वातें वडा न होइ ॥ ४ ॥ मुनिवर चउद हजारमे, श्रेणिक सभा मझार । वीरजिणंदे वखाणियो, धन धन्नो अणगार ॥ ५ ॥ वासुदेव करे वीनती, साध छे सहस अढार । कुण अधिको जिणवर कहे, ढंढण ऋषि अणगार ॥ ६ ॥ ए तपसी आगे हुआ, पण हवे कहुं प्रस्ताव । आजने कालें ए हुआ, पूंजाऋषि मन भाव ॥७॥ श्रीपासचंदना गच्छमांहि, ए पूंजो ऋषिराज । आप तरे नें तारवे, जिम वड सफर जिहाज ॥ ८ ॥ पूंजे ऋषि पीछयो धर्म, संयम लीधो सार ।

कीधा तप जप आकरा, ते सुणज्यो अधिकार ॥ ९ ॥

(ढाल १ ली–चोपाईना. सरखी देशीमां.)

गुजरातमांहि रांतजे गाम, कडुआ पटिले गोत्रनो नाम। बाप गोरो माता धनबाइ, उत्तम जाति नही खोडज कांइ ॥ १० ॥ श्रीपासचंदसूरिपाट, समरचंदसूर, श्रीराजसूरि विमळचंद सनूर। तिहना वचन सुणि प्रतिबूधो, असार संसार जाण्यो अतिसूधो ॥ ११ ॥ वइरागे आपणो मनवाल्यो, कुटुंबमाया मोह जंजालज टाल्यो। संवत सोलसें सित्तरां वरष, संयम लीधो सदगुरु परख ॥ १२ ॥ दीक्षा महोच्छव अहमदावादें, श्रावके कीधो नवलें नादें। पूंजो ऋषि सूधावत पाले, दूषण सघला दूरें टाले ॥ १३ ॥ ऋषि पूंजो सूजतो ल्ये आहार, न करे लालच लोभ लगार। ऋषि पूंजो अति रूडो कहावे, जिनशासनमांहिं सोभ चढावे ॥ १४ ॥ तेहना गुण गातां मनमांहि, आनंद ऊपजे अंग उच्छांहि। जीभ पवित्र होइ जस भणतां, श्रवण पवित्र होय सांभलतां ॥ १५ ॥

(ढाल २–जी.)

ऋषि पूंजे कीधो ते कहुं, सांभलज्यो सहु कोइरे। आजने काल करे कुण एहवो, पण अनुमोदन होइरे ॥ ऋषि० ॥१६॥ चालीस उपवास कीधा पहिला, आठ अंतिम चोवीहाररे। मासखमण कीधा बे मुनिवर, वीस वीस बे वाररे ॥ ऋषि० ॥ ॥ १७ ॥ मासखमण पइतालीस कीधा, सोल कीधा सोल वाररे। चउद चउद चउदवारज कीधा, तेर तेर कर्या साररे

॥ ऋषि० ॥ १८ ॥ बार बार बारह वार कीधा, दस दस चोवीस वारे । बसें पंचास अट्ठाइ कीधी, मनसुं वेगसुं धारे ॥ ऋषि० ॥ १९ ॥ छठे कीधा वलि सित्तर दिन लगें, पारणे आहार छासरे । बार वरस लगें विगइ न लीधी, ऋषि गुणाने साबासरे ॥ ऋषि० ॥ २० ॥ वरस पंच लगी वस्त्र न उढयो, सह्यो परीसह सीतरे । साडा पंच वरस सीम आडो, सुतो नही स विदीतरे ॥ ऋषि० ॥ २१ ॥ अभिग्रह वली लीधो एहवो, चीठी लिखि तीहां एमरे । चार जणे पूजा करी पहिलां, घी विहरावे सुप्रेमरे ॥ ऋषि० ॥ २२ ॥ तो पूंजो ऋषिथी वहोरावे, नहीतर जावजीवतांइ सुंसरे । ते अभिग्रह तीजे वरस फलीउ, श्रीसंघनी पहुंती हुंसरे ॥ ऋषि० ॥ २३ ॥ अहमदावादी संघ नरोडे, वांदवा गयो परभातरे । गुरुने वांदी संघ सकळते, हृदय थयो रळीआतरे ॥ ऋषि० ॥ २४ ॥ तिण अवसर [1]फूलो [2]गमनादे, [3]जीवी [4]राजलदे च्यारे । पूजा करी वांदी विहराव्यो, सूजतो घी सुविचारे ॥ ऋषि० ॥ २५ ॥ मोटो लाभ थयो श्राविकाने, टाल्यो तिहां अंतरायरे । इण चिहुंने मनवंछित वस्तुनो, अंतराइ नहीं थायरे ॥ ऋषि० ॥ २६ ॥ वली धनाअणगार तणो तप, कीधो नव मासी सामरे । तेह माहि च्यार अट्ठाइ उपवास, च्यार अट्ठम च्यारनीमरे ॥ ऋषि० ॥ २७ ॥ छमासी सीम अभिग्रह कीधा, कोइ फलीउं उपवास च्यारे । उपवास सोले फल्यो कोइ, ए तपनो अधिकारे ॥ ऋषि० ॥ २८ ॥ छट्ठ अट्ठम आकरा तप कीधा,

ऋषि पूंजे वली जेहरे। तेह तणी वात कहुं अंते, कहेतां नावेछेहरे ॥ ऋषि० ॥ २९ ॥ २८ अठावीस वरस लगी तप कीधा, ते सघला कह्या एमरे। आगल वलि करस्ये ऋषि पूंजो, ते आणस्ये तेमरे ॥ ऋषि० ॥ ३० ॥

(ढाल ३-जो०)

ऋषि पूंजराज मुनिवर वंदुं, मानुभाव मुनिसर सोहेरे। उग्र करे तप आकरो भवियण, जण प्रतिबूजवे मन मोहेरे ॥ ऋषि० ॥ ३१ ॥ धन कुले कणबी जाणियें, बाप गाडे ते पण धन्नरे। धन धनबाई कूखमां, ऊपनो एह रतनरे ॥ ऋषि० ॥ ३२ ॥ धन विमलचंदसूरि जिणे, दीक्षा दीधी निज हाथरे। धन श्रीजयचंद्र गच्छधणी, जसु साधु रहे एह साथरे ॥ ऋषि० ॥ ३३ ॥ आज ते तपसी एहवो, पूंजा ऋषि सरिसो नही दीसेरे। तेहनें वांदतां विहरावतां, हरखे हीयडो हीसेरे ॥ऋषि०॥३४॥ एक वइरागी एहवा, श्रीपासचंद गच्छमांहि सदाइरे। गुरु गिरुआ गछमांहि, श्रीपासचंदसूरि पुन्याइरे ॥ ऋषि० ॥ ३५ ॥ संवत सोल अठाणुये, श्रवण पंचमी अजुवाइरे। रासे भण्यो रलीयामणो, मुणी समयसुंदर गुण गाइरे ॥ ऋषि० ॥ ३६ ॥

कुल तप उपवास ११३२३.

इति महातपस्वी श्रीपूंजामुनिरासः श्रीखरतरगच्छीयविद्वद्वर्यश्रीसकलचंद्रोपाध्यायविनेयवाचनाचार्यश्रीसमयसुंदरगणिना कृतः संशोधितश्च श्रीमन्नागपुरीयवृहत्तपागच्छाधिराजयुगप्रवरसकलागमरहस्यवेदिविश्ववंद्यानवद्यविद्याविशारदश्रीभ्रातृचंद्रसूरीश्वरशिष्यमुनिसागरचंद्रेण स्वपरकल्याणाय ॥

आचार्यश्रीभ्रातृचंद्रसूरिग्रन्थमाला पुस्तक-३९.

श्रीमन्नागपुरीयवृहत्तपागच्छीयसकलागमरहस्यवेदिश्रीजैनाचार्यवर्य-

श्रीसमरचंद्रसूरीश्वरविरचितः-

श्रीउववाईप्रथमउपांगसूत्रमांथी उधृतः-

श्रीसाधुगुणरससमुच्चय-रास.

संशोधकः-जैनाचार्यश्रीभ्रातृचंद्रसूरिशिष्यमुनिसागरचंद्रः

(वस्तु छंद.)

रिसह जिणवर (२) पाय पणमेवि, तित्थनाथ गुण गाइशुं ।अविचळ चित्त पढमे उवंगें॥ तासु शीष गुण वर्णव्या, उववाई आगम सुचंगें । जन्हठियवाई जाति कुल । बल रूवाइ संपुन्न, संभळि गुण जसु मन रमे, नरनारी ते धन्न ॥१॥

(चोपाई-छंद.)

तेणे काळे तेणे समें, चोथे आरे दुःसुमसुसमें । वर्ष केतला थाकत जिशे, ए अधिकार जाणजो तिशें ॥२॥ अंग देश मांहि चंपापुरी, रिद्धादिक बहु गुण विस्तरी । श्रेणिक सुत तिहां कोणिकराय, राजतणा लक्खणगुण ठाय ॥ ३ ॥ सम्यग् दृष्टी अति गुणवंत, जसु मन रमे सदा भगवंत । वर्द्धमान जिन तीरथराज, विचरत भवियण सारे काज ॥ ४ ॥ कोणिक राय

तणो छे एक, प्रवृत्तिवादको अति सुविवेक । भगवंतनी नित कहे प्रवृत्ति, नरपति कीधी तेहनी वृत्ति ॥ ५ ॥ एक लाख ने आठ हजार, दिन प्रतें सोनाना दीनार । जिनवर जेणे थानके रहे, ते थानक आवीनें कहे ॥ ६ ॥ सुणी कोणिक तस पासें वाच, जाणे सामी दीठा साच । बेठा ऊठी ऊभा थाय, सात आठ पग स्हामा जाय ॥ ७ ॥ पगथी ऊतारी पावडी, विलंबति न करे एका घडी । उत्तरासंग सहित करजोड, शीष चडावी पूरे कोड ॥ ८ ॥ नमोत्थुणं कहे नित एम, चंपा नगरी आव्या जेम । पूरणभद्र चेईयें रहे, वधामणिओ आवी कहे ॥ ९ ॥ नमस्कार पूरव जिम करी, वधामणी आपे मुद धरी । साढा-बार लाख दीनार, मनशुं आणी हर्ष अपार ॥ १० ॥ चतुरंग दलशुं वंदण जाय, हियडामांहि आनंद थाय । वांदे जिणवर मुणिवर सोय, तसु गुण इणि परे वर्णक होय ॥ ११॥ श्रमण तपस्वी ने भगवंत, ऐश्वर्यादिक गुण संजुत्त । उपसर्गादिक अचलित जेय, महावीर सुर कहियो तेह ॥ १२ ॥ धर्मतणी जिने कीधी आदि, तित्थंकर संघ चउविह सादि । ठवण थई तिह सयंसंबुद्ध, आपणथी शुद्ध मारग लद्ध ॥ १३ ॥ पुरुषोत्तम जे पुरुष प्रधान, पुरुषसिंह सूरि गुणे उपमान । कमळमांहि पुंडरिक महवंत, उज्वल गुणे जिणवर विहरंत ॥ १४ ॥ गंधहस्तिनें गंधे न रहें, गयवर अपर जिणेसर कहे । ए ऊपम श्रीवीरजिन लहे, दुर्भिक्षादिक पाछां वहे ॥ १५ ॥ सर्व जीवने अभय दातार, भय सघळा कीधा परिहार । श्रुत ज्ञान

रूप द्ये नयण, पंथ दिखाडे सूधो वयण ॥ १६ ॥ मार्ग देखाडी शरणो होय, भावोपद्रव टाले सोय। जीवितव्यदायक श्रीवीर, मरणनिवारे साहसधीर ॥ १७ ॥ बूडत भवजले द्वीप समान, त्राण शरण सुखदायक मान। गति सुखकारण आश्रव ठाम, अने पइट्ठ आधार सुठाम ॥ १८ ॥ धर्म्म चक्कवइ अतिशय करी, शिव पहुचाडे भव ऊद्धरी। ज्ञान दंसण किही नव खले, लोकालोक देखे निरमले ॥ १९ ॥ राग दोष जीता तिणे जाण, भवजल तर्या तारक गुणठाण। स्वयंबुद्ध प्रतिबोधे अन्न, सर्व्व जाण सर्व दरसी धन्न ॥ २० ॥ ज्ञान विशेषा बोधक जाण, दर्शन सामान्य मन आण। शिव निरुपद्रव अचल स्वभाव, अरुजं रोग रहित मन भाव ॥२१॥ अनंत ज्ञान जिह तेय अनंत, क्षय नव पामे तेहथो जंतु। बाधा रहित अपीडा जोई, वळी पाछो नव आवे कोई ॥२२॥ एहवो सिद्धि गती जसु नाम, पहुचणहारा तेणे ठाम। सप्त हस्त तनु समचोरंस, संठाणं इम लहे प्रसंस ॥ २३ ॥ वयररिसहनाराच संघेण, जल्ल मल कलंक सेद रहिएण। अकठि जल्ल कठिन मल भेद, कलंक दुष्ट तिलकादि प्रसेद ॥ २४ ॥ कृष्ण रत्न अथ कीट विशेष, भ्रमर कजल मसि निद्ध असेस। पयाहिणावतओ वल्या केस, मस्तक दीठे टले किलेस ॥२५॥ केस अंत भूमीके संत, दाडिम कुसुम सरिस सोहंत। पर्वत शिखर सरिस आकार, मस्तक निवड सुलक्षण धार ॥ २६ ॥ मस्तक दीसे छत्राकार, अष्टमि चंद्र ललाट विचार। पूनिम

शशि जीतो वयणेय, प्रमाण जुय सोहे सवणेय ॥ २७ ॥ गल्ल सुमांसल अतियें सुचंग, भुमुह धनुष सम कृष्ण सुरंग । नयण पुंडरीय विकसित जेम, कमल दलोपम लोचन तेम २८॥ सरल उत्तंग नासिका कही, अधरें विद्रुम ओपम लही । दंत श्रीस्या दाडिमनी कली, अविरल अखंड दंत ते वळी ॥ २९ ॥ एक दंत श्रेणि जिम जाण, अंतर रहित अनेक वखाण । कनक तपाव्युं तालुय जीह, रत्तुप्पल दल सरसी लीह ॥ ३० ॥ दाढी मूछ अवस्थित रहें, वृद्धि विना अति शोभा लहे । ग्रीवा चौरंगुला प्रमाण, त्रिवली युत वर शंख समाण ॥ ३१ ॥ हणुआ भण्या सदूल सरीस, अतिहि समांशल शोभे ईश । सिंह सदूल वृषभ जिम खंध, पुर अग्रल भुज दंड सु संध ॥ ३२ ॥ कलाचिका दोई वृत्ताकार, नागराज तनु बाहु विथार । रत्तुप्पल सम प्रभुना पाणि, अतिसुकुमाल समांसल जाणि ॥ ३३ ॥ लक्षण सहित अछिद्रत वळी, कोमल लांबी तिह अंगुली । नखुआ ताम्रवर्ण पातळा, निद्ध मनोहर अति वाटुला ॥ ३४ ॥ चंद्रसूर चामर आकार, छत्र जेहवो भूविविध प्रकार । दशा सत्थि शंख चक्राकार, करे हवी रेखा भंडार ॥ ३५ ॥ कनक शिला सम हृदय विशाल, श्रीवच्छांकित गत जंजाल । कंडू रोग रहित प्रभु देह, सहस अट्ठोत्तर लक्षण गेह ॥ ३६ ॥ नहु दीसे पूठें पांसुली, ऊतरती ऊतरती वळी । संगत सुंदर पासा कह्या, मात्रा युत भवियण सद्दह्या ॥ ३७ ॥ रोमराय अतिसरल सुचंग, निद्धा देय सुहुम अलिरंग । पंखी

झस जिम पूरी कुक्षि, सदा झसोदर जिन प्रत्यक्ष ॥ ३८ ॥ गंगा वर्त्तकि ओपम गंभीर, नाभियें दीसे साहस धीर । दर्पण मुसल वज्र जिम कडी, त्रिवली सहित मझि संकुडी ॥ ३९ ॥ सिंह तुरय जिम अतिवाटुली, दीसे प्रभुनी कडि पातळी । अश्वतणी परि गुह्य प्रदेश, निरुपलेप अप्पान असेस ॥ ४० ॥ शरीर वायु अनुकूली सदा, गुद मल नहु लागे एकदा । पंखी तणी परि जरे आहार, उदरादिक पंखि सुभर सुधार ॥४१॥ ऐरावण गजनी परि गती, चाले संघ चतुर्विध पती । शार्थल गज सुंडा जारसी, गूढ जानु जंघ मृग सारसी ॥ ४२ ॥ घूंटी गूढ संठित सुसिलष्ट, कर्म्मतणी परि पगसु पइट्ठ । चडती ऊतरती अंगुली, ओन्नत नख आरक्तावली ॥ ४३ ॥ पग तल रत्तुप्पल मृदु जेम, विस्तर गुण कहि सकिये केम। तिणि संखेपि करी गुण कह्या, गुरु मुख उववाईथी लह्या ॥ ४४ ॥ नभ कागल सवि सायर मसी, मेरु लेखनि सुरगुरु ओल्हसी । जिन गुण लखतां न लहे पार, श्रीसमरचंद्र इम करे विचार ॥ ४५ ॥

(ढाल–धन धन स लहीये.)

अतिशय तसु चोत्रीस हिव, कहीस्युं श्रुत आधार । गृह वासें तह केवलें, सहज सुर कृत विचारीयेरे. जिणवर स लहीये ॥ ४६ ॥ सहजे सोवन वण्णोरे, अतिशय गुण नितु दीपतां । वंदे ते जण धण्णोरे, जिणवर स लहीये॥ (आंचली) मात कुक्षि जब अवतर्या, दीख न लीधी ए जाम । अतिशय च्यारि सभावना,

देहें सोहए तामरे ॥ जिणवर० ॥ ४७ ॥ देहें रोग न मल नही, मंस रुधिर गोखीर । तेह थकी अति ऊजला, नमीये श्री जिन वीरोरे ॥ जिणवर० ॥ ४८ ॥ सास ऊसास कमल थकी, अधिको गंधें सुगंध । आहार निहार करे जया, न देखे नयणें न गंधोरे ॥ जिणवर० ॥ ४९ ॥ च्यारि जनम लगि ए कह्या, हिव केवलना त्रीस । समश्रु केस नख्र अवट्ठिया, न पामे वृद्धि विस्वा वीसोरे ॥ जिणवर० ॥ ५० ॥ धर्म्म चक्र झलके पुरा, छत्र त्रय आकास । चामर दुन्नि सिंहासणुं, सपाय पीढ नभ पासेंरे ॥ जिणवर० ॥ ५१ ॥ इंद्र ध्वज आगल चलें, अशोक वृक्ष प्रभु पूंठ । मुकुट ठाम भा मंडलं, करम खपावण ऊठेरे ॥ जिणवर० ॥ ५२ ॥ भूमि भाग होवे समो, दर्पण चंद्रबिंब जेम । कंटक विमुख हुए ऋतु, विपरीत सुखकर तेमोरे ॥ जिणवर० ॥ ५३ ॥ योजन मंडल कुसुम भर, जानु प्रमाण करंत । शब्दादिक रूडा हवे, पाडुआ तेह न करंतेरे ॥ जिणवर० ॥ ५४ ॥ पासि दु सुर चामर धरे, वाणी योजन सीम । भाषा भाखे प्रभु जया, अद्ध मागद्धी ए नीमोरे ॥ जिणवर० ॥ ५५ ॥ आपापणी भाषा सहु, प्रीछे जिणवर ऊत्त । मणु तिरि आरिय णारिया, गणे हित कारण चित्तेरे ॥ जिणवर० ॥ ५६ ॥ देव जेय मछर करा, सुणे धम्म उपशंत । नर तिरि वैरति परिहरी, सुणि धर्म उपशमवंतोरे ॥ जिणवर० ॥ ५७ ॥ वाद भावें आव्या मती, वांदे मूकी अभिमान । करि अभिमान वंदे नही, वादे भंग निदानोरे ॥ जिणवर० ॥ ५८ ॥ विचरे

जिणवर जिह जिहां, साते ईति समंति। जोयण पंचवीसे लगे, इत्यादिक नहुं हुंतिरे ॥ जिणवर० ॥ ५९ ॥ मिरगी चक्र दु अप्प परं, अवृष्टि अने अतिवृष्टि। दुरभिक्ष दुःकाल नहु, व्याधिति थाय अदृष्टरे ॥ जिणवर० ॥ ६० ॥ इम चोत्रीश अतिशय कह्या, चोथा अंग मझार। ते विवरी ईहां दाखिया, श्रीसमरचंद्र संभाररे ॥ जिणवर० ॥ ६१ ॥

(ढाल-गीता छंदनो. चालती अने त्रुटकमां.)

प्रभु चोत्रीसरे अतिशय सहित सदा चरे। भाषा गुणरे पणतीस जेय सवि हित करे। ते कहेस्युंरे सूत्रसाखि शास्त्रांतरें, जे सुणतांरे जंतुतणा भव भय हरें। संस्कृत प्राकृत सौरसेनी, पैशाची नें मागधी; अपभ्रंसी गद्य पद्यें, भाखे बारह ए सुधी। ए प्रथम अतिशयकेरो, बीजो हीव हीयडे धरो; उदार ऊंचे स्वरें बोले, हंस क्रोंच घन स्वरो ॥ ६२ ॥ हिवं त्रीजोरे उपचारें युत जे कह्यो, ग्रामीणंरे नहिय वचन ते सद्दह्यो। गंभीररे ऊंडो घन जिम गाजतो, अनुनादेंरे प्रति रव करिय विराजतो। दक्षिणं कहतां सरल वचनं, वळी ओपनीत रागता; मालव कौशिक आदि रागें, सप्तमं तिणि युक्तता। ए सात अतिशय शब्द आश्रित, अपर अरथ थकी गणो; अडवीस संभलि हिये धरि करी, वीर जिन गुण संथुणो॥ ६३ ॥ पद अक्षर रे थोडा अरथ विच्छर घणो, पूरवापररे वचन विरोध ते मन भणो। शिष्टत्वंरे जूअ जूअ अरथ वचन तणो, चतुराईरे प्रभुनी जाणे जण घणो। संदेह टाळी वचन बोले,

सुणत संशय नहुं हुवे; अपरवादी वचन दूषण, देईने न परा भवे। हरे श्रोता तणो मानस, अनेथि चित्त न लागए; देश कालें उचित वयणं, कहें बहु जण आगए ॥ ६४॥ जीवादि करे वस्तु विचार जया करे, तसु मलतोरें अरथ स्वरूप ति ऊचरें। अतिविस्तररे असंबद्ध नहु वागरें, पद आगलरे पद सापेक्षति चित्त धरे। अट्ठारमो अभिजात वचनं, वात रूप करी कहे; अतिनिद्ध मधुरं सर्प्पि साकर, जेम भवियण मनि ग्रहें। उपदेश देतां मर्म्म किहनो, कहे नही जिणवर कया; अरथ धर्म्मे सहित वचनं, सद्दहें तसु हुइ सया ॥ ६५॥ बावीसमरे वस्तु प्रकाशन जव करे, तसु निरणयरे करतां कहें अति विस्तरें। पर निंदारे निज उतकरष वचनि नही, मध्य-स्थेरे बोलत श्लाघा लहे सही। शब्द कारक काल लिंगें, शुद्ध वचन समाचरें; श्रोतार प्रभुनो धर्म्म सुणतां, चित्तमांहि चमत्करें। व्याख्यान अति ऊतावलुं नही, नही अतिहि सा-सतो; रोगाइ दूषण सर्व्व रहियत, सुणत भ्रम विणु भासतो ॥ ६६ ॥ हिवं त्रीसमरे जेय पदारथ वर्णवें, स्वरूपथीरे तेहज विशेषें संक्रमे। वचनांतररे अपेक्षा उचित विशेषतां, अक्षर पदरे जुय जुय करी प्रभु भाखतां। सत्व साहस सहित वचनं, सदा जिनवर वागरे; धर्म्म कहेतां श्रम न पामे, हियें अति उच्छाह धरें। जीवादि वस्तु प्रकाश करतां, अविच्छिन्न वचन कहें; पांत्रीस अतिशय सहित वचनं, श्रीसमरचंद्र नितु सद्दहे ॥ ६७ ॥

(ढाल-कुमर सुबाहुनी.)

सोहम गणहर पंचमोजी, जंबू तेहनो सीस। प्रणमी पंजली जोडी करीजी, पूछे मनह जगीस ॥ ६८ ॥ जिणेसर किणि परि कर्यो विहार, महावीर गणधार जिणेसर। केहवो तसु परिवार जिणेसर०-(ए आंकणी.) ॥ ६९ ॥ वीर जिणेसर दीपताजी, चउद सहस मुनि साथ। सहस छत्रीसे महासतीजी, शिवपुर कीधो साथ ॥ जिणेसर० ॥ ७० ॥ ग्रामानुग्रामें विहरतांजी, सुखें सुखेंरे विहार। भविक जीव प्रतिबोधताजी, अंगदेशमांहि सार ॥ जिणेसर० ॥ ॥ ७१ ॥ चंपा नगरी बाहीरेंजी, पूर्णभद्र वण ठाण। अशोक वृक्ष पुढवी सिलाजी, तिहां आव्या वर्धमाण ॥ जिणेसर० ॥ ७२ ॥ आदि जिणंदे थापियाजी, कोटतणा रखवाल। उग्र-कुलीना ते कह्याजी, साधुति गुण सुविशाल ॥ जिणेसर० ॥ ७३ ॥ पूज्य ठाम ते भोग-कुलजी, मित्र ठाम राजान। ज्ञात ते वंश इखागनाजी, अथवा नाग ते मान ॥ जिणेसर० ॥ ७४ ॥ कौरव कुरु वंशे ऊपनाजी, क्षत्रीय बीज उवण्ण। भट ते चारहडा सुण्याजी, जोधा झूझे रण्ण ॥ जिणेसर० ॥ ७५ ॥ सेनापति सेना धणीजी, शास्त्र पाठक पसत्थार। इभ्म ते लच्छी जसु धरेंजी, गज सुमतुंग वित्थार ॥ जिणेसर० ॥ ७६ ॥ शेठ ते लच्छी वाचस्युंजी, जसु घर रहें भंडार। एवमाई उत्तम जणाजी, छांडी अथिर संसार ॥ जिणेसर० ॥ ७७ ॥ उत्तम कुल बल रूवयाजी, विणय विण्णाण संजुत्त। वर्ण सुवर्णे चोरि-

डाजी, कांति सुभागें जुत्त ॥ जिणेसर० ॥ ७८ ॥ शिष्य प्रतें सद्गुरें कह्योजी, इणिपरि कर्यो विहार । श्रीसमरचंद्र इम ऊचरेजी, अरिहंतनो आचार ॥ जिणेसर० ॥ ७९ ॥

(ढाल-मुनिवर गोचरी वळ्यानी.)

बहु धण धन्न परिवार जे, मूंकी संयम लीधूंरे । निव गुणथी अधिका छता, वीर जिन सरणूं कीधूंरे ॥ ८० ॥ एरिस मुनिवर नितु नमो, पाले संयम भारूरे । रिद्धि छती जिणे परिहरी, पाम्यो भवचो पारूरे ॥ एरिस० ॥ ८१ ॥ किंपाक फळ सम जाणीया, पंचय इंद्रियना भोगूरे । जल बुद बुद कुस पाणियं, चंचल जीवीय जोगूरे ॥ एरिस० ॥ ८२ ॥ पुत्र कलत्र सवि अथिर छे, नहीको सगो संसाररे । आपण स्वारथे सहु मिल्यो, अध्रुव अनित्य परिवारूरे ॥ एरिस० ॥ ८३ ॥ संझ समे जीम पंखीया, तरुवर आवी मिलंतरे । प्रह विकसें दिस जूजूई, तिम ए कुटुंब चलंतरे ॥ एरिस० ॥ ८४ ॥ जिम रज लागीय लूगडे, झटकी अलगी करंतरे । सयणादिक सवि परिहरी, धन त्यजी संयम धरंतरे ॥ एरिस० ॥ ८५ ॥ नव वैरागी मुनिवरा, दीक्षित पक्षने मासरे । दो मास जाव इग्यार ए, मास वरिसऽनेक वासरे ॥ एरिस० ॥ ८६ ॥ संयम तप्स्युं संजुया, आतमा भावत विचरेरे । दिवस निसा वेराग-स्युं, झीलत कर्म सवि वीखरेरे ॥ एरिस० ॥ ८७ ॥ मति नाणी श्रुत नाणिया, एक एक वळी ओहीणाणीरे । इक मण-नाणी केवली, साधु ते उत्तम प्राणीरे ॥ एरिस० ॥ ८८ ॥

इक मन तनु बल वय बली, सरापदान समरथारे। प्रसाद करे ततकाल ते, छूटा मुनिवर घरथारे ॥ एरिस० ॥ ८९ ॥ तप बल थूंक ते औषधी, तनु मल औषधी जाणोरे। लघु वडनीति ते औषधी, सोवन धातु वखाणोरे ॥ एरिस० ॥ ॥ ९० ॥ हस्तादिक फरसण करे, रोग दोष सवि जायेंरे। आमोसहि सव्वओसही, नख रोमादिक थायेरे ॥ एरिस० ॥ ९१ ॥ अथ मन बलिया जाणीये, मनस्युं किमें न डोलेरे। करिय प्रतिज्ञा निरवहें, वचने कूड न बोलेरे ॥ एरिस० ॥ ९२ ॥ इम वय काय बली हिवं, भूख त्रषाई न लीपेरे। सम्यग जाणे ज्ञान ते, समकितथी नवि छीपेरे ॥ एरिस० ॥ ९३ ॥ चारित्र बल हिव मन धरो, सुमति गुपति सवि पाळेरे। परीसह बलि नहु गंजीये, अतीचार सवि टालेरे ॥ एरिस० ॥ ९५ ॥ बहु गुणवंता ए मुणिवरू, लीजे अहनिशि नामरे। श्रीपासचंद्रसूरि भावस्युं, समरचंद्र करे प्रणामरे ॥ एरिस० ॥९६॥

(ढाल-गीता छंदनी. चालती तथा त्रुटकनी देशीमां.)

कोठबुद्धिरे धान कुठारें जीम रहें, सूत्रारथरे ज्ञाव जीव हृदि निरवहें। धारणा गुणरे बीजबुद्धि तरुनी परें, लघु बीजथीरे मोटो वड जिम विस्तरें:-विस्तरे वड जिम बुद्धि जेहनी, बीज (प) वड जिम बुद्धियां। वक्तार मुख वनसपति हूंती, कुसुम फल अति सुद्धया। सूत्तत्थ निरमल बुद्धि वखें, धरे पद अणुसारया। एक पदथी सहस आदिक, करें तसु अनुसारया

॥ ९७ ॥ संभिन्नसोयरे एकठ शबद मिल्या सही, ते जुअ जुअरे बुद्धि विनाणें कहे लही । एकेकेंरे इंद्रिय पंचे जाणए, रूपादिकरे स्रोत्रादिक सुवखाणए ॥–वख्खाण ए तप योग लब्धियें, इकेकें पंचय कह्या । खीरासवा दूध जेम मधुरा, वचन भवियण सदह्या । मधुआसवा मधु जेम मीठां, सर्व्व दोष समावए । सर्प्पि–घृत जिम आप ऊपरि, सुणत नेह ऊपावए ॥९८॥ हिव अखीणरे महाणसी लद्धि जाणीयें । आप न जिमेरे तांलगि छेह न पावियें ॥–पाविये छेह न तप विशेषें, ऋजुमती मण-नाणिया । सामन्नथी दोइ जलहि द्वीप दु, साढि सन्नी प्राणिया । तसु मनतणा पर्याय जाणे, विउलमती विशेषथी । अढीय अंगुल न्यून अधिको, भेद जाण्यो सूत्रथी ॥९९॥ वैक्रिय लद्धिरे रूप करे मन माणिया, दुई चारणरे जंघा विज्जा जाणिया । अट्ठम तपरे करतां जंघा लद्धि लही, तेरम दीवेंरे इकओतपातें जायें सही ॥–सहिय जावे नंदि सरवर, विद्याचारण एकणें; ओतपात विद्यापन्नति आदें, भेद छट्ठ कह्यो तिणें। आकाशगामी एक मुनिवर, विद्या अथ लेवादिणा । रत्ना-दिकनी करे वुट्टी, नमुं तवसी अणुदिणा ॥१००॥

(वस्तु छन्द)

आठ ठामें आठ ठामें चेईय जिणबिंब, सासयनामें ते कह्या, चिहुं प्रकार जई तेय वंदे । ऋषभचंद्राणण वारिखेण, वर्धमान मननें आनंदें । चिहुं ठामें अस्सासई, प्रतिमा वंदे साधु । जंघा विद्याचारणा, भगवति अंगे लाध ॥१०१॥

दूहाः-

लबधि-पात्र ए श्रुति कह्या, तेहना वंदुं पाय। श्रीसमरचंद्र इण परि कहे, लहीये मुगति उपाय ॥१०२॥

(ढाळ-दोढी)

कणयावलि तप एक, मुणिवर तप तपे, एक आदि सोलह लगीए; करे ओपवास ते धन्य, पारणे विगईय, पहिली ओली जां लगीए। एक वरस पंच मास, बारह दिवस ए, बीजी ओली निवगतीए; त्रीजी वल्ल चणादि, लेप न लागए, चउथी आंबिल ए विगतीए ॥१०३॥ चिहुं ओली पंचवास, नव मसवाडाए, दिन अढार सवि मीलताए, इम एकावलि केई, मुनिवर तप करे, कर्म्मराशी ऊवीलताए। सिंहनिकीलत केई, लहुडओ सिंह जीम, चालत पाछो देखीये ए; एक दु एक वळी त्रिण्णि, दो चउ आदें ए, नव ओपवास विशेषिये ए ॥१०४॥ इम अनुक्रम रुतार, एकणि ओलीएं, मास छ दिन सत्तय भण्या ए; वर्ष दु दिन अडवीस, च्यारे ओलीए, पाली आराधक सुण्या ए। पारणे विगई सर्व्व, बीजीए, नीवी लेप रहित कहीए; त्रीजी चोथी हेव, आंबिल पारणा, दिन तेत्रीस विगति लहीए ॥१०५॥ एकसो अधिक बत्रीस, पारण वासर, सेष ते ओपवासें मिल्याए; वडे सिंह ओपवास, सोल लगी चडे, भवना भय सघला टल्याए। पहिली ओली अढार, मास अढार दिन, चिहुं छ वरस दु मासडाए; दिवस बार वडसिंह, लहुअतणि परि, तप पारण करें ते वडाए ॥ १०६ ॥ प्रतिमा-

भद्र महभद्र, वहे यतीसर, च्यारि पहर काओसग करेंए; पूरव दक्षिण देह, पश्चिम उत्तर, चिहु दिशि जाम चउ ओढ धरेंए। लहुभद्र दो अहोराति, महभद्र चउदिन, चिहुं पासें ऊरध रहे ए; आठ पहर एक पास, इम चउ वासर, छठ दसम करि निरवहे ए ॥१०७॥ सर्वतभद्र दसदीह, दस दिशि काउसग, बावीसम करि पालिये ए; अथवा लघु मह भेद, दिण पण-इत्तरि। भक्त पान लहु टालिये ए। दिण पंचवीस आहार, पांचें ओलीए, एवं चउगुण लघु गणोंए। एक सो छन्नू दीह, तपदिन पारणा, एगुणपन्नासही जाणो ए ॥ १०८ ॥ एकथी सत्त लगी सीम, सातय पंतीये, एहवी चोगुण मुनि करें ए; महभद्र प्रतिमा तेय, तप दिन छन्नूय, एकसो अधिक ते मन धरें ए। ओगुणपन्ना दीह, पारण सहु मिली, आठमास पंच वासराए; एटले ओली एक, एह चतुर्गुणी, मास बत्रीस वीस दिन खरा ए ॥१०९॥ तप अंबिल वर्धमान, चउथ प्रथम करी, पारण आंबिल इम हुवें ए; चउथ अंबिल वळी दोई चउथ ति अंबिल, जां सत आंबिल संभवे ए। एकसो तिह उपवास, अंबिल पंच सहस, एहवा तपिया वंदीयें ए; भिरूखू-प्रतिमा बार, श्रुत विधि जे वहे, तसु नामें दुह छंदियें ए ॥ ११० ॥ पहिली एकज मास, दूजी दो त्रीजी, त्रिण्णि जाव सत्त मासिया ए। मास इक इक दाति, अन्न पान तणी, एवं सत्त सत्त भासिया ए ॥ अट्ठमी सत्त अहोराति, तप चउथ करें, पान रहित बाहिर रहें ए। चिता सूए एक पासि, अथवा

तप दिनि, बेठा ध्यान सु निरवहें ए ॥१११॥ नवमी सत्त दिन मान, पूरवनी परें, ए विशेष अधिको भण्यो ए। ऊकडू ऊत्यो काठ, दंड तणी परें, बेसे सूए ति इम सुण्यो ए॥ दसमी इणि परि जाणी, एह विशेष तिहां, गोदोहिकासने बेसीये ए। आंबां गोटी जेम, कूबडो बाजोट, काढें तेम निवेसिये ए ॥११२॥ अग्यारमी अहोराति, छट्ठ ते तप करी, प्रलंब भुज ऊभो रही ए। बारमी ते एक राति, अष्टम तप धरी, रहे बाहिर काउसग्ग ग्रहीए॥ धृति संघयण संजुत्त, प्रतिमा पडिवजे,सुहगुरुनी अनुमति लहीए। सुद्ध आराधे जेय, ओहिमण केवल,मझइक लहे विगती कहीए ॥११३॥ रयणावलि तप किद्ध, काली देवीयें, कणगावली सुकालीयें ए। सिंघनिक्रीडीत लहूय, कीधो महाकाली, श्रेणिक नारी संभालिये ए॥ कण्हा राणी सिंह, महानिक्रीडित, कीधो आतम उधर्यो ए। देवसुकण्हा नारि, सत्तम सत्तमिया, प्रतिमाकरि भवजल तर्यो ए ॥११४॥ अट्ठम अट्ठमियाय, नवमी नवमीया, दसमी दसमीया करी ए। ह्यारे प्रतिमा एह, अंतगड अंगे ए, कीधी कीरति विस्तरी ए॥ महाकन्हा लघु सर्व्व, भद्रवडो भद्र, सर्वत वीर कण्हा वह्यो ए। भद्रोत्तरप्रतिमा जेह, रामकण्हा वही, अट्ठम अंगें इम लह्योए ॥११५॥ पिओसेण कण्हा कीध, तप मुगतावली, पूरी इणी परि मन रलीए। महसेण कण्हा किद्ध, अंबिल वद्धमाण, वानी देखाडी वळी ए॥ भिख्खू पडिमाद्वार, गुणरत्नादिक, संवच्छर खंदिक कर्यो ए। एव माइ चरितानु, जाणो जहठियें,

ग्रंथें वर्णक ईह कर्यो ए ॥११६॥ पूजनीक ते साधु, जिन भाखित तप, बारभेद निरतो करेए। संसार समुद्र मझारि, ते प्रवहणसरिखा, पर तारे आपण तरे ए। तप करवा असमत्थ, ते पण धन गिणो, जे एहवा गुण मनधरे ए। श्रीपासचंद्र सूरिंद, तासु पटोधर, श्रीसमरचंद्र इम ऊचरे ए ॥११७॥

(ढाल-हिवदुलहो नरभव पामीरे.आदिश्वरनी विनंतीनो राग.)

सत्तम सत्तमिया ओलीरे, ल्ये अन्न उदक्स्युं बोली। पहिला सातदिन एक दत्तीरे, अन्न पानतणो ए सत्ती ॥११८॥ बीजा सत्तदिन दोइ दोईरे, इम सात सता लगि जोई। दिन ओगुणपन्ना लहियारे, तप करतां जिणवर कहिया ॥११९॥ अट्ठम अट्ठमीया ईम ईमरे, चउसठ दिन अंबिल जीम। इम नव नव दिन एकासीरे, दस दस करतां सो थासी ॥१२०॥ भद्रोत्तर प्रतिमा वहतांरे, पंच छ सत अट्ठ नव करता। उपवास पंति इम पंचरे, उतक्रमि छे नही खलखंच॥१२१॥ तप दिण इक सो पणहत्तरीरे, पारणा दिवस पंचवीस। एहवा मुनिगुण नितु थवतांरे, पूगे मनतणीय जगीस ॥१२२॥ अथवा पंचादि इग्यारेरे, ओतक्रमि सत पंति विचारें। तप दिन त्रिणसें वळी बाणूरे, ओगुणपन्ना पारणा जाणूं ॥१२३॥ प्रतिमा लघुनीतिह केरीरे, लघु वडी कही न अनेरी। ते द्रव्य भाव बिहुं भेदें रे, ए करतां भवदुह छेदे ॥१२४॥ विणुं जीमें जे पडिवजतारे, ते सात दिवस नहु करतां। लघुनीति जिम्रे छह दीहारे, न करें लघुप्रतिमा लीहा ॥१२५॥ इम वडी

पडीम अट्ठ सातेंरे, अणजिमे जिमें अहोरातें। उपवासें मात्रुं न करेरे, ग्राम बाहिर ग्रीषम शशरे ॥ १२६ ॥ नरतिरीय देवना कीधारे, उपसर्ग सहीनें सीधा। तसु नामे भवजल तरियेंरे, आठ कर्मतणो खय करीयें ॥ १२७ ॥ जव मध्य चंद्र हिव प्रतिमारे, जे करे साधु ते नितमा। सुद पडिवाथी प्रारंभीरे, एक कवल आदि आरंभी ॥ १२८ ॥ पूनम दिनि पनरह लीजेरे, किण्ह पडिवे पन्नरह कीजे। अम्मावसि कवलह एकूंरे, एक मास करे नर छेकू ॥ १२९ ॥ वज्र मध्य पडिमति धारोरे, किण्ह पडिवे पन्नर विचारो। अम्मावसि पडिवे इकेकोरे, पूनिम दिनि पनर विवेको ॥ १३० ॥ जव मध्यति जव जिम थूलरे, वज्र जाडो विहुं छेहि मूल। जव बिहुं पासे आणिआळोरे, वज्र मध्ये कृशलंकाळो ॥ १३१ ॥ तिणे अवसर जाति संपन्नारे, एक मात पक्षि पडिपुन्ना। कुल पिता पक्षि जे पूरारें, बलवंत संघयणे सूरा ॥ १३२ ॥ रूप सुंदर जसु आकारोरे, गुरु भगति विनय गुण धारो। विन्नाण सप्पि सवि जाणेंरे, दंसण समत्त वखाणे ॥ १३३ ॥ चारित्त समति संजुत्तोरे, लज्जा अपवाद विरत्तो। लाघव द्रव्य भावें जोवोरे, द्रव्य औषधि अल्पगुण होवो ॥ १३४ ॥ भाव गारव त्रिण्णि विरहीयारे, ए गुण संपुन्न सवि कहिया। एक ओयंसी मन धीरारे, तेयंसी सुकंति सरीरा ॥ १३५ ॥ सौभाग्य गुणे वचंसारे, दिशि विदिशि प्रसिद्ध जसंसा। क्रोध मान माया लोभ जीप्यारे, इंद्रिय विषें नहु लीप्यां ॥

१३६ ॥ जीत निद्रा परिसह ठेल्यारे, जीवीत आशा नहु भेल्या । नहु बीहें मरणें आवेरे, भय रहित तेय सुकहावे ॥ १३७ ॥ व्रत्ति महव्वय करीय प्रधानारे, गुण दया आदि शुभ ध्याना । पिंडविशुद्धि आदि गुण करणंरे, महाव्रतह आदि गुण चरणं ॥ १३८ ॥ हिवं एहना भेद विचारोरे, पिंड तणा भेद चउ धारो । द्रव्य क्षेत्र कालनें भावेंरे, पिंड शुद्ध जाणि ते ल्यावे ॥ १३९ ॥ समिति इरियादिक पंचयरे, बार भावन नही खलखंच । अणिच्च असरण संसाररे, एकत्व अन्यत्व संभार ॥ १४० ॥ असुचि आश्रव वलि संवररे, हदि भावे नवमी निरजर । हिव लोक सभावो बोहीरे, करे धर्म्म प्रकासक सोही ॥ १४१ ॥ बारह भावन हियडे धरस्येरे, संसार सायर ते तरस्यें । प्रतिमा बारह जे वहस्यरे, ते सकल करम दल दहस्ये ॥ १४२ ॥ पंच इंद्रिय विषया रुंधेरे, पडी लेहण पंचवीश सूधे । चित्त करे गुपत त्रिहुं गुपतारे, अभिग्रह चउपाले जुगता ॥ १४३ ॥ व्रत पंच श्रमण धर्म्मदसविधरे, क्रोध मान माया लोभ चउविध । ए जीता तप बार भेदेंरे, जिण कीधे भव दुह छेदे ॥ १४४ ॥ अणसण इतर जावजीवरे, नवकारसि आदि भव सीमह । नर कवल बत्रीस आहाररे, रमणी अडवीसें सारें ॥ १४५ ॥ एह मांहि ऊण जे लीजेरे, ऊणोद्री एम कहीजे । भिख्खा चरिया अन्न सूधोरे, रस त्याग दही घृत दूध ॥ १४६ ॥ काय कलेस लुंचादि करीयेंरे, संलीनता तनु संवरिये । ए बाह्य छ भेद अभ्यंतररे, आलोचे

पाप निरंतर ॥ १४७ ॥ गुरु साखे विनय करीजेरे, आय-
रियादिक लाह लीजे । वेयावच्च ओवठंभ दीजेरे, बालादिक
शिव साधीजे ॥ १४८ ॥ सज्झाय पंच विध साधेंरे, वायण
पुछण श्रुत वाधें । परिवर्तनने अणुपेहारे, धर्मकथा पंच
एहा ॥ १४९ ॥ ध्यान आरत रौद्र ते वरजेरे, धर्म सुक्ल
करी कर्म तजें । विओसग्ग द्रव्यने भावेंरे, तप बार भेद
कहावे ॥ १५० ॥ संयम ते सतरह भेदेरे, पंच थावर विगल
पणंदि । ए नवनी करुणा पालेरे, आरंभ अजीवनो टाले
॥ १५१ ॥ पेहा उवेहा पमज्जणरे, पारिठा तणु मण वयणं ।
ए संयम सत्य ते साचोरे, सुचभाव सौच तिह राचो ॥ १५२ ॥
अकिंचन परिग्रह वरजेरे, ब्रह्मचर्य पाली गुण अरजे । वेया-
वच दस विध करतांरे, नवविध ब्रह्म सुद्धति धरता ॥१५३॥
नाण दंसण चरण आराधेंरे, तप बार भेद ते साधे । क्रोधा-
दिक उदए नाणेंरे एक सय चाली भेद जाणे ॥ १५४ ॥
निग्रह अनाचार षेधेरे, निश्चय तत निरणय वेदे । अथ अणु-
ष्ठाण अंगीकीधुंरे, ते अवश्य करी फळ लीधुं ॥ १५५ ॥
अज्जव मायोदय टालेरे, मद्दव मान पाछो वाले । लाघव
क्रिया विषे उद्यमरे, खंति मुत्ति क्रोध लोभ निरुद्यम ॥ १५६ ॥
पन्नति आदें विद्यारे, मंत्र हरिणेगमेसीना वेद्या । सिद्धांत
अहव चउ वेदरे, ब्रह्म सुभ अणुष्ठाण भेद ॥ १५७ ॥ नय
न्याय निगम आखडियारे, सत्य सम्यग वादें चडीया । सुच
द्रव्य भाव लेप रहियारे, निरवद्य आचरणें सहिया ॥१५८॥

निग्रह आदि गुण जुगतारे, जस कीरति करे जण भगता।
देहि गौरवर्ण सुभ बुद्धिरे, तवसी पामे लघु सिद्धी ॥ १५९ ॥
सोही सवि जिय हितकारीरे, अथ अकलुष हृदयाधारी।
नीयाण रहित यम पालेरे, ऊतावल धस मस टाले ॥१६०॥
संयमथी मन नवि टालेरे, अवहिले सपद पाले। अपति लेसा मन वित्तीरे, कोई तोली न सके सत्ती ॥ १६१ ॥ शुद्ध चारित्रस्युं अतिरातारे, दंता गुरु विनये भगता। प्रवचन आगल करि विचरेरे, सूत्रनें अनुसारें संचरें ॥ १६२ ॥ बहु जणनें मुनि आयरियारे, अत्थदायक बहु गुण भरीया। उवज्झाया श्रुत दातारूरे, भव जलनिधि पार ऊतारू ॥ १६३ ॥
जे सेव करे तसु जीवारे, मोह पडल नाश गुणि दीवा।
अह भव सागर जिन द्वीपरे, बूडत राखे नहु छीपे ॥१६४॥
त्राणं अशुमथी राखेरे, शरणं शुभ कारण भाखे। गति सेवा योग पइठारे, आश्रय जाणी पासे बेठा ॥ १६५ ॥ इत्यादिय गुण बहु दीठारे, श्रीसाधुतणा श्रुति मीठा। हिवं ज्ञान तणा गुण कहीयेंरे, बिहुं मिल्यें मोक्ष गति लहीयें ॥ १६६ ॥
जैन सूत्र अरथ मन आणेंरे, पर वादिना मत जाणें। परिचय स्व पखस्युं अति घणरे, ते करें कुंजर जिम न लवण ॥ १६७ ॥ एम तपनें गुणि जे सूररे, ते नमीये आणंद पूर।
एम भणे श्री समरचंद्र सूरिरे, सवि पातक जाये दूरि ॥१६८॥

(ढाल–धन्यासिरोः–रिसह जिणपमुह चउवीस जिणवंदिये पदेशी.

प्रश्न उत्तर नहु कोई छिद्र ग्रहें, रयण करंडनी ओपमा

मुनि लहे । त्रिभुवन हट्ट जिम सर्व लाभे सहु, ईहित अर-
थना दायका मुनि बहु ॥ १६९ ॥ परमत मर्दका वादि अगं-
जिया, द्वादश अंगधर गणि पीटिकि रंजीया । एकठा ऊचरे
सर्व अक्षर करी, सर्वजण बूझणी भाष भाखे खरी ॥१७०॥
अजिण हुंता जिण सारिखा जाणिवा, जिन जिम वागरे एम
मन आणिवा । संयमें तपि करी आतमा भावए, हीयडले अह
निशें प्रभु चरण ध्यावए ॥ १७२ ॥ श्रमण भगवंतना सीसनी
संपया, समति पण गुपति तिय सहीय इंद्रिय जया । अमम ममता
विना अनें अकिंचणा, ग्रंथि विण ब्राह्य धन धान सवि
वज्जणा ॥ १७३ ॥ सोक संसार अथ जेण मुनि छेदीयो,
कर्म्म अट्ठय तणो कंचूओ भेदीयो । कंसने पात्रि जिम उदक
लागे नही, संख जेम रंग विण मुनिवरा सवि कही ॥१७४॥
जीव जेम अप्रतिहत गति जाणिये, कुतित्थि पडणीय प्रति
जुत्ति सुवखाणीये । गगन जिम गाम नगरादिके अणिस्सिया,
वायु जिम अप्रतिबद्ध प्रसंसिया ॥१७५॥ सरस नव उदक जिम
हियडले निर्मला, पुरुखर पत्र जिम रहित कद्दम जला । कूर्म्म
जिम गोपव्या पंचय इंदिया, पंखि जिम सजन धन मूंकिया
विंदिया ॥ १७६ ॥ खडगीय जीवना शृंग जिम एकला,
रागनें दोस जसु उपशम्या तेतला । भारंडपंखि जिम अतिहिं अप
मत्तया, गज जिम सूर रागादि बलि नहु जिया ॥ १७७ ॥
वृषभ बलवंत जिम भार निर्वाहया, कर्युय पञ्चरुखाण पाळे
पंच महव्वया । सिंह जिम हरण आदेहि नहु गंजीये, परी-

षह आदि मृग साधु नहु भंजीये ॥ १७८ ॥ मिलें उवसग्ग मंदर जिम धीरूए, हर्ष शोकादि बुद्धि जेम गंभीरूए । ताप परिणाम विण शशि जिम सोमए, करें प्रकाश दिनकर जिम व्योमए ॥ १७९ ॥ कनक जिम निरमळ सुंदर रूवए, पुढवि जिम दुह सुहे सरिस सरूवए । सहुत हुतवह जिम तेज दे-दीपए, ज्ञान बलि करे प्रकाश बहु दीपए ॥ १८० ॥ निर्मलुं नयन सुख करें आयंस ए, असट्ठ मन लेश्य मुनि उत्तम वंश ए । तेय भगवंतने नहीय प्रतिबंधए, द्रव्य क्षेत्रादिके नहीय संबं-धए ॥ १८१ ॥ द्रव्य सचित्त अचित्तनें मीसए, खेत्र ग्रामादिके नहीय जगीसए । काल समयादि ओसप्पिणिस्सप्पिणी, भाव कोहाइसु नहीय आशा घणी ॥ १८२ ॥ नगर पण रात एक रात गामें रहें, वरिषा टाली प्रतिमाधर निरवहें । थेर कप्पीय नव कलपीयें विवहरें, एक चउमासनो आठ एक एक करे ॥ १८३ ॥ वासीय चंदन सम मन तसु रहें, सत्रुनें मित्र सम चित्त ते निरवहें । लेष्टुनें कंचण लेखवे सम करी, दुरुखनें सुरुख सम वृत्ति हियडे धरी ॥ १८४ ॥ नहीय प्रति-बंध हिंसादिन रोइए; रमतनें हेत हस्त्यादिक नपोईयें । वस्त्र पडकूल अथ वळीय कप्पासियें, उग्रहोपग्रहे नहिय मन वासियें ॥ १८५ ॥ उग्रह वसति वाजोटनें पाटियां, उपग्रहं बहुविधें दंदक आदियां । ममत तसु नहिय इच्छा तणा राजिया, विचरे ए तिहां तिहां गारव वज्जिया ॥१८६॥ सर्व सिद्धांतना पारगा ते कह्या, पवित्र अंतरंग मन सुद्धिथी में लह्या । वायु जिम

अप्रति बद्ध विचरे सया, उभय ग्रंथि विना तेय नमुं सया ॥ १८७ ॥ एणि गुणें साधु श्रीवीर जिनवर तणा, अछे छद्मस्थ पण जेह मांहि गुण घणा । भावस्युं श्रीसमरचंद्र तसु पय संथवे, सुणिय भवियण नमो ऊलट नव नवे ॥ १८८ ॥

(ढाल अढईयानी.)

एहवा वंदो साधु, टाले भव आबाध । दुष्कर तप कर ए, बारे भेद मन धर ए ॥ १८९ ॥ अभ्यंतर छह भेद, कर्म्म करे विच्छेद । समदृष्टि लहए, बाह्य ते सवि कहए ॥ १९० ॥

(फाग. दिन सकल मनोहर. ना जेवी देशीमां.)

अणसण बेहु भेदें कह्युं इतर जावत जीव, अनेक प्रकार इतर तणा नवकारसिथी सीम । पोरिस पुरिमढ नीवीय आंबिलनें एकठाण, एकासण उपवासथी छम्मासी इतर जाण ॥ १९१ ॥ पादपगमनति तरु जिम भोजननो पच्चख्खाण, भेद दु जावत जीवना जाणे जे हुइ जाण । प्रथम भेद दुष्कर अछे कोई करें ति धीर, अंग उपांग न चालवे जेम निर्जीव सरीर ॥ १९२ ॥

(काव्य. प्रभु पासजो ताहरुं नाम मीठुं, ना जेवो देशीमां.)

इम पहम संघयणनो धणीय पाले, सुद्ध भावनास्युं सविकरम टालें । व्याघातिमं निर्व्याघाति सींह, दवानल जलंते नहु धरे बीह ॥ १९३ ॥ कवल बत्रीस नरने आहारो, अडवीस तिय कीव चउवीस धारो । अट्ठ कवल आहार ते अल्प जाणो, सोलें अर्ध चउवीस पोणो वखाणो ॥ १९४ ॥

(अढईओ.)

एकत्रीस कवलें जोइ, किंचित ऊणो होइ। ऊणोदर कहीए, अतिलोलप नहीए ॥ १९५ ॥ एणि परि वत्थने पत्त, सुद्धग्रहे एकचित्त। प्रीतकरथी लहीए, अलप धरे सहीए ॥ १९६ ॥

(फाग.)

कलह करे नहु कोइस्युं झंझा वादि विशेष, द्रव्य क्षेत्र काल भावथी अभिग्रह करेरे अशेष। भिक्षाचरि ते जाणवी द्रव्यत जे द्रव्य लेइ, खेत्रत ग्राम ग्रामांतरि कालत मध्यान्हे देइ ॥ १९७ ॥ भावत स्त्री अथ नरवर हसत रुत गीतगान, भूषण विण अथ तिणि युत बालक थेर जुवान। ऊपाड्यो भोजन भणी भाजनथी ओखित्त, एहवो अशनादिक ग्रहे ओखित्तचर ते उत्त ॥ १९८ ॥

(काव्य.)

हिवं निखित्तचर ते श्रुति कहीजे, जे पाक भाजन थकी अन्न लीजें। ऊपाडीय मूक्यो तेहथकी अनेथि, ओखित्त निखित्त ते चरय ग्रंथि ॥ १९९ ॥ हिवं भोजन पात्रथी जे ओपाडवो, ते निखित्त उखित्त सूत्रि चावो। एम गृहस्थि निज अरथें मुनिवर करेवो, अभिग्रह मन धर्म्म ध्याने धरेवो ॥ २०० ॥ (अढइओ)परीसतां दे आहार, दोष न थाये लगार। वट्टिझमाण चर ए, लेतां मन ठरए ॥ ॥ २०१ ॥ शीतल करवा काज, गाल्युं पटादि जिनराज। वळी भाजन धर ए, साहर माण ऊचरए ॥ २०२ ॥

(फाग.)

भेटणी आवी अनेथथी ते उपनित कहे ई, ओसार्यो देई द्रव्यथी अपनीत पासे ठवेइ। उपनित अपनीत ढोवणी थानांतर ते मूंकी, योग मिलें मुनि ते ग्रहे, अभिग्रह न पडे मूक ॥ २०३ ॥ अथवा ओपनीत दायक करीय प्रसंसा जास, निंदित अपनीत जाणवुं, अन्नादिक तसु आस। ओपनीत अपनीत बे जिहां लख्खण शीतल खार, पाणी अपनीत ओपनीत खार शीतल सुविचार ॥ २०४ ॥

(काव्य.)

इम अवणीय ओवणीय चरग कहिया, अन्ने खरडीया हत्थ संसट्ठ गाहया। असंसट्ठ हत्थाये नहु लेप लागो, करी अभिग्रहा साधुनें मागि लागो ॥ २०५ ॥ जकाई वस्तु देसें तेणे हुस्यें खरड्यो, हत्थाइ ते लीजस्ये नहु अ खरड्यो। अन्नात चरगा उलखाण पारखें, सजनादिकनें घरें सुगुरु सारखें ॥ २०६ ॥ एम अभिग्रह पाले साधु जेय, जिन शासन मांहि वंदनीय तेह। सूरीसरपवर श्रीपासचंद, तसु सीस एम पभणे श्रीसमरचंद्र ॥ २०७ ॥

(ढाल-मारवणी देसी.)

हिव मूंनचर मुनिवर जे भाख्या, अणबोल्या जिन दाख्यारे। दृष्टियें देखी ल्ये आहारू, सूझत करिय विचारूरे ॥ २०८ ॥ वंदो वंदो तिनके पाएरे, साधु सुगुरु एणि गुण नितु समरत; हीयडे हरख न माएरे ॥ वंदु० ॥ २०९ ॥

(द्रुपद.)

दृष्टलाभ दृष्टियें देख आहारू, अथवा पूरव परिचित्तरे। गृहीय तासु घर आहार ग्रहीस्यें, अदृष्ट एहथी वितर तरे ॥ वंदो वंदो० ॥ २१० ॥ पुट्ठ लाभजें गृहिय पूछस्यें, स्युं लेस्यो ते भाखोरे। तो तसु घर मागीने लेस्युं, अपुट्ठ लाभ अणदाख्योरे ॥ वंदो० ॥ २११ ॥ भिक्षा लाभ भीखारीनी परि, तुछ अवज्ञा भावेंरे। देस्यें अभिक्षा लाभ सुणो हिव, घणो आदरस्युं आवेंरे ॥ वंदो० ॥ २१२ ॥ अन्न ग्लान जे सीतल विहरे, ओदनादिक जे वासीरे। अभिग्रह सहित कठोल विना पण, जोज्यो हिये विमासीरे ॥ वंदो० ॥ २१३ ॥ दायकथकी आसन्नो जे अन्न, ओपनीतं ते कहीयेरे। परिमित पिंड अरध पूपादिक, दायक हाथें लहीयेरे ॥वंदो०॥ २१४ ॥ सुद्धेषण शंकादिक रहियत, अथवा व्यंजन पाखेरे। कूरादिक अन्न ते संख्यास्युं, एक दत्ति जिन दाखेरे ॥ वंदो० ॥ २१५ ॥ नीवी करे मुनिसर केई, विगई सघली तरजेरे। गले बिंदु घृत दूध तणुं जिह, प्रणीत आहार ते वरजेंरे ॥ वंदो०॥२१६॥आंबिल ओदन ओडद आदिक जिह, पाणिमांह जमीजेरे। ओसामण गत सीथ जिमे जे, अन्न अवर नहु लीजेरे ॥ वंदो० ॥ २१७ ॥ अरसाहार हिंगादिक वर्जित, विरस ते धान पुराणोरे। अंत ते अल्प मूल वल्लादिक, पंतति भोजनावसाणोरे ॥ वंदो० ॥ २१८ ॥ लुहाहार स्वभावें लूखो तुछ ते अलप असारूरे। भिख्खाचरी अनें रसचाओ, कर

पहुतां भव पारूरे ॥वंदो०॥ २१९ ॥ काय कुलेश ते अनेक प्रकारे, काउसग्ग कर रहेतांरे । औकडू आसण रात दिवस पण, प्रतिमा बार ते वहतांरे ॥ वंदो० ॥ २२० ॥ सिंहासण ऊपर बेसीनें, भूमि ऊपर पग ठावेरे । पछे सिंहासण परहु करावे, आपण तेम रहावेंरे ॥ वंदो० ॥ २२१ ॥ पाट पीढ भुंई ऊपर पहेलुं, हुए ते ऊपर बेसेरे । तेय निसेज्जाऽऽसनिक कहीजे, विण आसण नहु बेसेरे ॥ वंदो०॥ २२२ ॥ दंडायतक दंड जिम लांबा, सुए अभिग्रहकारीरे । ऊत्या काष्ट जेम पानहि शिर, भूमि अवर अंग वारीरे ॥ वंदो० ॥ २२३ ॥ आतपन उष्ण अने शीतल, सूतां बेठा ऊभारे । त्रिविध उक्कोस मध्यम जघन्यत, नव विध जघन्य ते ऊभांरे ॥वंदो०॥ २२४ ॥ सूतां अधोमुखी उत्कृष्टी, एक पासु आडे मध्यमरे । उत्तान शायि जघन्न इम बेठा, गोदोहि ओकूडू मध्यमरे ॥ वंदो० ॥ २२५ ॥ पर्यंकासन जघन्य कहीजें, ऊभां करि जिम सुंडारे । एक पग ऊभां बेहुं पगऊभां, गुरुआ ल्यें गुण ऊडांरे ॥ वंदो० ॥ २२६ ॥ अवाओड चीवर विण अहनिश रहे, अंगे खर जिम खणियेरे । थूक न नाखे नख रोमादिक, सोभा वर्जक भणीयेरे ॥ वंदो० ॥ २२७ ॥ सर्व विभूषा तवनी टाले, काय कलेस ते भाखेरे । इंद्रिय कसाय जोग विवित्तासण, सेवणा भेद चउ दाखेरे ॥ वंदो० ॥ २२८ ॥ संलीनता एम चिहुं प्रकारें, प्रथम इंद्रियनी जोवोरे । स्रोत्र इंद्रियनो विष रुंधवो, राग दोष विण होवोरे ॥वंदो०॥२२९॥

एवं घ्राण रसण चख्खु फरसण, संलीनता करे एहनीरे । एवं क्रोध मान माया लोभ, निरोध विफलता तेहनीरे ॥ वंदो० ॥ २३० ॥ योग त्रिविध मन वचन कायना, संलीनता तसु करीयेंरे । अकुशल मननुं रुंधन करीनें, कुशल उदीरणे तरियेरे ॥ वंदो० ॥ २३१ ॥ एवं वचन पाडुआ वरजे, रूडा बोलें साहुरे । सुसमाहित कर पाय कूर्म्म जिम, काय संलीनता आहुरे ॥ वंदो० ॥ २३२ ॥ स्त्री पसु पंढग रहित सझासन, सेवे मुनिवर एसारे । आराम उद्यान सभा देवकुल, भव हाट वखारित जेसारे ॥ वंदो० ॥ २३३ ॥ एहवें थानके प्रासुक एषणी, बाजोट पाटिओ सिझारे । संथारो पडिहारु मागी, रहेति मुनि नमणिझारे ॥ वंदो० ॥ २३४ ॥ एम छह भेद बाह्य तप निरतो, करे तेय धन धन्नरे । श्रीसमरचंद्र तसु करे प्रसंसा, प्रणमे मुनि अनुदिन्नरे ॥वंदो०॥२३५॥

(ढाल-श्रीरागः-अरणीक मुनिवर चाल्या गोचरी.)

अभ्यंतर तप हवें कहीजें, अतिक्रम आदिक लागारे । गुरु समीप आलोयण लीजे, प्रायच्छित्त पाप ते अलगारे । २३६ ॥ धन ते मुनिवर करे निरंतर, सूधो भाव ते आणीरे । तेह तणा छह भेद वखाणे, वर्धमान एक नाणीरे ॥ धन० ॥ २३७॥ (पूज्य ते ऋषिवर) विनय वेयावच अने सझायं, झाण विओसग्ग एहारे । विचार एहना हवें कहीजे, प्रायश्चित्त दस न संदेहारे ॥ धन० ॥ २३८ ॥ आलोयण पडिकमण तदुभय, विवेग विओसग्ग पंचरे । तव छेदारिह मूल अण-

वट्टप, पारंचिय न खलखंचरे ॥ धन० ॥ २३९ ॥ निज अपराध सुगुरुनें साखें, आलोवे शल्य काढीरे । भाव ओलखी गुरु कहें तुह्में छूटा, बोले वाचा ताढीरे ॥ धन० ॥ २४० ॥ पडिकमिवाने योगे जाणी, गुरु तसु प्रति ईम भाखेरे । मिथ्यादुःकृत द्यो तुह्मे मुनिवर, अरिहंत सिद्धनी साखेंरे ॥ धन० ॥ २४१ ॥ एम आलोवणने पडिकमणं, विवेगा-रिहति विचारोरे । असुद्ध अन्नादिक लीधोरे जाणी, परिठवणं तसु धारोरे ॥ धन०॥२४२॥ विओसग्ग ते काओसग्ग कहीजे, तप नीवी आदिक दीजेरे । छेदारिह दिन पंच दशादिक, महात्रत्ति लहुडो कीजेरे ॥ धन० ॥ २४२ ॥ मूलारिह ते मूलथकी व्रत, नवी वारे ओचरावेंरे । तप व्रत योगथको जे ढलिया, अणवट्ठप्प कहावेरे ॥ धन० ॥ २४३ ॥ अतीचारनें पास पहुंचीयें, तप करी तेय विचारोरे । बारह वरस लगी मरयादा, पारंचिय ते धारोरे ॥ धन० ॥ २४४ ॥ विणय सात विध नाणदंसण वलि, चारित्त मणवईकायारे । लोगुवयारविणय अभ्यंतर, तप साहु मन भायारे ॥ धन० ॥ २४५ ॥ नाण विणयना पंच पयारा, मति सुय ओहि मणनाणोरे । केवल नाण अधीश जे एहना, तेहनो विनय वखाणोरे ॥ धन० ॥ २४६ ॥ सुस्सूसणा अणच्चासायण, दंसण बीहुंअ प्रकारेंरे । सुस्रूषाना अनेक प्रकारा, कारक आपण तारेरे ॥ धन० ॥ २४७ ॥ गुर्व्वादिक आवें आसणथी, ऊठे ते अब्भुट्ठाणूंरे । आसनाभिग्रह गुरु मन केडे,मंडें आसण सजाणूंरे॥धन०॥२४८॥

आसन प्रदानं बेसणों दीजें, सकार वस्त्रादिक कीजेंरे। अभ्युत्थानादिक सम्माणं, कितिकर्म वंदन कहीजेरे ॥धन०॥२४९॥ अंजलि ते कर युग जोडीजे, आवत सनमुख जावेंरे। बेसें ता तसु सेवा करियें, जातां तसु पहुचावेरे ॥ धन० ॥ २५० ॥ अणच्चासायण विणय तेहना, भेद पेतालीस भाख्यारे। अणच्चासायण (यनर) भत्ति बहुमाणं, वण्ण संजलणा दाख्यारे ॥ धन० ॥ २५१ ॥ अरिहंत अरिहंतधम्म आयरिया, उव ज्झाया थेर पंचरे। कुल गण संघ किरिय संभोई, मत्याईक नाण पंचरे ॥ धन० ॥ २५२ ॥ एक सामाचारी संभोगी, किरिया किरियावादीरे। पनर भेद ए पनर भगतिना, पनर वण्णवणा आदीरे ॥ धन० ॥ २५३ सामायिक छेदोपस्थापन, परिहार सुहुमसंपराएरे। यथाख्यात चारित पण भेदें, एहनो विनय कराए ॥ धन० ॥ २५४ ॥ मण विणयाना भेद दु कहिया, अपसत्थ अने पसत्थारे। अप्रसस्त निवर्तन द्वारे, प्रवर्तन तेय पसत्थारे ॥ धन० ॥ २५५ अप्पसत्थ सावद्य प्रमुख ते, तेहना अनेक प्रकाररे। सावद्य सक्रिय सकक्स कडूअं, निठूर फरस विचाररे ॥ धन० ॥ २५६ ॥ अण्हय छेद भेद परितावण, उपद्रव कर वळी जेयरे। भूत माण उपघात करं जे, न करे मुनिवर तेयरे ॥ धन० ॥२५७॥ हिंसादिकस्युं जे मन वरतें, सावद्य तेय कहांएरे। कायिकादिक किरिया सहियं, सक्रिय एणि परि भाएरे ॥धन०॥ ॥ २५८ ॥ कर्कशभाव सहित वली कडूउं, आपण पण नहु

गमतोरे । निष्ठुर मार्दव वर्जित जाणो, फरस ते बहु जन दमतोरे धन० ॥ २५९ ॥ असुभ कर्म लागे जे मनथी, हस्तादिक छेदकारीरे । भेद ते नाशादिक भाले करि, तापति परिताप धारीरे धन० ॥ २६० ॥ उपद्रव कर मारणांतिक वेदन, धन हरणादिक अथवारे । भूतोपघाती प्राण घातजे, टाले मनस्युं एहवारे धन० ॥ २६१ ॥ निरवद्यादिक पसत्थ जेय मन, ते करतां भव तरीयेंरे । एणिपरें वचन तणो बिहु भेदें, सघला भेदति करीयेरे धन० ॥ २६२ ॥ काय विणयना भेद दु भणिये, पसत्थेतर श्रुति कीधारे । अपसत्थ काय विणय सत्त भेदें, अनाओत्तादिक लीधारे धन० ॥ २६३ ॥ गमण ठाण बेसवो सुएवो, उल्लंघ पल्लंक करेवूंरे । इंद्रिय सर्व काययोग प्रेरण, जयणा रहित ते लेवूंरे धन० ॥ २६४ ॥ कादम आदिक जे अतिक्रमीयें, ते ओल्लंघण जाणोरे । वारवार पल्लंघण कहीये, काय व्यापार ते वखाणोरे धन० ॥ २६५ ॥ पसत्थतणा सत्त एह पटंतर, जयणा सहित संभालोरे । लोगुपचारित सत्त प्रकारे, संभलि अविनय टालोरे धन० ॥ २६६ ॥ अभ्यास परछंदाणुवत्तियं, कज्ञ हेतु कय किरियारे । अत्तगवेसण देस कालुण्णया, सघले अपडिलोम धरीयारे धन० ॥ २६७ ॥ अभ्यास वरती गुरु संगे रहीयें, गुरु छंदें चालीजेरे । ज्ञानादिकनें काज अन्नादिक, गुरुआदिकनें दीजेरे धन० ॥ २६८ ॥ एण गुरु मुझनें बहुश्रुत कीधो, अशनादिक हुं आपुंरे । कृतप्रतिकिरिय विनय एणिपरि,

करें निरजरा थापोरे धन० ॥ २६९ ॥ अत्तगवेसणा आरतियानी, आरति टालवी वांछेरे । देसकारुण अवसर ऊचितारथ, संपजावे ते पाछेरे धन० ॥ २७० ॥ अप्रतिलोमता सघले अरथें, आराध्य विषये जाणोरे । अनुकूलपणो विनय एम करतां, पामे उत्तम ठाणोरे धन० ॥२७१॥ विनय सुगुरुनें सांहमीय केरो, करे जेय मुनि भावेंरे । श्रीपासचंदसूरीसर सीसो, श्रीसमरचंद्र गुण गावेरे. धन० ॥ २७२ ॥

(ढाल-गोडी राग.)

अभ्यंतर तप त्रीजो भेय, वेत्तावच्च करत भव छेय । (ए आकणी.) एसे बोलत श्रीजगदीश, निरजरपद पावत निशदिश अ० ॥ २७३ ॥ त्रीजो व्रत आराधत सोउ, सारथ विणा करत नरजोउं अ० । तप विण मुगति न पावत कोउ, अभ्यंतर विण सुद्धि न होउ॥ अभ्यंतरतप त्रीजोभेय ॥२७४॥

दश विध आयरिया उवझाय, सीस गिलाण तपस्विभाय । अ० थेरे साहाम्मिय कुल गण संघ, वेयावच्च करत साहुं संघ अ० ॥ २७५ ॥ आचारज जिहां पंच आचार, उवझाया ते श्रुतभंडार । अ० सीस ते नवदीक्षित अणगार, तवसी अष्टमादि आधार अ० ॥ २७६ ॥ थिवर त्रिविध श्रुत वय परयाय, साहम्मि साहु साहुणि समभाय । अ० कुल ते गच्छ तणो समुदाय, गण ते कुलकेरो समवाय अ० ॥२७७॥ गण समुदाय संघ बोलाय, अथ कुल चंद्र कौटिक गण आय । अ० दश विध एह पनर दसमंगि, भेदें साधु करत मन रंगि

अ० ॥ २७८ ॥ अत्यंत बाल दुरबल ने गिलान, वृद्ध क्षपक प्रवर्त्तक जान । अ० आचारिज उवझाय ने सीस, साधर्म्मिक तपसि गत रीस अ० ॥ २७९ ॥ कुल गण संघ चेईनें अर्थ, वेयावच्च करत स समर्थ । अ० कुल गण संघ अरथ पुव्वुत्त, चैत्य ते जिन प्रतिमा ये जुत्त अ० ॥ २८० ॥ जिन प्रतिमा आगल श्रीसाधु, थव थुई मंगल करतां लाध । अ० थव कहतां शक्रस्तव होइ, थुति एकादि सत्त लगि जोइ अ० ॥ २८१ ॥ एण वेचावच्चि दोष न कोइ, जेय करें तसु बहु फल होइ अ० अनाण दंसण चारितनो लाह, जाणी मनस्युं करो उच्छाह अ० ॥ २८२ ॥ उत्तर झयण अछे छत्रीस, एह विचार छे ओगुणत्रीस । अ० सझाय वायण पुच्छण परियट्टण, अणुप्पेह धर्म्मकहा गुण वट्टण अ० ॥ २८३ ॥ सझाय कह्यो जे पंच प्रकार, करे निरंतर श्रीअणगार । अ० श्रीपासचंद सूरीसर सीस, श्रीसमरचंद तसु नामे सीस अ० ॥ २८४ ॥

(दूहा.)

ध्यान आरत ने रौद्र वळी, धरम सुकल ए च्यार । तेहना भेद विचारीये, गुरु मुख निरता धार ॥ २८५ ॥ प्रथम आरतना भेद चउ, अण गमतानो योग । कइयें थास्यें एहनो, आतमथकी वियोग ॥ २८६ ॥ गमतानो संयोग तसु, वंछे नही वियोग । शब्दादिक पंचयतणो, अणिट्ठ इट्ठ काम भोग ॥ २८७ ॥ रोगाइय आवें कदा, चिंते हुस्यें विच्छेद ।

सेवित विषयतणो रखे, पामे निजथी भेद ॥ २८८ ॥ लक्षण च्यार ते एहनां, कंदण करे आक्रंद । सोयण दीनपणुं करे, तिप्पण रुएति मंद ॥ २८९ ॥ विलवणता विललाप कर, रौद्रह च्यार प्रकार । हिंसा मृषा चोरी करें, परिग्रह राग विचार ॥२९०॥ लक्षण च्यार इहां सुणो, ओसण्ण बहु अन्नाण । आ मरणंतिक दोसचो, करे जेय अन्नाण ॥ २९१ ॥ प्रायें अविरत भावथी, हिंसादिक चिहुं ठाण । वरतें एकण तेहने, उसन्न दोष नियाण ॥ २९२ ॥ हिंसादिक सघलें रमे, जसु मन तसु बहु दोस । कुसमय वासित मति थकी, हिंसादिक बहु दोस ॥ २९३ ॥ धर्म्म बुद्धि अधर्म विषें, यागादिसु प्रवृत्ति । दोस अन्नाण अन्नाणथी, करें अन्नाणी एक चित्त ॥ २९४ ॥ आ मरणंतिक दोष ते, करे मरण जां सीम । कालिय सौरिय आइ जिम, न कर्यो एके नीम ॥ २९५ ॥ आरति रौद्र ते छांडवा, हेते कह्या जगनाथ । छंडे मुनि दुई दुई वरे, धरम सुकल शिव साथ ॥ २९६ ॥ भेद लक्षण आलंबणा, अनुप्रेक्षा ए च्यार । एक एक प्रति चउविध गणो, धरम ध्यान सुविचार ॥ २९७ ॥ प्रथम भेद आणाविचय, अवाय विवाग संठाण । विचय ते सघले जाणज्यो, अरथ लहे ते सुजाण ॥ २९८ ॥ आणा ते जिन वचन तसु, विचय ते निरणय रूप । आज्ञा गुणनुं चिंतवण, एम त्रिहुं पदे शरूप ॥ २९९ ॥ अपाय राग द्वेषादिथी, अनरथ ऊपजे जेय । विपाक कर्म फल चिंतवण, संठाण

द्वीपादिक भेय ॥ ३०० ॥ लक्षण च्यार आणा रुई, निसग्ग रुई उवएस। रुचि श्रुतरुचि एणि ओलखें, पंडित धर्म असेस ॥ ३०१ ॥ निर्युक्त्यादिक सद्दहण, आणारुचि ते जोई। निसरग तेय स्वभासथी, तत्वविषें मति होई ॥ ३०२ ॥ उपदेसरुचि ते साधुनो, सुणि उपदेश श्रद्धान। सूत्ररुची सिद्धांत विण, हियडे न धरे ध्यान ॥ ३०३ ॥ धर्म्म ध्यान घर शिखर जे, चडतां लीये आलंब। विगलें ते आलंबण, चडतां नहुं विलंब ॥ ३०४ ॥ वायण पुछण श्रुति तणी, परिवर्तन गुणें तेह। तुरियालंबन धरम कह, करतां सुणतां जेह ॥ ३०५ ॥ अनुप्रेक्षा मनि चिंतवण, अनित्य असरण एकत्त। वळी चउथी संसारनी, भावना भावे नित्त ॥ ३०६ ॥ सर्व अनित्य जगें अछे, खणि दीठं खिण नठ्ठ। शरणनही को केहनें, मात पितादिक इट्ठ ॥ ३०७ ॥ एकलो आव्यो जीवडो, जास्यें आपें एक। संसारें सहु सारथी, चिहुनो एह विवेक ॥ ३०८ ॥ सुक्क ध्याननना भेद चउ, अनें चउ प्रत्यवतार। भेद लक्षण आलंबणां, अणुपेहा संभार ॥ ३०९ ॥ पुहुत्त वियक्क सविचार गण, एगत्त वियक्क अविचार। सहुम किरीअ पडिवडिय, भेद ते हियडे धार ॥ ३१० ॥ समुछिन्न क्रिया तुरिय, अनियट्टी संजुत्त। एहना भेद ते जाणस्यें, सुणस्यें जिणवर उत्त ॥ ३११ ॥ आरत रौद्र दु परिहरी, धरम सुकल ध्यावंत। श्रीसमरचंद्र एणि-परि कहे, शिव सुख ते पावंत ॥ ३१२ ॥

(ढाल-दोढो.)

एक द्रव्याश्रित जेय, उतपातादिक, पराया या जूअ जूअ करीए । भेदें करें विकल्प, पूरवगतश्रुत, आलंबन नय अणुसरीए ॥ तेय पृथक्त्ववितर्क, तह सविचारीय, अरथथकी व्यंजन विषें ए । व्यंजनथी वली अत्थ, मणवई काईय, फरतो फरतो एक पखेंए ॥ ३१३ ॥ तह एकत्व वितर्क, अविचारी बीय, भेद विना जे चिंतवें ए । उतपादादिक एक, मांहि अनेरो, पराया आलंबन तवें ए। तेहनो जेय वितर्क, पूरवगत श्रुत, आश्रित व्यंजन अरथनोए । बेहुंमांहि लेवुं एक, ते अविचारत, अरथ व्यंजन मझ एकनोए ॥ ३१४ ॥ व्यंजनथी नहु अत्थ, अत्थ न व्यंजन, मन आदिक एकनो कह्योए । निरुद्ध वचन मन योग, अरध निरुद्ध काय, योगपणाथी क्रमि लह्योए । सहुम किरिय ते जोइ, अप्रतिपातीय, पडे नही ते भावथीए । प्रथम द्वितीय दोइ भेद, श्रुत केवलिनें ए, त्रीजो जाणो ईरियथीए ॥ ३१५ ॥ मुगति गमनने कालें, वधतें परिणामें, केवलिनें ए जाणियें ए । कायादिक क्रिय छेद, सेलेसीकरणे, समुछिन्नकिरिय वखाणीयें ए ॥ पाछो पडे न कोइ, चउथा भेदथी, केवल नाणी इह रहें ए । ध्यानतणो प्रारंभ, चउदमा थानथी, सिद्ध अनंता ए लहेए ॥ ३१६ ॥ एहनां लक्षण च्यार विवेग विउसग्ग, अव्वह अस्संमोहया ए । विवेग देहथी जीव, जीवथी संयोगा, बाह्य अभ्यंतर करे जूआए ॥ विउसग्ग उपधि शरीर, त्याग करे सदा, नही अभि-

लाष तसु ऊपरें ए। देवादिक उपसर्ग्ग, आवें भय नही, अव्यथन तिह मन ठरे ए ॥ ३१७॥ सुहुम पदारथ कोइ देवादिक कर्यो, देखी मूढ पणो नही ए। ततखिण जाणे तेय देवादिक तणो, निरमाप्यो एहज सहीए ॥ अथ आलंबन च्यार, खंती मुत्तीय, अज्जव मद्दव एहना ए। खमा अनें निरलोभ, सरलपणुं मान, नही एह गुण तेहनाए ॥ ३१८ ॥ अनुप्रेक्षा छे च्यार, अव्वाया असुभा, अणुप्पेहा ये श्रुति भणी ए। अणंतवत्तिया तेय, विप्परिणामाणुप्पेहा, ए अनुक्रम गणीए ॥ पावह ठाण अढार, ते सेव्याथकी, अनरथ आगल ऊपजें ए। ए अपाय चिंतेई, असुभनी अणुपेहा, संसार असुभति नीपजे ए ॥ ३१९ ॥ अणंतवत्तिया एह, भव संतति तणो, अंत नही कहें सामियाए। सर्व्व वस्तु जगि जेय, परिणाम पालटे, खण खण विप्परिणामियाए ॥ संखेपें दोई झाण धरमसुकल तणा, भेद कह्या गुरुमुख सुणीए। ए ध्यावे जिन पास, बेठा मुनिवर, ते वंदुं भगतियें घणी ए ॥ ३२० ॥ छठ्ठो हिव विउसग्ग, तप अभ्यंतर, द्रव्यभाव मुनिवर करें ए। द्रव्यत चिहुं प्रकार, देह गण ओवहीय, भत्त पाण छेह परिहरें ए ॥ शरीर ऊपर नहु राग, गछ असूधोए, छंडे अथ सूधो त्यजें ए। प्रतिमा प्रतिपन जेय, अथ जिनकल्पीय, एकाकी ते वन भजें ए ॥३२१॥ एणि परि उपधि सदोष, अशनादिक चउ, सदोषजाणीनें परिठवें ए। परीसह सहण समत्थ, अथ एणि भावें ए, उवही भात मरण ठवे ए; भावत त्रिहुं प्रकार, कसाय विउसग्ग,

संसार करम ते जाणज्योए। कसाय कोह माण माय, लोभ ते चोथो ए, छंडे तेय वखाणज्यो ए ॥ ३२२ ॥ संसार ते च्यार प्रकार, नारक तिर्यंच, मणुय देव जिणवर कह्या ए। ए चिहुं गतिना हेतु, मिच्छत्तादिक, च्यार छंडेवा ऊवह्या ए॥ ज्ञानावरणी आदि, कर्म्म ते आठ ए, बंध हेतु जिण टालीये ए, ज्ञानतणो प्रत्यनीक, निन्हव आदें ए, एणि परि सवि संभालीये ए ॥ ३२३ ॥ द्रव्य भाव विउसग्ग, एणि परि मुनिवर, बारह भेदें तप तपे ए। श्रीजिनवरने पास, अहनिश बेठा ए, पूरव संचिय कर्म्म खपे ए ॥ आचारांगी एक, एक द्वितय अंग, जाव इकारसें गणो ए। एक वाचन द्यें एक, पूछे वलीय, गणें एक अणुपेहिणो ए ॥ ३२४ ॥ कथा आखेवणी एक, एक विखेवणी, संवेयणी णिव्वेयणी ए। तत्वप्रतें मन जेण, आणे श्रोतानो, मोहथी वालि आक्षेपणी ए ॥ कुमागथकी श्रोतार, पाछो वालियें, ते कहीयें विखेवणो ए। मोक्ष सुख अभिलाष, सुणतां ऊपजें, ते जाणो संवेयणी ए ॥ ३२५ ॥ सुणतां थाये बिरत्त, जेण संसारथी, ते भाखी नीव्वेयणी ए। कथा कहे च्यार कोई, ध्यान करे कोई, शिव सुख आराधन भणीए ॥ ऊरध ढींचण सोस, नीचो पण करी, ध्यान कोठारमां ऊंमयाए। संयम तप करी आतम, भावत संचरे, राग दोष विण एक थया ए ॥ ३२६ ॥ अभ्यंतर छ प्रकार, तप सूधो करे, भवसागर हेले तरे ए। कथा ते चिहुं प्रकार, आक्षेपणि आदें, संभलि भवियण संवर वरे ए॥ श्रीपासचंद्र

सूरिंद, तप गच्छ नायक, युग प्रधान गुण नायकू ए। तासु पटोधर सीस, भणे श्रीसमरचंद्र, नमीये मुनि सुखदायकू ए ॥३२७॥

(ढाल–डाहरी. चालती अने त्रुटक जेवी देशीमां.)

हवें ए संसार समुद्रजिस्योरे, तरेय जे धीर सुजाण; समकित लहीय निरयामगोरे, संयम पोत समाण ॥:–सम्माण एह संसार सागर, देखी भव भय बीहना। जिह सलिल जम्माण जरा मरणं, प्रचूर दुःख छे एहना। गंभीर ऊंडो खुभित चंचल, जन्म आदिक जल जिहां। संयोग अनें वियोग अति घण, अछे वंचित रंग तिहां ॥ ३२८ ॥ चिंताए सलिल प्रसरो जिहांरे, बंध वध महाकल्लोल। करुण विललाप लोभ जिहांरे, बहुल कल कलण एय बोल ॥–बोल ते अव्यक्त स्वरद्युणि, फेण ते अपमानता। तीव्र खिसण रोग वेयण पराभव निभर्सता ॥ ज्ञानादि वरण कठोर कर्म्म ते सबलमांहें पत्थरा। पाणीय पूठो मरणनो, भय तरंग रंग ते दुस्तरा ॥ ३२९ ॥ पाताल कलस कसाय जाणोरे, भव लख्ख कलुस जल पुण्ण। अपरिमित-इच्छा मति कलुष वायरे, तेहनो वेग अतितुण्ण ॥–वायें ऊपाड्यो नीर ऊंचो, उदक रज अंधकारु ए; वर फेण प्रचुर आशा पिवासा, धवल मोह विकारुए। मोह महावत्त भोग भम-माण, गुप्फमाणति जल घणो। प्रमाद पण बहु दुट्ठ स्वापद रव करे बीहामणो ॥ ३३० ॥ अण्णाण दक्ष झस कच्छभारे, अजित इंद्रिय मगर मच्छ। नाचतां तेणि जल खलभल्योरे, चंचल अस्थिर सच्छ, अस्थिर सदा जल समुद्र पक्षे माणस

जड भवजल कह्या । अरति भयहं विषाद सोग, मिछत्त पर्वत सद्दह्या ॥ (पर्वत करी संकडो जलनिधि, उभय पक्षें जाणज्यो ।) अनादि कर्म्म प्रवाह बंधण, राग आदि स चीकणो । तेणे तेय तरतां दोहेलो, चीखल्ल लोय लफसें घणो ॥ ३३१ ॥ नरय तिरि नर सुर गति गमणरे, वांकिय विपुल जल वेल । चिहुं दिशें अंत नहुं गति सरूपरे, दीह नहु पाम ए भेल ॥—नहु अंत आवें अछे विस्तर, रौद्र दरसण जसुअ छे । ते तरें मुनिवर संयम प्रवहण, लही तुरीय सुभट पछे ॥ धृति रज्जु बंधण सुदृढ निश्चल संवर कूवा थंभ ए । वैराग्य उत्सृत ज्ञान सित, पट जेय शिव घर थंभ ए ॥ ३३२ ॥

(दूहाः-)

भवसागर दुत्तर तरे, संयम प्रवहण साधु । श्रीसमरचंद्र तसु पयनमें, टालें भव आबाध ॥ ३३३ ॥

(ढाल-राग धन्यासरो. उज्जलगिरिनमुं नेमि० ए देशीमां.)

सीलें सहित प्रसस्त ध्यान तप, वाय पेर्यो धर्म्म प्रवहण चालें । मुनिवर मुगति मंदिर प्रतें पुलिया,(ए आंकणी.)अनालसनें वस्तु निरणय द्रव्यनो । निरजर जयण करयाणयं घाले ॥ मुनि० ॥ ३३४॥ उपयोग नाण दंसण वय भरिया,मुनि०समणवर सत्थवाहा जिहां बेठा । हियडलामांहि गुण सिद्धना पेठा ॥मुनि०॥ ३३५ ॥ श्रीजिनवर जे मारग कहियो, अकुडिल सिद्धपुर केरडो लहियो । मुनि० सुश्रुत समुचि शोभना भाख्या, प्रश्न जिन सुरूयडा मुनितणा दाख्या ॥ मुनि० ॥ ३३६ ॥

शुभ जसु वांछा शुभ जसु सीसा, विधिहि विहारनी करण जगीसा। मुनि० गाम नगर एक पंच दिनमान, रहें ए सूद्धाश्रये जुगप्रधान ॥ मुनि० ॥३३७॥ प्रतिमा प्रतिपन्न अथ जिनकल्पी, थेरकल्पी ते मास कल्पी। मुनि० इंद्रिय पंचना विषय जेणे जीता, सात भय टलिया थया वदीता ॥ मुनि० ॥ ॥ ३३८ ॥ सचित्त अचित्तनें मीस जे द्रव्य, राग रहिता ते न करें गर्व्व। मुनि० संयत संयमवंत जे विरता, हिंसादिकथी जेय निवरत्या ॥ मुनि० ॥ ३३९ ॥ बाह्य अभ्यंतर परिग्रहें रहीया, मुत्ता तेय श्रीजिनवर कहिया। मुनि० अलपोपधि जसु जाणो लहुआ, अभिलाख रहित निरवकंख हुउआ ॥ मुनि० ॥ ३४० ॥ साहु ते मोक्ष साधनथकी हुआ, उपशांत वृत्ति ते भाख्या निहुआ। मुनि० एहवा साधु निश्चल धर्म साधें, तसु गुण संभले हर्ष घण वाधें ॥ मुनि० ॥ ३४१ ॥ जसु गुण संभलें आनंद पावुं, अहनिश भावस्युं तसु गुण गावुं। मुनि० श्रीपासचंद सूरिवर सुगुरु पसाइ, श्रीसमरचंद इम भणें वंदीयें भाइ ॥ मुनि० ॥ ३४२ ॥

(ढाल-राग. गोडी. लकडी. चालती तथा त्रुकटमां.)

चंपा वीरजिणेसरू, साधु तणे परिवारें। परिवरिया आव्या जया, चउविह सुर परिवारें ॥-परिवारस्युं परिवर्या आवें, वीर वंदेवा भणी। भवण वण जोयसी नायक, कल्प बारहना धणी ॥ चउसठ सुरपति करें सेवा, विनय भाव हिये धरी। एटलें चंपा नयरि मांहें, वात पसरी तेह खरी ॥

३४३ ॥ शृंगाटक त्रिक चउक्कि इहिं, चच्चर चउमुह पथें। ठाम ठाम बहुजण मळी, वात करें जिम ग्रंथें ॥–ग्रंथें अछे इम श्रमण भगवन, महावीर समोसर्या । चंपापुरें पुण्य भद्दें, चेईयें मुनिपरिवर्या ॥ संयमतपें आपणो आया, भावतां विचरें सही । महाफल नामें सुणतां, अभिगमणादिक फल कही ॥ ३४४ ॥ एणिभव परभव सुख होस्यें, मोक्ष तणां फल लहिस्यां । एम जाणी उग्रादिका, आव्या ते परि कहिस्या ॥–परितेय कहीयें सूत्र लहीयें, केई वंदेवाभणी। पूजा सकार सम्माण भावें, केई कोऊहल गणी ॥ अणसुण्या वचन अम्हे सुणीस्यें, सुण्या निःसंकित हुस्यें । चारित्र लेस्यां श्रावक थास्यां, भाव जुअ जुअ मन वस्ये ॥ ३४५ ॥ केई जिन भगतियें करी, केई आचरणा जाणी। स्नानादिक करी नीकल्या, वंदवा उत्तम माणी ॥–उत्तम हय गय केई चडिया, केई रथ शिविकादिकें । केई पाला बहु जणास्युं, परिवर्या गणधर वकें ॥ एम करी चंपा नयरिमांहिथी, नीकळी जिणवर जिहां। आवीय विनय करी बेसें, सांभलवा भावें तिहां ॥ ३४६ ॥ तेटले प्रवृत्तिवादक जई, कूणीय राय वधाव्या । जेहनो दरसण वांछता, तेहज भगवन आव्या ॥–आव्या सुणी श्रीवीरजिणवर, ऊठी कहे नमोत्थूणं । पूरवनी परि रायकूणिक, हरखे दीयें वधामणं ॥ जगत गुरुस्युं प्रीत आणी, लाख साढाबार ए । दीनार सोनातणा आपी, करे वळी सतकार ए ॥ ३४७ ॥ बलवादक तेडी पछे, सेनाना रखवालो ।

द्यें आदेस ऊतावळो, थईनें सैन्य संभालो ॥–संभाल करीनें, पट्टहस्ती, शृंगारो हय गय रहा। योद्धार तह सुभद्रादि राणी, काज जूअ जूअ तसु रहा ॥ आणी बाहिर सभा मंडप, जोतसा यात्रा भणी। कागमुह तिणे दिशें करज्यो, वेला नहु भाजे घणी ॥ ३४८ ॥ समरावो चंपापुरी, कचरादिक सवि टालो। मंचा माला घालज्यो, गूडी ध्वजा ऊछालो ॥–ऊछालज्यो तुम्हे ध्वजा गयणें, हाट घर रंगावज्यो। शृंघाट त्रिक चउक चच्चर, आदें फूल पगर भरावज्यो ॥ धूप घटिका ठाम ठामें, ऊखेवी आवी कहो। जास्युं वंदवा कारण, वीरजिन मन ऊमह्यो ॥ ३४९ ॥ बलवादक सुणी हरखीओ, अंजलि सिरसि चडावे। आणायें वयणं ग्रही, हस्तिवादक तेडावें ॥–तेडावे हस्ती तणो वादक, तेहनें एम आईसइ। पट्टहस्ती सैन चउव्विह, शृंगारो राय जाइसिइं ॥ वीरजिन वंदवा हेतें, हस्तीवादक सांभली। हरख धरी सुणि वचन प्रभुनो, करे जोडी अंजली ॥ ३५० ॥ गज तुर्यादिक वर्णकं, करतां विस्तर थाएं। तिणि संखेपें जाणिज्यो, चतुरंग दल समवाएं ॥–समवाएं हस्ती लहे शोभा, सीस मुकुट विराज ए। पट्ट सूत्रकेरां कानें फूंबत देह पाखर छाजए॥ कनक दंतूसलें जडिओ, गले भूषण सोह ए। ढाल नेजा छत्र चामर, सहित जण मण मोह ए ॥ ३५१ ॥ अश्वमुखें शिर चामरां, अपूरव ऊपरि पल्हाणं। मुखे आरिसा जलहलें, कंठे आभरण मंडाणं ॥–मंडाण पाखर अतिअनोपम, रथ सवे घंटा जुआ। छत्र झय हथियार भरिया

वृषभ धोरी संजुआ ॥ शृंग वृत्ताकार जेहना, सुवन खोलि जड्या सही । घूघरा घंटा कमल कंठें, राशि पट सूत्रह कही ॥ ३८२ ॥ सुभट सनाह ते पहिरिया, आयुध लीधां हाथें । देहें भूषण धारीया, चालें राजा साथें ॥–साथें चालें भरिय बाणें, पूठे भीडी भाथडी । वाम हाथें धरीय खांडों, दाहिणें कर भालडी ॥ अंगना रखवाल एहवा, स्वामिना भगता अछे । मल्ल कच्छकरी पधारें, आगल पाखल केई पछे ॥ ३८३ ॥

दूहाः–

चउव्विह सैन सिंगार करि, जिणवर वंदण काज । श्रीसमरचंद्र कहे जाणज्यो, ए मिश्र पक्ष जिनराज ॥३८४॥

(ढाल–जंबू स्वामिना रासनी चालती तथा त्रूटकनी देशीमां.)

हस्तिवादक एमकरी आवी कहें, बलवादकनें देखी गह गहें । कोटवाल तेडी नयरि समरावए, जह ओत्तर कारी करीनें आवए ॥–आवए बलवादक समिपें, आवि आणा सउपए । हरखे बलवादको आवी, कूणिकराय समीपए ॥ कहें तुझ आदेस कीधो, सेना नगरी सज करी । पधारो वंदवा जिणवर, महावीर गुण मन धरी ॥ ३८५ ॥ कूणीक राजा तसु वचनं सुणी, मनमाहि हरख्या भगति आणी घणी । स्नानादिक करि भूषण पहिरिया, कांने कुंडल सिरे मुगट ति धारिया ॥–धारिया हृदयें हार आदें, बांहि बहिरख अति भला । अंगुलें मुद्रा रतन कडियें, कणदोरा ते सांभ-

ल्या ॥ वीरवलया पगें पहेर्या, वस्त्र युगल सुहामणो। बावना चंदन कुसुम आदें, देहें लागो छें घणों ॥ ३८६ ॥ कल्पतरु जिम दीसें दीपतो, रूपें मनमथ सेना जीपतो। कोरंटक सूज संयुत छत्र ए, मस्तक सोहे अतिहि पवित्र ए ॥– पवित्र च्यारे ढले चामर, उभय पासें सेय ए। शब्द बोले मंगलकारी, मागधादिक तेय ए ॥ स्नान मंडप थकी नीकली, राय राणादिक जुओ। अभ्रमाहिथी नीकल्यो शशि, जेम तेम निव परिवुओ ॥३८७॥ बाहिली सभाएं राजा आवीओ, हस्तीय तेणे अवसर पाविओ। अंजणगिरिनो कूट जिस्यो लही, तसु ऊपरि राय चडियो छे सही ॥–सहीय आगल अट्ठ-ट्ठ मंगल, आणुपुव्वियें पत्थिया। श्रीवच्छ नंदावर्त भद्दासणं, वद्धमाण सत्थिया ॥ कलश दर्पण सच्छ युग्मं, आठ आठ लखित कह्या। सूत्रें अछे ए मंगल कारणं, भवियजण सवि-सद्दह्या ॥ ३८८ ॥ कलश भृंगारा छत्रनें चामरा, ध्वज ते देखत अति आणंद करा। विजय विजयंती वायें ऊडती, नभ तल लखती दीसे चालती ॥–चालती छत्र कोरंट माला, सहित दंड सोवन तणो। चंद्र मंडल सरिस दीसें, हेठलिछें सिंहासणो। मणि रयणमय तिह पादपीठक, पादुकां तसु ऊपरें। ते राज आगल सोभा कारण, झाल्युं छें बहुं किंकरें ॥ ३८९ ॥ लट्ठी कुंता धनुषनें चामरां, पासा पुस्तक फलगति चीतर्या। पीठक वीणा तैलह भायणं, कुतपह डब्फो द्रव्यनो गाहणं ॥–ते लेई चाल्या केई आगले, राय पुरो दंडिणो। मुंडणो मस्तक

शीखा धारी, जटा धारीय पीछिणो ।। हासकारक डमर चा-
टुअ, कारका कंदप्पिया । कोकईय कीट्टा करा चाले, नृपा-
दिकनें छे प्रिया ।। ३६० ।। वाजित्र वांतां गातां गीत ए,
नाटक करतां लोक विदीत ए । हासुं करतां भाषां बोलतां,
शिख्या देतां पडतां राखतां ।।–रांखतां वचन सुणावता केई,
शब्द जयजयकार ए । प्रजुंजता आगलें चाले, राय चित्तें
धार ए ।। एकसो अट्ठोत्तर प्रवर घोडा, जलमती किंकरें
ग्रह्या । हस्ती अट्ठोत्तरसयं रथवर, सयमठोत्तर संग्रह्या ।।
३६१ ।। रथ सछत्रा सघंटा सज्झया, पताका सहिया तोरण
संजूया । बारह तूर वाजे छे तिहां, न्हानी घंटा जालीयारा
जिहां ।।–जिहां हेमवंतना तिनिस दारुय, सार पईडे छे
जड्यो । वर्तुलाकारे चक्रधारां, निपुण सूतारें घड्यो ।। वर
तुरय जोत्र्या अछें सारहि, निपुण ते आयुधे भर्या, छत्रीस
ग्रंथ प्रसिद्ध जाणो, राय आगल विस्तर्या ।। ३६२ ।। अनु-
क्रमे आगल पालियार चाल ए, सांगनें भाला हाथें वाल ए ।
तोमर त्रिसूला लोह जडी लाकडी, भिंड माल धणुहं जिहां
पणचां चडी ।।–चडिय सूरपणे सेवे ते, सुहडमाहि शिरोमणी ।
कूणीक राजा राज लच्छी, दीपे जेम चिंतामणी ।। हस्ति खंधें
चडयो शोभें, ऐरावण जिम इंद्र ए । सेन चउव्विह सहित
दीपें तारमांही जिम चंद्र ए ।। ३६३ ।। भंभसार नंदन पुण्ण-
भद्द चेईयें, आवें जबही सेवक सेवियें । आगल दीसे आसनें
आसवरा, उभओ पासे नागा नागवरा ।।–वर पूंठ रथ संगेलि

चालें, इसी ऋद्धियें नरवरू । भृंगार माथें लोकनें करी, ताल वृंतति सुंदरू ॥ मस्तकें धर्या वरछत्र चामर, बेहुं पासें ढाल ए । सर्व रिद्धि द्युति बलें आदियें, राज पदवी पालए ॥ ३६४ ॥ सवि समुदायें सवादर करी, सर्व विभूतियें विभूसा देह धरी । सघलें संभ्रम सर्व पुष्प गंध ए, मल्लालंकारें सर्व समिध्धए ॥–समृद्धि सघळें शब्द नादें, महा रिध्ध्यादियें करी ! वर तुडिय तिह समकालि वाजें, शंख पणव नें जल्लरी ॥ पडह भेरी खरमुहि नें, उडुक मुख मुयंग ए । निर्घोष दुंदहितणो वाजे, देवनी परें चंग ए ॥ ३६५ ॥ नगरी मांहीथी एणीपरि नीसरें, मुख मंगल सुभ कीरति करें । जय जय नंदा जय जय भद्द ए,भद्द तुह्म होज्यो एहवो सद्दए ॥– तुह्मि अजित जीपो, जिता पालो वैरीने वली बंधु ए । जिय मझिव वसज्यो, इंद्रनी परि देव जेम सुबंधु ए ॥ असुरमाहि जेम चमरो नागमाहें धरण ए । तारमज्झे जेम चन्दो, भरह जिम नर सरण ए ॥ ३६६ ॥ चिरकाल जीवो वरस घणां तुह्मे, सयनें सहस्सा लाख कहुं अह्मे । निर्दोष सघलो परिकर तुह्म होज्यो, हट्ठ तुट्ठ चित्ता परमाउ पालज्यो ॥– पालज्यो राज इट्ठ जणे सहिया, चंपा नगरी आईए । गाम आगर नगर खेडा, कुडब द्रोणमुख गाईयें ॥ मडंब पट्टण आस मणिगा, संवाहने संन्निवेस ए । एहनु प्रभुतापणुं पालो, भोग जाव विशेष ए ॥ ३६७ ॥ नेत्र माला सहसें जोता जाइयें, हृदयमाला सहसें लोक वधावियें । मनोरथ

माला सहसें सेवियें, मुखमाला सहसें थवतां वेईयें ॥–वेईयें कंति सोभाई गुणिनर, नारीसहसें पेखियें। दाहिणें हस्तें अंजलि माला, सहस पडिछत देखीयें ॥ सुकमाल शब्दें पूछतो घर, पंति सहस तेअतिक्रमे। नयरि चंपा मूकी पुण्णभद्द चेई सीमा संक्रमें ॥३६८॥ जिह छें भगवन श्रीमहावीरू ए, आसन्न आवे राय सुधीरू ए। छत्रादिक तेह अतिसय देख ए, राजा कूणिक मनस्युं पेख ए ॥–पेखीय आ सायणा ऊभो, राखि गजथ्री ऊतरें। खग्ग छत्रो फेस वाणहि, चामर चिन्ह ते परिहरे। अभि गमण पंच सचित्त छंडे, अचित्त नहु एग साडियं। देखि अंजलि करे मन एगत्त ठामें चाडियं ॥ ३६९ ॥ भगवन पासे एणि परि आव ए, देखीय जगगुरु लाभ घण भाव ए। त्रण्णि प्रदक्षिण देई वंद ए, गुणथवि मस्तक नमि भव छिंद ए ॥–छिंद ए पातक पर्युपासन, करत त्रिहुं भेदें कही। काईया वाइय माणसीया, सूत्र साखें ए लही ॥ काईया कर पद गोपवीनें, रहे श्रवणति वंछ ए। नमे अभिमुख विणय प्रांजलि पुटें पासें अच्छए ॥ ३७० ॥ वचनें ए इम जे तुझि भाखओ, ते तिम अवितथ असंदिद्ध दाखओ। ईछयो वांछयो वचन तुझरओ, मननी सेवा एणि परि धारओ ॥-धारओ तीव्र संवेग आणी, धर्म्म ऊपर राग ए। एम त्रिविध सेवा करत कूणिक, राय जाग्यो भाग ए ॥ तेणि अवसर सुभद्र प्रमुखा, देवि घर मझि न्हाईया। बलि कर्म्म प्राछित अलंकारें, श्री समाण सहाईया ॥ ३७१ ॥ बहुली दासी पासें परिवरी,

चिलाती वामणी वडभी बव्वरी। पओसी जोणी पन्हवि ईसणी, लासिय लोसी दमिली वारुणी ॥–सिंहली आरबी पक्कणी, बहली पुलंदी पारसी। सबरी मरुंडी कूबडी बहु, देसनी छे एरिसी॥ सदेश भूषण सदेस पहिरण, इंगिय चिंतय जाणिया। अभिलाष जाणे, वरसधर कंचूइज्ज पुरुष वखाणिया ॥३७२॥ एम परिवारें राणी परिवरी, अंतेउरथी सघली नीसरी। जिह छें निज निज रथ तिह आव ए, रथचडि यात्रा सनमुख धाव ए॥–धाव ए जिणवर वंदवानें, हेति चंपामझि थई। नीकली आवे जिहां पूर्ण्ण, भद्र व्यंतरनो चेई॥ छत्रादि अतिसय देखि कूणिक, रायनी परे वंद ए। उत्तरासंगने ठाम नीचे, सिरें दुःरूख निकंद ए॥ ३७३॥ देइय प्रदक्षण जिनवर वंदीया, राणी सघली मन आणंदिया। कूणिक राजा पाछल सवि रहें, औभी सनमुख शिव मारग लहें॥–लहें मारग धर्म्म सुणतां, महावीर देसणकरें। राय राणी तेय परिषद, साहु देवादिक ठरें। ओघबल अतिबलो महाबल, अपरिमित बल वीर ए। तेज महिमा कंति सहियो, जगतगुरु महावीर ए॥ ३७४॥

(दूहा.)

वीरजिणेसर एणि परें, वंदें कूणिकराय। श्रीसमरचंद्र इम चितवे, वंदुं वीरजिन पाय॥ ३७५॥

(राग–वसंत.–हांरे प्रभुपासनुं मुखडुं जोवा. जेवी देशीमां.)

वाणी सारद घन मधुर गाजें, गंभीर सुणतां भव भावठ

भाजें। अरे तुह्मे सुणोरे भविकजन हियडे जागो। (ए आंकणी.) क्रोंच निर्घोष जिसी दुंदुभिस्सरा, हृदयें वित्थर कंठे वाटुली वरा ॥ अरे० ॥ ३७६ ॥ अरे तुमे सुणोरे भविकजन हियडे जागो, सूध संयम तप मारग लागो। अने चउगइ भमणथी जिय जइं भागो। सेवकरीनें शिवसुख मागो ॥ अरे० ॥३७७॥ मस्तकें पसरती अगरलारे, मामणा भाव विषु अतिसरला। अरे० संयोगी अक्षर प्रगट बोलें, पूर्ण स्वर कलायें नही कोई तोलें ॥ अरे० ॥ ३७८ ॥ रत्तागीतनें रागें सवि सभासा, आपणी आपणी मीछेरे भासा। अरे० योजन लगें प्रभु वाणी सुणीजें, अरध मागधी भासा तेय भणीजें ॥ अरे० ॥ ३७९ ॥ अरिहंत धर्म्म कहे ते सविहुनें, आरियाणारियानें तेहुंनें। अरे० परिणमे निज निज भाषानुसारें, जहठिय तेय सुणी हियडे धारें ॥ अरे० ॥ ३८० ॥ लोक अलोक जीव अजीव बंध, मुख्ख पुण्ण पाव आश्रव संबंध। अरे० संवर वेदणा निरजरा छे लोए, अरिहंत चक्कवट्टी बलीरे होए ॥ अरे० ॥ ३८१ ॥ वासुदेवा नर नरक तिरी, मात पिता ऋषिवर वाणी खरी। अरे० देवलोक देवता सिद्धनें सिद्धा, निरवाण निर्वृत थयारे बुद्धा ॥ अरे० ॥ ३८२ ॥ प्राणातिपात आदें मिथ्यातशल्ल, अट्ठार पावठाण ते अति कुटिल्ल। अरे० एहनो विरमण ते पण दाखे, पालक ते भव पडतां आपण राखें ॥ अरे० ॥ ३८३ ॥ सर्व्व जे जगे अछें छतूंय कहें, अणछतूं नत्थि एम केवलि लहें। अरे०

रूडी करणीयें रूडों फल पामी जें, पाडूये पाडूयें तिणें वामी जें ॥ अरे० ॥ ३८४ ॥ पुन्यनें पाप फरसें करम रूपें, परभव आवें उदए निज सरूपें। अरे० पुण्यनें पाप तरु सफल अछें, बीज वाव्यो फल लुणीजे पछे ॥ अरे० ॥ ३८५ ॥ निग्रंथ प्रवचन सत्य सुद्ध, अनुत्तर केवल एक संसुद्ध। अरे० प्रतिपुण्ण णयानुसल्लकत्तण, सिद्धि मुत्ति णिव्वाण निझाण गमण ॥ अरे० ॥ ३८६ ॥ अवितथ विघटे नही असंदेहरे, सव्व दुःख प्रखीण मग्र गुणनो गेह। अरे० एणेरे मारग रह्या जीव सीझें, करम खपाविय केवल बूझें ॥ अरे० ॥ ३८७ ॥ आठय करमथकी तेय मूंकायें, सर्व दुःख अंतकरी मुगति जायें। अरे० केईय पूरव करम वसें, मुगति न जाएं देव लोक वसें ॥ अरे० ॥ ३८८ ॥ महा रिद्धि आदिक गुणेहिं सहिया, कल्प ग्रैवेक अणुत्तर लहिया। अरे० तेहथकी चवी उत्तम कुल ते आवें, संयम पाली केवल मुगति पावें ॥ अरे०॥३८९॥ वलीय चिहुं गति तणो बंध कहें, नारक तिरि मणु देव संग्रहें। अरे० महाआरंभें महापरिग्रह राखें, पंचय इंद्रिय वधें मांस भखें ॥ अरे० ॥ ३९० ॥ नारकी चिहुं कारण चिहुएं तिरिया, माया अलीक लंच वंचण भरिया। अरे० माणुस पयई भद्र विनीतारे, सदय अमच्छर गुण दीपता ॥ अरे० ॥३९१॥ सराग संयम संयमासंयमरे, अकामनिर्ज्झरा बालतप क्रमरे। अरे० एणिपरि निरय तिरि मणुय देवा, च्यारे कारण माहें एक आदि लेवा।, अरे० ॥ ३९२ ॥ जेणी परि नरग

ऊपजे दुःख वेदेंरे, सारीर मानस दुःख तिर्यंच भेदें । अरे० व्याधि जरा मरणं वेयणा पउरं, अनित्य मणुय भव क्लेश घरं ॥ अरे० ॥ ३९३ देवता देवलोक देवनां सुख, माणुस गतिएं जेम लहीजे मुख । अरे० पुढवी आऊ तेऊ वायु वणसइकाया, जहट्ठीय त्रसकाय कही रखाया ॥ अरे० ॥ ३९४ ॥ जेम जीव बंधन पामे जेम मूकाएं, क्लेश पामे नें अंतकर केई थाए । अरे० आरति रौद्र वसें दुःख सागरें, फिरता केई जेम वेरागें तरें ॥ अरे० ॥ ३९५ ॥ रागनें द्वेष वशें करम कर्या, पाडूआ फलथकी विपाक भर्या । अरे० जेम जेम खीणकर्म्म जीव थई, शासता सुखलहें मुगति जई ॥ अरे० ॥ ३९६ ॥ जिणवर वाणीतणा एह गुण, सुणे जे सुगुरुपासें एकमन । अरे० भणे श्रीसमरचंद्र सुद्धपालें, संसार अडवीतणो भमण टाले ॥ अरे० ॥ ३९७ ॥

(ढाल–राग–गौड मल्हार. सोनारुपाने शोगठे० जेवी देशीमां.)

दुविह जिन धर्म्म बोले, नही प्रभुनें को तोलें । अणगार न अगार, लहीजे भवपार ॥ ३९८ ॥ जिणवर वाणी मीठी, अमियथी अधिकी दीठी । भावधर जे आराधे, शिव सुख तेय साधें ॥ जिण० ॥ ३९९ ॥ अक्ष पण चओ कसाय, मण मुंड दस भाय । परिग्रह नवय भेदें, त्यजी कर्म्मनें छेदें ॥ जिण० ॥४००॥ सर्व सर्व्वें करीजें, महाव्रत ऊचरीजें । जीववध मुसावाद, अदत्तनो पयडनाद ॥ जिण० ॥४०१॥ मेहुण परिग्रहारे, राई भोयणे रेहा । एहनी विरति जेय,

महाव्रत इहां तेय ॥ जिण० ॥ ४०२ ॥ मुनिनो सामाई एय, साहु साहुणी जेय । धर्म्म पालवा औठ्या, आणाराधका दीठा ॥ जिण० ॥ ४०३ ॥ श्रावक धरम बार, भेद तासु विचार । अणुवय पंच तिन्नि, गुण सिख्खा चउ मन्नि ॥ जिण० ॥४०४॥ थूल प्राणातिपात, न करे विख्यात । मोटका पंच कूडां, श्रावक न जाणे रूडां ॥ जिण० ॥ ४०५ ॥ अदत्त जाणि चोर कही जें, ते वस्तुनो लीजें । मैथुन पर जे नारी, तसु संगतें वारी ॥ जिण० ॥४०६॥ ईच्छा तणो माण, थूल परिग्रह जाण । विरति जेटलीय कीजें, जिणवाणी फल लीजें ॥ जिण० ॥ ४०७ ॥ दिगव्रत दिशिनो मान, भोग परिभोग मान । अनरथ दंड टाले, जिण आण ते पाले ॥ जिण० ॥ ४०८ ॥ समता भाव आणी, सामाई करे जे प्राणी । अहनिशि अंतरालें, पडिकमें बेहुं कालें ॥ जिण० ॥ ४०९ ॥ आवश्यक तसु नाम, अध्ययन छह गुणधाम । ते छें अनुयोगद्वारे, श्रावक साधु अधिकारें ॥ जिण० ॥ ४१० ॥ दसम देसावकास, थोडी जइ वा आस । पोसहव्रत जे पालें, अतिचार तसु टाले ॥ जिण० ॥ ४११ ॥ ओपवास सहित जाणो, चओदसि आदि वखाणो । ब्रह्मचर्यादि सहित, सर्व सावद्य रहित ॥ जिण० ॥ ४१२ ॥ अतिथी जे संविभाग, शुद्ध आहारनें लाग । साधुनें दान दीजें, द्वादशें भव तरीजें ॥ जिण० ॥ ४१३ ॥ संलेखन्ना मरण कालें, अन्नादिकथी मन वालें । गृहिय सामाई एय, पाली अवसरें तेय ॥ जिण० ॥

४१४ ॥ श्रावक श्राविकारे, आणाना आराधका । जे जगें हुवें जेहवो, भगवन कहें तेहवो ॥ जिण० ॥ ४१५ ॥ धर्म्म सुणि मति बूधा, व्रत पालीय सूधा । भणे श्रीसमरचंद तेय, सुख लहे अमेय ॥ जिण० ॥ ४१६ ॥

(ढाल-राग-धन्यासी. अंतरजामी सुण !० एना जेवी देशीमां.)

दीधी देसण वीर जिणेसर, हर्ष धरें सब लोई । आसणथी ऊठी प्रदक्षिण, त्रिण्णि दियें सहु कोई ॥ ४१७ ॥ जगगुरुनें भगति भावें भवि जन वंदें । चिंतामणीथी अधिको जिनधर्म, पामी मन आणंदें ॥ जग० ॥ ४१८ ॥

(ध्रूपद.)

भव आरण्य ज्वलत केई देखी, जरा मरणथी भागा, जिनवर वाणी सीतल पाणी, धारा जसु तनि लागा ॥जग०॥ ४१९ ॥ शीतल भए लोचकरि केई, गृहवास जाणि असारा। छोडी पंच महाव्रत उचरें, भवसागरना तारा ॥जग०॥४२०॥ महाव्रत ऊचरवा असमत्था, ऊचरें अणुव्रत तेई । पंच सात सिख्खा व्रत मेली, गृहधर्म बारह भेई ॥ जग० ॥४२१॥ महव्वय अणुवय जे नहु ऊचरें, ते पुण प्रभु पाय लागें । समकित लही वचन ईम बोलें, करजोडी प्रभु आगें ॥ जग०॥ ४२२ ॥ रूडो कह्यो धर्म्म स्वामी तुझि, ए समवड नहु कोई । एणि जग हुओ न होस्यें हिवडां, दरसण दीठा जोई ॥जग० ॥ ४२३ ॥ धर्म्म कहंत कह्यो तुझि जिणवर, उपशम धर्म्में सारा । उपशम कही विवेक प्रकाश्यो, कृत्याकृत्य विचारा ॥

जग० ॥ ४२४ ॥ विवेग कहीनें वेरमण भाख्यो, पाप करम न करेवो ॥ उपशम विवेक संवर उपदेसें, विधिवादें करेवो ॥ जग० ॥ ४२५ ॥ कथक श्रमण ब्राह्मण नहु दीसें, तुह्म सरिस जगमांहें । अपूरव नही ईम सहुएं बोली, वांदें अधिक उच्छाहें ॥ जग०॥ ४२६ ॥ जेणि दिशिथी आव्या जे हुतां, तेणि दिशि ते सवि जाए । कूणिक राजा ते पण वंदी, तित्थ नाथना पाए ॥ जग० ॥ ४२७ ॥ बोल कह्या जे पाछल सहुएं, ते तेणी परि दाखें । राणी सुभद्रा प्रमुख इम उचरी, निरतुं समकित राखें ॥ जग० ॥ ४२८ ॥ श्रेणिकनंदन राणी सुभद्रा, प्रमुख सहुको रंगें । वर्द्धमान जिन पाए लागी, आवे घरें उच्छरंगें ॥ जग० ॥ ४२९ ॥ ए प्रबंध ओववाई ओवंगें, गुरुमुखि जिणपरि जाण्यो । श्रीपासचंदसूरीसरसीसें, श्रीसमरसिंघ सुवखाण्यो ॥ जग० ॥ ४३० ॥ प्रथम चंपापुरी जिणवर, वीर आव्या जिम कह्या । तेय वर्णक शिष्यना गुण, संयम तप आदें ग्रह्या ॥ जग० ॥ ४३१ ॥ अछें विस्तर पुण संखेपें, वर्णव्या छे इह सही । भविकना उपगार हेतें । तेय दूषण मुझ नही ॥ जग० ॥ ४३२ ॥ संवत पनर पंचाणवें, कातिय मास प्रबंध । ओववाई आगम थकी, कीधो साधु संबंध ॥ जग० ॥ ४३३ ॥ साधुतणा गुण समरतां, पातक दूरें जाय । भणो सुणो हियडे धरो, निश्चें शिव सुख थाय ॥ जग० ॥ ४३४ ॥

इति श्रीऔपपातिकोपांगादुधृत्य साधुगुणरससमुच्चयः कृतः लिखितः श्रीस्थंभतीर्थे संवत १६४८ वर्षे कार्तिक सुदि ८ गुरौ सुभं भवतु लेखकपाठकयोः ॥ छः ॥

॥ इति श्रीऔपपातिकोपांगादुधृत्य साधुगुणरससमुच्चयः समाप्तः ॥ श्रीमन्नागपुरीयवृहत्तपागच्छाधिराजयुगप्रधानक्रियोद्धारकारकसिद्धांततत्वमहोदधिश्रीजिनप्रवचनप्रचारणैकबद्धकक्षमहाप्रभावकप्रातःस्मरणीयश्रीपार्श्वचंद्रसूरिपुरंदरपट्टधरसकलागमभावबोधधारकजैनाचार्यवर्यश्रीसमरचंद्रसूरिराजविरचितः संशोधितश्च श्रीजैनश्वेतांबराचार्यवर्यामेयमहिमानिधानानवद्यविद्याविशारदसकलागमपारगामियुगप्रवरशांतरसपयोनिधिविश्ववंद्यमहर्षिपूज्यपादपरमोपकारिश्रीभ्रातृचंद्रसूरीश्वरचरणसरसिरुहभृङ्गायमानमुनिसागरचंद्रेणः स्वपरहिताय कल्याणमस्तु ॥ ॐ अर्हं नमः ॥

इति श्रीजैनरासंग्रहः

प्रथमभागः समाप्तः ॥

॥ श्लोकः ॥

श्वेतपद्मासना देवी, श्वेतपद्मोपशोभिता,
श्वेताम्बरधरा देवी, श्वेतगन्धानुलेपना ।
अर्चितामुनिभिःसर्वै-र्ऋषिभिःस्तूयते सदा,
एवं ध्यात्वा सदा देवीं, वांछितं लभते नरः॥

उदयशिखरिचंद्राः सद्वचोंभोधिचंद्राः
सुकृतकुमुदचंद्रा ध्वांतविध्वंसचंद्राः
कुमतनलिनचंद्राः कीर्तिविख्यातचंद्राः
प्रमदजननचंद्राः श्रेयसे पार्श्वचंद्राः
श्रेयसे भ्रातृचंद्राः ॥१॥

॥ स्रग्धरावृत्तम् ॥

श्रीमद्विद्यावतंसाः शमदमसहिता बालभावाद्विरक्ता,
ज्ञानाभ्यासे प्रवृता निखिलजनमनोहर्षदाः स्वैर्गुणौघैः ।
मध्यस्था मान्यवाक्या दलितमदबला भ्रातृचंद्राभिधाना-
स्तारुण्ये तीर्णमोहा निरुपमचरिताः सूरिराजा जयन्तु ॥१॥